Printed by R. Y. Shedge, at the N. S. Press, 23, Kolbhat Lane,
Kalbadevi Road, Bombay.

Published by Premchand Amarchand, Bikaner,
Marwar, Rangadi.



॥ विज्ञापन ॥



विदितरहै श्रीभगवान महावीर स्वामीके ११ गणधरोंका नवगच्छ हुआ सामाचारी सवोंकी एकथी इसतरे सुधर्मा स्वामीसैं पट्टप्रवाह चला, वाद जो जो आचार्योंकै नामसैं गच्छ अलग २ होते गये लेकिन् सामाचारी में फरक नहीं था वह गच्छोंकै नाम कल्पसूत्रमें लिखे हुये हैं कालदोपसैं वह गच्छ लुप्त होगये मूल सुधर्मा स्वामीकी पट्टपरंपरामैं त्यागी वैरागी आत्मार्थी ज्ञानगर्भित क्रियावंत श्रीउद्योतनसूरिः एक प्रभावीक आचार्य विक्रमसंवत् हजार सरू प्रवेशसमय विचरते थे उनोंके निजशिष्य वर्धमान और वाकी ८३ स्थविरोंके शिष्य गुरु पास विद्याध्ययन करते थे, किसी उत्तम समयमैं धर्मका विशेष उद्योग करणे गुरूनें सिद्धवडके नीचे एक निज शिष्य ८३ विद्यार्थियों एवं ८४ शिष्योंको सूरिमंत्र दे के आचार्यपद दिया वर्द्धमानसूरिः निज शिष्यके शिष्य जिनेश्वरसूरिःनें उपकेशरिगच्छी आदिक पार्श्वनाथके शंतानी तथा और सव चैत्य द्रव्यभक्षक शिथलाचारी असंजतियोंकों ज्ञानयुक्त उग्र क्रियासें शास्त्रार्थमैं जिनाज्ञा विरुद्धता उनोंका कर्तव्य सिद्ध किया विक्रम संवत् एक हजार अस्सीकी शालमैं अणहिलपाटणमैं दुर्लभ राजाकै समक्ष, तव राजानैं इनोंका सिद्धांत शुद्धज्ञान और कठिन क्रिया देख कहा, गुरु खरतर हो, खर कहते क्रिया और ज्ञानसैं करडे, तर कहते जादा करकै, अथवा खआकाशे, रकहते, रमंति, तर अतिशयेन, इतिखरतर, सूर्यकीतरे ज्ञानक्रियासैं, विशेष देदीप्यमान, इसवास्ते खरतर विरुद दिया, तेसैं लोकभाषासैं कहा तमैं खराछो, चैत्यवासियोंको कहा तमेकुंअलाछो, इसतरे वृहद्गच्छ पदधारियोंकों खरतर विरुद मिला उस वख्त उनोंकै सवसंघनैं चैत्यवासियोंका गच्छ छोडदिया १७ गोत्र जिनेश्वर सूरिः के उपासक भये, फक्त एक गोत्र उनोंकों मांनते रहै तव चैत्यवासीकेइयक सावधान होकर श्रावकोंको अपणी ममतामैं फसाणे कहणे लगे जिनेश्वर जो तुमकों कहगयाहैकै महावीरदेवके ६ कल्याणक कल्पसूत्रमें लिखाहै, तथा, पंच हत्थुत्तरेहोत्था साइणा परि निव्वुएभयवं, यह तो अैसा लेख कल्याणकका वाचक नहीं किंतु यह पांच वस्तु उत्तरा फाल्गुणीमैं हुयेहैं इनकों पांच वस्तु सूत्रकार भद्रवाहूस्वामीनें कहाहै, ऐसाही पाठ जंवूद्वीप पन्नत्तीसूत्रमैं लिखाहै, यथा, उस भेणं अरहा कोसलिए पंचउत्तरासाढे अभी इछ्छेहोत्थत्ति, तो ऋषभदेव स्वामीका राज्याभिषेक कल्याणक इस अपेक्षा ठहरताहै तो उस राज्याभिषेक कल्याणकका उपवास पोसह प्रमुखक्रिया जिनेश्वरनैं तुमैं क्यों नहीं वतलाई इसवास्ते जिनेश्वरका पक्ष झूठाहै यह गर्भापहार तो निंदनीक कार्य छिपाणेलायक है इत्यादिक कुयुक्तियैं लगाणेसैं केइयक अल्पज्ञ भोले गृहस्थी फेर इनों

शिथलाचारियोंसैं परिचय करणे लगे, जिनेश्वरसूरिः मालवदेशमैं विचरतेरहै इसवास्ते चैत्यवासियोंका दाव लगा ज्ञानवंत दृढसम्यक्तवंततो, इनकुयुक्तियोंसैं सर्वथा डिगे नहीं, अैसैं धीरे २ शिथलाचारी फैलणेलगे, जिनेश्वरसूरिः के पट्ट जिनचंद्रसूरिः भये जिनोंनें संवेग रंगशालादिक अनेक ग्रंथ बणाये इसमें शिथलाचार निषेधक अनेक उपदेश किया इनोंके गुरुभाई श्रीअभयदेवसूरि इनोंके पट्टपरस्थापनभये इनोंनैं नवांगीवृत्ति, तथा आगम अष्ठोत्तरी, जयतिहुअण ३२ स्तोत्र इत्यादि अनेक ग्रंथ रचै इनोंकै जिनवल्लभ-सूरिः पट्टविराजै तब जगे २ चैत्यवासी पूर्वोक्त हठवादके प्रपंचसैं जोरसोर मचाया तब श्रीजिनवल्लभसूरिः नैं इनोंका झूठा कदा ग्रह मिटाणे इनोंकों इसतरे निरुत्तर किये, यथा, भो भो पक्षपातियों जो जंबूद्वीपपन्नत्तीका लेख है सो हमकों मंतव्य है लेकिन् अवल तो राज्याभिषेकका दिन कोणसाहै सो उस दिन पच्चख्खाण पोसा कियाजाय, और पोसहमैं चिंतन क्या किया जावेगा राज्यसंबंधी रथ, घोडे, हस्ती सेन्या सुभट युद्ध तोप बंदूक अस्त्र शस्त्र किसी कसूर दारकों ताडना बधबंधन बेडी डालना इत्यादिकही विचार कर्म्मबं-धनका हेतु आरंभकाही ध्यान होणेसैं कहो विवेकविकलो भव्य जीवोंकै कोनसा कल्याणका कारण होगा सो व्रत पच्चखाण पोसह किस अपेक्षा भव्यजीव किस तिथीकों करै सो बतलावो और कल्पसूत्रके पाठके लिखे गब्भापहार तो भव्य जीवोंके कल्याणका हेतु है अबल तो गर्भापहारकी तिथी प्रगट है दुसरे सूत्रकारनें तीन २ वखत दृढा २ कर ये पाठ लिखा है गर्भमें आये बाद ८३ मैं दिन इंद्रके हुक्मसैं गब्भापहार कल्याणक हुआ इसमैं व्रत पच्चखाण पोसहमैं अैसा चिंतन भव्यजीव करसकताहै हे जीव तीन लोकके नाथ तरणतारणभी कर्मोंके उदयसैं जातिमद गोत्रमदके करणेसैं भिक्षाचर कुलमैं आकै पैदा भये इसवास्ते मेरे जैसै जीवकी तो बुन्यादही क्याहै तब वह इत्यादि ध्यानसैं कल्याणताकों प्राप्त होताहै इस न्यायगर्भापहार निश्चै कल्याणकारी होणेसैं कल्याणकहै अगर तुम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें भये ५ कल्याणकोंको ५ वस्तु कहते हो गर्भापहार कल्याणककों निषेध करणे तो इस मैं तो वह दृष्टांत तुमारेमैं साबत होताहै यथा जैसैं चोबेजी छब्वेजीवणणेकों चले आगे जाते दुब्बेलोकोंकै जजमानोंकै क्षेत्र आगया, अब चोबेजी, घर २ प्रति जैयमुनामइयाकी जैदाऊदयालकी, जजमान चकानचक्की घुटवादे, करते फिरे जजमानोंनै पूछा आप कोनसै ब्राह्मनहो, चोबेजी बोले चोबा, जजमान बोले, दुबे सिवाय ब्राह्मण होतेई नहीं अब जहां जिसके घरजावै उहां यही वात तब चोबेजी मारे भूखके, फिरते २ थकगये तब बोले अरे सारे हम तो दुबेही थे, लेकिन् मेरी भूआरांडने भूखसैं मरावेकों चोबा २ नाम धरदिया, हमभी इसीवास्ते तुमें चोबा बतला दिया, दुबेही समझ या पेटकी लाय तो बुझा, तब आटा दाल घी सक्कर भरपूर उसनैं दिया इसतरे दुबेवण २ खूबमालघर २ सैं चखते रहै एक दिन

कोई मथुराका वणिया उसही वस्तीमैं किसी व्यापारकेवास्ते चला आया चोबेकों पहचानके बोला अजी चोवेजी तुम तो छब्वेजीवणने गयाजी आयेथे इहां तो उलटे घरकेही दोय खोवैठे तव चोवा बोला अरे वणिये चूलेमें परो चोवा चूलेमें गिरो छव्वा चकानचक्की कराणे तो दुवाही अच्छा वह हाल तुमारा है एक गर्भापहारकों निषेधणेकों च्यवन १ जन्म २ दीक्षा ३ ज्ञान ४ जो जो कल्याणक तुमारे पूर्वाचार्य तथा समस्त जैनसंघ अनादिकालसैं मानते चले आये सो इस पेटभराईके ख्यालमैं चोवे जी मुजव निजमंतव्यसैं जिनाज्ञा भंगकर और मूल सद्दर्शन सद्ज्ञान दोनोंही खोवैठे चैत्यवासी होणेसैं चारित्रका तो लेशभी नहीं था, तव जिज्ञासूनैं पूछा भो गुरू, शिथिलाचारी, चैत्यवासी, ये दोनों सदृशहै या कुछ फरक है, गुरूनैं कहा शिथलाचारी अनंत शंशार नहीं रुलता लेकिन् चैत्यद्रव्यभक्षक चैत्यवासी अनंत संसारी होताहै, फेर हे विवेक विकलो तुम प्ररूपणा करतेहो गर्भापहार, निंदनीक कार्यहै जिसकूं कल्याणक नहीं मानना, अरे तत्वबुद्धिरहित पक्षपातियो जरा जिनाज्ञाकाकोप रखो, अगर गर्भापहार निंदनीककार्य होता तो क्षायकसम्यक्तवंत सूर्याभदेवता भगवान महावीर प्रभूके समवसरणमैं गणधर साधु साध्वियैं श्रावक श्राविकायैं इंद्रादिक देवते इंद्राणीप्रमुख देवियैं नरपतियोंकै सामनैं भक्तिपूर्वक ३२ बद्धका नाटककरता गर्भापहार नाटक करकै दिखायाहै देख रायप्रश्नी उपांग इस अपेक्षाकूं विचार अगर कल्याणक न होता निंदनीक होता तो १२ पर्षदाके समक्ष ये गर्भापहारनाटक परमसम्यक्ती सूर्याभदेव कैसें कर दिखाता, इसवास्ते गर्भापहार कल्याणक न मांननेसैं उत्सूत्रभाषकपणा सिद्ध होताहै तुम अपणा पक्षमैं ग्रहस्थोंको करणे सूत्रसैं विरुद्ध प्ररूपणा करतेहो इसवास्ते मैं भुजा ठोककर तुमैं समझाताहूं कै गौतमादिक गणधर श्रुतकेवली जो पाटानुपाट गर्भापहार कल्याणक मानते प्ररूपते चलेआये जिसकों क्यों स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियोंसैं सूत्रपाठ विराधते हो इत्यादिक अनेक शुद्ध जिनवचनानुसार समझाणेसैं अनेक भव्यजीव समझकर शुद्धश्रद्धानपर थिर हुये इनके पट्टपर श्रीजिनदत्तसूरिः हुये जिनोंनैं अपणे गुरूकी स्तुतिमैं लिखाहै हे गुरु ये अपूर्वमहिमा आपकीहै सो जो सूत्रविरुद्ध प्ररूपणा करणेवाले द्रव्यलिंगिये गर्भापहारका कल्याणक नहीं माननेवालोंकों नहीं दृष्टिगोचर हुवा अैसा जो सूत्रपाठ सो आप देखकै उनोंकै वास्ते प्रगटकर दिखाया आचारांगकी टीकामें पांच उत्तराफाल्गुनीमैं हुये स्वातीमैं निर्वाण पाये अैसा लिखाहै लेकिन् ५ वस्तु हुआ अैसा नहीं लिखाहै बाकीके ४ कों कल्याणक कहै तो ५ मां कल्याणक स्वतःसिद्ध हो चूका, श्रीहरिभद्रसूरिरचित यात्रापंचासककी टीकामैंभी अभयदेवसूरि टीका करते सामान्य कथनसैं ५ कल्याणक दिखायाहै विशेष कथन उहां नहीं कराहै अगर प्रतिपक्षी अैसा कहेंगेकी अभयदेवसूरिःनें गर्भापहारका दिन क्यों नहीं

लिखा गर्भापहार कल्याणक होता तो दिनभी लिखते, अहो प्रतिपक्षियो, जब कल्पसूत्रके मूलपाठसैं गर्भमें आयेबाद ८३ मां दिनगर्भापहारका लिखदियाहै इससें तिथि प्रगट सिद्धहै आसाढ सुदि ६ गर्भमें अवतरै तब आश्विनसुदि १३ तेरस गर्भापहार कल्याणक तिथी हुईया नहीं जो तुम यात्रापंचासककी टीकामैं गर्भापहारका दिन नहीं लिखणेसैं क्या गर्भापहार आश्विनवदि १३ कों नहीं मानोगे तिथी नहीं लिखणेसैं कल्याणक नहीं मानोगेतो अैसे तो बहुतसैं लेखसूत्रोंमेंही नहींहै साधूपाणी रातकों कितना वजनमुजब रखै और संवेगी सबसाधू विद्यमान कालमैंभी रखतेहैं उपाशकदशासूत्रमें आनंदजीकै १२ कोटि सोनइये नगदीका वयानहै तो स्त्रीके गहना अणघटित सोना बासण बरतन प्रमुख उसके घरमैं थाया नहीं निशीतसूत्रमें वेप्रमाण ओघा रखणेवालेकों डंड लिखाहै लेकिन् प्रमाण विलकूल लिखा नहीं तो फेर ओघेकी डंडी किस प्रमाण रखणेमैं आतीहै प्रवचन सारोद्धार पीछे वणाहै ओघे डांडेके मोगरा किस शास्त्रमैं लिखाहै पातरोंके किसमुजवरंग लगातेहो ये किस शास्त्रमें लिखाहै आनंदजीके ४० हजार गऊथी, कामदेवजीके ८० हजार वतलावो वछावछी होताथा उसकूं रखेतो व्रतभंग वेचे तो कर्मादान लगे इत्यादि लेख शास्त्रोमैं हजारों नहींहै तो क्या मानोंगे नहीं गर्भापहारका दिन जब कल्पसूत्रमैं लिखा मौजूदहै तो फेर अैसे उलटे प्ररूपककों क्या समझना सो वुद्धिवान् विचार सकतेहैं, तपगच्छके, कुलमंडणसूरिः अपणे वनाये ग्रंथमैं छकल्याणक महावीरदेवके मंजूर कियाहै वृहद्गच्छ खरतर इसकी सामाचारी आगमानुसार देखके परपक्षियोंनें संवत् सोलेसैं अपणा सिक्का अलग जमानेकूं किसीअेकने सामाचारी भिन्न करकै ३० वोल कुछकेकुछ लिखडाला उनोंके आचार्योंनें खराब समझा तब वह चला नहीं, लेकिन् किसी जगे उस १ का लिखा ग्रंथ रहगया, वह आधुनिक एकनें उसकों विधिमैं प्रकाशकर शुद्धसामाचारी ८४ गच्छकी एकथी उसमें भिन्न सामाचारी प्रगटकर जिनप्रतिमा निंदकमतकों छोड जिनप्रतिमा कबूल तो करा लेकिन् गुरुकुलवाससैं गीतार्थगुरुसैं आगम नहीं पढणेसैं और पिछले मतका मिथ्यात्व वासना रहणेसैं सोरठदेश शत्रुंजय तीर्थाधिराज जैसी भूमिकोंभी अनार्यदेशकी प्ररूपणाकरी, चतुर्दसीका विलकुल क्षय होणेसैं १३ जो दर्शनतिथी, उसमैं चारित्रतिथीकी क्रिया, उपवास, पोसह, पक्षीका कर्त्तव्यभी करणासरूकरा, भोलेजीवोंनें कबूल करलिया, लिखणेका तात्पर्य यह है की विवेकी जीवोंनें कदाग्रह छोड जिनाज्ञामुजब खरतरकी सामाचारी जाण कै इसकी क्रिया अनुष्ठान आचरण करणा देवचंद्रजी उपाध्याय जस विजयजी विक्रमसंवत् सतरेसैं कदाग्रह मिटाणेका प्रयत्न करा था नवपदजीकी पूजामैं खरतर तपा दोनों रचित एकजगे करकै पढणा

संघमैं सरू करा दिया, थोडी भिन्नता विजयसेनसूरिःजी पूर्वोक्त कदाग्रही ग्रथंसैं जो पूर्वोक्त ३० बोलोंमैंसैं गुजरातमैं सरूकीथी, उसकूं मिटाय, खरतर तपोंकों, सामाचारीसैं एककर देणा विचारा, लेकिन् आयुष्य दोनोंका पूर्ण होगया, अबभी समयानुसार दोनों गीतार्थ मिलकै अेकता करसकतेहैं, मुक्ति पहुंचणे, दोनों साधुओनें स्त्री परिग्रह छोडाहै, भेदभाव मिटाणा आत्मार्थियोंकों कामहै, इस एकतासैं, धर्मकी निश्चैवृद्धि होगी, तपागच्छी कहतेहैं जिनवल्लभसूरिःनैं ६ कल्याणक, महावीर प्रभूके प्ररूपे, खरतर गच्छवाले कहतेहैं गणधरोंसैंही षट्कल्याणककी प्ररूपणा चली आतीहै, जिसकों चैत्यवासी शिथिलाचारियोंनैं उत्थापकर ५ की प्ररूपणा करी, उनोंसुजब ही धर्मसागरजी उपाध्याय विजयदानसूरिः जीके चेलेनैं ३० बोलोंमैं, ६ कल्याणकभी उत्थाप दिया, कुमतिकुद्दाल नामका ग्रंथ बणाया, औष्ट्रिक वगेरे अपशब्दोंकी वृष्टि करी, इससे पहिले तपगच्छका कोईभी ग्रंथ खरतर गच्छसैं भिन्न सामाचारीके कदा ग्रहका नहींहै, तब श्रीजिनचंद्रसूरिः पाटणमैं, सब वर्त्तमान उस वक्तके गीतार्थ आचार्य उपाध्याय, वाचक, पन्यासोंकों, एकठेकर, सभामैं धर्मसागरजीकों बुलाया, सब आये, धर्मसागरजी नहीं आये, तब ये बात, हीरविजयसूरिःजीनें सुणी, और विजयदानसूरिःजीकों लिखा, विजयदानसूरिः मेडतानग्रमैं, जो प्रतियैं इस कुमतिकुद्दाल ग्रंथकी पाई, सब जलशरण करदी, लेकिन् कोई प्रति किसी जगे रहगई, ये वात सुण हीरविजयसूरिःने, अपणे संघमैं, हुक्मनामा जारी किया, उसमैं ७ हुक्महै, ये पत्र तो विकानेरवडे उपासरेके भंडारमैं अभी मौजूदहैं, उसमैं खरतर गच्छकों अपणे मंतव्यमुजब जिनाज्ञामुजब लिखाहै, आजकलकै ग्रंथभाषामैं बणाके छपाणेवालोंनैं जो जिनवल्लभसूरिः श्रीजिनदत्तसूरिकों अपशब्द लिखा, तो फेर उन लिखणेवालोंकी पोलभी, केई २ पंडितोंनैं खोलणेमैं कमी नहीं रखीहै, रैलिक इत्यादि, खरतर तपा दोनों पूर्वाचार्योंके रचै ग्रंथ दोनोंही गच्छवाले, वांचतेहैं, अगर अेकता नहीं होती तो सभामैं, पढके कैसैं सुणाते, बस अेकता करणाही श्रेयहै.

कोई आजकल ऐसाभी कहतेहैं साधवी व्याख्यान सर्वथा नहीं करे, ये कहणाभी असंगतहै, सूत्रोंमैं साध्वियोंकों, इग्यारे अंगोंकी पढणेवालियां फरमाईहै, व्याख्यान, साधवी, श्रावक, श्राविका, दोनों उपस्थितसैं, करसकतीहै, फक्त श्रावकोंकेसन्मुख नहीं करसक्ती, इसवावत तपागच्छी सेनप्रश्नमैं इसतरे लिखाहै.

तथा साध्वी श्राद्धानामग्रे व्याख्यानं न करोतीत्यक्षराणि कुत्र ग्रंथेसंतीति, अत्र दशवैकालिकवृत्ति प्रमुखग्रंथमध्ये, यतिः केवलश्राद्धीसभाग्रे, व्याख्यानं न करोति, रागहेतुत्वादि-

त्युक्तमस्ति, तदनुसारेण साध्व्यपि केवलश्राद्धसभाग्रे व्याख्यानं न करोति, रागहेतुत्वा-
दिति ज्ञायते, इति ॥ १३ ॥

केईयक ऐसाभी कहतेहैं जो ग्रहस्थ १२ व्रतधारी नहींहै उनोंनैं प्रतिक्रमण क्यों करणा क्योंके प्रतिक्रमण तो व्रतोंमें अतीचार लगे, उसकूं करणा योग्यहै, उत्तर, हे महोदय, जैसैं सरकारी सेनाके सिपाही, कवायत, प्रेट, क्रिकट, करतेहैं, इसकारणकों समझो, ये करणा, उस आगामी कार्यसिद्धिकेवास्तेहै, जो व्यवहार साधेगा, वह किसी-नकिसीदिन, काललब्धिसैं, निश्चय आवश्यकका फलभी हासल करेगा, तैसैंही, यह प्रतिक्रमणकूं, आवश्यक कहाहै, यदवश्यंक्रियते तदावश्यकं, जो अवश्य करणा उसकूं आवश्यक कहतेहैं, हमारे जैनसंघमैं, इस आवश्यकका अर्थ जाणनेवाले स्वल्पहै, केवलसूत्रोच्चारणमात्र, प्रतिक्रमण करते हैं, उनोंकों, फक्त द्रव्यआवश्यक समझणा, भावप्रतिक्रमण जबही सिद्ध होगा की, जब यह प्रतिक्रमणसूत्रके उच्चारतेसमय, अर्थोंपर लक्ष देतेंरहेंगें, इसवास्ते मेनैं, अर्थयुक्त छपानेका प्रयत्न कियाहै, विस्ताररुचिवाले कहेंगेंकी संक्षेप अर्थ लिखाहै, सच्चहै, विस्तारअर्थनीचे लिखाजाणेसैं, सूत्रका मूलअर्थ, अल्पज्ञोंके, समझमैं, आणा मुस्कल था, इसवास्ते, सूत्रार्थही, अबोधिजीवोंके,बोधकेवास्ते लिखाहै, संक्षेपजाणेवाद, विस्तारार्थ जाणना सुलभ होगा, दूसरा आजकल जैनसंप्रदाईयोंका, खयालत, यहभी बहोतहै, इसपुस्तकके दाम जादाहै, छापेका क्या, अेक पोथीदीकी,झटहजार दो हजार नकल,तइयार होजातीहै, इसमैं तो, हम इतनाही, कहणाकाफी समझतेहै, गर्भवंतीकी वेदना, वंध्यास्त्री क्या समझतीहैं, जो ग्रंथ बणातेहैं, लिखतेहैं, और शुद्ध करतेहैं, वही तत्वज्ञ, इसस्वरूपके वेत्ताहैं,दामफक्त लगीहुई रकमके, साहूकारके व्याजअदातक,लगाणा वाजबहै, हजार पुस्तक कितनेवर्षोंसें विकेगी, विवेकीजाणसक्ते हैं सीधा छपाणेसैं, टव्वार्थ छपाणेमैं, दामडोढेलगेहैं, मेरे घरमैं प्रेस नहींहै, सो सस्तादाम वणादूं, गुणकेग्राहक तो अपूर्वपरिश्रम देख,मन और धनसैं उत्साहता दिखलातेहैं, अेक मुस्त सबकोई खरीदेतो, सवाया दाम लगाके, मैं देसक्ताहूं, सत्यप्रतिज्ञाहै, अन्यथा तो, कृपणोंका स्वभावहै, दिलचाहेसो कहै, यतः नार्घंति रत्नानिस-मुद्रजानि, परीक्षका यत्र न संति देशे, आभीरघोषे किल चंद्रकांतं, त्रिभिर्वराटैप्रवदंतिगोपाः,' १, अर्थ, समुद्रके पैदाभयेरत्नपूजाप्रतिष्ठा नहीं पातेहैं, परीक्षक जिस देशमैं नहींहो, आभीरदेशकेघोष निश्चै चंद्रकांतरत्नका गोवालिये तीनकोडी मोल कहतेहैं, तद्वत्, अस्तु, इस अर्थके लिखणेमैं दोष रहाहोय तो विबुधजन शुद्धकर पढेगें, मुझैं इस प्रतिक्रमण-सूत्रकी टीका मिली नहीं, न सब स्तोत्रोंकी, लेकिन सद्गुरु, तथा वाग्वरदाकी कृपासैं, भापार्थ लिखाहै, शब्दोंका अर्थ अनेकांतहै, छापेके दोषसे जो अशुद्धियां रहीहोय, तो महाशय क्षमेंगें.

(छपेहुये ग्रंथोंका विज्ञापन)

नूतन रत्नसागर, मजवूत कागद आगेसैं वहोत उपयोगी वस्तुयें ज्यादा जैन-धर्मका सव धर्मकर्त्तव्य इसमैं लिखाहै. ५)

पूजामहोदधी, ३७ पूजा गायन विधियुक्त २)

वैद्यदीपक, जैनवैद्यकीका अपूर्वग्रंथ ३५ हजार इसमैं देशी युनानी डाक्तरी होमियोपथी सर्वविद्या इसमैं मोजूदहै यथानामा तथागुणा ५)

शकुनशास्त्र, श्रीजिनदत्तसूरिरचित, इसमें दोपग्गे, चोपग्गेका शकुनफल, अंगफुरकण, गिलेरीपडन, वस्तुकीतेजीमंदी, कालसुकाल देखणा, जमीन-श्रेष्ठनेष्ट इत्यादि अनेक विवरण, राजियेका दोहा ॥=)

महाजनमुक्तावली, अश्वपति ६७६ गोत्रउत्पत्ति महेश्वरी, अग्रवाल, श्रावगी, हूंवड इत्यादिक ४ वर्णोत्पत्ती अनेक विवरण १॥)

सत्ज्ञानचिंतामणि, शोलेचाणाक्यका अर्थ मनचिंता कहणेकी शकुनावली, जैनस्वरोदय भाषा, ॥=)

सिद्धमूर्त्ति, मुसलमान, ईसाई, कवीर, दादू, नानक, इत्यादि मतोंसैं मूर्त्ति-सिद्ध, आर्यासामाजियोंकों उत्तर, जैनधर्म सबधर्मोंसैं आदिसिद्ध दर्शायाहै, ॥)

सिद्धमूर्ति भाग दूसरा, ३२ सूत्रोंके मूलपाठसैं मूर्तिपूजासिद्ध दर्शाईहै, २२।१३ पंथियोंके ७४ प्रश्नोंका उत्तर, ३२ सूत्रोंमें जो फर्कहै, वहभी दर्शायाहै, ।॥)

ग्रहस्थ व्यवहार, संसारनीति, धर्मनीति, धन कमाणेका यह ग्रंथ है, १)

करुणावत्तीसी, दादागुरुकी मंत्रयुक्त गायनपूजा, मनकामनासिद्धिमंत्र ।)

गुणविलाश २२ समुदायका, इसमैं १३ पंथीयोंकों उत्तर, भावनाविलास, २४ जिनसवइया, अणगार ३२ पांचसमवायसवइया, साधूकरणी, श्रावक-करणी, और वैराग्यउपदेशके अनेक स्तवन १)

सामुद्रकस्वप्नकल्पतरु, इसमैं पुरुष और स्त्रियोंके अंगके शुभाशुभफल, स्वप्न-आताहै उसका फल, ॥=)

(पुस्तक मिलणेका पत्ता)

१ वीकानेर मारवाड उपाध्याय श्रीरामलालजीगणिःकी विद्याशाला मोहल्लारांघडी.

२ मुंवई विचला भोईवाडा, श्रीचिंतामणिजीका मंदिर वैद्य, वाचक श्रीजीवणमलजीगणि.

३ मुंवई पायधोणी जैनमांगरोलसभा, मेघजी हीरजी वुकसेलरपास.

खरतर बृहद्गच्छ अर्पणपत्रिका.

श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनचारित्रसूरीश्वरजी वीकानेर.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनचंद्रसूरीश्वरजी, जयपुर.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीसिद्धसूरीश्वरजी, वीकानेर.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनरत्नसूरीश्वरजी लखनेऊ.
श्रीमन् जं. यु. प्र. भ. श्रीजिनफत्तेंद्रसूरीश्वरजी बालोतरा.
श्रीमन् संवेगी आचार्य श्रीजिनयशसूरिः
श्रीमन् संवेगी मुनिराजपंडितप्रवर श्रीकृपाचंद्रजीमुनिः
संवेगी श्रीमन् पं. प्र. तिलोकसागरजीमुनिः.
श्रीमन् पं. प्र. सुमतिसागरजीमुनिः मणिसागरजीमुनिः
श्रीमती संवेगण साध्वी लक्ष्मीश्रीजी पुण्यश्रीजी सोवनश्रीजी प्रतापश्रीजी विवेकश्रीजी सिणगारश्रीजी विमलश्रीजी प्रेमश्रीजी प्रमुखठाणे १५१ खरतरगण धर्मोपदेशक यती वर्ग १०००१ जयतु रायसाहब श्रीबद्रीदासजी राजकुमार सिंहजी रायकुमारसिंहजी कलकत्ता.
सेठ श्रीमान् चांदमलजी केसरीमलजी रतलाम.
सेठ श्रीमान् जीतमलजीनथमलजी, लस्कर गवालियर
सेठ श्रीमान् फूलचंदजी नेमिचंदजी, फलवर्धी.

औरभी दादागुरुदेवकेभक्त खरतरगच्छानुरागी सर्वश्रीसंघके येपुस्तक मैं अर्पणकर्त्ताहूं. अगर श्रीमान मुझें मदतदेतेरहेगें तो जरूर मैं खरतरबृहद्गच्छकी जैसी सेवा बजाताहूं क्षयोपशम मुजबदिन २ अधिक २ तर बजाता रहूंगा.

आपका कृपाभिलाषी जैनधर्मोपदेशक उपाध्यायश्रीरामलालगणिः वाचक. श्रीजीवणमल्लगणिः शिष्य पं. फूलचंद्र पं. विजयचंद्र, चि. प्रेमचंद्र चि. अमरचंद्र, बृहत्खरतर भट्टारकगच्छ वीकानेर मारवाड विद्याशाला, ये सर्व पुस्तक सरकारके ऐनमुजब रजिष्टरहै कोई दूसरा छापेगा तो दंड भागीहोगा.

अनुक्रमणिका.





प्रथम ग्राहक महाशय.

जं. यु.- प्र. भ. १००८ श्रीजिनचारित्रसूरिः वृहत्खरतराचार्य,	५
साधवी श्री सोवनश्रीजी फत्तेश्रीजी सा. श्री आनंदश्रीजी श्रीकल्याणश्रीजी	५
पं. श्री गणेशचंद्रजीमुनिः चीदाशर	१
सा. श्री गोपालचंद्रजी वांठिया, वीकानेर.	१
सा. श्री पेमकरणजी मरोटी, वीकानेर.	१
साधवीश्री प्रेमश्रीजी.	५
सा. श्री जमुनालालजी कोठारी.	५
रायसाहव वद्रीदासजीराज कुमार रायकुमारसिंह कलकत्ता.	५
सा. श्री धनसुखदास मेघराज लूणिया वीकानेर.	१
सा. श्रीइश्वरदास पूनमचंद चोपडा वीकानेर.	१
सा. श्री मानमल केसरीचंदसांड वीकानेर.	१
सेठ श्री मंगलचंदजी शिवचंद झावक. चीकानेर.	१
सा. श्री फूलचंद नेमचंद गुलावचंद गोलछा फलोधी.	१
पं. प्र. श्री पूनमचंद सुमेरमलमुनिः वीकानेर.	१
सा. श्री सुगुणचंद्र गंगाराम वेगाणी वीकानेर.	१
सेठ श्री पूनमचंदजी दीपचंदजी सावणसुखा वीकानेर.	१
सा. श्री सदाराम शिखरचंद गोलछा वीकानेर.	१
सा. श्री शिववगसजी कोचरमुंहता वीकानेर.	१
सा. श्री पूनमचंद आनंदमल कोठारी वीकानेर.	१
सा. श्री उंकारजी भेरूलाल माणकलाल महिंदपुर.	१
श्रीयुत हेमकरणजी मरोटी चंद्रपुर.	१
सा. श्रीसूरजकरणजी अभाणी वीकानेर.	१
सा. सहकिरण मरोटी मुकाम वधनूर.	१
सा. केसरीमल सांखला तिवरी.	१
सा. अमोलकचंदजी चोरडीया खजवाणा.	१
सा. चुनीलालजी छाजेड किसनगड.	१

श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नमः

खरतरबृहद्गच्छीयसार्थपंचप्रतिक्रमणसूत्र

नमस्कारअरिहंतोंको, नमस्कारसिद्धोंकों, नमस्कारआचार्योंकों,
नमोअरिहंताणं, नमोसिद्धाणं, नमोआयरिआणं,
नमस्कारउपाध्यायोंकों, नमस्कारलोकमेंसर्वसाधुओंकों, येपांचनमस्कार,
नमोउवज्झायाणं, नमोलोएसव्वसाहूणं, एसोपंचनमोक्कारो
सर्व्वपापोंकानासकरणेवाला, मंगलफेरसवोंमें, प्रथमहोयमंगल, १
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणंचसव्वेसिं, पढमंहवइमंगलं, १
चाहताहूं हेक्षमाश्रमणसाधू, वंदनाकरणे शक्तियुक्त,, शरीरसेति,
इच्छामिखमासमणो, वंदिउजावणिज्जाए, निसीहिआए,
मस्तकसें वंदनकरताहूं,१, इच्छाकर्त्ताहूंहेभगवान्, सुखसेंरात्री, सुखसेंदिन,
मत्थएणवंदामि,१, इच्छकारभगवन, सुहराइ, सुहदेवसी,
सुखसेंतपस्या, शरीररोगरहित, सुखसेतीसंजमकीजात्रा, सुखसेंनिभातेहो,
सुखतप, शरीरनिराबाध, सुखसंजमजात्रा सुखेनिरवहोछो,
हे स्वामीआपकेसुखशाता,
हे स्वामीसुखशाता,
इच्छाकरकै, आज्ञादेओ, हेभगवान्, रस्तेगमनकरते पीछाहटताहूं,
इच्छाकारेण, संदिसह, भगवन्, इरियावहियंपडिक्कमामि,
गुरुकहे पीछाहट, प्रमाणमुजब, चाहताहूं, पीछेहटना, रस्तेमेंचलते
(पडिक्कमह), इच्छं इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए,
जीवकीविराधना, जाते, आते प्राणियोंकोंदाबाहो, बीजोंकोदाबाहो,
विराहणाए, गमणा, गमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे,
गीलीवनस्पतीदावीहो, ओस, कीडीनगरा, फूलण, पाणी, मट्टी, मकडीकाजाला,
हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग, पणग, दग, मट्टी, मक्कड, संताणा,
दाबाहो, जो कोइ मेनें जीवविराधाहो, एकेंद्रीयजीव, दोइंद्रीयजीव, तीनइं-
संकमणे, जेमेजीवाविराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदि-

द्रिय, चारइंद्रियजीव, पांचइंद्रियजीव, सन्मुखआतेहणा, धूडसेंढका, जमीनपरघसा,
या, **चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया,**
सामलकिया, अडाया, परितापउपजाया, खेदपहुंचाया, त्रासपहुंचाया,
संघाइया, संघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया,
एकठिकाणेसें दूसरीजगेरखा, जीवितव्यसेंरहितकिया, उसकापापमिथ्या
ठाणाओठाणसंकामिया, जीवियाओववरोविया, तस्समिच्छामि
हुओमेरा, उसकाफेरशुद्धिकरणेकूं, प्रायश्चित्तकरणेकूं, विशेषपणेशुद्धिक
दुक्कडं, तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर
रणेकूं, शल्यरहितकरणेकूं, पाप, कर्म्मोंका, समस्तपणेघातकरणेकूं
णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणठाए,
करताहूं कायोत्सर्ग, ये१२वातवर्जके, उंचाश्वास, नीचाश्वासलेणेसें, खासीसें,
ठामिकाउसग्गं, अन्नत्थ, उससिएणं, निससिएणं, खासिएणं,
छीकसें, जंभाइखाणेसें, डकारसें, अधोवायुनिकलणेसें, चक्करआणेसें, पित्त
छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त
कीमूर्छासें, जरासाअंगहिलाणेसें, जरासा खंखारके आणेसें,
मुच्छाए, सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,
जरा आंखेटमकारणेचलाणेसें, इनोंकोंआदिलेकर, आगारवर्जके, अखंडित
सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो,
अविराधित, हुओमेरा, कायाकाउत्सर्ग, जहांतक, अरिहंत, भगवं
अविराहिओ, हुज्जमे, काउसग्गो, जाव, अरिहंताणं भग
तोंकों, नमस्कारकरकै, नहीमेंपारपहुंचाउं, उहांतककायाकूं, एकठिकाणे, मौनसें,
वंताणं, नमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं
ध्यानसें, आत्माकूं वोसराताहूं,
झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि,

लोककेविषैउद्योतकारी, धर्मतीर्थकेकरणेवालेजिन, अरिहंतोंकोमेंकीर्त्तनकरूंगा,
लोगस्सउज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंतेकित्तिइस्सं,
चोवींसोकेवलीभगवान,१, ऋषभफेरअजितकोंवंदू, संभवअभिनंदन, फेर,
चउवीसंपिकेवली,१, उसभमजिअंचवंदे, संभवमभिणंदणं, च,

सुमतीकों, पद्मप्रभुकोंसुपार्श्वकों, जिनवरफेरचंद्रप्रभकोंवंदू,२, सुविधिफेरदूस
सुमइंच, पउमप्पहंसुपासं, जिणंच चंद्प्पहंवंदे,२, सुविहिंच
रानामपुष्पदंतकों, शीतल, श्रेयांसकों, फेरवासुपूज्यकों, विमल, अनंतफेरजिनकों,
पुप्फदंतं, सियल, सिज्जंस, वासुपुज्जंच, विमल, मणंतंचजिणं,
धर्मकों, फेरशांतिकोंवांदताहूं,३, कुंथु,अर, फेरमल्लिकों, वंदताहूंमुनिसुव्रतकों, नमि
धम्मं, संतिंचवंदामि,३, कुंथुअरंचमल्लिं, वंदेमुणिसुव्वयं, नमिजि
जिनको, वंदताहूंअरिष्टनेमिकों, पार्श्वतैसेंफेरवर्धमानकों,४, एसेंमेनेस्तवेहुये,
णंच, वंदामिरिट्ठनेमिं, पासंतहवद्धमाणंच,४, एवंमएअभि
झडकायाहैकर्मरजमैल, क्षयकिये जरामरण, चौवीसोंहीसामान्यकेवलि
थुआ, विहुयरयमला, पहीणजरमरणा, चउवीसंपिजिण
योंमेंश्रेष्ठ, तीर्थंकरोमेरेपरकृपाकरो, ५, कीर्त्तनायोग्य, वंदनायोग्य पूजाकेयोग्य, जोइस
वरा, तित्थयरामेपसीयंतु, ५, कित्तिय, वंदिय, महिया, जेएलो
लोकमें, उत्तमसिद्धभये, निरोगता सम्यक्दर्शनकालाभ, समाधिप्रधानउत्तमदेओ६,
गस्स, उत्तमासिद्धा, आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमंदिंतु ६,
चंद्रमाकेसमूहोंसेंजादानिर्मल, सूर्योंकेसमूहोंसेंजादाप्रकाशकारक, समुद्रकीतरे प्रधान
चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसुअहियंपयासयरा, सागरवर
गंभीर सिद्धभगवानोसिद्धिमुझकोंदो,
गंभीरा, सिद्धासिद्धिं ममदिसंतु,

इच्छाकरके आज्ञादेओ, हेभगवान्, जाणेआणेमेंभयापापकोंविचारूं,
इच्छाकारेणसंदिसह, भगवन्, गमणागमणआलोउंजी,
इच्छाकरके, आज्ञादेओ, हेभगवन्, प्रसादकरकै, समताकरणेकादंडकपढावो,
इच्छाकारेण, संदिस्सह, भगवन्, पसायकरी, सामायकदंडकउच्चरावो
कर्त्ताहूं हेपूज्यसामायक, पापकारीजोगकाप्रत्याख्यान, जहांतकनियममें,
करेमिभंते सामाइयं, सावज्जंजोगंपच्चख्खामि, जावनियमं
सेवाकर्त्ताहूं, दोप्रकारतेसेंतीनप्रकार, मनकरकै, वचनकरकै, कायाकरके,
पज्जुवासामि, दुविहंतिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं,
नहींकरूं, नहींकराउं, उसपापोंसेंहेपूज्यपीछाहटताहूं, निंदताहूं, गुरुकी
नकरेमि, नकारवेमि, तस्सभंतेपडिक्कमामि, निंदामि, गरि

साखनिंदताहूं, आत्माकूं पापोसेंछुटाताहूं,
हामि, अप्पाणं वोसिरामि,
भगवान् दशार्णभद्र, सुदर्शन, थूलभद्र, वज्रस्वामीआदिक, सफलकि
भयवंदसणभद्दो, सुदंसणो, थूलभद्द, वयरोय, सफली
यागृहस्थावासछोडके, साधूइसप्रकारकैहोतेहैं, १, साधुओंकेवंदनकरणेसें.
कयगिहचाया, साहूएवंविहाहुंति, १, साहूणवंदणेणं,
नासहोताहैपाप, शंकारहितभावोंसें, प्रासुकदाणदेनेसें, निर्जराकर्मोंकीहोतीहै,
नासइपावं, असंकियाभावा, फासुअदाणे, निज्जर,
समस्तपणेग्रहणहोताहैज्ञानादिकका, २, छद्मस्थपणेमनकीमूर्खतासें, कितनेमा
अभिग्गहोनाणमाईणं, २, छउमत्थोमूढमणो, कित्तिय
त्रभी, यादकरेयेजीव, जोफेरनहींयादआवैमुझकों, मिथ्या, मेरा,
मित्तंपि, संभरइजीवो, जंचनसंभरामिअहं, मिच्छा, मि,
पाप, उनसबोंका, ३ जोजो, मनकरकेविचाराहो, अशुभ, वचनसें, भाषणकिया,
दुक्कडं, तस्स, ३ जंजं, मणेणचिंतिय, मसुहं, वायाए, भासि
होथोडासाभी, अशुभकायासेंकियाहो, मिथ्याहुओमेरापापउनसबोंका, ४,
यंकिंचि, असुहंकाएणकयं, मिच्छामिदुक्कडंतस्स, ४,
सामायकपोषधमेंअच्छीतरेरहेभये, जीवोंकाजाताहैजोकाल,
सामाइयपोसहसंठियस्स, जीवस्सजाइजोकालो,
वहसफलजांणना, बाकीसवसंसारफलके, कारणहै, ५,
सोसफलोबोधव्वो, सेसोसंसारफलहेउ, ५,
अबचैत्यवंदन, जयवंतरहो, हेतीनभुवनमें, प्रधानकल्पवृक्ष,
अथचैत्यवंदन, जय, तिहुअण, वरकप्परुक्ख,
जयवंत, जिनधन्वंतरवैद्य, जयवंततीनभुवनमेंकल्याणकेभंडार, पाप,
जय, जिणधन्नंतरि, जयतिहुअणकल्लाणकोस, दुरि
रूपहस्तीकूंसिंहजेसें, तीनभुवनकेमनुष्योंने, नहींउलंघीहेआज्ञाजिनोंकी,
यक्करिकेसरी, तिहुअणजण, अविलंघियाण, भुवण
हेतीनभुवनकेस्वामी, करोसुखोंकों, हेसामान्यकेवलियोंकेईश्वर, पार्श्वप्रभूस्तंभन
त्तयसामिय, कुणसुसुहाइं, जिणेस, पासथंभणयपु,

कपुरमेंरहेहुये,१, तुझकोस्मरते, पावै, जल्दी, प्रधान, पुत्रकलत्रस्त्रियादिकोंकों,
रहिय,१, तइंसमरंत, लहंति, झत्ति, वर, पुत्तकलत्तहिं,
धान्य, सोना, अणघडाभयासोनासेंभराभया, मनुष्यभोगेराज्यकों, देखेअनुभवे,
धन्न, सुवन्न, हिरन्नपुन्न, जणभुंजइरज्जहिं, पिक्खहिं,
मोक्षका, वेगिणतीकासुख, तुमारीकृपासेंहेपार्श्वप्रभू, इसकारण, हेतीनभु
मुक्ख, असंखसुक्ख, तुहपासपसाइण, इय, तिहुअ,
वनकेप्रधानकल्पवृक्ष, सुखोंकोंकरो, मेरेहेजिनराज,२ ज्वरसेंजर्जर,
णवरकप्परुक्ख, सुक्खहिकुण, महजिण,२, जरजज्जर,
गलतकोढसेंशडेहुयेकान, गयेहैंहोठ, एसेकुष्टी, फूटीहैआंख, क्षीणभयेक्षयसें
परिजुन्नकन्नु, नट्ठु, सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण, खए
दुर्बल, मनुष्य, शूलरूपीशल्यवंत, हेजिनतुमारे, स्मरणतथासरणरूप
णखुन्नु, नर सल्लिअसूलिण, तुहजिण, सरणरसायणे
रसायणसें, जलदीहोय, फेरनये, हेजगधन्वंतर, पार्श्वप्रभुमेराभी, तुमरोगके,
ण, लहुहुंति, पुणन्नव, जयधन्नंतरि, पासमहवि, तुहरो
हरणेवालेहुओ, ३, विद्या, जोतिष, मंत्र, ओरतंत्रोंकी, सिद्धियें, विनायत्न
गहरोभव, ३, विज्जा, जोइस, मंत, तंत, सिद्धिओ, अपय
किये, तीनभुवनमेंअचरजकारी, आठप्रकारकीसिद्धि. सिद्धहोयतुमारेनामसें,
त्तिण, भुवणब्भुअ, अठविहसिद्धि, सिज्झइतुहनामिण,
फेरतुमारेनामसें, अपवित्र, मनुष्यभी, पवित्रहोताहै नीचकुलकाभीउच्चपदधराताहै,
तुहनामिण, अपवित्तओवि, जणहोई, पवित्तओ, तं
इसवास्तेतीनभुवनकेकल्याणकोसभंडारतुमकोहेपार्श्वपंडितोनेंकहा, ४, दुष्टजो
तिहुअणकल्लाणकोसतुहपासनिरुत्तउ, ४, खुद्दप
कियामन्त्रतंत्रजंत्रउनोंकोंनिरफलकरताहै, जंगमऔरथावरजहरग्रहमंगलादि
उत्तइमंततंतजंताइंविसुत्तई, चरथिरगरलगहुग्ग
तलवारयुक्तवैरियोंकावर्गोंकोंगंजताहै, दुःखीजनोंकेसमूह, जोकीअनर्थमेंफसग
खग्गरिउवग्गविगंजइ, दुत्थिअसत्थ, अणत्थघ
योंकों, सुखीकरतेहैंदयाकरकै, उपद्रवोंकोहरो, श्रीपार्श्वदेव, इसकारण
त्थ, नित्थारइदयकरि, दुरियइहरउ, सुपासदेव, दु

आपदुरितगजकोंसिंहजेसेहो, ५, तुमारीआज्ञाथांभदेतीहै, डरावणेमदोन्मत्त
रिअक्करिकेसरि, ५, तुहआणाथंभेइ, भीमदप्पुद्ध
उत्कृष्टप्रधानदेवोंकों, राक्षस, यक्ष, नागकुमारोंकेवृंदोंकों, चौर, अग्नि फेरमे
रसुरवर, रक्खस, जक्ख, फणिंदविंद, चोरा, नल, ज
वकों, जलचरमकरादि, थलचारीसिंहादिक, डरावणेमारणेवालेपशू, जोगणियें, जोगी,
लंहर, जल, थलचारि, रउद्दखुद्दपसु, जोइणि, जोइय,
इसहेतू, तीनभुवनमें, आपकीआज्ञाकोईनहींलोपसक्ता, उत्कृष्टपणेवर्त्तोहेपार्श्वअच्छेस्वामी
इय, तिहुअण, अविलंघिआण, जयपाससुसामिय,
६, मांगेभयेअर्थदेणेवाले, अनर्थोकानाशकरणेवाले, भक्तिमेंभरेभये,
६, पत्थिअअत्थ, अणत्थहित्थ, भत्तिब्भरणिब्भर,
खडेभयेहैंरूंजिनोंके, मनोहरअंग, भुवनपतीव्यंतरमनुष्यवैमानिकदेव, जिनोंकासे
रोमंचंचिय, चारुकाय, किन्नरनरसुरवर, जसुसे
वतेहैं चरणकमलदोनों, केसेकचरणहैं, धोडालाहैकलहरूपपापजिनोंनें, वह,
वइंकम कमल जुअलु, पक्खालियकलिमलु, सो,
तीनभुवनकेस्वामी, श्रीपार्श्वमेरेमर्द्दनकरडारो, वैरियोंकाबल, ७, जयवंतहो यो
भुवणत्तयसामि, पासमहमद्दउ, रिउबलु, ७, जयजो
गीयोंके, मनकमलकेभमरे, जयवंतहोडरसेडरेकोंपिंजरकुंजर, जयवंतहोती
इय, मणकमलभसल, भयपंजरकुंजर, तिहुअण
नभुवनकेजनोंकेआनंदचंद्र, जयवंतहोतीनभुवनप्रकाशकसूर्य, जयवंतहोबुद्धिरू
जणआणंदचंद, भुवणत्तयदिणयर, जयमइमेइ
पपृथ्वीकों, सींचनेमेघ, जयवंतहो, जगत्जीवोंकेदादा, हेथंभणपुरमेंरहेपार्श्वनाथ,
णि, वारिवाह, जय जंतुपियामह, थंभणयठियपास
नाथ पणाकरोमेरे ८ अवयेछद्वारदिखातेहैं, बहुतभेदसेंविष्णु, अवर्णमाहेश्वर,
नाह, नाहत्तणकुणमह, ८, बहुविहवन्नु, अवन्नु, सु
शून्यमतीबौद्ध, पंडितोनेंवर्णनकियाषट्बुद्धिसें, मोक्षधर्मकेकाम, अर्थोकेअभिलाषासें, न्यारे२
न्नु, वन्निउंछप्पन्नहिं, मुक्खधम्मुकाम, त्थकामुनिरु
अपणे२वनायेशास्त्रोंमें जोध्यानसेंध्यातेहैं, बहुतसेदर्शनोंमेंरहेभये, बहुतसेतु
नियरसत्थहिं, जंझायइं, बहुदरसणत्थ, बहुना

मारेनामप्रसिद्धकररखेहैं, वहजोगियोंकेमनकमलकाभमरा, सुख, हेपार्श्वउत्क
मपसिद्धउ, सोजोइअमणकमलभसल, सुह, पास
र्षपणेवधावो, ९, डरसेंव्याकुल, आपसमेंघसणेसेंरणझणकरतेदांत, थरहरकांप
पवद्धउ, ९, भयविब्भल, रणझणिरदसण, थरहरियसरीर
ताशरीर, तरलातीभईआंख, विषादकरकेशून्य, गद्गदअप्रगटवाणी, करुणदीन, उसके
य, तरलिअनयण, विसन्नसुन्नु, गग्गिरगिर, करुणय, तइंस
संगशक्तिस्मरणकरणेसेंहोयनहींनासहोणेवालीवडीगुफा, मेराबुझावो, जल्दी
हसत्तिसरंतिहुंतिनिरुनासियगुरुदर, महविज्झवि, सज्झस
वहनिश्चैहेपार्श्वडर, इसवास्तेभयपिंजरकुंजरहो, १०, आपकोंदेखखुलेनेत्रपत्रउसके
हिपास, भयपंजरकुंजर, १० पइंपासविवियसत्तनित्तपत्तं
अंतसेंफेलाया, हर्षरूपआंसुओंकापूरउसमेंडूबे, वहोतदिनोंकादुःखदाहकों, वहाया मान
तपवित्तिय, वाहपवाहपवूढरूढ, दुहदाह,सुपुलिय, मन्नहि
तेहैं,मनमेंसंपूर्णपुण्य,अपणीआत्माकोंदेवतथानर, इसवास्ते,हेतीनभुवनकेआनंदचंद्र,
मन्नुसउन्नपुन्न,अप्पाणंसुरनर, इयतिहुअणआणंदचंद,
जयवंतपार्श्वजिनेश्वर,११,तुमारेकल्याणउत्सवकेविषै, सुघोषाघंटाकाटंकार,
जयपासजिणेसर,११,तुहकल्याण महेसुघंटटंकार, विपि,
संप्रेरित, वन्नरमालमाला, वडीभक्तिसें, इंद्रादिकरोमांचितहोके, हलफलजल्दी
ल्लिय, वल्लरमल्ल, महल्लभत्ति सुरवरगंजुल्लिय, हल्लुफलि
करतेहैंअपणे, भुवनमेंभी महोत्सव, इसकारणसेंतीनभुवनकेआनंदचंद्र,
यपवत्तयंति, भवणेहिमहूसव, इयतिहुअणआणंदचंद,
जयवंतहेपार्श्वसुखोंकीखान,१२,निर्मलकेवलज्ञानकेकिरणोंकेसमूहसें, विंध्वंसकि
जयपाससुहुब्भव, १२,निम्मलकेवलकिरणनियर, विहुरिय,
या,अज्ञानकासमूह, दिखलायासमस्तपदार्थसार्थ, विस्तारदियाक्रांतिकासमूह,
तमपहयर, दंसियसयलपयत्थसत्थ, वित्थरिअपहाभर, क
पापोंसेंमैले, जोमनुष्यहीघूघूलोकउनपापियोंकेनेत्रोंकेअगोचर, अज्ञानअंधेरे
लिकलुसिय, जणघुअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइनि
कोंनिश्चैहरो, हेपार्श्वनाथतीनभुवनकेदिनकर, १३, तुमारेस्मरणरूपजलवृष्टिसें,
रुहर, पासनाहभुवणत्तयदिणयर,१३, तुहसमरणजलवरस,

सींचीमइमनुष्यकीबुद्धिरूपपृथ्वी, नये२सूक्ष्मअर्थोंकाबोधरूपनयेअंकूरपत्र
सित्तमाणवमइमेइणि, अवरावरसुहमत्थवोहकंदलदलरेह
सोभतेहैं, होवैज्ञानकाफलभरपूर, हरीजेदुःखदाह, ओपमारहित, इसवास्तेआप
णि, जायइफलभरभरिय, हरियदुहदाह, अणोवम, इयमइमे
मतिमेदनीकोंमेघहो, देओहेपार्श्वबुद्धिमुझें, १४, करीसंपूर्णकल्याणकीवेल, १,
इणिवारवाह, दिसपासमइमम, १४, कयअविकलकल्लाणव
काटदियादुःखकावन, २, दिखायास्वर्गऔरमुक्तिकारस्ता, ३ दुर्गतिमेंजाणेकों
ल्लि,उल्लरियदुहवण, दाविअसग्गपवग्गमग्गदुग्गइगमवा
रोका, ४, जगत्केजीवोंकेवापकेवरावर, जिसनेंपैदाकिया, हितकारी, रमणीकधर्मः
रण, जयजंतुहजणएणतुल्ल, जंजणियहियावह, रम्मधम्म,
वहजयवंतपार्श्वप्रभु, जगत्जीवोंकेदादा, १५ तीनभुवनवनमेंनिवासदरी[गुफामें,]
सोजयउपास, जयजंतुपियामह, १५ भुवणारन्ननिवासद,
ऐसेजोपरदर्शनीदेवता, योगनियें, पूतना, क्षेत्रपाल, दुष्टदेवतादिक, प
रियपरदरसणदेवय, जोइणि, पूयण, खित्तवाल, खुद्दासुर, प
शुओंकासमूह, तुमारेकहेअर्थसेंभगेत्राससें, भययुक्त, वर्त्ततेहैं, इतनेकरतीनभु
सुवय, तुहउत्तठसुनट्ठसुट्ठु, अविसंठुल, चिट्ठइ, इयतिहु
वनवनमेंसींहजेसे, हेपार्श्व, पापोंकोंउत्कर्षपणेनासकरो, १६, धरणेंद्रकेफणोंकेदेदी
अणवणसींह, पास, पावाइंपणासइ, १६, फणिफणफारफु
प्यमान, रत्नमईकिरणोंसें, रंगाहुआआकाश, प्रियंगुकेनयेअंकूर, पत्तेतमालके, नी
रंत, रयणकर रंजियनहयल, फलिणीकंदल, दलतमाल, नी
लकमलजेसीश्याम, कमठअसुरकेउपसर्गवर्गके, संसर्गसेअगंजित, जयवंत
लुप्पलसामल, कमठासुरउवसग्गवग्ग, संसग्गअगंजिय, ज
प्रत्यक्ष, जिनेश्वरपार्श्व,स्थंभनपुरमेंरहेभये, १७, मेरामनचंचलप्रमादसें,
यपच्चक्ख, जिणेसपासथंभणयपुरट्ठिय, १७, महमणुतरल,
प्रमाणनहींहै, वचनभीठिकाणेनहींहै, निजशरीरभीअविनीत, स्वभावीहै,
पमाणुनेय, वायाविविसंठुलु, नियतणुरविअविणय, स
आलससेंपरवसहै, तुमारामाहात्मप्रमाणहै, हेदेव, करुणाकर
हाव,आलसविहिलंघलु, तुहमाहप्पपमाण, देव, कारुण्णप

केपवित्र, इसवास्तेमुझेंमतकृपाकरणेसेंअवगिणो हेपार्श्व पालोविलापकरतेकों, १८
वत्तउ, इयमइंमाअवहीर, पास, पालहिविलवंतउ,१८,

क्याक्याविचारानहींमनसें, दीनपणेसें, क्याक्यावचननहींबोला, क्याक्यानहींचेष्टाकरी,
किंकिंकप्पिउणेय, कलुण, किंकिंवनजंपिउ किंवनचिठि

कष्टसेंहेदेव, दीनताकूंधारणकरकायासें, कोणसा२नहींकियावोसबनिर्फलगया,
उ,किट्ठदेव, दीणइमविलंबिओ, कासुनकियनिप्फल्ल,

लुलताइ, मैंनेंदुखकीआर्त्तपीडासें, तोभीनहींपाया, रक्षाकुछभीशरणनहींपाई,
लल्लु, अम्हेहिंदुहत्ताइ, तहविनपत्तउ, ताणकिंपि, पइंप

आपप्रभुकेछोडदेणेसें, १९, तूंस्वामी, तूंमातातूंबाप, तूंमित्रप्यारकाकरणेवाला,
हुपरिचत्तइं, १९ तूंसामी, तूंमायवप्प, तूंमित्तपियंकरु,

तूंगति, तूंमत्ति, तूंहिजरक्षाकारक, तूंगुरु, क्षेमकाकर्त्ता, मेंदुखकेभारसेंभरा,
तुंगइ, तुंमइ, तुहिजताण, तुंगुरु, खेमंकरु, हुंदुहभरभा

रंककंगाल, हेराजेंद्र, मेंनिर्भाज्ञ, लियाहै, तुमारेचरणकमल,
रिय, वराउ, राउल, निभग्गउ, लीणउ, तुहकमकमल,

काहीशरण हेजिनमुझेंपालोअच्छीतरे,२०, तुमनेंकेईकियैनिरोगरोगरहित,
सरण, जिणपालहिचंगउ, २०, पइंकिविकयनीरोय,

लोक, केईपायेसुखसईकडों, केईबुद्धिवानहोगये, केईसर्वोत्तमहोगये
लोय, किविपावियसुहसय, किविमइमंत महंतकेवि,

केयोनेंसाधलियेशिवपद, केयोंनेंगंजडालावैरियोंकावर्ग, केयोंनें
किविसाहियसिवपय, किविगंजियरिउवग्ग, केविज

जसकीर्त्तिसेंसुपेदकरीपृथ्वीकों, हेप्रभुमुझेंनहींगिणताहै, किसकारण, हेपार्श्व,
सधवलिअभूअल, मइंअवहीरहि, केण, पास,

शरणागतवत्सल, २१, पीछाउपगारकराणेकीतुझेंवांछानही, हेनाथतेरेसिद्धहोगयेप्र
सरणागयवच्छल,२१ पच्चुवयारनिरीह, नाहनिप्पन्नपयोअ

योजन, तूंहेजिनपार्श्व, परोपकारकरणेतत्परहीहै, शत्रुपर
ण, तुहुंजिणपास, परोवयारकरुणिक्कपरायण, सत्तु

ओरमित्रपरसमबराबरहैचित्तकीवृत्ति, नमेपर, निंदकपर, सममनहो, मतअपमानकर
मित्तसमचित्तवित्ति, नय, निंदिअ, सममण, माअव

अयोग्यहूंतोभी,　　मुझेंहेपार्श्वनिरंजनपापरहित, २२, मेंवहुतप्रका
हीरि,　　अजुग्गओवि,　　मइंपासनिरंजण,　　२२, हुंवहुवि
रसें, दुःखसेंतपाभयाअंगहूं,　　तूंदुःखनासकरणेतत्परहै,　　मेंसुजनोंकेदयाकरणेका
ह,　दुहतत्तगत्तु,　　तुंदुहनासणपरु,　　हूंसुयणहकरु
स्थानठिकाणाहूं,　तूंनिश्चैदयाकरणेवालाहै,　　मेंहेजिनपार्श्वअस्वामिशाल
णिक्कठाणु,　　तुंनिरुक्करुणाकरु,　　हुंजिणपासअसा
निर्नाथहूं,　तूंतीनभुवनकानाथहैएसाहोकर,　　जोनहींधारताहै,　मुझेंविलापा
मिसालु, तुंतिहुअणसामिय,　　जंअवहीरहि,　मइंझ
तकरतेकों,　येवातहेपार्श्वनहींअच्छीहै,　२३,　योग्यअयोग्यकाभेदाभेदहेनाथ,
खंत,　　इयपासनसोहिय,　　२३,　जुग्गाजुग्गविभागनाह
नहींदेखतेहैं आपजैसे,　　तीनभुवनकाउपकारकरणेकातेरास्वभावहै,　　करुणा
नहु जोयहितुहसम,　भुवणुवयारसहावभाव,　　करु
दयारसमेंश्रेष्ठहै.जैसें,　　समऔरउंचीनीचीजगेक्यामेघदेखताहै,　जमीनकादाह,
णारससत्तम,　　समविसमह किंघणनएइ,　　भुविदाहु
समाते,　इसवास्तेहेदुःखियोंकेवांधव,　पार्श्वनाथ,　मेरीपालनाकर, स्तवनाकरतेकी
समंतहु, इयदुहबंधव　　पासनाह मइपाल,　थुणंतओ,
२४, नहींदीनोंकीदीनताकोंछोडके,　　औरभीकोइयोग्यताहोतीहै,
२४, नयदीणहदीणयमुएवि,　　अन्नाविकिंविजुग्गय,
जिसकोंदेखकेउपकारकियाजाय;　उपकारमेंउद्यमवंतमहापुरुषहोतेहैं,　मेंदी
जंजोइयउवयारुकरइ,　　उवयारसमज्जइ,　　दीणह
नसेंभीदीन फेरहीन,　जिसकारण, तैंनाथनेंमुझेंछोडा,　　इसकारणयोग्यमेंहीहूं,
दीण,　नहीण, जेण　　तुहनाहिणचत्तउ,　तउजुग्गउअ
निश्चैही,　हेपार्श्वपालोमुझें,　　कल्याणजैसेहो,　२५　अथओरभीयोग्यताका
हमेव,　पासपालहिंमइं, चंगओ,　　२५　अहअन्नुविजुग्ग
विशेषपणाभी, क्यामानतेहोदीनदुःखियोंका,　जोदेखकेउपगारकरेगा,
यविसेस,　किविमन्नहिदीणह,　　जंपासविउवयारुकरइ,
इसतरेतूंहेनाथसचोंका,　तोचोहीयोग्यताविशेष, निश्चै,　कल्याणजिसकरकै,　हेजि
तुहनाहसमग्गह,　सुव्विय,　　किल,　कल्लाणुजेण,　जिं

नतुमप्रशादकरतेहोतबतो, क्याऔरकरकैवहयोग्यताविशेष, इसवास्तेमतमेरा
णतुम्हपसीयह, किंअन्नुणतंचेवदेव, मामइंअवही
अपमानकर, २६, तुमारीप्रार्थनानहींहोयनिरफल, एसाहेजिन,में जाणताहूं, तोक्यां
रह, २६, तुहपत्थणनहुहोइविहल जिण, जाणउ, किं
फेर, मेंदुःखियानिश्चै, सत्वरहित दुखेंहोणेवाला, उत्सुकमनफलका
पुण, हुंदुक्खिउ, निरुसत्तचत्त, दुकहु, उस्सुयमण,
लालची, एकपलकमेंयहभीजोकभीमिलजाय तोयहवातसचहोय,
तंमन्नउ, निमिसेणएणएउविजइलब्भइ, सच्चंजं,
भूखलगेजच क्यागूलरफलताहै २७, हेत्रिभुवनस्वामी
भुक्खियवसेणं, किंऊंबरूपच्चइ, २७, तिहुअणसा
श्रीपार्श्वनाथ, मेनेंआत्माप्रकाशीमनकीवातकही, करोजोआपकेनिजरूपके
मिअपासनाह, मइअप्पपयासिउ, किज्जउजंनियरू
वरावर, नहींजानताहूंचहोतकहणा, दूसराकोई,हेजिन,जगत्मेंतुमारेवराब
वसरिस, नमुणुंवहुजंपिउ, अन्नुण,जिण,जगतुहसमो
र, चतुरओरदयाश्रयनहीं, जोमुझेंनहींगिणोगे, तुमहीज, अहहवडाखेद
वि, दक्खिन्नदयासउ, जइअवगिन्नसि, तुंहिंज, अहह,
क्याहोजाऊंगानिरफलमनोरथ, २८, जोतुमारेरूपसेंकिसहीप्रेत, पार्श्वयक्षव्यंत
किंहोसिहयासउ, २८, जइतुहरूविणकिणविपेअ, पा
रनेंजोमेनेंआजदेखा, एसापार्श्वनाथकेरूपसेंठगा,तोभीजाणताहूंहेजिनपार्श्वतुमनेंमुझेंअंगीकार
इणवेलंविउ, तउजाणुंजिणपासतुम्हहुंअंगीकरि
किया, इसवास्तेमेरावांछित, जोनहींहोगा, वहतुमारीहलकाईहोगीइसवास्ते, रक्खो
यउ, इयमहइत्थिय, जंनहोइ, सातुहओहावण, रक्खं
तेसेंनिजकीर्ति, नहींतुमकोंचाहिये, मेरेजैसेकीअवगिणना, २९, येमेरीयात्रा
तहनियकित्ति, णेयजुज्जइ, अवहीरण, २९, एवम
हेदेवाधिदेव, इयस्नात्रमहोत्सव, जोसत्य
हारिहजत्तदेव, इयन्हवणमहूसव, जंअणलियं, गु
गुणोंकाग्रहण, तुमारामुनिजनोंनें, निषेधनहींकिया, इसकारणमेरेपरकृपा
णगहण, तुम्हमुणिजण, अणिसिद्धउ, इयमइंपसीअ

क्र,हेपार्श्वनाथ, थंभणकपुरमेंरहेभये, इतनेकरमुनियोंमेंप्रधानश्रीअभय
सुपासनाह, थंभणयपुरट्ठिय, इयमुणिवरसिरिअ
देवसूरिः,नवांगीवृत्तिकरणकेआनंदमेंवीनतीकरी, ३०, इतनेकरथंभनपार्श्वनाथ
भयदेवविन्नवइआणंदिय, ३०, इतिश्रीथंभणपास
जिनस्तवनंपूर्ण ॥

जिनस्तवनं ॥

जयवंतस्वामी, जयपावोस्वामी, ऋषभदेव, शत्रुंजयपर, गिरनारपरप्र
जयउसामी, जयउसामी, रिसह, सेत्तुंजी, उज्जंतपहू
भुनेमजिन, जयपावोमहावीरप्रभुसाचोरकेमंडन, १, भरुचमेंमुनिसुव्रतप्रभू
नेमजिण, जयउवीरसच्चउरिमंडण, १, भरुअच्छहिंमु
स्वामी, मुहरिगांममेंश्रीपार्श्वनाथदुःखपापकाखंडण, और महाविदेह
णिसुव्वय, मुहरिपासदुहदुरियखंडण, अवरविदेहिं
मेंतीर्थंकर, चारोंदिशामेंविदिसामेंजोकोईभी, गयेकालअनागतका
तित्थयरा, चिहुंदिसिविदिसजिंकेवि, तीयाणागय
ल,वर्त्तमानकालकेवंदूजिनेश्वरसर्वोंकों, २,
संपइअ,वंदूजिणसव्वेवि, २,
कर्मभूमीमें, कर्म्मभूमीमें, प्रथमसंघयणधारी, उत्कृष्टएकसो,
कम्मभूमिहिं, कम्मभूमिहिं, पढमसंघयणि, उक्कोसय,
सत्तर, जिनवर, विचरतेपावै, नवकरोड,
सत्तरिसय, जिणवराण, विहरंतलब्भइ, नवकोडिहिं, के
केवली, नवहजारकोडिसाधुओंकीसंपदा, इसवक्तजिनवरवीस
वलिण, कोडिसहस्सनवसाहूसंपय, संपइजिनवरवी
मुनीश्वर, दोयकरोडप्रधानज्ञानी, साधूदोहजारकोडी,
समुणि, बिहूंकोडिहिंवरनाण, समणहकोडिसहसदुअ,
स्तवनाकरणी, हमेससूर्यउदयहोते, १, सत्ताणवेहजार, लाख,
थुणिजिअ, निच्चविहाण, १, सत्ताणवइसहस्सा, लख्खा,
छप्पन, आठकरोड, चारसेछायासी, तीनलोकमें,
छप्पन्न, अठकोडीओ, चउसयछायासीआ, तिलुक्के

चैत्योंकोंवांदू, २, वंदनकरूंनवसयकोडि, पचवीसकोडि, लाख,
चेइयेवंदे, २, वंदेनवकोडिसयं, पणवीसंकोडि, लख्ख,

तेपन, अठाईसहजार, चारसे, अठ्यासी, प्रतिमा,
तेवन्ना, अठावीससहस्सा, चउसय, अठासिआ, पडिमा,

३, जोकोईनामकेतीर्थहैं स्वर्गमें, पातालमें, मनुष्यलोकमें,
३, जंकिंचिनामतित्थं, सग्गे, पायाले, माणुसेलोए,

जोजोजिनविंवहै, उनसवोंकोंवंदनकरताहूं, ४,
जाइंजिणविंबाइ, ताइंसव्वाइंवंदामि, ४,

नमस्कारहो, अरिहंतोंकों, भगवंतोंकों, १, आदिद्वादशांगीकेकरता,
नमोत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, १, आइगराणं,

तीर्थकेकरणेवाले, आपहीतत्वकेजाण, २, पुरुषोंमेंउत्तम, पुरुषोंमें
तित्थगराणं, सयंसंवुद्धाणं, २, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस

सिंह, पुरुषोंमेंप्रधान पुंडरीककमलजैसें, पुरुषोंमेंगंधहस्तीजैसेप्रधान,
सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, ३,

लोकोंमेंउत्तम, लोककेनाथ, लोककेहितकारी, लोकमेंदीपक,
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवा

समान, लोकमेंउद्योतकरणैवाले, ४, अभयदानदैणैवाले, तत्वरूपनेत्रों
णं, लोगपज्जोअगराणं, ४, अभयदयाणं, चख्खु

केदैणैवाले, मोक्षमार्गकेदातार, शरणकेदातार, बोधिवीजकेदैनैवाले, ५,
दयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ५,

धर्मकेदैनैवाले, धर्मकेउपदेशकरता, धर्मकेनायक, धर्मरथकेसा
धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसार

रथी, धर्मकेप्रधानचारगतिकेअंतकर्त्ताचक्रवर्ती, ६, किसीसेंनासनहींहोयएसा
हीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, ६, अप्पडिहयवर

प्रधानज्ञान, दर्शनकूंधारणेवाले, चलीगईछद्मस्थावस्था, ७, आपजीतेदुसरेकों
णाण, दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं, ७, जिणाणंजाव

जीताणैवाले; आपतिरे;दूसरेकेतारक, आपतत्वजाणादूसरेकोबोधदैणैवाले, आप
याणं, तिन्नाणंतारयाणं, बुद्धाणंबोहयाणं, मुत्ताणंमो

छूटे,ओरोंकोंछुडाते, ७, सर्वजाणनैंवाले, सर्वदेखनैंवाले, उपद्रवरहितअचलरोगरहि
अगाणं, ८, सव्वन्नूणं, सव्वदरसीणं सिवमयलमरू,
तअनंत, अक्षय, बाधारहित, नहींहैफेरअवतारलैणा, सिद्धगति,
अमणंत, मक्खय, मव्वावाह, मपुणराविति, सिद्धिगइ,
नामजिसका, एसाठिकाणापायेहुये, नमस्कारहोजिनेश्वरोंकों, जीताहैसवडर,
नामधेयं, ठाणंसंपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं,
जोअतीतकालमेंसिद्धहोगये, जोहोंयगेंआगामीकालमेंसिद्ध,
९ जेअअईआसिद्धा, जेअभविस्संतिणागएकाले,
इसवख्तवर्त्तमानकालमेंहोरहेहैं, उनसर्वोंकोंत्रिविधवंदनकर्त्ताहूं, १०,
संपइयवद्दमाणा, सव्वेतिविहेणवंदामि, १०,
जितनेचैत्यहैं, ऊर्द्धलोकमें, अधोलोकमें, तिर्च्छेलोकमें,
जावंतिचेइआइं, उड्ढेअ, अहेय, तिरिअलोएअ,
सर्वउनोंकोंवंदनकरूं, इसजगेरहे उहांरहेजिनोंकों, जितने कोईभीसाधू,
सव्वाइंताइंवंदे, इहसंतोतत्थसंताइं, १, जावंतिकेविसाहू
भरतमें एरवतमें, महाविदेहमें, सर्वोंकों प्रणामहो, मनवचनकाया
भरहे, रवय, महाविदेहेअ, सव्वेसिंतेसिंपणओ, तिविहेण
सें तीनदंडसेंविशेषरहित, १, नमस्कारअर्हंतसिद्धआचार्यउपाध्यायसवसाधुओकों,
तिदंडविरयाणं, १, नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः,
उपसर्गकूंहरणेवालेपार्श्वयक्षहैजिनोंके, एसेपार्श्वनाथकर्मसमूहसेंमुक्त,
उवसग्गहरंपासं, पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं,
सांपकेजहरकूंनासकरणेवाले, मंगलकल्याणकेगृह(मकान), १, विषधर
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं, १, विसहर
फुलिंगनामकेमंत्रकों, कंठमेंधारणकरैजोसदामनुष्य, उसकैग्रहरोगमरी
फुलिंगमंतं, कंठेधारेइजोसयामणुओ, तस्सग्गहरोगमारी,
दुष्टज्वरपाताहैशांतिकों, २, रहोदूरतुमारानाममंत्र, तुमारेकूंप्रणाम
दुट्ठजराजंतिउवसामं, २, चिठउदूरेमंतो, तुज्झपणामोवि
करणभी,बहोतफलहोताहै, मनुष्यतिर्यंचभीजीव, पावेनहींदुःखदौर्भाग्य [दु
बहुफलोहोई, नरतिरिएसुविजीवा, पावंतिनदुक्खदो

हाग], ३, तुमारासम्यक्तपाणेसें, चिंतामणीरत्नकल्पवृक्षसेंभीअधिक जा
हग्गं, ३, तुहसम्मत्तेलद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहि
दा, पाताहैनिर्विघ्नपणेकरकै, जीवअजरअमरठिकाणेकूं, ४, इसतरे
ए, पावंतिअविग्घेणं, जीवाअयरामरंठाणं, ४, इय
कीस्तवनाहेमहायशवंत, भक्तिकेसमूहसेंपरिपूर्णरिदयकरकै, इसकारण
संथुओमहायस, भत्तिब्भरनिब्भरेणहियएण, तादेव
हेदेवदेओबोधिवीज, भवभवमेंहेपार्श्वजिनचंद्र, ५, इतनेकरपार्श्वजिनस्तवनपूर्ण,
दिज्जबोहिं, भवेरपासजिणचंद, ५, इतिपार्श्वजिनस्तवनं,

जयपाओहेवीतरागजगद्गुरु, होमुझेंतुमारेप्रभावसें,
जयवीयरायजगगुरू, होउममंतुहप्पभा

हेभगवान्, भवोंसेंउदासपणा, मार्गानुसारीपणा, बंछितफलकीसिद्धि,
वओ, भयवं, भवनिव्वेओ, मग्गाणुसारिआ, इट्ठफलसिद्धि,
१, लोगविरुद्धकामोंकात्याग, वडेमहापुरुषोंकीपूजा, परोपकारकाकरणा, फेरशु
१, लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ, परत्थकरणंच, सुह
द्धगुरुओंकायोग, उनोंकेवचनकाअंगीकार, समस्तभवोंमेंअखंड, २,
गुरुजोगो, तव्वयणसेवणा, आभवमखंडा, २,

अरिहंतकेचैत्यकेवास्ते, करताहूंकायोत्सर्ग, पहलीस्तुतिएकजिनकी
अरिहंतचेइयाणं, करेमिकाउसग्गं,
सर्व्वलोकमेंजोअरिहंतोंकेचैत्यउनोंकेवास्तेकरताहूंकायाकाउत्सर्गपणा,
सव्वलोएअरिहंतचेइयाणंकरेमिकाउसग्गं,
श्रुतज्ञानभगवतकेवास्तेकरताहूंकायोत्सर्ग,
सुयस्सभगवओकरेमिकाउसग्गं,
वैयावच्च(टहल)केकरणेवाले, शांतिकेकर्त्ता, सम्यक्दृष्टिसमाधिकेकरणैवाले
वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं,
करताहूंकायोत्सर्ग, वंदनकरणेवास्तै, पूजाकरणेवास्तै,
करेमिकाउसग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए,
सत्कारकरणेवास्तै, सन्मानकरणेवास्तै, बोधिलाभकेवास्तै,
सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआ

उपसर्गरहितस्थान(मोक्ष)कैवास्तै, २, श्रद्धासें, निर्मलबुद्धिसें, चित्तथिरसें, धारणा-
ए, **निरुवसग्गवत्तिआए, २, सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणा**
पूर्वक, वेरबेरविचारकै, वधतेपरिणामसें, करताहूंकायोत्सर्ग, ३,
ए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामिकाउसग्गं, ३,
संसारदावानल(अग्नि)केदाहकोंपाणीजैसे, मोहरूपधूडकोंदूरकरणेहवाजैसे,
संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणेसमीरं,
कपटरूपपृथ्वीकोंफाडणेतीखेहलजैसे, नमनकरताहूंवीरप्रभूकों, पहाडोंमेंसारमेरूजैसेधीर
मायारसादारणसारसीरं, नमामिवीरं, गिरिसारधीरं, १,
भावसेंनमस्कारकरणैवालेदेवदानवमनुष्योंकेस्वामीयोंके, मुगटमेंचपलकमलोंकीश्रेणियों
भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलाव
सें पूजेभये, अछीतरेपूरदियानमेभयेलोकोंकेमनवंछित,
लिमालितानि, संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
कामना, मैंनमनकरताहूं, जिनराजपद(चरणोंकों),वह, ज्ञानरूपगहरापण, अछेपदों
कामं, नमामि, जिनराजपदानि, तानि, २, वोधागाधं, सुपद
केरचनारूपजलकेपूरसेंमनोहर, जीवोंकीअहिंसारूपअंतररहितलहरोंमिलणेसें
पदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमा
अगाधस्वरूप, सिद्धांतकीचूलारूपवेल, वडेपाठरूपमणीयोंसेंभरपूर, दूरहैकिनाराजिसका,
गाहदेहं, चूलावेलं, गुरुगममणीसंकुलं, दूरपारं,
प्रधान वीरभगवानकेआगमरूप, समुद्रकूं,आदरयुक्त,अच्छीतरेसेवताहूं, ३, जडसेंहिलतेभये,
सारं वीरागम,जलनिधिं, सादरं,साधुसेवे, ३, आमूलालोल,
खुसबोदाररजकी बहोतसुगंधमें, आसक्त, चपलभमरोंकीपंक्तिओं, झंकारशब्दोंका
धूली, बहुलपरिमला, लीढ, लोलालिमाला, झंकाराराव
श्रेष्ठपणा निर्मलपत्रोंकैकमलरूपघरकीभूमीमेंनिवासहै,एसे कांतिकैसमूहसें,
सारा, मलदलकमलागारभूमिनिवासे, छायासंभार,
सुशोभित, प्रधानकमलहैहाथमें, देदीप्यमानहारसेतीमनोहर, द्वादशांगीरूपवाणीकास
सारे, वरकमलकरे, तारहाराभिरामे, वाणीसंदोह
मूहजिसकाशरीरहै, मोक्षरूपवरदान, देओमुझेहेदेवीप्रधान, ४,
देहे, भवविरहवरं, देहिमेदेवसारं, ४,

पुष्करवरनामद्वीपअर्धमें, धातकीखंडमें, जंबूद्वीपकेअंदर,
पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडेअ, जंबुदीवेअ,
भरतक्षेत्रएरवतक्षेत्र महाविदेहमें, धर्मकेआदिकर्त्ताकोंनमस्कारकरताहूं, अज्ञानरूप
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरेनमंसामि, १, तमतिमि
अंधेरेकेसमूहकों नासकरणेवाले, देवतोंकागण मनुष्योंकेइंद्रोसेंपूजेभये,
रपड़लविद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स
मर्यादामेंरखणेवालेकोंवंदनकरताहूं, तोडाहैमोहकाजालजिनोंने, २, जन्म, वृद्धपणा
सीमाधरस्सवंदे, पप्फोडियमोहजालस्स, २, जाई, जरा,
मोत, सोगकोंनासकरणेवाले, कल्याण संपूर्ण विस्तार
मरण, सोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खल, विसाल,
मोक्षसुखकेदेणेवाले,
सुहावहस्स,
कोण देवता, दानव, मनुष्योंकेइंद्रोंकेसमूहोंसेपूजेभये, श्रुतधर्मका
कोदेव, दाणव, नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स
सार, पायकरकै, जोकरे प्रमाद, ३, एसैसिद्धोंकूं, हेज्ञानवंतोआदरयुक्त,मेंनमस्कार
सार, मुवलब्भ, करेपमायं, ३, सिद्धे, भोपयओ, णमो
करताहूंजिनमतकों, वृद्धिपाओहमेसचारित्रधर्म, वैमानिकदेव,भुवनपती, ज्योतषी, व्यंतरदेव
जिणमए, नंदीसयासंजमे, देवं, नाग, सुवन्न, किन्न
तोंकेसमूहसें, सच्चभावकरकै पूजेभये, सर्व्वलोकका‌ज्ञानजिसमें कहाभयाहै
रगण, सब्भूअभावच्चिए लोगोजत्थपइठ्ठिओ
जगत् ये, तीनलोक, मनुष्य, भवनपति, श्रुतधर्मवृद्धिपाओ शाखत
जगमिणं, तेल्लुक्कमच्चासुरं, धम्मोवड्ढउ, सासओ,
विशेषजयवंतहुओ, चारित्रधर्मकाप्रधानपणाजेसेहोयतैसेंवधो, ४,
विजयओ, धम्मुत्तरंवड्ढउ, ४,
सिद्धोंकों, बुद्ध(ज्ञाततत्वकों), संसारकेपारपहूंचेकों,गुणस्थानकेक्रमसेचढकेमोक्षपहुंचैको,लो
सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं, परंपरगयाणं, लोग-
ककेअग्रभागमेंप्राप्तभयोंकों, नमस्कारहमेस सर्व्व सिद्धोकों, जोदेवतोंकेभी
ग्गमुवगयाणं, नमोसयासव्वसिद्धाणं, जोदेवा

देवहैं, जिनोंकोंदेवताभीदोहाथजोडकैनमस्कारकरतेहैं, उसदेवकों,देवेंद्रोंनें
णविदेवो, जंदेवापंजलीनमंसंति, तंदेवदेवम
पूजा, मस्तकसेंमेंवंदनकरताहूंमहावीरदेवकों, २, एकभीनमस्कार,
हियं, सिरसावंदेमहावीरं, २, इक्कोविनमुक्कारो,
जिनवरमें वृषभ(श्रेष्ठ), वर्द्धमानस्वामीकों, संसारसमुद्रसें,
जिणवरवसहस्स, वद्धमाणस्स, संसारसागराओ,
तारतेहैं मनुष्यकों और स्त्रियोंकों, ३, गिरनारपहाडके, शिखरकेऊपर, दीक्षा,
तारेइनरंवनारिंवा, ३, उज्जिंतसेल, सिहरे, दिक्खा,
केवलज्ञान, मोक्षकल्याणकजिनोंकाभयाहै, वह धर्म्मकेचक्रवर्त्ति ऐसे, अरिष्टनेमीभ
नाणं, निसीहियाजस्स, तंधम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठ
गवानकोंनमस्कारकरताहूं, ४, चार, आठ, दस, दोय, वंदीजेहुयेहैं,
नेमिंनमंसामी, ४, चत्तारि, अठ, दस, दोअ, वंदिआ
जिनसामान्यकेवलियोंमेंप्रधानचौवीस, परमार्थसेंकृतार्थहुयेहैं, सिद्धभयेहैं,
जिणवराचउव्वीसं, परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा
सिद्धिमुझकोंदेओ, ५,
सिद्धिंममदिसंतु, ५,
मेंचाहताहूं हेक्षमाश्रमण, वांदणेकूं, शक्तिकरयुक्त, जीवहिंसारहित
इच्छामिखमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, नि
प्रयोजनवालामेरेशरीरसें, मुझकोंहुक्मदेओ, मुझें, प्रमाणयुक्तक्षेत्रमेंप्रवेशकरणे, दुसराकाम
सीहियाए, १ अणुजाणह, मे, मिउग्गहं, २ निसी।
छोडके,नीचेझुकके,कायासें,आपकेपांव कायासें स्पर्शकरणे माफकरणा,हेभगवंतआपकोंकोई,
हि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणि, ज्जोभे, कि
खेदउपजायाहो, थोडिग्लानि, वहोतसमाधिभावसें, हेपूज्य, दिन;
लामो, अप्पकिलंताणं, वहुसुभेण, भे, दिवसो, व
वीताहै, तपनियमसंजमस्वाध्यायरूपयात्रा, इंद्रियऔरनोइंद्रियसेंखेदरहितआपकाशरीर,
इक्कंतो, ३ जत्ताभे, ४ जवणिज्जं, च, भे, ५
हेभगवन्‌क्षमाताहूं, हेक्षमाश्रमण, दिनसंवंधी अपराध, आवश्यक
खामेमि, खमासमणो, देवसियंवइक्कमं, ६, आ

क्रियाकरते, मैंनिवर्त्तताहूं(दूरहोताहूं), क्षमाश्रमण(साधुओं)की, दिनमेंहुई,
वसिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआ.
आशातनाकरकै, तेतीस आशातनामेसें, जोकुछ, मिथ्याभाव
ए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि, मि-
रूपआशातना, मनसंबंधीपाप, वचनसंबंधीपाप, शरीरसंबंधीपापइत्या
च्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडा
दि, क्रोधरूपआशातना, मानआशातना, मायाआशातना, लोभआशातना, सर्वकालसंबंधी
ए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालिआ
सर्वमिथ्याउपचारआशातनाकरकै. सर्वधर्मकरणीउलांघनेरूप, आशातनाकरणेसें
ए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आ
जो, मेरेजीवनैं, अतिचार, कीयाहोय, उसका, हेक्षमा
सायणाए, जो, मे, अइयारो, कओ, तस्स, खमा
श्रमण, मैंप्रतिक्रमताहूं(लांघताहूं),आत्मासेंनिंदताहूं, गुरुकीसाक्षीनिंदताहूं, मेरीपापीआत्मा
समणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं
कों वोसराताहूं(छुडाताहूं), ७,
वोसिरामि, ७,
पक्षीचोमासीसंवत्सरीअतिचारगाथा, ज्ञानमें, दर्शनमें, चारित्रमें,
अतीचारकीगाथा, नाणंमिं, दंसणंमिअ, चरणंमि,
तपमें, तेसेंहि वीर्य(पराक्रम)में, आचरण, वोआचारकहाताहै, इसतरेयेआ
तवंमि, तहय, विरियंमि, आयरणं, आयारो, इअए
चारपांचप्रकारका, कहाहै, १, जिसकालमेंपढणेकाहुक्महो, विनयबहुमान, सूत्रपढतेतपक
सोपंचहा, भणिओ, १, काले, विणएबहुमाणे, उवहा
रणा, तेसेंपढाणेवालेगुरूकोभूलणानहीं, अक्षरशुद्धबोलणा, अर्थशुद्ध, सूत्रअर्थदोनोंशुद्धपढणा
णे, तहअनिएहवणे, वंजणअत्थतदुभए,
आठ प्रकारकाज्ञानाचारकहाताहै, २, केवलीकेवचनमेंशंकानहींकरणी, जिनमतविगर
अट्ठविहोनाणमायारो, २, निस्संकिय, निकंखिय,
औरमतकीइच्छानहींकरणी,
निव्विति

दुगंछानहींकरणी, अन्यमतकाचमत्कारदेखमोहितनहींहोणा, सम्यक्तीकीतारीफकरणी,
निच्छाअमूढदिट्टीअ, उववूह, थिरीकरणे,
स्थिरकरणा,मदतदेणा
वच्छल,प्प
जैनधर्मकीमहिमाकरणीयेदर्शनाचार, सावचेतीसें, मनवचनकायाजोगयुक्त, पांचसुमतिसें,
भावणेअट्ठ, ३ पणिहाण, जोगजुत्तो, पंचहिंसमिइहिं,
तीनगुप्तीसें, येंचारित्राचार, आठप्रकारकाहोताहै, जाणना
तिहिंगुत्तीहिं, एसचरित्तायारो, अठविहोहोइ, नाय
४, बारेप्रकारकातपमें, छप्रकारअभ्यंतर, छप्रकारबाह्य, चतुरपुरुष,
व्वो, ४, बारसविहंमिवितवे, सब्भितर, बाहिरे, कुसल,
तीर्थंकरोंकाकहा, दुगंछाभावरहित, आजीविकादोषरहित, जाणना, वह, तपाचार, ५,
दिट्ठे, अगिलाइ, अणाजीवी नायव्वो, सो, तवायारो, ५,
चारप्रकारकाअहारकात्याग, कमखाणा, द्रव्यवगेरेखानपानकासंक्षेपकरण,
अणसण, मूणोयरिया, वित्तीसंखेवणं,
छविगयोंमेंकाछोडना, कायाकोंकष्टदेणालोचादिक, अंगउपांगसमेटरखणा,येबाह्यतपहै, ६,
रसचाओ, कायकिलेसो, संलीणयाय, बझोतवोहोइ, ६,
गुरुकेपास प्रायश्चित्तपापोंकालेणा
पायच्छित्तं
ज्ञानज्ञानीकाविनय, टहलबंदगी, तैसेंहींपांचतरेकास्वाध्यायकरना, ध्यानकरणा, कर्म
विणओ, वेयावच्चं, तहेवसज्झाओ, झाणं,
खपानेकायाकोंवोसराणानिश्चै, अभ्यंतरतपहोताहै, ७, प्रगटहै, बलवीर्यजिनोंका,
उस्सग्गोवि य, अब्भितरओतवोहोइ, ७, अणिगूहिय, बलविरि
पराक्रमकरतेहैं, जो, जेसेंतीर्थंकरदेवोंनेंकहातेसेंसमायुक्त, प्रवर्त्तेजेसेंशक्तिकेमाफक
ओ, पडिक्कमइ, जो, जहुत्तमाउत्तो, जुंजइअजहाथामं,
जाणना, वीर्याचार,
नायव्वो, वीरिआयारो, ८
आपकीइच्छापूर्वक, हुक्मदीजिये, हेभगवान्, दिनसंबंधी अतिचारआलोचूं(प्रकासूं),
इच्छाकारेण, संदिसह, भगवन्, देवसिअंआलोउं,

आपकावचनकबूलकर प्रकाशताहूं, जोमेंदिनसंबंधी, अतिचार, कियाहोय,
इच्छं आलोएमि, जोमेदेवसिओ, अइआरो, कओ
कायासंबंधी, वचनसंबंधी, मनसंबंधी, जिनागमविरुद्धबोलाहो, उन्मार्गसेवाहो,
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो,
अकल्पसेवाहो, नहींकरणेयोग्यकियाहो, खोटेध्यानध्यानेसें, खोटेकामविचराहोय, अणाचारसें,
अकप्पो, अकरणीज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो,
नहींइच्छणेयोगइच्छाकरीहो, श्रावककैजोउचितनहींसोकियाहो, ज्ञानमें, दर्शनमें, फेरचारि
अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, च
त्रदेशव्रतीरूपश्रावकधर्ममें, श्रुतमें, सामायकमें, तीनगुप्तिमें, चारकषायोंकरकै
रित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हंगुत्तीणं, चउण्हंक
पांचअणुव्रतोंकैअंदर तीनगुणव्रतोंकैअंदर,
सायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हंगुणव्वयाणं, च
चारशिक्षाव्रतोंकैअंदर, बारे प्रकारके श्रावकधर्मकैअंदरमें,
उण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स,
जोदेशसेंखंडितकियाहो, सर्वसेंविराधाहो, वहमिथ्याहोमेरा पाप,
जंखंडियं, जंविराहियं, तस्समिच्छामि दुक्कडं,
सभी, दिनसंबंधी, दुष्टचिंतनकरणेसें, दुष्टवचनकहणैसें, दुष्टचेष्टाक
सव्वस्सवि, देवसिअ, दुचिंतिअ, दुब्भासिय, दुचिट्ठि
रणेंसें, वहमिथ्याहुओमेरापाप,
अ, तस्समिच्छामिदुक्कडं,
अथवंदित्तूसूत्रश्रावकातीचारलिख्यते, वांदणाकरकै, सर्वसिद्धपरमेश्वरकों,
अथवंदित्तुसूत्र१२व्रतातीचार, वंदितु सव्वसिद्धे,
धर्मकेदाताआचार्यकों, उपाध्यायतेसेंसर्वसाधुओंकों, मैंचाहताहूंपापोंकोंप्रतिक्रमणे, श्राव
धम्मायरिएअ, सव्वसाहूअ, इच्छामिपडिक्कमिउं, सा
कधर्ममेंलगेअतिचारोंकों, १, जोमुझकोंव्रतोमेंअतिचारलगाहो, ज्ञानमें तेसें दर्शनमें
वगधम्माइआरस्स, १, जोमेवयाइयारो, नाणेतहदंस
चारित्रमें, सूक्ष्म(थोडा) बादर(बडा) अथवा, उसकोंनिंदताहूं गुरुसमक्षनिंदताहूं,
णेचरित्तेअ, सुहुमोअवायरोवा, तंनिंदेतंचगरिहा

२, दोप्रकारका परिग्रह, पापका, बहोतप्रकारका, आरंभवाला,
मि, २, दुविहेपरिग्गहंमि, सावज्जे, बहुविहेअ, आरंभे,
दूसरेसेंकरायाहो, ओरआपकीयाहो, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनकेकियेसवअतिचारोंकों, ३,
कारावणे, अकरणे, पडिक्कमेदेसिअंसव्वं, ३,
जोवांधाहोइंद्रियोंकरकै, चारों, कषायोंकरकै, अप्रशस्त(बुरेभावोंकरकै),
जंबद्धमिंदिएहिं, चउहिं, कसाएहिं, अप्पसत्थेहिं,
रागकरकै, दोषकरकै, उसकोंनिंदताहूं, फेरगुरुसन्मुखजादाकरकैनिंदताहूं, ४, जाते
रागेणव, दोसेणव, तंनिंदे, तंचगरिहामि, ४, आग
आते, मिथ्यात्वीकेठिकाणेखडारहते, इधरउधरफिरते, उपयोगविगर, राजाओ
मणे, निग्गमणे, ठाणे, चंकमणे, अणाभोगे, अभि
रचहोतलोकोंकेआग्रहसें, पराधीनपणे, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनसंबंधीसवअतिचार, ५,
ओगे, अनियोगे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, ५,
जिनवचनमेंशंका,अन्यमतवांछा,तथाधर्मकेफलमेंसंदेहदुगंछा,मिथ्यात्वीकीप्रशंसा,तेसेंपरिचय
संका, कंख, विगंच्छा, पसंस, तहसंथवो,
मिथ्यात्वीकुलिंगीसें, समकितकेअतिचारमें, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनसंबंधीसव, ६, छकाय
कुलिंगीसु, सम्मत्तस्सअइआरे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, ६, छक्का
केसमारंभमेंवर्त्तणेसें, आपरांधते, ओरदूसरेकेपासरंधाते, ओर जो, दोषलगाहो, अपणे
यसमारंभे, पयणेअ, पयावणेअ, जे, दोसा, अत्त
अर्थे, परायेकेअर्थे, अपणेपरायेदोनोंकेअर्थ,उसकोंनिंदताहूं, ७, पांचअणुव्रतकेविषे,
ट्ठाय, परट्ठा, उभयट्ठा,चेवतंनिंदे, ७, पंचन्हमणु
गुणव्रतोंकेविषै, फेर, तीनअतीचारलगाहो, शिक्षाव्रतमें,
व्वयाणं, गुणव्वयाणं, च, तिन्हमइयारे, सिक्खाणं,
फेर, चारअतिचार, प्रतिक्रमताहूंमें, दिनसंबंधी सव, ८, पहले, अणुव्रत,
च, चउन्हं, पडिक्कमे, देसियंसव्वं, ८, पढमे, अणुव्व
केविषै, बडेसोस्थूल, प्राणातिपातकी, निवृत्तिकाउल्लंघणेंसें, जोआचरणसेवाहोय
यंमि, थूलग, पाणाइवाय, विरईओ, आयरियम
बुरेपरिणामोंसें, इसलगे, प्रमादकै, प्रसंगसें, ९, मारणा, बांधणा, अवयव,
प्पसत्थे, इत्थ, पमाय, प्पसंगेणं, ९, वह, बंध, छवि

काच्छेदणा, जादाबोझालादणा, खाणेपीणेकाअंतरायकरणा, पहलेव्रतका,
छेए, अइभारे, भत्तपाणवुच्छेए, पढमंवयस्स,
अतिचारमें, प्रतिक्रमताहूंमें, दिनसंबंधीसब, १०, दूसरेअणुव्रतमें,
अइयारे, पडिक्कमे, देसिअंसव्वं, १०, बीएअणुव्व
अति बडे, झूठेवचनकेत्यागरूप, विरतीकूंउलंघनकरकै,
येम्मि, परिथूलग, अलियवयण, विरईओ,
जोआचरणकियाहोवुरेभावोंकरकै, इसजगे, प्रमादके, प्रसंगसें, ११, विगरविचा
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ,पमाय,प्पसंगेणं, ११, सहस्सा,
रेछीपीभईवातकरणेवालेपरराज्यविरुद्धगुनालगाणा, स्त्रीकीकहीवातजाहिरकरी, झूठाउपदेश,
रहस्सदारे, मोसुवएसेअ, कूडलेहेअ, बीअवय
झूठालिखतकिया, दूसरेव्रतकेअतिचारकों, प्रतिक्रमताहूंदिनसंबंधीसब, १२, तीसरेअणुव्र
स्सअइयारे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, १२, तइएअणु
तमें, वडा, परायेद्रव्यके, हरणेकी, विरतीकूंउलंघनकरकै, जो आचरण
व्वयंमि, थूलग, परदव्व, हरण, विरईओ, आयरिअ,
कीया, बुरेपरिणामोंसें, इस जगे, प्रमादकेप्रसंगसें, १३, चोरीकामाललेणा,
मप्पसत्थे, इत्थ, पमायप्पसंगेणं, १३, तेनाहडप्पओ
खोटीचीजकोंअसलीवणावेचणा, राजकामहसूलचोरणा, खोटेतोलरखना, खोटेमापर
गे, तप्पडिरूवे, विरुद्धगमणेअ, कूडतूल, कूडमा-
खणा, प्रतिक्रमताहूं[पापोंकोंलांघताहूं]दिनकेकियेसब, १४, चौथाअणुव्रतमें,
णे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, १४, चउत्थेअणुव्वयंमि,
हमेस, परस्त्रीकेसंगगमनकरणेकीविरतीकोंलांघकै, जोआचरणकियाहो, अप्रसस्त
निच्चं, परदारगमणविरईओ, आयरिअ, मप्पस-
भावकरकै, इसजगेप्रमादकेप्रसंगसें, १५, कंवारीअथवाविधवाकेसंगरमण, दूसरेकी
त्थे, इत्थपमायप्पसंगेणं, १५, अपरिग्गहिया, इत्त
रखीवेस्यासेंरमण, कामक्रीडा, परायेव्याहकराणा, कामभोगमेंजादाअनुराग,
र, अणंग, वीवाह, तिव्वअणुरागे,
चौथेव्रतकेअतिचारमें,
चउत्थवयस्सइयारे

प्रतिक्रमताहूं, दिनसंबंधी सब, १६, इसकेवाद, अणुव्रत, पांचमें में, आच
पडिक्कमे, देसियंसव्वं, १६, इत्तो, अणुव्वए, पंचमंमि, आ
राहोय, बुरेभाव वर्त्तते, परिग्रहके प्रमाणकूंउलंघकै, इस जगे प्रमादके
यरिअ, मप्पसत्थंमि, परिमाणपरिच्छेए, इत्थपमाय
प्रसंगसें, १७, धन, धान्य, क्षेत्र, मकानदुकान, रूपा, सोना, और सबत
प्पसंगेणं, १७, धण, धन्न, खित्त, वत्थू, रूप्प, सुवन्नेअ, कु
रेकेधातू प्रमाणउपरवधादेखके, दासदासीदोपग्गे, जानवरचोपग्गे, प्रतिक्रमताहूं दिनसंबं
विअपरिमाणे, दुप्पए, चउप्पयंमि, पडिक्कमेदेसिअं
धीसबकों, १८, जाणेकेप्रमाणसें जादाजाते, दिशाओंमें ऊर्धदिसि, नीचीदिसि,
सव्वं, १८, गमणस्सउपरिमाणे, दिसासुउड्ढं, अहेअति,
तिरच्छीदिसि, फेरप्रमाणवधाते, अंतररस्तेमेंभूलकेजादागयाहो, पहलेगुणव्रतमें मेंनिंदताहूं,
रिअंच, वुड्ढिस्सइ, अंतरद्धा, पढमंमिगुणव्वएनिंदे,
१९, मदिरा और मांस और पुष्प और फल और अतरादि पुष्पमाल और
१९, मज्जंमिअ मंसंमिअ पुप्फेअ फलेअ गंध मल्लेअ
एकवेरभोगण वेर २ भोगण दूसरे गुणव्रतमें निंदताहूं, २०, सचित्त
उवभोग, परिभोगे, बीअंम्मि, गुणव्वए, निंदे, २०, स
वस्तुखाईहो, सचितमिलीवस्तुखाईहो, विगरपकी, आधाकचाआधापक्का, आहारकियाहो, तुच्छ
च्चित्ते, पडिबद्धे, अपोल, दुप्पोलियं, चआहारे, तुच्छो
फलादिक खायाहोय, में प्रतिक्रमताहूं दिनसंबंधी सबको, २१,
सहिभक्खणया, पडिक्कमेदेसिअंसव्वं, २१,
अग्निकर्म्म, वनकर्म्म, पशुवेचणा, भाडाकमाणा, कूआदिखोदाणा
इंगाली, वण, साडी, भाडी, फोडी,
येवर्जनाकर्म्म व्यापार और निश्चै दांतका, लाखका, रसोंका, केसका,
सुवज्जएकम्मं वाणिज्जंचेव, दंत, लख्ख, रस, केस,
जहरका, शस्त्रोंका इसतरेनिश्चै, यंत्र पीलणेकाकर्म्म खसीकरणा और अग्नि
विस, विसयं एवंखु, जंत पिल्लणंकम्मं, निल्लंछणंच दव
दाहदेणा, सरोवरद्रह तलाव सुकाणा,
दाणं, सरदहतलावसोसं,

असती व्यभिचारणी हत्यारीस्त्रीका, पोषणवर्जना, २३, शस्त्र,
असइ, पोसंचवज्जिज्जा, २३, सत्थ,
अग्नि, मूसल, यंत्रमीलादिक, घास, काष्ठ[लकड], मंत्र, जडी, गोलीचूरणवगेरेवस्तु,
ग्गि, मुसल, जंतग, तण, कट्ठे, मंत, मूल, भेसज्जे,
दियाहो, दूसरेसें दिरायाहो, प्रतिक्रमताहूंमेंदिनसंबंधीसवोंकों, २४, विगरछाणेजलसेंन्हाया
दिन्ने, दवाविएवा, पडिक्कमेदेसियंसव्वं, २४, न्हाणु,वट्टण,
उवटणा, रंगकरणा, केसरादिसेविलेपनशब्द,रूप,रस,गंध, कपडा,आसन, गहणा,
वन्नग, विलेवणे,सद्द,रूव,रस,गंधे, वत्था,सण, आभरणे,
प्रतिक्रमताहूंमेंदिनसंबंधीसवोंकों, २५, कामभोगकीवातकरी, लोकोंकोंहसाया, वाचालप-
पडिक्कमेदेसिअंसव्वं, २५, कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरि,
णेज्यूंत्यूंबोला, शस्त्रतइयारकिये, भोगउपभोगकीवस्तुजादारखी, अनर्थदंडविरमणनामके,
अहिगरण, भोगअइरित्ते, दंडंमिअणट्ठाए,
तीसरे,गुणव्रतमें, मेंनिंदताहूं, २६, मनवचनकायातीनप्रकारकेदुष्टव्यापारमें, अविन
तइअंमि,गुणव्वए, निंदे, २६, तिविहेदुप्पणिहाणे, अण-
यपणेअधूरीसामायकपारी, तेसें, सामायकलेभूलजाना, सामायकखोटीरीतसेंकरी, पहले,
वट्ठाणे, तहा, सइविहूणे, सामाइअवितहकए, पढमे
शिक्षाव्रतमैं में निंदताहूं, २७, प्रमाणक्षेत्रवाहिरसेंचीजमंगाई, दूसरेकोंभेजा, शब्दखांसी-
सिखावएनिंदे, २७, आणवणे, पेसवणे, सद्दे,
करकै, रूपदिखाकै, कंकरादिनांखकैजणाना, देशावगासिकनामके, दूसरे, सिक्षाव्रतमें,
रूवेअ, पुग्गलख्खेवे, देसावगासिअंमि, वीए, सिखावए,
मेंनिंदताहूं, २८, संथाराअच्छीतरेनपडिलेहालघुनीतिवडनीतिकीभूमीनहींपडिलेही,
निंदे, २८, संथारुच्चारविही,
प्रमादसेंतेसेंनिश्चैभोजनकाफिकरकरै, पोषधकीविधिविपरीतकरणेसें, तीसरेशिक्षाव्रतमें
पमायतहच्चेवभोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइएसिख्खावए
मेंनिंदताहूं, २९, साधूकेदेणेयोग्यवस्तूपरसचित्तवस्तूडालणा,
निंदे, २९, सच्चित्तेनिक्खिवणे,
सचित्तवस्तूसेंढांकणा, पराईवस्तुअपणीअपणीकोंपराईकहणी, गर्व्वयाईर्क्षासें
पिहिणे, ववएस, मच्छरेचेव,

वस्त्रवीताकैदांनदैण चोथेशिक्षाव्रतमेंनिंदताहूं ३०, सुविहितकेविषे, रोगीतपेश्वरीदुर्बल
कालाइक्कमदाणे चउत्थेसिक्खावएनिंदे, ३०, सुहिएसुअ दुहिएसु-
दुखीकैविषै, जोमैंनें,नहींस्वच्छंदचारी[गुरुआज्ञाकारी]ऐसैमुनिकोंअनुकंपा[गोत्रीजाण]दान,
अ, जोमे, अस्संजएसु, अणुकंपा,
अपणसमझ, वा द्वेषसेंदियाहो, वहनिंदता, ओर वहगुरुसमक्षनिंदताहूं, ३१,
रागेणव, दोसेणव, तंनिंदे, तंचगरिहामि, ३१,
साधुओंमेंसंविभाग, नहींकियाहो,तप, चरणसित्तरी,करणसत्तरी, युक्तहोतेहुयेभी, निर्दोषआ-
साहूसुसंविभागो, नकओ,तव, चरण, करण, जुत्तेसु, संते,फासुअदाणे
हारादिदान उसवातकों निंदताहूं गुरुसमक्षविशेषनिंदताहूं, ३२,इसलोकमेंपरलोकमें जीवणेकी
तंनिंदेतंचगरिहामि, ३२, इहलोएपरलोए, जीविअ
मरणेकी वांछाकरणी, मनकाव्यापारसें, पांचप्रकारका, अतिचार, मत
मरणेअ, आसंस, पओगे पंचविहो, अइआरो, माम-
मुझें होणा, मरणांततक, ३३, कायोत्सर्गवगेरे कायाके व्यापारसें, जीववधवगेरेकायासें,
ज्जं, हुज्ज, मरणंते,३३, काएणकाइअस्स, पडिक्कमे
किये अतिचारकों, प्रतिक्रमताहूं वचनदोषकूं, मनदोषकूं, देवतत्वमें शंका मनके अतिचारकों,
वाइअस्सवायाए, मणसामाणसिअस्स,
सर्व व्रतोंके अतिचारकों, ३४, दोतरेकावंदन, १२ व्रत, दोतरेकी शिक्षा, तीनगारव,
सव्वस्स वयाइआरस्स,३४, वंदण वय, सिक्खा, गारवेसु,
चारसंज्ञा, चारकषाय, तीनदंड, तीनगुप्ती, पांच सुमतीमें, जो जो अतिचार
सन्ना कसाय, दंडेसु, गुत्तीसुअ, समिईसुअ, जो अइआ-
हुआहो, उसकों निंदताहूं, ३५, सम्यक्दृष्टी, जीव, जोकोई, पापसमा-
रो, अतंनिंदे, ३५, सम्मद्दिट्ठी, जीवोजइविहु, पावं, स-
चरे [करे], किंचित्[थोडा], अल्प[थोडाभी]होयबंध, जिसकारण नहीं, निर्दयपणे
मायरइ, किंचि, अप्पोसिहोइबंधो, जेणननिद्धंध-
हिंसाकाव्यापारकरताहुआ, ३६, उसकोभीमें, प्रतिक्रमणकरणेसेंयुक्त, पछताणकरणेयुक्त
संकुणइ, ३६, तंपिहु, सपडिक्कमणं, सप्परि आवं,
गुरुदत्तप्रायश्चित्तकरता, श्रावकजलदीशमाताहै, व्याधि(रोगोंकूं]जेसेंअच्छासीखाभयावैद्य,
सउत्तरगुणंच, खिप्पंउवसामेई, वाहिव्वसुसिक्खिओविज्जो,

३७, जेसें विषपेटमेंप्रासहोकेफेलेहुयेकों, मंत्रऔरजडीयोंकेजाणकार, विद्या-
३७, जहाविसंकुट्ठगयं, मंतमूलविसारया, विज्जा
सेंनासकरदेताहैं, मंत्रोंसें, उससेंवहजहरहोताहैविषरहित, ३८, इसतरेआठप्रकारकाकर्मों
हणंति, मंतेहिं, तोतंहवइनिव्विसं, ३८, एवंअठविहंक-
कों, रागद्वेषसें, बांधेभये, गुरूकेपासअपनेपापप्रकाशता, निंदाकरता, जलदी,
म्मं, रागदोस समज्जियं, आलोअंतोअ, निंदंतो, खिप्पं,
हणदेताहै, अच्छाश्रावक, ३९, कराहैपापजिसनेंएसाभीमनुष्य, पापोंकोंप्रका-
हणइ, सुसावओ, ३९, कयपावोविमणुस्सो, आलो-
शता, आत्मासाखसेंनिंदता गुरूकेपास, होताहै जादाकरकै, हलका, जेसें
इय, निंदिअ, गुरुसगासे, होइअइरेग, लहुओ, ओ
भारकूंउतारकर, भारकाउठाणेवालाहोताहै, ४०, आवश्यककरणेसें, इससें, श्रावक
हरिअभरुव्व, भारवहो, ४०, आवस्सएण, एएण, साव
जोकेआरंभतथापरिग्रहसेंवहोतपापीहोय, पापरूपदुःखोंका नास,
ओजइविबहुरओहोइ, दुख्खाणमंतकिरिअं, का-
करताहै, थोडेही, कालमें, ४१, आलोचनाकीरीति, बहुततरेकीहै, नहीं
ही, अचिरेणं, कालेण, ४१, आलोअणा, बहुविहा, नय
यादआईहोय, प्रतिक्रमणकरणेकेवख्त, मूलगुणमें, उत्तरगुणमें, उसकों
संभरिआ, पडिक्कमणकाले, मूलगुण, उत्तरगुणे, तंनिं-
मेंनिंदताहूं उसकोंफेरगर्हताहूं, ४२, वह धर्म्मश्रावकका, केवलीभगवानकाकहाभया,
दे,तंचगरिहामि, ४२, तस्सधम्मस्स, केवलिपन्नत्तस्स,
मेंउठाहूं, आराधनाकेवास्ते, निवर्त्ताहूं(दूरहुया)विराधनासें,
अब्भुठ्ठिओमि, आराहणाए, विरओमिविराहणाए,
मनवचनकायात्रिविधपापसेंनिवर्त्ताहुया, मेंवांदताहूंचउवीसजिनोंकों, ४३, इसपाठ-
तिविहेणपडिक्कंतो, वंदामिजिणेचउव्वीसं, ४३, जावं-
काअर्थ, नमोत्थुणं पाठमें लिखाहै,
तिचेइआइं उड्ढेअ अहेअतिरिअलोएअ सव्वा
इं ताइं वंदे इहसंतोतत्थसंताइं ४४ जावंतकेविसा-
हू भरहेरवय मह विदेहेअ सव्वेसिंतेसिंपणओ तिवि

वहोतकालसेंसंचाभया पापकूंनासकरणेवाली,
हेणतिदंड विरयाणं ४५, चिरसंचिय पावपणासणीइ,
भवसतसहस्र(लाख)मथनेवाली, चौवीसतीर्थंकरोंकेमुखसें निकली भई,
भवसयसहस्स महणीए, चउवीसजिण, विणिग्गय,
कथाओंकरकैवीतो, मेरे दिन, ४६, मेरे मंगलरूपहोअरिहंत,
कहाइंबोलंतु, मे दिअहा, ४६, मम मंगलमरिहंता,
सिद्धभगवान्साधु श्रुतधर्मफेरचारित्रधर्म, सम्यग्दष्टीदेवता, देओसमाधि(चित्तकी
सिद्धासाहू, सुअंच धम्मोअ, सम्मदिठ्ठी देवा, दिंतुसमा हिंच
थिरता), बोधि[भवो भवधर्मप्राप्ति], ४७, निषेधणेयोग्यअशुभकामकरणेसें, करणेयोग्य
बोहिंच, ४७, पडिसिद्धाणंकरणे, किच्चाण
शुभकामनहींकरणेसें, प्रतिक्रमणहै, सूक्ष्मविचारपरश्रद्धानहींकरणेसेंतेसें, विपरीतप्ररूप-
मकरणे, पडिक्कमणं, असद्दहणेय तहा, विवरीय-
णाकरणेसें, ४८, खमाताहूं, सर्व्वजीवोंको, सर्व्वजीवखमणामेराअपराध, मित्रताहैमेरे
परूवणाएअ, ४८, खामेमिसव्वजीवे, सव्वेजीवाखमंतुमे, मित्तीमेस-
सर्व्व(भूतों)जीवोंसें, वैरभाव मेरे नहीं किसीसें, ४९, इसतरेमें, आलोचा(प्रकाशकिया)
व्वभूएसु, वेरंमज्झंनकेणइ, ४९, एव महं, आलोइअ, निं
निंदाकरी गुरुसन्मुखगर्हणाकरी, दुगंछाकरीअच्छीतरे, त्रिविधप्रतिक्रमताहुआ, वंदना
दिअगरहिअ, दुगंछिअंसम्मं, तिविहेणपडिकंतो, वंदा-
करताहूंमें जिनचोवीसोंकों, ५०, एसाश्रावकोंके सम्यक्तयुक्त १२ व्रतातिचारसूत्रसंपूर्ण ॥,
मिजिणेचउव्वीसं, ५०, इतिश्रावकातीचारसूत्रं ॥,
अथगुरूक्षामणा, इच्छापूर्वक, मुझेंहुक्मदीजियै, हेभगवान्,
अथगुरुखामणा, इच्छाकारेण, संदिस्सह, भगवन्,
उठाहूं,में, अंदर, दिनकेअपराधकूंखमाणे, मैंयहचाहताहूं,
अब्भुट्ठिओ,मि, अब्भिंतर, देवसियंखामेउं, इच्छं, खा-
खमाताहूंदिनसंवंधी, जोकुछ, अप्रीतिभाव, जादाअप्रीतिभाव, भोजन,
मेमिदेवसियं, जंकिंचि, अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते,
पाणीमें, विनयमें, वेयावच्चमें, एकवेरबोलनेमें, वेर२वोलणेमें, उंचेआसन,
पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे,

वरावरआसन, गुरुवातकरतेवीचमेंवोलाहो, गुरूकीवातपरवातकरीहो, जोकुछ,
समासणे, अंतरभासाए, उवरिंभासाए, जंकिंचि-
मेंविनय, रहितपणाकियाहो, सूक्ष्म अथवा, वादर(स्थूल), आपजाण-
मज्झविणय, परिहीणं, सुहुमंवा, वायरंवा, तुब्भेजा-
तेहो, मेनहींजाणता, वहमिथ्याहुओमेरापाप(दुष्कृत],
णह, अहंनजाणामि, तस्समिच्छामिदुक्कडं,
आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मी, कुलएकआचार्यका,गणवहु-
आयरिय, उवज्झाए, सीसे, साहम्मिए, कुलगणेअ
तआचार्यकापरिवार,जोमेनेंकियाकषाय, सर्व्वमनवचनकायासेंत्रिविधखमाताहूं, १, सर्व्व
जेमेकेइकसाया, सव्वेतिविहेणखामेमि, १, सव्व
श्रमणसंघरूप, भगवंतोंकूं, दोहाथजोडकरमस्तकपर, सर्व्वअ
स्ससमणसंघस्स, भगवओ, अंजलिंकरियसीसे, सव्वं
पराधखमायकरकै, खमताहूं, सर्वोंकों, मैंभी, २, सर्वजीवोंकासमूह-
खमावइत्ता, खमामि, सव्वस्स, अहयंपि, २, सव्वस्सजी-
केसंवंधमेंकियेअपराध, भावसें, धर्ममें, स्थापनाकियाहै, अपणाचित्त, सर्व्वोंकोंख
वरासिस्स, भावओ, धम्म, निहिय, नियचित्तो, सव्वंख-
मायकरकै, खमताहूं, सर्वोंकों, मेंभी, ३,
मावइत्ता, खमामि, सव्वस्स, अहयंपि, ३,
मैं चाहताहूं, स्तुतिकरणेकूं, नमस्कारहुओ क्षमावंतसाधुओंकों,
इच्छामो, अणुसहिं, नमोखमासमणाणं, नमोर्हत्सिद्धा-
नमस्कारहुओ वर्द्धमानस्वामीकों, स्प-
चार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः, ॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय, स्प-
र्द्धा(इर्क्षा) करणेवालेकर्मोंकेसाथ, उसकर्मोंकेजयसें मोक्षप्राप्तहोणेवाले, परास्तकर
र्धमानायकर्मणा, तज्जयाव्याप्तमोक्षाय, परोक्षाय
णेवाले कुतीर्थियोंकों, १, जिनोंकी खुलीहुई, कमलोंकीपंक्तियें तारीफ़कर
कुतीर्थिनाम्, १, येषांविकचा, रविंदराज्या ज्यायः
णेयोग्यचरण, कमलकीश्रेणीकूंधारणकरणे, सदृसइसतरेसंगमिलणातारीफ
क्रम, कमलावलिंदधत्या, सदृशैरिति संगतंप्रशस्यं

लायककहाहुआ, हुओ मोक्षकेअर्थवहजिनेंद्र, २, कषायरूपतापसेंपीडित
कथितं, संतु, शिवायतेजिनेंद्राः, २, कषायतापार्दित
प्राणीओंकूंशांति, करताहै, जो, जिनराजके मुखरूपीमेघसेंनिकला, वह, जेष्ट
जंतुनिर्वृत्तिं, करोति, यो, जैनमुखांबुदोद्गतः, स, शुक्र-
महीनेमेंपैदाभयावर्षातकैजैसा, करो, संतोष, मेरेमें, विस्तारवाणी-
मासोद्भववृष्टिसंनिभो, दधातु, तुष्टिं, मयि, विस्तरोगि-
का, ३. निजश्वेत, सुगंधखसबोईसेंमस्त भमरेओरहिरण, मुखरूप
राम्, ३, स्वसित, सुरभिगंधालीढ, भृंगीकुरंगं, मुखश
चंद्रकों, हमेस, विभ्रमयुक्त, जो, धारतीहै, खुलेहुये कमल उचपर,
शिन, मजश्रं, विभ्रती, या, बिभर्त्ति, विकचकमलमुचैः,
वहफेरअचिंत्यमानप्रभाववाली, समस्तसुखकीकरणेवाली, प्राणोंकीभज-
सास्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री, प्राणभाजां
नवालीद्वादशांगीश्रुतअंगहैजिसका,
श्रुतांगी, ४ इतिस्तुतिः,
जयवंतहेमहाजसवंत २, जयवंतरहोहेमहाभाग्यवंत, जयवंतवंछितसुभफलके,
जयमहायस २, जयमहाभाग, जयचिंतिअसुहफ,-
देणेवाले, जयवंतसमर्थ, परमार्थकेजाणणेवाले, जय२हेजगद्गुरुगुणोसें
लय, जयसमत्थ, परमत्थजाणय, जय२गुरुगरिम
भारीहेगुरू, जयवंतदुःखसेंपीडितजीवोंकैरक्षाकरणेवाले, थंभणपुरमेंविराज
गुरू, जयदुहत्तसत्ताणताणय, थंभणयट्ठिय
मानहेपार्श्वजिन, भव्यजीवहमेसडरावणेसंसारस्तोमका, डरकोंनहींगिणारते
पासजिण, भवियहभीमभवत्थु, भयअवणंता
एसेअनंतगुणी, तुमकोंत्रिकालनमस्कारहुओ,
णंतगुण, तुझतिसंझनमोत्थु,
अच्छेअक्षररूपशालादेओ, द्वादशांगीजिनराजसेंपैदाभई, वहश्रुत
सुवर्णशालनीदेया, द्वादशांगीजिनोद्भवा, श्रु
देवीहमेसमुझकों, समस्तश्रुतज्ञानकीसंपदाकों, १, चारवर्णरूपसंघ
तदेवीसदामह्य, मशेषश्रुतसंपदं, १, चतुर्वर्णाय

का, देवीभवनकीवसणेवाली, समस्तपणेहणोंपापयह,
संघाय, देवीभवनवासिनी, निहत्यदुरितान्येषा,
करो सुख अखंडकों, जिसके क्षेत्रमें प्राप्तहुयेथके, साधू
करोतुसुखमक्षतं, २, यासांक्षेत्रगतासंति, साध-
तेसें श्रावकादिक, जिनराजकीआज्ञाकोंसाधतेरहेहुये, रक्षाकरो
वः श्रावकाद्यः, जिनाज्ञांसाधयंतस्ता, रक्षंतुक्षे
क्षेत्रकेदेवता, ३,
त्रदेवता, ३, इतिस्तुतिः ॥
कमलकैपत्रजैसीविस्तारनेत्रोंवाली, कमलजैसैमुखवाली, कमलकैगाभ
कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी, कमलगर्भ-
जेसीगौरवर्ण, कमलोंपरविराजमानभगवती, देओश्रुतदेवता,
समगौरी, कमलेस्थिताभगवती, दद्याच्छ्रुतदेवता,
सुखकों, १, ज्ञानदर्शनचारित्रगुणोंकरकैयुक्त, पढणापढानाध्यानऔरसंजम,
सौख्यं, १, ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंय-
मैंरक्त(मग्न), करो, भुवनदेवी, कल्याणहमेससवसाधुओंकै २ जिसके,
मरतानां, विदधातु भवनदेवी, शिवंसदासर्व्वसाधूनां, २ यस्याः,
क्षेत्रकों अच्छीतरेआश्रयकरकै, साधुलोकसाधतेहैं क्रियानुष्ठान, वोक्षेत्रदेवताहमेस,
क्षेत्रंसमाश्रित्य, साधुभिःसाध्यतेक्रिया, साक्षेत्रदेवतानित्यं
हुओतुमकों, सुखकेदेणेवाली, ३, परायेमतकेशास्त्ररूपअंधेरेकोंसूर्यजैसै,
भूयान्नः, सुखदायिनी, ३, इतिस्तुतिः, परसमयतिमिरतरणिं,
भवसमुद्र, जलकों, तिरणेकों, प्रधान, नावजैसै, रागरूपरजकोंहवाजैसै,
भवसागर, वारि, तरण, वर, तरणिं, रागपरागसमीरं,
वंदनकरताहूं देवमहावीरकों, १, रोककै, संसारकूं, विहारकेकरणेवाले, दुःखसेहैं
वंदेदेवं महावीरं, १, निरुद्ध, संसार, विहारकारि, दुरंत-
अंतजिसकाएसेदुष्टभावरूपशत्रुगणकूं नाशकरकै, हमेसकेवलियोंमेंप्रधान, तुमारा, भवोंका
भावारिगणानिकामं, निरंतरंकेवलिसत्तमा, वो, भवा-
वहणेवालामोहकेसमूहकोंहरो, २, संदेहकेकरणेवाले, खोटेनयकेजोआगम, रूढी
वहंमोहभरंहरंतु, २, संदेहकारि, कुनयागम, रूढ-

सेंगुप्त,ऐसेमोहरूपकादेकूं, हरणेमेंनिर्मल, पाणीकेपूरजैसै, संसार, समुद्रकों,
गूढ, संमोहपंक, हरणामल, वारिपूरं, संसार,सागर समुत्त-
तिरणे, नावसमान, एसावीरप्रभूकाआगम, उत्कृष्टसिद्धिकाकरणेवाला, नमनकर्ताहूं, ३
रणोरु, नावं, वीरागमं, परमसिद्धिकरं, नमामि, ३,
जिसकीखसवोईकेसमूहलोभसें, खेंचेभयेचंचल, भ्रमरोंकीश्रेणी, ऐसेप्रधानकमलमेंहैनि-
परिमलभरलोभा, लीढलोला लिमाला, वरकमलनि-
वासजिनका, हार, अंधेरामें देदीप्यमान, जादासंसाररूप, कैदगृहकों, विच्छेद
वासे, हार, नीहार, भासे, अविरलभव, कारागार विछि-
करनेवाली, करो, कमलहैहाथमैं, मेरे, मंगल, हेदेवी, प्रधान,
त्तिकारं, कुरु, कमलकरे, मे, मंगलं, देवि, सारं ४ इति

अढाई संक्षाके, द्वीपसमुद्रकेविषै, पनरे
अथ मुनिवंदन, ॥ अड्ढाइज्जेसु, दीवसमुदेसु, पन्न-
कर्मभूमीकेविषै, जितने, कोईभी, साधूहै, रजोहरण[ओघा], गुच्छ,
रसकम्मभूमीसु, जावंत, केवि, साहू, रयहरण, गुच्छ,
पात्रोंकों, धारणेवाले, १, पांचमहाव्रतकेधारणेवाले, अठारेहजार,
पडिग्गह, धारा, १, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स,
शीलकेअंगकोंधारणेवाले, संपूर्णआचाररूपचारित्रकेपालक, उनसबोंको, निलाडसें,
सीलंगधारा, अख्खयायारचरित्ता, तेसव्वे, सिरसा,
मनसें, मस्तकसें, वंदनकरताहूं, १,
मनसा, मत्थएण, वंदामि, १,
प्रधान, सुवर्ण, शंख, मूंगे, लीलम, मेघ, जेसारंगवाला, दूरगया
वर, कणय, संख, विद्रुम, मरगय, घण, सन्निहं, विगय
हैमोहजिनोंका, सत्तरऊपरसोतीर्थंकरोकों, सर्वदेवतोंनेपूजा, मैंवंदनकर्त्ताहूं,
मोहं, सत्तरिसयंजिणाणं, सव्वामरपूइयं, वंदे, १
श्रीस्तंभनकपुरमेंरहेभये, पार्श्वनाथस्वामीकों, वहइनतीर्थं, पतीकों
सिरिथंभणयट्ठिअ, पाससामिणो, सेसतित्थ, सामीणं,
तीर्थकेउन्नती(उदय)केकारण, सुर, असुरोंके, फेर, सर्वोंके, १,
तित्थसमुन्नइकारणं, सुरा, सुराणं, च, सव्वेसिं, १,

इनोंके, मैं, स्मरणार्थ, कायोत्सर्ग, करताहूं, सक्तीयुक्त, भक्ती
एस, महं, सरणत्थं, काउसग्गं, करेमि, सत्तिए, भत्ती-
करकै, गुणसुस्थित, संघके, अच्छीउन्नतीकेवास्ते, करताहूं, कायोत्स-
ए, गुणसुट्ठिअस्स, संघस्स, समुन्नइनिमित्तं, करेमि, का
र्ग(कायाकूंवोसराना), २,
उस्सग्गं, २,
अथजिनप्रतिमावंदन, श्रीसेढी, नदीके, तटपर, नगरप्र-
अथचैत्यवंदन ॥ श्रीसेढी, तटिनी, तटे, पुरव-
धान, श्रीस्तंभनकनाममें, देवताकेवचनसें, श्रीपूज्य, अभयदेवसूरिः,
रे, श्रीस्थंभने, स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या, भयदेवसूरि,
पंडितोंकैस्वामीनैं, अच्छीतरेआरोपणकिया, भलेप्रकारसींचनकिया,स्तवना
विबुधाधीशैः, समारोपितः, संसिक्तः,स्तुतिभि,र्ज
करकैजलसें, निरुपद्रवमुक्तिफल, देदीप्यमान, फणावलीपत्र, श्रीपार्श्व,
लैः, शिवफलः, स्फूर्जत्, फणापल्लवः, पार्श्वः
नाथकल्पवृक्ष, वहमेरे, देओ, हमेस, मनवंछित, १, मनसंबं
कल्पतरुः, समे, प्रथयतां, नित्यं, मनोवांछितं, १, आ
धीपीडा, शरीरकीपीडा, हरोहेदेव, जीरानामपल्लीके, मस्तकमेंमणीजैसे, श्रीपार्श्व,
धि, व्याधि, हरोदेवो, जीरापल्लिः, शिरोमणिः, पार्श्व,
नाथ, जगत्केस्वामी, नमनकरणेसेंहेनाथ, मनुष्योंकेकल्याणकारीहुओ,
नाथो, जगन्नाथो, नतनाथो, नृणांश्रिये, २,
चारकषायरूप, प्रतिमल्लकोंउखेडनेवाले, दुःखसैंजीतीजै, एसाकामदेवकेमां
चउक्कसाय, पडिमल्लुल्लुरण, दुज्जय, मयणमाण
नकोंमोडनेवाले, रसयुक्त, प्रियंगुजैसा,रंग, हस्तीजैसेचालजिनोंकी, जयवंत,
मसमूरण, सरस, पियंगु,वण्ण, गयगामी, जयउ, पा
पार्श्वनाथभुवनतीनके, स्वामी, १, जिनोंकेशरीरकीकांति, मुखमलजेसा, स्निग्ध
स,भुवणत्तय, सामी, १, जसुतणुकंति, कडिप्प, स
[चीकणा] वह, प्रभु, पार्श्वनाथ, देओ, वंछित, २,
णिद्धउ, सो, पहु, पास, पयत्थउ, वंछिय, २,

अर्हंत, भगवंत, इंद्रोकरकैपूजित, सिद्धभगवान,फेर, मुक्तिमेंरहेभये,
अर्हंतो, भगवंत, इंद्रमहिता, सिद्धा,श्च, सिद्धिस्थिता
आचार्यभगवान्, जैनशासनकी, उन्नतीकरणेवाले, पूजनीकउपाध्याय,
आचार्या, जिनशासनो, न्नतिकराः, पूज्याउपाध्या
भगवान्, श्रीसर्वज्ञकासिद्धांतअच्छीतरेपढाणेवाले, मुनिवर(प्रधान)रत्नतीनके
यकाः, श्रीसिद्धांतसुपाठका, मुनिवरारत्नत्रयारा
आराधक, पांचयह, परमेष्ठी, हमेस, करो तुमकों, मंगल, १,
धकाः, पंचैते, परमेष्ठिनः, प्रतिदिनं, कुर्व्वंतु,वो, मंगलं, १,
अथपोसहका, प्रत्याख्यान, करताहूं,में,हेपूज्य,पौषधकों, आहार
अथपोसहपच्चखाण,॥ करे,मि,भंतेपोसहं, आहा-
कापौषधकों, देशसें, सर्व्वसें, अथवा, शरीरकासत्कारस्नानादिकका, पौषध,
रपोसहं, देसओ,सव्वओ, वा, सरीरसक्कार, पोसहं,
सर्वसें, ब्रह्मचर्यकापौषधकों, सर्व्वसें, अव्यापारकापौषधकों,
सव्वओ, बंभचेरपोसहं, सव्वओ, अव्वावारपोसहं,
सर्वसें, चारप्रकारकापौषध, सावद्य(पापकारी)जोगका, प्रत्याख्यान
सव्वओ, चउव्विहेपोसहे, सावज्जंजोगं, पच्चख्खा
में, जहांतक, दिन, दिन, रात, अथवा, सेवाकरूंगामें, दुविध,
मि, जाव, दिवसं, अहो, रत्तिं, वा, पज्जुवासामि, दुविहं,
त्रिविधकरकै, मनसें, वचनसें, कायासें नहींकरूं, नकरा
तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, नकरेमि, नका
उं, उसकाहेपूज्य, प्रतिक्रमताहूं, निंदताहूं, गुरूकीसाक्षीनिंदताहूं,
रवेमि, तस्सभंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,
आत्माकोंवोसराताहूं,
अप्पाणंवोसिरामि,
ठिकाणेसेंचलनाहिलना, फिरना, उपयोगसें, अथवानिरुपयोगसें, हरित
ठाणेकमणे, चंकमणे, आउत्ते, अणाउत्ते, हरियका-
वनस्पतीकासंघट्टकियाहो, बीजकायसंघट्टकियाहो, थावरकायकासंघट्टकियाहो,
यसंघट्टे, बीयकायसंघट्टे, थावरकायसंघट्टे, छ-

जूंवगेरेकासंघट्टकियाहो, सर्वइनोंमेंसें, दिनमें, खोटाविचारकियाहो,
प्पइआसंघट्टे, सव्वस्सवि, देवसिय, दुच्चिंतिअ, दु
खोटाबोलाहो, बेतरेवैठाहो, इच्छाकरकै, आज्ञादीजियै, चाहताहूं,
ब्भासिय, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण, संदिसह, इच्छं,
उसका, मिथ्याहुओ, मेरा, पाप,
तस्स, मिच्छा, मि, दुक्कडं,
संथारारातकाविछाना, आघापीछाकिया, एकजगेसेंदूसरीजगेकिया, बेर२पांवोकोंसमेटा,
संथारा, उवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी,
बेर२पसारा, जूंवगेरोंकीसंघट्टनाकरीहो, विनाआंखोंसेंदेखी
पसारणकी. छप्पइआसंघट्टणकी, अचक्खुविस
हुईजमीनपरदस्तपेशावकियाहो, सबरातसंबंधी, बुराविचाराहो, बुरावचनबो
यकायकी, सव्वस्सविराइअ, दुच्चिंतिय, दुब्भासि
लाहो, बेतरेवैठाहो, इच्छाकरके, हुक्मदेओ, चाहताहूंउनका, मिथ्या
य, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण, संदिसह, इच्छंतस्स, मि
हुओ, मेरा, पाप,
च्छा, मि, दुक्कडं, ॥

जगत्में

अथपोसहमेंकहणेउपदेसमालासिज्झाय ॥ जगचू

चूडामणी जैसे, ऋषभदेव, महावीर, तीनलोककेसिरमें, तिलकसमान,
डामणिभूओ, उसभो, वीरो, तिलोयसिरिं, तिलओ,
एकहीलोकमेंआदित्य[सूर्य], एकहीनेत्रसमतीनभुवनके, १, एकवर्षत-
एगोलोगाइच्चो, एगोचक्खूतिहुयणस्स, १, संवच्छ-
क, ऋषभजिनराज, छमहीनेतकश्रीवर्द्धमानजिनचंद्र, इसतेरे
र, मुसभजिणो, छम्मासेवद्धमाणजिणचंदो, इय
विचरे, विगरआहारकिये, यत्नकरोतपमें, इनोंकेउपमानकरके, २,
विहरिया, निरसणा, जएज्जए, ओवमाणेणं, २,
जो, पहले, तीनलोककेनाथ, सहनकिया, बहोतसे, नीचतुच्छलोकों
जइ, ता, तिलोयनाहो, विसहइ, बहुयाइं, असरिस

मनुष्योंका, एसेजीवकोअंतकारकमरणजेसादुख, एसीक्षमा, सर्व्वसाधुओंनेंकरणी
जणस्स, इयजीयंतकराइं, एसखमा, सव्वसाहु
३, नहींध्यानसेंचलायसके, वड़ेमेंवडापराक्रमकियावर्द्धमानजिनचंद्रनें,
णं, ३, नचइज्जइचालेउं, महइमहावद्धमाणजिण
उपसर्गेहजारोंकरणेसेंभी, मेरूपहाडजैसेंनहींडिगागूंज
चंदो, उवसग्गसहस्सेहिवि, मेरुजहावायगुं-
हवासें, ४, कल्याणकारीविनयकरकैविनीत, प्रथम, गणधर,
जाहिं, ४, भद्दोविणीयविणओ, पढम, गण
समस्तश्रुतज्ञानकेधरणहार, जाणतेहुयेभीउसश्रुतकेअर्थकों,
हरो, समत्तसुयनाणी, जाणंतोवितमत्थं, वि
अचरजयुक्तहृदयसें, भगवानसेंपूछकेफेरसुणासब, ५, जोआज्ञाहुक्मदेवे
म्हियहियओ, सुणइसव्वं, ५, जंआणवेइरा-
राजा, नगरआदिककेलोकउसकूंमस्तककरकेचाहतेहैं, इसतरेगुरु
या, पयइओतंसिरेणइच्छंति, इइगुरुजण
जनोंकेमुखकाकहाहुआ, दोनोंअंजलीपुटसें, सुणनाचाहिये, ६, जेसें
मुहभणियं, कयंजलिउड्डेहिं, सोयव्वं, ६, जह
देवतोंकेगणसमूहमेंइंद्रशक्र, ८८ग्रहगण तेसें तारागणसमूहमेंजैसेंचंद्र,
सुरगणाणइंदो, गहगणतारागणाणजहचंदो,
जैसें, प्रजासमूहमें, नरेंद्रराजा, तैसेंसाधूओंकेसंघमेंभीगुरु, आचार्यआनंद-
जहय, पयाण, नरिंदो, गणस्सविगुरु, तहाणंदो
कारी, ७, वालकहैएसासमझराजाकों, नहींप्रजा, अनादरकरतीहै, एसीहीओप-
७, वालुत्तिमहीपालो, नपया, परिहवइ, एसगुरु
मागुरूकीहै, जिसवास्तेवयपर्यायसेंकमभीआचार्यकोंअग्रेश्वरीकरकेविचरैसाधूतैसें
उवमा, जंवापुरओकाउं, विहरंतिमुणीतहासो
वहभी, ८, विशेषरूपवान, तेजवान, वर्त्तमानकालमेंप्रधानश्रुतवंत, मीठेव
वि, ८, पडिरूवो, तेयस्सी, जुगप्पहाणागमो, महुर
चनवोलणेवाले, वडेगहरे, धीरजवान, उपदेशदेणेमेंतत्पर, ऐसैआचार्यहोतेहैं,
वक्को, गंभीरोधिइमंतो, उवएसपरोय, आयरिओ,

९, एककीकहीवातछिद्रदूसरेकोंनहींकहै, सौम्यमूर्त्ति, गुणकेसंग्रहकास्वभाव, नियमा-
९, **अपरिस्सावी, सोमो, संगहसीलो, अविग्गह**
दिधारणेवाले, विकथानकरे, स्थिरस्वभाववाले, प्रशांतहृदयऐसैगुरुगुणधारीआचा
मईय, अविकत्थणो, अचवलो, पसंतहियओगुरुहो
र्यहोतेहैं, १०, किसीभीकालमेंजिनवरेंद्र, प्राप्तहुयेअजरअमरस्थानमेंतबमा
ई, १०, कइयाविजिणवरिंदा, पत्ताअयरामरंपहंदा
र्गदेणेकूं, आचार्यतीर्थचारसंघरूपकों, धारतेहैंसबज्ञानादिकसंपदासंपूर्ण, ११,
उं, आयरिएहिंपवयणं, धारिज्जइसंपयंसयलं, ११,
जिसकेपिछाडीचलतीहैएसीभगवती, राजाकीबेटीआर्याचंदनाजी, सहस्रलोकोंसेपूजापाती,
अणुगम्मईभगवई, रायसुअज्जा, सहस्सवंदेहिं,
तोभीनहींकरतीहैमानगर्वकों, जाणतीहैयेगुणकामहात्महैमेरानहींनिश्चै, १२, उसीदि
तहविनकरेइमाणं, परिच्छइतंतहानूणं, १२, दिण
नकादीक्षालियाभयाकंगालकेभी, सन्मुखउठतीहै, साधवी, चंदनबाला,
दिक्खियस्सदमगस्स, अभिमुहा, अज्ज, चंदणा,
आर्या, नहींचाहतीहै, आसनकाग्रहनकरना, यहसबविनयसाधुओंका
अज्जा, नेच्छइ, आसणगहणं सोविणओस
साधवियांकरतीहै, १३, वर्षसोकीदीक्षालीभईसाध्वियोंका,
व्वअज्जाणं, १३, वरिससयदिक्खियाए, अज्जा
आजकेदीक्षालियेहुयेसाधुओंके, सन्मुखजाणा, द्वादशावर्त्तवंदना,
ए अज्जदिक्खिओसाहू, अभिगमण, वंदण, न
नमस्कारकरणादिक, आसनदानादिकविनयसेंसाधूपूज्यहै, १४, श्रुतचारित्ररूपधर्मपु
मंसणेण, विणएणसोपुज्जो, १४, धम्मोपुरिसप्पभ
रुषोंसेंपैदाभयाहै, पुरुषोंमेंप्रधानतीर्थंकरोंनेंकहाइसवास्तेपुरुषधर्मवडाहै, लोकीकमें
वो, पुरिसवरदेसिओपुरिसजिट्ठो, लोएविपहुपु
भीसमर्थपुरुषहै, तोफेरक्याकहणालोकोत्तमधर्ममें, १५, संवाहनराजा,
रिसो, किंपुणलोगुत्तमेधम्मे, १५, संवाहणस्सरन्नो,
उसकेकाशीदेशवाणारसीनगरीमें, कन्याहजार, अधिक,
तइयावाणारसीइनयरीए, कन्नासहस्स, महियं,

होतीहुई, निश्चै; रूपवंती, १६, तोभी, वह, राज्यलक्ष्मी,
आसि, किर, रूववंतीणं, १६, तहविय, सा, रायसिरी,
पलटतीकूं, नहींरक्षाकरीउनोंसें, पेटमेंरहाहुआएकनें, रक्षा
उल्लट्टंती, नताइ्याताहिं, उयरट्ठिएणइक्केण, ता
करीअंगवीरनामपुत्रनें, १७, स्त्रियां, अच्छी, वहोतरहतेभी,
इयाअंगवीरेण, १७, महिलाण, सु, वहुयाणवि, म-
अंदरसे, यह, समस्त, घरकासारधनादिक, राजाकेनोकरपुरुषलेजा
झाओ, इह, समत्त, घरसारो, रायपुरिसेहिंनिज्ज-
तेहैं, जिसघरमेंजवपुरसजहांनहींहोयतो, १८, क्यापरमनुष्योंकूंवहो
इ, जेणेविपुरसोजहंनत्थि, १८, किंपरजणवहु
तजणाणेसेंवाकवीकराणेसें, अच्छाहैआत्माकीसाक्षीसेंकियासुकृत, इहां
जाणावणाहिं, वरमप्पसक्खियंसुकयं, इहभर
भरतचक्रवर्त्ती, प्रसन्नचंद्रराजाकाद्रष्टांतहै, १९, अन्यमतधारी
हचक्कवट्टी, पसन्नचंदोयदिट्ठंता, १९, वसोवि
वेषधारतेहैंवोप्रमाणनहीं, क्योंकेअसंजमजीवघातादिपदमेंवर्त्ततेहुयेकों, क्याहु-
अप्पमाणो, असंजमपएसुवट्टमाणस्स, किंप
आवदलाणेवेषसें, क्याजहरनहींमारताहैखाणेसेंनिश्चैमारताहै, २०, धर्म
रियत्तियवेसं, विसन्नमारेइखज्जंतं, २०, धम्मंर
कीरक्षाकरताहैवेष, संकताहैवेषकरकेमैंदीक्षितजैनकासाधूहूं, जैसेंउन्मा
क्खइवेसो, संकइवेसेणदिक्खिओमिअहं, उम
र्गमेंपडतेहुयेचोरजारादिकसें, रक्षाकरताहैराजादेशकों, २१, आत्माका
ग्गेणपडंतं, रक्खइरायाजणवओय, २१, अप्पा
कृत्यजाणतीहैआत्मा, जैसारहाहुआहैआत्माकीसाक्षीसेंधर्मादिकअनुष्ठान,
जाणइअप्पा, जहट्ठिओअप्पसक्खिओधम्मो,
आत्माकरतूं वहतेसा, जैसेंआत्मासुखकीवहणेवालीहोय, २२,
अप्पाकरेइतंतह, जहअप्पसुहावहंहोइ, २२,
जिस२समयमेंजीव, समस्तपणेप्रवेशकरताहैजिन२भावकरके, वहउस२
जंजंसमयंजीवो, आविस्सइजेण२भावेण, सोतंमि

समयमें, सुभअथवाअसुभबांधताहैकर्म, २३, धर्मअगरमदकरकै
तंमिसमए, सुहासुहंबंधएकम्मं, २३, धम्मोमएणहूं
हो, वहनहींहोताजेसेठंढगरमीऔरहवासेंहणीजताहुआ, एकवर्षतकभोज
तो, तोनविसीउएहवायविजड्डिओ, संवच्छरम
नविनाकिये, बाहूबलीराजऋषीतेसेंक्लेशभोगताहुआ, २४, अपणी
णसीओ, बाहुवलीतहकिलिस्संतो, २४, निअग
बुद्धिसेंविकल्पित, विचारकरणेसें, स्वछंदबुद्धिसेंचलनेकरकै, क
मइविगप्पिय, चिंतिएण, सच्छंदवुद्धिचरिएण, क
हांसेंपरलोककाहितहोय, इसवास्तेकरणागुरूकैउपदेशसैं, २५, अहंकारी
त्तोपारत्तहियं, कीरइगुरुअणुवएसेणं, २५, थद्धो
निरोपकारीकृतघ्न, विनयरहितअविनीत, गर्वितमानी, गुरूकूंप्रणामनहींकरता,
निरोवयारी, अविणीओ, गव्विओ, निरवणामो,
एसासाधूजनोंके, निंदाकरणेयोग्यहोताहै, मनुष्योंमेंभीदुष्टस्वभावीहैएसीहीलना
साहूजणस्स, गरहिओ, जणेविवयणिज्जयंलहइ,
पाताहै, २६, थोडेमेंहीसत्पुरुष, सनत्कुमारचक्रीकीतरेकेईप्रतिबोधपातेहैं,
२६, थोवेणविसप्पुरिसा, सणंकुमारुव्वकेइवुझंति,
इससरीरमेंथोडेकालमेंसमस्तहानीहै, जोनिश्चैदेवतानैंउनोंकोंकहा, २७, जती
देहेखणपरिहाणी, जंकिरदेवेहिंसेकहियं, २७, ज
मुक्तिजाणेवालासातलवकालआयूरहणेसेंपंचानुत्तरविमानवासीहोताहै,वहभीसंसारमेंजन्म
इतालवसत्तमसुर विमाणवासीविपरिवडंतिसुरा
लेताहै,इसवास्तेविचारणेसें,बाकीसब, इससंसारमेंशाश्वत्क्याहैकुछनहीं, २८, कैसेंउस
चिंतिज्जंतं,सेसं, संसारेसासयंकयरं, २८, कहतंभन्न
कोंसुखकहणा, जोबहोतकालसेंभीजिसकादुःखभोगणाहोताहैदेवसुखसेंफेरगर्भकादुःख,
इसुक्खं, सुचिरेणविजस्सदुक्खमल्लिहियए, जंचम
जोमरणकीवख्त, भवनरकादिकपर्यटनकापीछैबंधहोताहै, २९, उपदेशहजारोंदे
रणावसाणे, भवसंसाराणुबंधंच, २९, उवएससह-
णेसैंभी, बोधदेतेहुयेभीनहींभीप्रतिबोधपाताहैकोई, जेसेंब्रह्मदत्तराजा
स्सेहिवि, बोहिज्जंतोनवुझईकोई, जहवंभदत्त

जैसाउदाईराजाकोंमारणेवालाकोईनहींभीप्रतिबोधपाता, ३०, हाथीकैकानकीतरेचंच-
राया, उदाइनिवमारओचेव, ३०, गयकन्नचंचला
ल, नहींछोडणेसें इसराज्यलक्ष्मीकों, जीवस्वकर्मोंसेंयुक्तपापोंसें
ए, अपरिच्चत्ताइरायलच्छीए, जीवासकम्मकलि-
भारसेंभराहुआगिरताहैनीचेनरकमें, ३१, कहणेमेंभीजीवोंके,
मल, भरियभरातोपडंतिअहे, ३१, बोत्तूणविजीवाणं,
अच्छाओरदुष्करअैसेपापचरित्र, हेभगवान्क्यावहयेहै(उत्तर)हांवहीहै,
सुदुक्कराइंतिपावचरियाइं, भयवंजासासासा,
प्रत्यादेशदृष्टांतनिश्चेयेएसाहीहुआतेरे, ३२, अंगीकारकरकैदोष, अपणा
पच्चाएसोहुयणमोते, ३२, पडिवज्जऊणदोसे, निय
अच्छीतरेफेरपावोंमेंगिरकै, तदपीछेमृगावतीसाध्वीकों, पैदाभया
ए सम्मंचपायवडियाए, तोकिरमियावईए, उपन्नंके
केवलज्ञान, ३३,
वलंनाणं, ३३, इतिपोसह । सज्झायसंपूर्ण ॥,
अब रात्रीसंस्तारकगाथा, निषेधकर, निषेधकर, न
अथराईसंथारागाथा, निस्सिहि, निस्सिहि, न
मस्कारकरताहूंक्षमाश्रमणोंकों, गौतमादिक, महामुनीराजोकूं, आ
मोखमासमणाणं, गोयमाईणं, महामुणिणं, अणु
ज्ञादेओ बैठणेकों, आज्ञादेओहेपरमगुरू, भारीगुण
जाणहचिठिज्जा, अणुजाणहपरमगुरू, गुरुगुण
रत्नोंसें, मंडितहैशरीरआपका, बहुतप्रतिपूर्णहै, पोहररात्री, रात्री
रयणेहिं, मंडियंसरीरा, बहुपडिपुन्ना, पोरिसी, राई
संस्तारकशय्याकरताहूं, १, आज्ञादेओसंथारेकी, भुजा वांईपर
संथारएठाएमि, १, अणुजाणहसंथारं, वाहुबहा
मस्तकधर वांईकरवटपसवाडे, कुर्कटकीतरेपांवोंकोंपसार, अभ्यंतर(अंद
णेणवामपासेण, कुक्कुडपावपसारेणं, अंतरंत
र)तपमार्जनजमीनमें, संकोचितसंडासामें, इधरउधरपसवा
पमज्जएभूमिं, २, संकोइअसंडासा, उवट्टंतेय

डाफेरतेशरीरकूंप्रमार्जना, दिव्य[तेजउपयोगकूं] उश्वासरोकणा,
कायपडिलेहा, दिव्वाईउवओगं, उसासनिरूह
लोकमें, जोमुझकोंहोयजावैंप्रमाद, इस, देहीसें,
णा, लोए, ३ जइमेहुज्जपमाओ, इमस्स, देहस्स, इ
इसरातको, आहार, वस्त्र, शरीर, सब, मनवचनकायासें,
माइरयणीए, आहार, सुवहि, देहिं, सव्वं, तिविहेण,
वोसराया, ४, आश्रव(पापकारस्ता), कषायकाबंधन, लडाई, क
वोसिरिअं,४, आसव, कसायबंधण, कलहा, अ
लंकदैना, परायोंकीनिंदा, बेचेनी, खुसवख्ती, चुगली, कपटाईसें
क्खाण, परपरिवाओ, अरइ, रई, पेसुन्नं, मायामो
झूठबोलणा फेर, मिथ्यात्व, ५, वोसराऊंगा,इत्यादि, मोक्षमार्ग, अच्छेस्वर्ग
सं, च, मिच्छत्तं, ५, वोसरिसुमाइं, मुक्खमग्ग, संसग्ग
केविघ्नभूत, दुर्गतिके, बंधनकेकारण, अठारेपापोंके
विग्घभूआइं, दुग्गइ निबंधणाइ, अठारसपाव
ठिकाणे, ६, एकेलाहूंमें नहींहैमेराकोईभी, नहींमेंओरकिसीकाभी
ठाणाइं, ६, एगोऽहं नत्थिमेकोई, नाहमन्नस्सकस्स
हूं, इसतरे अदीन मनसें, आत्माकूं शिक्षाकरणा, ७, इके
इ, एवंअदीणमणसो, अप्पाणमणुसासए, ७, एगो
लामेराशाश्वतआत्माहै, ज्ञान दर्शनकरकैसंयुक्त, वाकीकेमेरे
मेसासओअप्पा, नाणदंसणसंजुओ, सेसामेबा
बाहिरकेभावहै, सर्व्वहेसोसंयोगलक्षणहै, ८, संजोगकीजडसेंइस
हिराभावा, सव्वेसंजोगलख्खणा, ८, संजोगमूलाजी
जीवनें, पायादुःख परंपरासें, तिसवास्तेसंयोगकासंबंध, सबकों
वेण, पत्तादुक्खपरंपरा, तम्हासंजोगसंबंध, सव्वं
मनवचनकायासें वोसराताहूं, ९, अरिहंततोमेरेदेवहै, जहांतक
तिविहेणवोसिरियं, ९, अरिहंतोमहदेवो, जावज्जी
जीऊंउहांतकभलेसाधूगुरुहै, केवलीकाकहातत्वधर्महै, इयसम्यक्तमेनें
वंसुसाहुणोगुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसमत्तंमए

ग्रहणक्रिया, १०, चारमंगलहै, अरिहंतभगवानमंगल, सिद्धभगवा
गहियं, १०, चत्तारिमंगलं, अरिहंतामंगलं, सिद्धामंग
नमंगल, साधूमंगल, केवलीभगवानकाकहा धर्ममंगल, ११, चारलो
लं, साहूमंगलं, केवलिपन्नत्तोधम्मोमंगलं, ११, चत्ता
कोंमेंउत्तमहै, अरिहंतलोकोंमेंउत्तम, सिद्धलोकोंमेंउत्तमहै,
रिलोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा,
साधूलोकोंमेंउत्तमहै, केवलीकाकहा धर्महैसोतीनोंलोकमेंउत्तमहै, चार
साहूलोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तोधम्मोलोगुत्तमो, चत्ता
सरण अंगीकारकरताहूं, अरिहंतोंकाशरणअंगीकारकरताहूं,
रिसरणंपवज्जामि, अरिहंतेसरणंपवज्जामि, सि
सिद्धोंकासरणअंगीकारकरताहूं, साधुओंकासरणअंगीकारकरताहूं, केव
द्धेसरणंपवज्जामि, साहूसरणंपवज्जामि, केवलि
लीकाकहाधर्मअंगीकारकरताहूं, अरिहंतमंगलमेरेहै,
पन्नत्तंधम्मंसरणंपवज्जामि, अरिहंतामंगलंमज्झ,
अरिहंतमेरेदेवहै, अरिहंतोंकीकीर्त्तनाकरताहुआ, बोस
अरिहंतामज्झदेवया, अरिहंताकित्तिअंताणं, बो
राताहूंइसतरेपापोंकों, १, सिद्धपरमेश्वरमंगलमेरेहै, सिद्धभगवानमेरे
सिरामित्तिपावगं, १, सिद्धायमंगलंमज्झ, सिद्धायमज्झ
देवहै, सिद्धभगवानकीकीर्त्तनाकरताहुआ, बोसराताहूंइसतरेपापोंकों
देवया, सिद्धायकित्तिअंताणं बोसिरामित्तिपावगं,
२ आचार्यमंगलमेरेहै, आचार्य, मेरे, देवहै,
२ आयरियामंगलंमज्झ, आयरिया, मज्झ, देवया,
आचार्यमहाराजकी, कीर्त्तनाकरताहुआ, बोसराताहूंइसतरेपापोकों, ३,
आयरिआ, कित्तिअंताणं, बोसिरामित्तिपावगं, ३,
उपाध्याय, मंगल, मेरेहै, उपाध्याय, मेरे, देवहै, उपाध्या
उवज्झाया, मंगलं, मज्झ, उवज्झाया, मज्झ, देवया, उव
योंकी, कीर्त्तनाकरताहुआ, वोसराताहूं, इसतरे, पापोंकों, ४,
ज्झाया,कित्तिअंताणं, बोसिरामि,त्ति, पावगं, ४, सा

साधूमंगल, मेरेहै, साधूमेरेदेवहै, साधुओंकीकीर्त्ते
हूणोमंगलं, मझ्झ, साहूणोमझ्झदेवया, साहूणोकि
नाकरताहुआ, वोसराताहूं इसतरे पापोंकों, ५, पृथ्वी, जल,
त्तिअंताणं, वोसिरामित्तिपावगं, ५, पुढवि, दग, अ
अग्नि, हवा, इनएकेकोंका सात जोनी लाखहै, वनस्पती
गनि, मारुअ, इक्किक्केसत्तजोणिलक्खाओ, वणप
प्रत्येक, अनंतकाय, दस, चौदे, जोनी, लाखहै, १, विकलें
त्तेय, अणंते, दस, चउदस, जोणि, लक्खाओ,१, विगलिं
द्रियोंकेदोदोलाखहै, चार२लाख नारकीऔरदेवतोंके, तिर्यंचोंके होतेहैं
दिएसुदोदो, चउरो२यनारयसुरेसु, तिरिएसुहुंति
चारलाख, चउदहलाख, मनुष्योंकीयोनिहै, २, खमाताहूं, सर्व्वजीवों
चउरो, चउदसलक्खाउ,मणुएसु, २, खामेमि, सव्वजी
कों, सर्व्वजीवखमो(माफकरो)मुझें, मित्रताहैमेरेसर्व्वभूत(जीवोंसें), वैरविरोध
वे, सव्वेजीवाखमंतुमे, मित्तीमेसव्वभूएसु, वैरंमझ्झ
मेरेनहींकिसीसें, ३, इसतरेमेनेंआलोचनकिया, निंदाकरी, विशेषनिंदाकरी, दु
नकेणवि, ३, एवमहंआलोइय, निंदिय, गरहिअ, दुगं
गंछाकरीअच्छीतरे, मनवचनकायासेंप्रतिक्रमताहूं, वंदनकरताहूंमेंजिनचोवीसों
छियंसम्मं, तिविहेणपडिक्कंतो, वंदामिजिणेचउव्वी
कों, ४, क्षमणा, खमाणा, मैंनेक्षमाया(माफीमांगी), सर्व्वजी
सं, ४, खमिअ, खमाविअ, मइखमिअ, सव्वहजी
वोंकीनिकायोंसें, सिद्धभगवानकेसन्मुखप्रकाशकिया, मेरेकिसीसेंवै
वनिकाय, सिद्धअसाखआलोयणह, मझ्झहवैर
रनहींहैभाइयो, ५, सर्व्वजीवकर्मोंकेवस, चौदेराजलोकमेंजन्ममरण,
नभाय, ५, सव्वेजीवाकम्मवस, चउदहराजभमंतु
सेंभमतेहैं,उनसबोंकोंमेंनेंखमाया, मुझेंभी, वह, क्षमाकरो, ६, पूर्ण,
तेमइंसव्वखमाविआ, मझ्झवि, तेह, खमंतु, ६, इति
मेंणंवचनकीशोभाहेपूज्य
अथदेसावगासीकापच्चखाण, अहण्णंभंते

तुमारेपास, देशअवकास१०माव्रत, प्रत्याख्यानकरताहूं, वहइसतरे,
तुम्माणंसमीवे, देसावगासियं, पच्चक्खामि, तंजहा,
द्रव्यसें, क्षेत्रसें, कालसें, भावसें, द्रव्यसेंतो
दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, दव्वओ,
देशावगासिकव्रत, क्षेत्रसेंइसजगे, कालसें,
णं, देसावगासियं, खेत्तओणंइत्थ, कालओ
जहांतकधारणाहै, भावसें, जहांतक, ग्रहोंसे, नहींग्रहीजूं,
णं, जावधारणा, भावओणं, जाव, गहेणं, नगहेज्जा
छलशाकनीआदिकसें, नहींठगाउं, जहांतक, और, किसीभी,
मि, छलेणं, नछलेज्जामि, जाव, अन्नय, केणावि, रो
रोगआतंकसेंपरवशनहींहूं, समतापरिणाम, नहींपलटे, तहांतकसमस्त
गायंकेणए, समेपरिणामो, नपरिवडइ, तावअभि
पणेग्रहणहै, अन्यत्रअनाभोगपणे, भूलजाणेसेंआगारहै, चैत्यकेसंघके
ग्गहो, अन्नत्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, महत्तरा
काममेंजाणामोकलाहै, सवतेरेशरीरअच्छाहैउहांतक,वेमारीमेंनहीं, वोसराताहूं, १,
गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि, १,
पांचथावरजीवयुक्त, द्रव्य
अथ१४नियमसंभारणगाथा, सच्चित्त, १ दव्व
घृततेलदहीदूधमीठा, असवारी, ४, पानसुपारीवगेरा, पोसाख, सूंघने
विगई, ३ वाहण, ४, तंबोल, ५ वत्थ, ६ कु
कीसववस्तु, पहरणेपांवोंकीवस्तु, बिछाणेकीवस्तु, वदनपरलेपकीवस्तु
समेसु, ७ वाहण, ८ सयण, ९ विलेवण, १०
ब्रह्मचर्य, १० दिसिकाप्रमाण, स्नानकेपानीकानियम, रोटीदालचावलसागादि
वंभ, ११ दिसि, १२ न्हाण, १३ भत्तेसु, १४।१
सूर्यउदयभयेपीछे२घडीतक
अथपच्चक्खाणआगार, ॥ उग्गएसूरे,
नवकारगिणकेपारूंनहीं उहांतकनवकारसीव्रतमुझेंहै,
नवकारसहियं,

पच्चक्खाइकहते अंगीकारकरताहूंत्यागरूपव्रत, चारोंहीआहारोंकात्यागहै,
पच्चक्खाइ, **चउव्विहंपिआहा**
अन्नसवजातका, सागतरकारी, लड्डूवगेरेपकवान, कंदजमीनमेंका,दूध,दही,हींग,सों
रं, **असणं,**
फ, निमक, सबतरेका, अशनकात्यागहै, दहीकापानी, जवकाधोवण, तुषोदक,
पाणं,
तंदुलोदक गरमजल शुद्धसबअप्पकायाकात्याग, खादिम, नालेर, खजूर, दा
खाइमं,
ख, सेकाअनाज, आंबा, केले, ककडी, अखरोट, बिदाम, सबमेवे, सबतरेकेफल, खादमकात्यागहै, स्वादिम, पानवीडा, सूंठ, मिरच, पीपर, हरडे, बहेडा, आंवला, तुलछी,
साइमं,
कपेला, कत्था, मोलेठी, तज, तमालपत्र, इलायची, लोंग, वायविडंग, अजवाण, अजमोद, कुलिंजन, कबाबचीणी, कचूर, नागरमोथा, कांटासेलिया, कूंमटिया, पान, सुपारी, पोहकरमूल, जवासेकीजड, बावची, बंबूलकीछाल, धवकीछाल, खेजडकीछाल, खयरसार, येसवस्वादिमकात्यागहै,] भूलकरचीजमूंमेंडाललीयादआणेसेंडालदैतोपच्च-
अन्नत्थणाभोगेणं,
खाणभंगनहींहोय, खालेवेतोपचखाणभंगहोय,] सूर्यकाबराबरकालनहींमालमदै
पच्छन्नकालेणं,
णेसेंखाणेमेंआवेतोपचक्खाणभंगनहीं,] पूरबदिशाकूंपश्चिमभूलकरसमझले
दिसामोहेणं,
वै, पचक्खाणकाकालपूराहुयेपहलीखालेवेतोव्रतभंगनहीं,]
अचानकउछलकरमूंमेंकोईवस्तूगिरजायतोव्रतभंगनहीं]
सहस्सागारेणं,
साधूकेवचनसेंउग्घाडापोरसीआदिकभ्रमयुक्तसुणकरपच्चखाणकालपूराहुवा
साहुवयणेणं,
जांणकैभोजनकरेतोव्रतभंगनहीं]
पच्चक्खाणसेंजादानिर्जराकाकारणजिनमंदिर या श्रीसंघकाकोईवडाकाम
महत्तरागारेणं,

आजाणेसेंपच्चक्खाणकाकालपूराहुयेबिगरपहलेभोजनकरलैतोव्रतभंगनहीं]
पच्चक्खाणकाकालपूराहुयेपहलीशूलादिककोईबेमारीहोजावैऔरपरि
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं,
णामथिरनहींरहैआर्त्तध्यानहोजावैतबरोगमिटाणेदवालैतोव्रतभंगनहीं]
गृहस्थकेदेखतेसाधूभोजनकरेनहींगृहस्थकैआणेसेंदूसरीजगेजाकरभो-
सागारीआगारेणं,
जनकरेतोएकाशणेकाव्रतभंगनहीं, इसीतरेकिसीकीनजरलगतीहो वो च-
लाआवैतबएकाशणेकापच्चख्खाणवालाश्रावकउठकरदूसरीजगेभोजनकरेतो
व्रतभंगनहीं] पगोकोंएकठाकरणेसेंपसारणेसेंथोडाआसनचलेतोव्रतभंगनहीं,
आउट्टणपसारेणं,
गुरुमाहाराजकेआजाणेसेंएकाशनकाभोजनकरताखडाहोजायतोव्रतभंगनहीं]
गुरुअब्भुट्ठाणेणं,
येआगारसाधुओंकाहीहै, सरसआहारदुसरेसाधूकेवचगया, परठणे
पारिठावणियागारेणं,
में दोषजादासमझ, दुसरासाधूएकाशनेवाले साधूकूं भोजन दुसरी वख्त
करणेका कहे, एकाशनेवालावोआहारकरलेवेतो, एकाशनव्रतभंगनहीं,]
थालीवगेरेपात्रोंकेघृतादिकविगयकाअंसलगाभयाहैउसकोंपोंछभी
लेवालेवेणं,
डालालेकिन्बेमालमकुछलगारहगयाहोउसपात्रमें आयंबिलकेपच्चक्खा
णवालाभोजनकरलैतोव्रतभंगनहीं]
आयंबिलादिपच्चक्खाणमें नहींखाणेयोग्यद्रव्यविगयवगेरेकाखा
उक्खित्तविवेगेणं,
णेयोग्यवस्तूकेसंगस्पर्शहोगयाहो, वोद्रव्यखाणेमेंआवैतोव्रतभंगनहीं]
लेकिन्जो विगयआदि पतला द्रव्य हाथसेंउठसकेनहीं एसेद्रव्यसें
स्पर्स हुआ होयतोखाणेसेंव्रतभंगनहीं]
भोजनपुरषणेकीकुडछीआदिकके बेमालम विगयवगेरेद्रव्यसें
गिहत्थसंसिट्ठेणं,
लेपहोय उससेंपुरषदैतोव्रतभंगनही]

सर्वथालूखीरोटी खाखरा किसीनेंवेमालमघीसेंचोपडदियाहैलेकि
पडुच्चमुक्खिएणं,
नूऊपरसेंदिखाईनहींदैस्वादभीघीकानहींमालमदै नीवीवालाखा
लेवेतोव्रतभंगनहीं ऊपरसेंधारविगयलैतोव्रतभंगहोय १५]

प्राणोंकानाशविचारणा, झूठ बोलनेका परिणाम, २ पराइचीजविनाआज्ञालेणा, ३
प्राणातिपात, १ मृषावाद, २ अदत्तादान, ३ मै
विषयकीइच्छा, ४, बाह्याभ्यंतरधनादिइच्छा, ५, रातकाभोजन, ६, गुस्सा
थुन, ४, परिग्रह, ५, रात्रिभोजन, ६, क्रोध,७,
अहंकार, ७, कपटाई, ८, धनादिसंचयपरिणाम, ९, प्रीतीपुद्गलोंपर, १०, द्वेष, ११
मान, ७, माया, ८, लोभ, ९, राग, १०, द्वेष,११
लडाईकरना, १२, झूठा कलंकदेणा, १३, निंदाकरणीगुणीनिर्गुणीकी, १४,
कलह, १२, अभ्याख्यान, १३, परपरिवाद, १४,
हासीकरणी, १५, हर्षकरना, १६, शोककरना, १७, चुगलीखाणी, १८ कपटसें
हास्य, १५, रति, १६, अरति, १७, पैशून्य, १८ माया
झूठसेंठगना, कुगुरुकुदेवकुधर्मकीवांछा,
मोसमिथ्यात्वशल्य,

शांतिनाथप्रभुशांतिकेस्थान,समस्तपणेशांति, रा
। अथलघुशांति ॥ शांतिंशान्तिनिशान्तं, शांतं
गद्वेषरहितशांतभयेउपद्रवजिसकेनमस्कारकरकै, स्तवताहूंशांतिकेकारण, मंत्रों
शांताशिवंनमस्कृत्य, स्तोतुःशांतिनिमित्तं, मंत्र
केपदोंसेंशांतिकेवास्तेस्तवनकरताहूं, १, ओंएसानिश्चयवाचकपदइसवचनसें,
पदैःशांतयेस्तौमि, १, ओमितिनिश्चितवचसे,
वेर२नमस्कारहुओऐश्वर्यवालेयोग्यपूजाके, शांतिनाथभगवानभणी, रा
नमोनमोभगवतेऽर्हतेपूजाम्, शांतिजिनाय, ज
गादिकजीतणेहारे, यशवंत,स्वामीइंद्रियोंकेदमनकर्त्तामुनियोंके, २, सर्वचोतीश
यवते, यशस्विनेस्वामिनेदमिनाम्, २, सकला
अतिशयरूपवडी, संपदाकरकैयुक्त, तारीफ(प्रशंसा)करणेलायक,
तिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय, शस्याय,

तीनलोककेजीवोंसेंपूजित, फेर, वेर२नमस्कारहोय, शांतिनाथदेवकों, ३, सब
त्रैलोक्यपूजिताय, च, नमोनमः, शांतिदेवाय, ३, सर्वा
देवतोंकैसमूहयुक्त, उनोंकेस्वामी६४इंद्रोंसेंपूजेहुये,देवतोंसेंभीनहींजीतेजावै, ती
मरसुसमुह, स्वामिकसंपूजितायनिजिताय, भुव
नलोककेलोकोंकोंपालनेमेंउद्यमवंत, जादाकरकैसावधान, हमेसनमस्कारउनोंकों, ४, सब
नजनपालनोद्यत, तमाय,सततं, नमस्तस्मै, ४, सर्व
पापोंकेसमूहकोंनाशकरणेवाले, सबउपद्रवोंकोंअतिशयशांतिकरणे, दुष्टजो
दुरितौघनाशनकराय, सर्वाशिवप्रशमनाय, दुष्टग्र
ग्रहभूतपिशाच, शाकनीओकोंजादाकरकैमथनेकों, ५, जिसकाशांतिएसा
हभूतपिशाच, शाकनीनां प्रमथनाय, ५, यस्येतिना
नामरूपमंत्र, प्रधानसर्वोत्तमवचनकेउपयोगसेंकियाहैसंतोष, एसीविजयानामदे
ममंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा, विजयाकुरु
वीकरतीहैलोकोंकाहित, फेरइसीतरेनमीहुई,नमस्कारकरोउसशांतिकों, ६, हुओ
तेजनहित, मितिचनुतानमततंशांतिम्, ६, भवतुन
नमस्कारतुमकोंहेभगवती, विजयादेवीअच्छेजयवाली,दुसरेदेवोंसेंअजई, कोईभी
मस्तेभगवति, विजयेसुजयेपरापरैरजिते, अपरा
जगेअनादरनहींपाईजगत्में, जयवंतीहै, एसीस्तुतिकरणेसेंजयदेतीहै, ७, सबभी
जितेजगत्यां, जयतीति, जयावहेभवति, ७, सर्वस्या
फेरसंघकों, सुखउपद्रवरहितमंगलकूंदेणेवाली, साधुओंकोंफेर
पिचसंघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे, साधूनांचस
हमेसउपद्रवरहित, चित्तकीशांति, धर्मवृद्धीदेणेवाली, जयपावो, ८, भव्यजीवोंकोंसिद्धिकर्त्ता
दाशिव, तुष्टि, पुष्टिप्रदे, जीयात्,८, भव्यानांकृतसिद्धे,
चित्तकीसमाधि, मोक्ष, पैदाकरणेवालीभव्यजीवोंकै, अभयदेणेमें, समस्तपणेरक्त,
निर्वृति, निर्वाण, जननिसत्वानां, अभयप्रदान, निरते,
नमस्कारहो, कल्याणदेणेवाली, तुझें, ९, भक्तजीवोंके, कल्या
नमोस्तु, स्वस्तिप्रदे, तुभ्यम्, ९, भक्तानांजंतूनां, शुभा
णकारिणी, हमेसततपरहेदेवी, सम्यग्दृष्टिजीवोंकों, फेर, धीरज, प्रीति, मति,
वहे, नित्यमुद्यतेदेवि, सम्यग्दृष्टीनां, च, धृति, रति, मति,

बुद्धि देणेकों, १०, ज़िनशासनमेंतत्पर, शांतिप्रभूकों
बुद्धिप्रदानाय, १०, जिनशासननिरतानां, शांतिनता
नमनकरतोंको,फेरजगत्केजीवोंकों, लक्ष्मीसंपदाकीर्त्तियशकों, वधाणेवाली
नांचजगतिजंतूनां, श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनिज
हेजयादेवीतुमविजयपाओ, ११, जल, अग्नि, जहर, सांप, दुष्टग्रह
यदेविविजयस्व, ११, सलिला, नल, विष, विषधर, दुष्टग्र
वडेराजरोग, लडाईकेडरसें, राक्षस वैरियोंकासमूह,मरी, चोरएवंसात
ह,राजरोग, रणभयतः, राक्षसरिपुगणमारी, चौरेति
ईति,प्राणघातीजीवादिकोंसें, १२, अवरक्षाकरो२निरुपद्रवपणा, करो२शांति
श्वापदादिभ्यः, १२, अथरक्ष२सुशिवं, कुरु२शांतिंच
फेरकरो२हमेसइसीतरे, संतोषकरो, २ पुष्टिकरो करो, २ कल्याणकोंफेर,
कुरु२सदेति, तुष्टिंकुरु, २ पुष्टिंकुरु, २ स्वस्तिंचकु
करो२आप, १३, हेभगवति, हेगुणवती, हेशिवशांतिरूप, तुष्टिपुष्टि
रु२त्वं, १३, भगवति, गुणवति, शिवशांति, तुष्टिपु
कल्याण, इसलोकमें,करो,२ मनुष्योंके, ओंज्योतिस्वरूपिणीएसा
ष्टि,स्वस्ती, ह, कुरु, २ जनानाम्, ओमितिनमोन
नमस्कार२हुओ, सातशांतिमंत्रकाबीजहै, ३ विघ्नविनाशकमंत्रबीजहै, १४,
मो, ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रः यः क्षः ह्रीं, फुट्फुट्स्वाहा, १४,
इसतरेजिनोंकानामाक्षर, मंत्रपूर्वक, अच्छीतरेस्तुतिकरीहुईजयादेवी,
एवंयन्नामाक्षर, पुरस्सरं, संस्तुताजयादेवी, कु
करतीहै शांतिकैकारणकों, नमस्कारहुओ,२ शांतिभगवानतिनोंकों, १५,
रुतेशांतिनिमित्तं, नमोनमः, शांतयेतस्मै, १५,
इसतरे पूर्वाचार्योंकादिखायाहुआ, मंत्रोंकेपदोंसें गर्भित, स्तवना,
इतिपूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः, स्तवः,
शांतिनाथकी, जलवगेरेकाडरोंकोंनासकरणेवाला, शांतिवगेरेकोंकरणेवाले,
शांतेः, सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च
भक्तिवानमनुष्योंके, १६, जो इसस्तोत्रकों पढे हमेस, सुणे, मनमें स्मरण
भक्तिमतां १६, यश्चैनं पठति सदा, श्रृणोति भाव

करै, अथवा, सावधानयोगरखकर, वहनिश्चै शांतिकेपदकों पावै
यति, वा, यथायोग्यम्, सहि शांतिपदं या
सूरिः श्रीमानदेवभी, फेर, १७,
यात्, सूरिश्रीमान देवश्च, १७, इति शांतिस्तोत्रं, ॥
पृथ्वीमें अलंकारभूत पूर्ण, सुवर्णजैसी
अथ दूज थुई ॥ मही मंडणं पुन्न, सोवण्ण
देहजिनोंकी, सामान्यकेवलियोंकूं आनंदकारीकेवलज्ञानकेघर, महाआ-
देहं, जिणाणंदणंकेवलं नाणगेहं, महाणं
नंदलक्ष्मी, वहोतबुद्धिसैंविराजमान, अच्छीतरेसेवाकरूं, एसेसीमंधर
दलच्छी, वहुबुद्धिरायं, सुसेवामि, सीमंधरं,
तीर्थाधिपतीराजकों, १, पहलीतारदिये, जो, जीव, पेदाभयेजिनोंकों,
तित्थरायं १, पुरातारका, जेह, जीवाण, जाया,
होंयगेजो, सबभव्यजीवोंकेंरक्षाकरताजिनराज, तैसेंइससमय
भविस्संतिजे, सव्वभव्वाणताया, तहासंपयंजे
जोजिनवर्त्तमानहै, सुखकोंदेओवहमुझें, तीनलोकमेंप्रधानभगवान,
जिणावट्टमाणा, सुहंदिंतुतेमे, तिलोयप्पहाणा,
२, दुःखसेंउतरनाहै जिसकाएसासंसारसमुद्रमेंजिहाजसमान, पापोंकीश्रेणी
२, दुरुत्तारसंसारकूवारपोयं, कलंकावलि
रूप, कीचड, उसकों धोणेको जलसमान, मनवांछितअर्थदेणेकूंश्रेष्ठकल्पवृक्ष
पंकपक्खालतोयं, मणोवंछिअत्थेसुमंदा
समानकल्पजिनोंका, एसेजिनेंद्रदेवका आगमकोंवंदन कर्त्ताहूं अच्छाहैमहात्मजिनोंका, ३
रकप्पं, जिणंदागमंवंदिमोसुमहप्पं, ३, विको
जिनराजकेसुखकमलमेंलीन, कला, रूप, और मनोहरता,
सेजिणंदाणणंभोजलीणा, कला, रूव, लावण्ण,
और सौभाग्यतासेंपुष्ट, करताहूंउसकाचित्तमेंभी, हमेसनिश्चयध्यांन,
सोहग्गपीणा, वहंतस्सचित्तंपि, निच्चंपिझाणं,
देवीभारती, देओ मुझें शुद्धज्ञानकों, ४,
सुरीभारही, देहिमेशुद्धनाणं, ४, इति,

पांचज्ञानदर्शनचारित्रसुखादिअनंतकअच्छेप्रपंचरूपपर

अथपंचमीस्तुति ॥ **पंचानंतकसुप्रपंचपर**

मआनंदउत्कृष्टपणेदेणेसमर्थ, पांचअनुत्तर सीमातक देवसंबंधीजोपद

मानंदप्रदानक्षमं, **पंचानुत्तरसीमदिव्यपद**

वीजिसकोंवसकरणेमंत्रकीओपमा, जिसनेंजादाकरकैसुदिपंचमीकाप्रधानत

वीवस्यायमंत्रोपमं, **येनप्रोज्वलपंचमीवर**

पकोंकहा, औरउसतपकेकरणेवालोंके, श्रीसिंहमृगराजकालंछनहैजि

तपोव्याहारितत्कारिणां, **श्रीपंचाननलांछनः**

नोंकेवहविस्तारनकरोश्रीवर्द्धमानप्रभुकल्याणकों, १, जोपांचआश्रवकूंरोकणे

शतनुतांश्रीवर्द्धमानश्रियं, **१,** **येपंचाश्रवरोध**

केसाधनमेंतत्पर, पांचप्रमादकूंहरणेवाले, पांचअणुव्रतऔरपांचमहाव्रत

साधनपरा, **पंचप्रमादेहरा,** **पंचाणुव्रतपंचसुव्रत**

कीविधिउत्कृष्टपणेवताणेवालेआदरयुक्त, करकैकामदेवकासमस्तपणेज

विधिप्रज्ञापनासादरा, **कृत्वापंचऋषीकनिर्ज**

यउसकेवाद प्राप्तहुयेगतिपंचमी(मुक्ति)कों, वहयहहुओपंचमीकेव्रतकेधार

यमथोप्राप्तागतिंपंचमी, **तेमीशंतसुपंचमीव्रत**

कोंकेसर्वेतीर्थंकरसुखकेकरणेवाले, २, पांचआचारमेंप्रवीणएसेपांचमेंग

भृतांतीर्थंकराशंकरा, **२,** **पंचाचारधुरीणपंचमग**

णकेअधिपतीनेंअच्छीतरेसूत्रमें, वहपांचज्ञानकाविचारकासारकरकैयुक्त

णाधीशैनसंसुत्रतं, **पंचज्ञानविचारसारकलितं**

पांचोंमें पांचफेरयह, दीपककीकांति जैसै, भारी कामदेवके अंधेरेमें, इग्या

पंचेषुपंचत्विदं, **दीपाभंगुरुपंचमारतिमिरे,** **रवेका**

रसका, रोहणीका, ओरपंचमीआदिकाफलकों प्रकाशकरणेमें चतुर ध्याताहूं

दशी, रोहिणी, **पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुंध्यायामि**

जैनआगमकों, ३, पांच परमेष्टीका, स्थिरपणे, श्री

जैनागमं, **३,** **पंचानां** **परमेष्ठिनां,** **स्थिरतया,** **श्री**

पांचमेरूजैसीलक्ष्मी, भक्तके ओर भव्यजीवोंके घरमें, बहुतसे,

पंचमेरुश्रियां, **भक्तानांभविनांगृहेषु,** **बहुशो**

जो पांचदिव्यकों करतीहुई, नामधारी मनुष्योंके मनमें, अमृतकारी,
यापंचदिव्यंव्यधात्, प्रह्वपंचजनेमने, मृतकृतौ,
आप रत्नोंकी पूतलीकीतरे, पंचमीआदि, तपस्यावानोंके, हुओ
स्वारत्नपंचालिका, पंचम्यादि, तपोवतां, भवतु
वह, सिद्धायिकादेवीरक्षाकी करणेवाली, ४,
सा, सिद्धायिकात्रायिका, ४, इति पंचमीस्तुतिः

अरनाथभगवानकीदीक्षा, नमिना
अथ एकादशीस्तुतिः ॥ अरस्यप्रव्रज्या, नमि
थजिनपतीकों ज्ञानकेवलहुआ, तेसें मल्लिनाथकाजन्म, दीक्षा, दूरकिया कर्ममल,
जिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथामल्लेर्जन्म, व्रत, मपमलं,
केवलज्ञान, असहाई, शुक्ल इग्यारसकों तत्काल, उल्लसित मनोहर,
केवल, मलं, वलक्ष्यैकादश्यां, सहसि, लसदुद्दाम
क्रांतिवाली, पृथ्वीमें, कल्याणकोंका, खपाताहै, आपदाकूं, कल्याणकोंकापंचक
महसि, क्षितौ, कल्याणानां, क्षिपति, विपदः, पंचकम
अदोंकों, १, देवतोंके इंद्रोकीश्रेणी,आणे, जाणेसें, पृथ्वीकावलय[गोल], हमेस,
दः, १, सुपर्वेंद्रश्रेण्या, गमन, गमनै, र्भूमिवलयं, सदा
स्वर्गकेरस्तेकीतरेहुआ, मेंकरूं, मेंकरूं अैसैगरूरसें, जिसवख्त, मोक्षसहितसुख,
स्वर्गत्येवा, हम, हम; कया, यत्रसलयं
जिनराजोंकाभीप्राप्तहुआ क्षणभरजादासुखकोंनारकीकेदुखीभी, जिनेश्वरो
जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखंनारकसद, क्षितौक० २, जिना
नेंइसतरेजो, वचनकहे, अपणे,सिद्धान्तमें, फल, जोइग्यारस
एवंयानि, प्रणिजगदु, रात्मीय,समये, फलं, यत्क
केव्रतकरणेवालोंकों, एसाफेर, जाणा, शुद्धसिद्धान्तमें, अवांछनीककष्टवाले,
तॄणा, मिति, च, विदितं, शुद्धसमये, अनिष्टारिष्टानां
पृथ्वीमें, भोगे, बहोतहर्ष, देवताइंद्रोंसें
क्षिति, रनुभवेयु, र्बहुमुदः, क्षितौक० ३, सुराःसें
युक्त, सब, समस्त, जिनचंद्रोंसें, हर्षितहोकर, तैसें, फेर, जोत
द्राः, सर्वे, सकल, जिनचंद्र, प्रमुदिता, तथा, च, ज्यो

पीदेव, समस्त, भुवनपतीदेव, संयुक्तहर्षसें, तप, जो, करणे
तिष्का, खिल, भुवननाथाः, समुदिताः, तपो, यं, त्क
वालेउनोंकै, करै, सुखकों, अचरजयुक्तदिलसें,
तॄणां, विदधति, सुखं, विस्मितहृदः, क्षितौक० ४,
इति मौनेकादशीथुई ॥,

अथ श्रीजिनकुशलसूरिःरचितचतुर्दशीथुई ॥

द्रवनहुवा,अधर्म, दूरहुवा, अंधेरा, इंद्रकीधुनिसें, धसगया पृथ्वीमें
द्रेंद्रे, किधप, मप, धुधु, मिधोंधौं, भ्रसकि धर
धर्मकेपतीका, जय२शब्दसुणके, दमनदयाक्याफेरदानओरदर्शन, भक्तजनोंकों
धप, धोरवं, दौंदौंकिं दोंदों द्राग्डिदि
देतेहुये, देतेहुये क्याकिसकूंकर्मोंसें, कंगालोकूं, कर्मोंकायुद्धातियुद्ध, हटादि
द्राग्डिदिकि, द्रमक द्रण रण, द्रेन
था, कैसायुद्ध, जिससेंझींकते, झींकते, झनझनाट, एसायुद्धातियुद्धप्रास,
वं, झझि, झेंकि, झेंझें, झणण, रणरण,
निजभक्तजनोंकोंहर्षदायक, मेरुशिखरपरहुआसुखदाता पार्श्वजिनपतीकास्नात्र, १,
निजकिनिजजनरंजनं, सुरशैलशिखरे भवतुसुखदंपार्श्वजिनपतिमज्जनं,१,
निगोदशरीर, थावरशरीर, कटताहै, चारोंगतीकाअंधेराक्याधारणाजन्मनटकीतरेकुशलता,
कटरेंगिन, थोंगिन, कटति, गिगडदांधुधुकिंधुटनटपाटवं,
गुणोंयोंकीगुणता, गुणोंकागण, रमनकरता, नरकनहीं, गुणसंबंधी
गुणगुणण, गुणगण, रणकि, णें णें, गुणणगुण
गुणसमूहका भारीपना, कैसाकर्मयुद्ध झींकते२ एसायुद्धातिशुद्धप्रास
गणगोरवं, झझि झेंकि झें झें झणणरणरणनिज
जो प्रभूकों निजकिया एसें निजभक्तजनोंकों सत्जनकिया, रचना करताहै मोक्षलक्ष्मी
कि निजजनसज्जना, कलयंतिकमलाकलित,
युक्तजो, पापोंसें, रहित, एसे ईश्वरमहिमावंतपूजितजिनराज २
कलिमल, मुकुल, मीशमहेजिना २, ठकि
ठें कि ठें ठें ठहि ठहिकिठहिपटाताडयते
तलिलोंकि लों लों त्रें खि त्रेंखिनि डेंखि डेंखि
निवाद्यते ओंओंकि ओं ओं थुंगि थोंगिनि

जिनमत अनंत महिमा
धोंगि धोंगिनिकलरवे जिनमतमनंतं महि
कों विस्तारता जिनोंकों नमताहे देवता और मनुष्यउछवमें,
मतनुता नमतसुरनर मुच्छवे, ३, खुंदांकि
खुंदां खुखुडिदि खुंदां खुं खुडिदि दों दों
अंबरे चाचपट चटपट रणकिणेंणें डण
ण डें डें डंबरे तिहासर गमपधुनि निध
वहवहवह देव सेवाकरते जिनराजकेसन्मुखनाटा
पमगरस ससस सुरसेवता जिननाट्यरं
रंभरंगसें कुशलहमेस देओ शाशनदेवता ४,
गै, कुशलमनिशं दिशतु शासनदेवता ४,
इति चतुर्दशीस्तुतिः
किसीसमयसंघमेंव्यंतरोंकाउपसर्गहुवाउसकूंदूरकरणेयेस्तोत्रवणाया,

॥ अथ मानदेवसूरिकृततिजयपहुत्तस्तोत्रं ॥

तीनजगत्में, प्रभुताकुं प्रकाशणेवाले, आठ, महाप्रातिहार्यरूप, अति
तिजय, पहुत्तपयासं, अट्ठ, महापाडिहेर,
शयकरकैयुक्त, मनुष्यक्षेत्रअढाइद्वीपमेंरहेभये, स्मरणकरताहूंच
जुत्ताणं, समयखित्तट्ठिआणं, सरेमिचक्कं
क्रजिनेंद्रोंका, १, प्रथमकोठेमे २५, दूसरेमें ८०, तीसरेमें १५,
जिणंदाणं, १, पणवीसाय, असिआ, पनर,
चोथेमे ५०, अैसेंएकसोसित्तरजिनोंमेंप्रधानोंकासमूह, नासकरतेहेंसमस्तपा
स,पन्नास, जिणवरसमूहो, नासेउसयलदु
पोंकों, भव्यजीवभक्तिकरकैयुक्तजिनोंका, २, वीस, पैताली
रियं, भवियाणंभत्तिजुत्ताणं, २, वीसा, पण
स, निश्चै, तीस, पिचहत्तर, जिनवरेंद्र, ग्रह,
याला, विय, तीसा, पन्नत्तरी, जिणवरिंदा, गह
भूत, राक्षस, शाकनीआदिक, डरावणेउपसर्गोंकों, अतिशयपणेनाशकरै, ३,
भूअ, रक्खस, साइणि, घोरुवसग्गं, पणासेइ, ३,

सित्तर, पैंतीस, अपिनिश्चै, साठ, पाच, निश्चै, १७० जिनवरकास
सत्तरि, पणतीसा, विय, सट्ठी, पंचे, व, जिणगणो
मुदाययह, रोग, पाणी, अग्नि, सिंह, हत्थी, चोर, शत्रु, वडे,
एसो, वाहि, जल, जलण, हर, करि, चौरा, रि, महा,
डरोंकोंहरणेवालेहैं, ४, पचपन, फेर, दश फेर, पैंसठ,
भयंहरओ, ४, पणपन्ना, य, दसेवय, पन्नट्ठी,
तेसेंही, फेरनिश्चै, चालीस, रक्षाकरो, मेरे, अंगकी, देव, असुरों,
तहय, चेव, चालीसा, रक्खंतु, मे, शरीरं, देवा, सुर,
सें नमेहुयेसिद्धनिष्टितार्थ, ५, प्रणवबीज, हसूर्यबीज, रअग्निबीज, हूंक्रोध,
पणमियासिद्धा, ५, ओं, ह, र, हूं ,हः,
सचंद्र, रअग्नि, सूंशमन, बीजयेसब तैसैं ओरनिश्चै ह्रींमाया, श्रीशोभा,
स, र, सूं, स, हरहूंहः तहय चेव सरसूंस,
समस्तपणेलिखेनामयुक्त, चक्र निश्चै सर्वतोभद्र, ६, रोहिणी,
आलिहियनामगब्भं चक्कं किर सव्वओभद्दं,६, ओंरोहिणी
प्रज्ञप्ती, वज्रश्रृंखला, तेसें, वज्रअंकुसा,
पन्नत्ती, वज्जसंखला तहय, वज्जअंकुसिआ,
चक्रेश्वरी, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, तैसें गौरी,
चक्केसरि, नरदत्ता, कालि महाकालि, तहय गौरी,
७, गंधारी, महाज्वाला, मानवी, वैरौट्या, तैसें,
७, गंधारि, महाज्वाला माणवि, वइरुट्ट, तहय,
अछुप्ता, मानसी, महामानसी, सोलेविद्या
अच्छुत्ता माणसि, महमाणसिआ, विज्जा
देवियोंरक्षाकरो, ८, ५भरत५एरवत५महाविदेह१५कर्मभूमीमें,
देवीउरक्खंतु, ८, पंचदसकम्मभूमीसु, उप्प
पैदाभयेसत्तरजिनराज१सो १७०, तरे२केरत्नोंकेपांचरंगोंकरकै, उप
न्नंसत्तरिजिणाणसयं, विविहरयणाणवन्नो,
शोभितएसे१७०जिनराजहरोपापोंकों, ९, चौतीस, अतीशय
वसोहिअंहरउदुरिआइं, ९, चउतीस, अइ

जुक्त, आठ महाप्रातिहार्योंकरकैकरीहै, शोभा,
सय जुआ, अट्ठमहापाडिहेरकय, सोहा,
तीर्थंकर, विगत, मोह, ध्यांनकरणा,प्रयत्नकरकै, १०,
तित्थयरा, गय, मोहा, झाएअव्वापयत्तेण, १०,
प्रधान, स्वर्ण, संख, मूंगे, लीलम, जैसीक्रांतिवाले, विग
ओंवर, कणय, संख, विद्रुम, मरगय, सन्निहं, विग
तमोह, सत्तर, सो, जिनवर, सर्वदेवतोंसेंपूजितवंदित,
यमोहं, सत्तरि, सयं जिणाणं सव्वामरपूइयंवंदे,
क्षि,पृथ्वीबीज, प, जलबीज,उम्, तेजबीज,स्वा, वायुबीज,हा आकाशबीज, भुवनपती,
स्वाहा, ११, ओंभुवणवइ, वाणसंतर, जोइसवासी,
वाणव्यंतरजोतषीवैमानिकवासी, जोकोईभीदुष्टदेवहैसो, वहसर्वउप
विमाणवासीअ, जे केविदुड्डदेवा, तेसव्वेउव
शमभावकोंप्राप्तहुओमेरे, १२, चंदनकपूरकरकै, पट्टेपरलिख
समंतुमेस्वाहा, १२, चंदणकप्पूरेणं, फलहेलि
करकै, घोकरकै, पीणेसें, एकांतरज्वर, ग्रह, मुद्गर(मोगा, साकनी
हिऊण, खालियं, पीयं, एगंतर, गह, मुग्गय, साइणि
भूतादिकजादाकरकैनाशकरे, १३, इयएकसोसित्तरकाजंत्र, अच्छा
भूयंपणासेइ, १३, इयसत्तरिसयंजंतं, सम्मं
मंत्र, दरवज्जेपरलिखकर, पापोंकावैरी विजयतंत्र,
मंतं, दुवारपडिलिहियं, दुरिआरि, विजयतंतं,
निःसंदेह, हमेसपूजनकरो, १४,
निब्भंतं, निच्चमच्चेह, १४, इतिसप्ततिजिनस्तोत्रं ॥,
दोषादिककूंदूरकरणेमेंसमर्थ, नहींहैझूठवचनमेंआदरप्रकाशकप्रसारजि
दोसावहारदक्खो, नालियायरवियासगोपस
नोंका, ज्ञानादिक३रत्नकेपैदाकर्त्ता,ऐसे, पार्श्वजिनेश्वर, जयवंतहोतीन
रो, रयणत्तयंस्सजणओ, पासजिणो, जयउज
जगत्केनेत्रसमान, १, कियाहैपृथ्वीमंडलकूंप्रतिबोधजिनोंनें, सापका
यचक्खु, १, कयकुवलयपडिबोहो, हरिणं,

अंकितलांछनधारीपणा, कलाकेस्थान कियाहै, वैरियोंकेवृंदो-
कियविग्गहो, कलानिलओ विहिया, रविंद
कामथन, खंडडालाहैरागकोंऐसैजयवंतहोपार्श्वजिनराज, २, क्रांती
महणो, दीयराओजयउपासजिणो, २, कंती
करकैसमस्तपणेजीततेहुये, झरता अत्यर्थपणेपृथ्वीकोआनंद अक्रूर,
इनिज्जिणंतो, सिंदूरं पुहविनंदणोकूरो
जगत्जीवोंकोंअमृतवचनजिनोंका, शोभनकल्याणकारीजयवंतहो
जयजंतुअमयवक्को, सुमंगलोजयउपहुपासो
पार्श्वजिन, ३, नीलकमलपत्रकीतरेहरीक्रांति, इंद्रमंडलमेंकरीहैस्तवना
३, उप्पलदलनीलरुई, हरिमंडलसंथुओ
पृथ्वीमेंआनंदकारी, पापरूपीरजकोंदलणेवालेमहाबुध(सर्वज्ञ], कृपाक
इलानंदो, रयणियरदारओमह, बुहो, पसी
रोपार्श्वजिनराज, ४, नहींअहितवादकाविदग्धपणा, न्याय
इज्जपासजिणो, ४, नाहियवायवियड्डो, ना
पणेमेंस्थित, नागराजधरणेंद्रनेंकरीहैपूजा, श्रीपार्श्वनाथदेव,
यत्थो, नागरायकयपूओ, सिरिपासनाह
देवतोंसेआदरितपूजितसुखदेओ, ५, राजावर्त्तनील
देवो, देवायरिओसुहंदिसउ, ५, रायावट्ट
कमलकीतरैउज्वल, शरीरकीक्रांतिकामंडल महाभूति(किरण], भुवनप
समुज्जल, तणुप्पहामंडलो महाभूई, असुरे
तिदेवोंसेंनमीजतेहुये, पार्श्वजिनेंद्रज्ञानकेवेत्तासोजयवंतहो, ६, अ
हिंनमिज्जंतो, पासजिणंदोकवीजयउ, ६, ति
ज्ञानअंधेरोंकोंक्षपाते, संसुखमुक्तिआरूढ, अठारेदोषशमाणेसैंशांत, दुःखकोंदूरकर्त्ता,
मिरासि, समारूढो, संतो, दुखावहो,
जगत्मेंथिर, अतिशयपणेकरनिरुपम श्रीज्ञानादिलक्ष्मी, जगत्मेंनेत्रसमानजिनोंका,
जयंमिथिरो, बहुलतमा सरिससिरी, जयचक्खु,
श्रुतसिद्धांतजयवंतपार्श्वजिनराज, ७, कवलग्रासकियाहै दोषोंकाआगर, मात्रडरकों
सुओजयउपासो, ७, कवलीकय दोसायर, मायंडर

नाशकर्त्ता, अहो[आश्चर्य,भगवानपांचोंशरीरोंसेंरहित, चौदेलोककेआभरणजैसै,
हं, अहोतणुविमुक्कं, लोआभरणीभूअं,
वहश्रीपार्श्वजिनसर्वजिनोंमेंउत्तमस्मरणकरो, ८, पापोंकोंपार्श्वनाथहरो,
पासजिणंसत्तमंसरह, ८, दुरिआइंपासनाहो,
किरणोंसेंजैसैंसूर्य, आकाशभुवनमेंध्वजजैसै, दूरकियाहैअंधेरे
सिहावमाली, नहोभवणकेउ, दूरंतमरासी
कासमूह, [मोक्षालयमेंविराजमानहरोपापोकों, ९, इयनवग्रह
ओ, सत्तमट्ठाणट्ठिओहरओ, ९, इयनवग्गह
स्तुतिकरकैगर्भित, जिनप्रभसूरिःनें, रचा, स्तवन,
थुइगब्भं, जिणप्पहसूरीहिं, गुंफियं, थवणं,
तुमारापढैहेपार्श्वजोइसकों, अशुभभीनवग्रहनहींपीडाकरे,
तुहपासपढइजोतं, असुहाविगहानपीडंति,
१० इति जिनप्रभसूरिकृतनवग्रहशांतिपार्श्वजिनदोषापहारस्तोत्रं, ॥
रात्रिकूं दूरकरणेसमर्थ, कमलकेआगरकोंप्रकाशकरणेकिर
दोसावहारदख्खो, नालियायरवियासगोप
णोंकापसार, रत्नादेवीकापुत्रजमउसकापिता, पार्श्वजिन जयवंतहो
सरो, रयणत्तयस्सजणओ, पासजिणोजयउ
जगत्चक्षु(सूर्य], कियाहैकमलनियोंकोंप्रतिवोध, हिरण
जयचख्खु, १, कयकुवलयपडिवोहो, हरणं
केचिन्हसेंविग्रह, सोलेकलाकाधारक, रचाहैअरविंदकमलकाव
कियविग्गहो, कलानिलओ, विहियारविंदमह
डापणा, द्विजराजचंद्र, जयवंतहो, पार्श्वजिन अपणीक्रांतिसेंजीत
णो, दियराओ, जयइ, पासजिणो, २, कंतीइनिज्जि
ताहुआ, सिंदूरकीरक्तताकों, पृथ्वीकानंदन, क्रूरग्रह, जगत्केजीवोकोंमदरहितकर्त्ता,
यंतो, सिंदूरं, पुहविनंदणो, क्रूरो, जयजंतुअमयव
वक्रगतिवाला, अच्छामंगलग्रहजयवंतहो,प्रभुपार्श्व ३, कमलदल(पत्र)समान
क्को, सुमंगलोजयउपहुपासो, ३, उप्पलदलनी
हरामनोहररंग, सूर्यमंडलकेसाथपरिचयजिसका, इलानामस्त्रीकूंआनंदकारी,
लरुई, हरिमंडलसंथुओ, इलानंदो, रयणिय

चंद्रमाकापुत्र, मेरेकूं, बुधग्रह, प्रशादकरो, पार्श्वजिन नास्ति
रदारओ, मह, बुहोपसीइज्ज, पासजिणो, ४, नाहि
कमतसंबंधीवादमेंविचक्षणस्वर्गमेंरहा, स्वर्गकाराजाइंद्रनेंकरीहैपूजा,
यवायवियड्ढो, नायत्थोनागरायकयपूओ
श्रीपार्श्वनाथदेव देवाचार्यवृहस्पतिग्रहसुखकोंदेओ, ५,
सिरिपासनाहदेवो, देवायरिओसुहंदिसउ, ५,
रूपेकेआवर्त्तजैसाउजला, शरीरकीप्रभाकांतिमंडल, मघासूभूतिसेंजन्मजिसका,
रायावट्टसमुज्जल, तणुप्पहामंडलो, महाभूई,
असुरदैत्योंसेंनमीजताहुआ, पार्श्वजिनेंद्र कवी(शुक्र)ग्रहजयवंतहो, ६,
असुरेहिंनमिज्जंतो, पासजिणंदोकवीजयउ, ६,
मनुष्यकीरासीपरआणेसें, दुखोंकादेणेवालाजगत्मेंस्थिर, कृ
तिमिरासिसमारूढो, संतोदुखावहोजयंम्मिथिरो, व
ष्णपक्षकीरातजैसीशोभाशरीरकी, जगत्चक्षुसूर्यकापुत्रशनि जयवंतहोपार्श्व, ७,
हुलतमासरिससिरी, जयचक्खुसुओजयउपासो, ७,
ग्रासकियाहै, दोषाकर(चंद्र), मार्त्तंड(सूर्यका)रथ, नीचेकैशरी
कवलीकय, दोसायर, मायंडरहं, अहोतणु
रसेंविमुक्त(रहित), होलोका, भरणीनक्षत्रसेंपैदाभया, पार्श्वजिन शोभनीकराहूग्रह
विमुक्कं, लोआ, भरणीभूअं, पासजिणंसत्तमंसर
कोस्मरणकरो, ८, विघ्नोंकों, पार्श्वनाथ चोटी व्यापितआकाश, नवमाग्रहभुवन
ह, ८, दुरिआइं,पासनाहो सिहावमालीनहोभवण
केतू, दूररहाराहूकीरासीसें, सातमेंठिकाणेरहाहुआ, हरो, ९,
केउ, दूरंतमरासीओ, सत्तमट्ठाणट्ठिओ, हरओ, .९,
भक्तिवंत, देवता, जादाकरकेनमेहुये, मस्तकमुगुट, उसमेंरहीमणियोंकीक्रांति,
भक्ता, मर प्रणत, मौलि, मणिप्रभाणा,
उसकूंप्रकाशकरणेवाला, खंडनकियाहैपापरूप, अंधकारकासमूहजिसनें
मुद्योतकं दलितपाप, तमोवितानं,
अच्छीतरेप्रणामकरकै, जिनराजकैचरणदोनों, युगकीआदिमें,
सम्यक्प्रणम्य, जिनपादयुगं, युगादा,

आधारभूत, भवरूपजलमें पडेहुये, भव्यजीवोंकों, १,
वालंबनं, भवजले पततां, जनानाम्, १,
जोभगवानस्तुतिकरेगये, समस्तवचनमयीशास्त्रकारहस्यउर्सकातत्वविज्ञान,
यः संस्तुतः, सकलवाङ्मयतत्वबोधा,
उससेंपैदाहुईबुद्धिकीनिपुणताकरकै, देवलोककानाथजोइन्द्र,
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः, सुरलोकनाथैः,
स्तोत्रोंकरकै, जगत्‌तीनलोककेप्राणीयोंके, चित्तकूंहरणेवालेउदार,
स्तोत्रै, जेगत्रितय, चित्तहरैरुदारैः,
स्तवनाकरूंगा, निश्चै, मेंभी, उन प्रथमसामान्यकेवलियोंकेइंद्रकूं,
स्तोष्ये, किला, हमपि तं प्रथमंजिनेंद्रं,युग्मं, २,
बुद्धिविगरभी, हेदेवतोंसेंपूजेभये, पगरखणेकावाजोट(पट्टा)तुमारा,
वुद्ध्याविनापि, विवुधार्चित, पादपीठ,
स्तवनाकरणे, अच्छीतरेउद्यमवंतभईहैबुद्धिमेरी, विशेषपणेगईलाजएसामेंहूं,
स्तोतुं, समुद्यतमति, विंगतत्रपोहं,
बालकविगर, जलमेंरहाहुआ, चंद्रमाकीपडिछाया,
बालंविहाय, जलसंस्थित, मिंदुबिंब,
और, कोन, इच्छाकरताहै, मनुष्य, एकाएक(तत्काल)पकडनेकूं, ३,
मन्यः, क, इच्छति, जनः, सहसाग्रहीतुं, ३,
कहनेकोंगुणोंकों, हेगुणोंकेदरियाव, चंद्रमाजैसैमनोहर,
वक्तुंगुणान्, गुणसमुद्र, शशांककांतान्,
कोनतुमारेसमर्थः, बृहस्पति, जैसैभी, बुद्धिकरकै,
कस्तेक्षमः, सुरगुरु, प्रतिमोपि, बुद्ध्या,
प्रलयकालकी, हवासें, उछलता, मगरमच्छ, ऐसैसमुद्रकों,
कल्पांतकाल, पवनो, द्धत, नक्रचक्रं,
कोनतिरणे, समर्थ, समुद्रकों, दोनोंहाथोंसें, ४,
कोवातरीतु, मल, मंबुनिधिं, भुजाभ्यां, ४,
वह, में, तोभी, तेरी, भक्तीकें, वशसें, हेमुनियोंकेस्वामी,
सो, हं, तथापि, तव, भक्ति, वशा, न्मुनीश,

करणेकों, स्तवना, शक्तिरहितभी, प्रवर्त्ताहूं[चलाहूं],
कर्त्तुं, स्तवं, विगतशक्तिरपि, प्रवृत्तः,
प्रीतिकरकै, आत्मशक्तिकों, विगरविचारे, हिरण, सिंहके,
प्रीत्या, त्मवीर्य, मविचार्य, मृगो, मृगेंद्रं,
सन्मुखनहींजाताहैक्या, अपणेबालककी, प्रतिपालना(रक्षा)केवास्ते, ५,
नाभ्येतिकिं, निजशिशोः, परिपालनार्थं, ५,
मैंथोडाज्ञानवाला, श्रुतज्ञानवंतोंके, समस्तपणे, हसनेका, ठिकाणा,
अल्पश्रुतं, श्रुतवतां, परि, हास, धाम,
तुमारीभक्तीही, मुखर(वाचाल), करतीहै, जबरन्, मुझैं,
त्वद्भक्तिरेव, मुखरी, कुरुते, बला, न्मां,
जो, कोयल, निश्चैं, चैतमहींनेमें, मीठी, बोलतीहै,
य, त्कोकिलः किल, मधौ, मधुरं, विरौति,
वह, मनोहर, आंबकी, मांजर(कलि)का, समूह, एककारणहै,
त, चारु, चाम्र, कलिका, निकरै, कहेतुः, ६,
तुमारीअच्छीस्तवनाकरकै, भवोंकीपरंपरासैं, बंधाभया,
त्वत्संस्तवेन, भवसंतति, सन्निबद्धं,
पाप, घडीकेछठेभागमें, क्षयपाताहै, शरीरधारियोंका
पापं, क्षणात्, क्षयमुपैति, शरीरभाजां,
व्यापक[फैलाभया]लोकमें, भमरेजैसाकाला, समस्तपणेजल्दी,
आक्रांतलोक, मलिनील, मशेषमाशु,
सूर्यके किरणोंसेंभेदनेकीतरे, रातका, अंधेराजैसैं, ७,
सूर्यांशुभिन्नमिव, शार्वर, मंधकारं, ७,
ऐसामानकरकैहेनाथ, तुमारीअच्छीस्तवना, मैं, यह,
मत्वेतिनाथ, तवसंस्तवनं, मये, द,
सरूकरताहूं, मंदबुद्धिभी तुमारे, प्रभावसेती,
मारभ्यते, तनुधियापि तव, प्रभावात्,
चित्तकों, हरणकरेगा, संतपुरुषोंका, कमलपत्रमें,
चेतो, हरिष्यति, सतां, नलिनीदलेषु,

मोतियोंकी, क्रांति(छवि)कोंपाताहै, निश्चैजलकीवूंद, ८,
मुक्ताफल, द्युतिमुपैति, ननूदविंदु, ८,
दूररहो तेरी स्तवना नासपायाहै सब दोष
आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त दोषं
तेरीअच्छीकथाभी, जगत्केलोकोंकापापोंकोंहरताहै,
त्वत्संकथापि, जगतांदुरितानिहंति,
दूररहोसूर्य, परंतुउसकी करतीहैप्रभा,
दूरेसहस्र, किरणः, कुरुतेप्रभैव,
पद्मसरोवरमें, कमलोंकों, विकश्वरताकेभजणेवाले, ९,
पद्माकरेषु, जलजानि, विकाशभांजि, ९,
नहींहैजादाआश्चर्य, हेतीनभुवनकेभूषण, हेसबजीवोंकेनाथ,
नात्यद्भुतं, भुवनभूषणभूतनाथ,
सच, गुणोंकरकैपृथ्वीमें, आपकूं, स्तुतिकरणेवाला,
भूतै,र्गुणै,र्भुवि, भवंत, मभिष्टुवंतः,
बरावर, होताहै, आपके, प्रश्नकर्त्ताहै उसमेंक्याआश्चर्य, अथवाजैसें,
तुल्या, भवंति, भवतो, ननु, तेन, किंवा,
संपदावालेकेआश्रित, जोइसजगेहोतोक्यानहीं, अपणेबराबरकरताहै, १०,
भूत्याश्रितं यइहना, त्मसमंकरोति, १०,
देखकै, आपकों, एकनजरसें, देखनेयोग्य,
दृष्ट्वा, भवंत, मनिमेष, विलोकनीयं,
नहींओरजगे, संतोष, प्राप्तहोताहै, मनुष्योंकेनेत्र,
नान्यत्र, तोष, मुपयाति, जनस्यचक्षुः,
पीकरकै, जल, चंद्रमाजैसी, क्रांतिवाला, क्षीरसमुद्रका,
पीत्वा, पयः, शशिकर, द्युति, दुग्धसिंधो,
खारा, जल, समुद्रका, पीणेकों, कौनचाहताहै, ११,
क्षारं, जलं, जलनिधे, रसितुं, कइच्छेत, ११,
जो, शांत, रंगरूपीमनोहरछाया, परमाणुओंकरकैतेराशरीर,
यैः, शात, रागरुचिभिः, परमाणुभिस्त्वं,

रचाहुआहै, हैतीनभुवनमेंएक, तिलकसमान,

निर्मापित, स्त्रिभुवनैक, ललामभूतः,

उतनेंही, खलुनिश्चै, वहपरमाणूथे, पृथ्वीमें,

तावंतएव, खलु, तेप्यणवः, पृथिव्यां

जोतेरेबराबर, दूसरा, नहींरूप, किसीमेंहै, १२,

यत्तेसमान, मपरं, नहिरूप, मस्ति, १३,

मुख, कहां, तुमारा, देवता, मनुष्य, औरनागकुमारोंके, नेत्रोंकोहरणेवाला,

वक्रं, क्व, ते, सुर, नरो, रग, नेत्रहारि,

समस्त, जीताहै, जगत्, तीनलोककों, जिसकीओपमादीजाय,

निःशेष, निर्जित, जग, त्रितयो, पमानं,

विंबहैसो, कलंककरकैमैला, कहांचंद्रमाका

बिंवं, कलंकमलिनं, क्वनिशाकरस्य,

जोंदिनमें, होजाताहै, पीला, पलास(खाखरा]कापत्रजैसा,ओपमारहितमुखतुमाराहै,

यद्वासरे, भवति, पांडु, पलाशकल्पम् ,

अछीतरेपूरामंडल, पूनमकेचंद्रकेकलाओंका, समूह,

संपूर्णमंडल, शशांककला, कलाप,

उजलेजोगुण, तीनभुवनकों, तेरे, उलंघनकरतेहैं,

शुभ्रागुणा, स्त्रिभुवनं, तव, लंघयंति,

वहगुणतुमकोंआश्रयकररहेहैं, हेतीनजगत्केईश्वर, स्वामीआपएकहीहो,

येसंश्रिता, स्त्रिजगदीश्वर, नाथमेकं,

कोनउनगुणोंकों, मनाकरसकताहै, फिरतेहुयोंकों, यथाजैसैंमनमाफक,

कस्ता, न्निवारयति, संचरतो, यथेष्टं, १४,

आश्चर्य, क्या इसजगे, जो, तेरा, देवतोंकीस्त्रियोंकरकै,

चित्रं, कि, मत्र, यदि, ते, त्रिदशांगनाभि,

पहुंचा, थोडाभी, मन, नहीं, विकारके रस्ते,

र्नीतं, मनागपि, मनो, न, विकारमार्ग,

प्रलयकालकी, हवानें, चलायमानकियाऔरपहाडोंकों,
कल्पांतकाल, मरुता, चलिताचलेन,
लेकिन्क्या,मेरूपहाडकाशिखर, चलायमानहुआकभी,ऐसैंतुमारामनकभीनहींचला, १५,
किं, मंदराद्रिशिखरं, चलितंकदाचित्, १५,
रहितधूंआ और वत्ती, रहित, तेलकापूरना,
निर्धूमवर्त्ति, रपवर्जित, तैलपूर,
लेकिन्समस्त, जगत्तीनोंकों, इसतरे, प्रगटकरतेहो,
कृत्स्नं, जगत्रय, मिदं, प्रकटीकरोषि,
बुझणेकोंनहींप्राप्तहुवा हवासें, जिसनेंपहाडोंकोंभीचलादिया,
गम्योनजातु मरुता, चलताचलानां,
इसवास्तेतुमअलौकीकदीपकहो; हेस्वामीजगतकोंप्रकाशकरणेवाले, १६,
दीपोपरस्त्वमसि, नाथजगत्प्रकाशः, १६,
नहींअस्तकभीभी, प्राप्तहोतेहो नहींकभीराहुग्रसताहै,
नास्तंकदाचि, दुपयासि, नराहुगम्यः,
स्पष्ट करतेहो, एकदम, एकवख्त, तीनलोककों,
स्पष्टीकरोषि, सहसा, युगप, ज्जगंति,
नहीं, मेघ, मध्यभाग, रोका, इसवास्तेवडेप्रभाववालेहो,
नां, भोधरो, दर, निरुद्ध, महाप्रभावः,
इसकारणसूर्यसैंभीअतिशयमहिमातुमारीहै, हेमुनियोंकेइंद्र, लोकमें, १७,
सूर्यातिशायिमहिमासि, मुनींद्रलोके, १७,
हमेसउदयवाला, दलडालाहैमोहरूपवडाअंधेरा,
नित्योदयं, दलितमोहमहांधकारं,
काबूमेंनहींआयाराहुके, मुखकोंनहींमेघढकसकताहै,
गम्यंनराहु, वदनस्यनवारिदानां,
शोभरहाहै, तेरा, मुखकमल, फेर नहींक्रांतिवाला,
विभ्राजते, तव, मुखाब्ज, मनल्पकांति,
विशेषपणेप्रकाशकरताहैतीनलोककूं, इसवास्तेअपूर्वचंद्रबिंबतुमारामुखहै, १८,
विद्योतयज्जगद, पूर्वशशांकबिंबम्, १८,

क्यारातमें, चंद्रसेंकामहै, औरदिनमेंसूर्यसें, अथवा,
किंशर्वरीषु, शशिनाह्नि, विवस्वतावा,
तुमारामुखरूपचंद्र, खंडनकिया, अंधेरेकोंहेनाथ,
युष्मन्मुखेंदु, दलितेषु, तमस्सुनाथ,
पकेभयेचावल, वनमें, शोभायमान, मृत्युलोकमैं,
निष्पन्नशालि, वन, शालिनि, जीवलोके,
प्रयोजन(मतलव)क्या, मेघका, कैसामेघजलकेभारसेंझुकाभया, १९,
कार्यंकिय, ज्जलधरै, र्जलभारनम्रैः १९,
ज्ञानजैसें, तुमारेमें, शोभादेताहै, कियाहैअनंतपदार्थोंपरप्रकाश,
ज्ञानंयथा, त्वयि, विभाति, कृतावकाशं,
नहींइसतरैतैसें, विष्णुरुद्रादिकदेवोंमें, अपणे२शासनकेस्वामियोंमें,
नैवं, तथाहरिहरादिषु, नायकेषु,
तेज, देदीप्यमान, मणियोंमें, पाताहै, जैसी, वडाईउनोंकीहै,
तेजस्फुर, न्मणिषु, याति, यथा, महत्वं,
लेकिन्नहींइसतरैफेर, काचकेटुकडेमें, किरणोंकरकैसंयुक्तहैतोभी, २०,
नैवंतु, काचसकले, किरणाकुलेपि, २०,
मानताहूं, प्रधानता, विष्णुशिवादिकोंकोही, देखकरकै,
मन्ये, वरं, हरि,हरादयएव, दृष्टा,
देखकरकैउनोकों, मेरादिल, तुमारेमैं, संतोषपाया,
दृष्टेषुयेषु, हृदयं, त्वयि, तोषमेति,
क्यादेखणेसें, आपकों, पृथ्वीमें, जिसकरकैनहींदूसरा,
किंवीक्षितेन, भवता. भुवि, येननान्यः,
कोई, मनमेरा, हरणकरताहै, हेनाथ दूसरेभवमैंभी, २१,
कश्चि, न्मनो, हरति, नाथ, भवांतरेपि, २१,
स्त्रियैं, सइकडोंही, सइकडों, जनतीहै, पुत्रोंकों,
स्त्रीणां, शतानि, शतशो, जनयंति, पुत्रान्,
नहींदूसरीस्त्रीनेंपुत्र, तुमारीओपमाका, मातानेंजणा,
नान्यासुतं, त्वदुपमं, जननीप्रसूता,

सर्वेदिशाओं, धारणकरतीहै, नक्षत्रोंको, सहस्रकिरणवालेकूं,
सर्वादिशो, दधति, भानि, सहस्ररश्मिं,
पूर्व दिशाही, उत्पन्नकरतीहै, देदीप्यमानहै, किरणोंकासमूहजिसका, २२,
प्रा,च्येव, दिग् जनयति, स्फुरदं, शुजालम्, २२,
तुमकों, कहतेहैं, मुनीलोक, वडे, पुरुष,
त्वा, मामनंति, मुनयः, परमं, पुमांस,
सूर्यजैसाक्रांतिवर्णवाला, मलरहित, अंधेरेकोंदूरकरणेसें,
मादित्यवर्ण, ममलं, तमसःपुरस्तात्,
तुमकोंही, अच्छीतरे, पायकरकै, मुनिजनमृत्युकोंजीततेहैं,
त्वामेव, सम्यगु, पलभ्य, जयंतिमृत्युं,
नहींदुसराकोईउपद्रवरहित, मुक्तिपदका, हेमुनियोंकेइंद्ररस्ताहै, २३,
नान्यःशिवः, शिवपदस्य, मुनींद्रपंथाः, २३,
तुमकोंअक्षयकहतेहैं, परमेश्वरअचिंतकहतेहैं, गुणोंकीसंक्षारहितआदीश्वरकहतेहैं
त्वामव्ययं, विभुमचिंत्य, मसंख्यमाद्यं,
ब्रह्मानिवृत्तिरूपसबकेईश्वरकहतेहैं, अंतरहित, कामदेवकोंनासकर्त्ताकेतूसमहो,
ब्रह्माणमीश्वर, मनंत मनंगकेतुम्,
हेयोगियोंकेईश्वर, जाणाहैयोगमार्गतुमनैं, ज्ञानकेपर्यायसेंअनेकहो, उत्तमपुरुषएकहो,
योगीश्वरं, विदितयोग, मनेक, मेकं,
ज्ञानकास्वरूप, निर्मलअठारेदोषरहित, जादाकरकैकहतेहैंसंतपुरुष, २४,
ज्ञानस्वरूप, ममलं, प्रवदंतिसंतः, २४,
बुद्धआपहीहो, देवतोंसेपूजापाणेसें, फेरअपणीबुद्धिसेंज्ञानपानेसेती,
बुद्धस्त्वमेव, विबुधार्चित, बुद्धिबोधात्,
तूंहीशंकरहै, भुवनतीनकोंसुखकरणेसेती
त्वंशंकरोसि, भुवनत्रयसंकरत्वात्,
तूंहीविधाताहै, हेधीर्यधर, मुक्तिकेरस्तेकीविधिकाविधानवताणेसें(ब्रह्मा)हो,
धातासि, धीर, शिवमार्गविधेर्विधानात्,
प्रगटपणे, तूंही, हेभगवान, पुरुषोत्तमविष्णुनारायणहो, २५,
व्यक्तं, त्वमेव, भगवन्, पुरुषोत्तमोसि, २५,

तुमकोंनमस्कारहो, तीनभुवनकीपीडाके, हरणेवालेहेनाथ,
तुभ्यंनम, त्रिभुवनार्त्ति, हरायनाथ,
तुमकोंनमस्कारहो, पृथ्वीतलमें, निर्मल, अलंकारसमानकों,
तुभ्यंनमः, क्षितितला, मल, भूषणाय,
तुमकोंनमस्कारहो, तीनजगत्के, परमऐश्वर्य(ठकुराई)वंतकों,
तुभ्यंनम, त्रिजगतः, परमेश्वराय,
तुमकोंनमस्कारहो, हेजिनराज, भवरूपसमुद्र सुकाणेवालेकों, २६,
तुभ्यंनमो, जिन, भवोदधि, शोषणाय, २६,
क्याआश्चर्य, इहां, जो, नाम गुण, समस्तोंसें,
कोविस्मयो, त्र, यदि, नाम, गुणै रशेषै,
तूं, आश्रयकराहुआहै, रहितअवकाशपणे हेमुनियोंकेस्वामी,
स्त्वं, संश्रितो, निरवकाशतया, मुनीश,
दोष, अंगीकारकराहुआ, जुदे२तरेकेआश्रयोंसें, पैदाहुआगर्वजैसैदोषीजन,
दोषै, रुपात्त, विविधाश्रय, जातगर्व्वैः,
स्वप्नेमेंभीउनोंसें, नहींकभीआप देखेगये, २७,
स्वप्नांतरेपि, नकदाचिद, पीक्षितोसि, २७,
उंचाअशोक, वृक्षकेआश्रयवैठेहुये, उंचेकिरणोंसें,
उच्चैरशोक, तरुसंश्रित, मुन्मयूख,
शोभताहै, रूप, निर्मल, आपका, अत्यंत[जादा],
माभाति, रूप, ममलं, भवतो, नितांतम्,
प्रगट, उल्लसायमान, किरणोंसें, अस्तकरदिया, अंधेरेकासमूह,
स्पष्टो, ल्लस, त्किरण, मस्त, तमोवितानं,
विंव, सूर्यकीतरै, मेघके, पासरहाहुआं, २८,
बिंबं, रवेरिव, पयोधर, पार्श्ववर्त्ति २८,
सिंहासनकैविषै, मणियोंकेकिरणोंकी, शिखा(पंक्ति)सेंविचित्र,
सिंहासने, मणिमयूख, शिखाविचित्रे,
जादाकरकैशोभताहै, तेराशरीर, सोनेकीकांतिजैसामनोहर
विभ्राजते, तववपुः, कनकावदातं,

बिंबहैसो, आकाशमें, प्रकाशकरता, किरणोंकीशाखाओंकासमूह,
बिंबं, विय, द्विलस, दंशुलतावितानं,
उंचा, उदयाचलपहाडकेशिरपर, सूर्यजैसाशोभताहैतैसें, २९,
तुंगो, दयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मैः, २९,
मोगरेकेफूलजैसै, उजले,चंचल, अैसैचमरोंकी, मनोहरशोभासें,
कुंदावदात, चल, चामर, चारुशोभं,
विराजताहै, तेरा, शरीर, सोनेकीकांतिवाला,
विभ्राजते; तव, वपुः कलधौतकांतं,
उदयभया, चंद्रमाजैसा, निर्मल, झरणेकेपाणीकीधारावहरहीहैअैसा
उद्य, च्छशांक, शुचि, निर्झरवारिधार,
उंचे, शिखर, मेरूपहाडकीतरे, सोनेका, ३०,
मुचै, स्तटं, सुरगिरेरिव, शातकौंभम्, ३०,
छत्र, तीन, तेरेपर, विशेषशोभताहै, चंद्रमाकीक्रांतिजैसा,
छत्र, त्रयं, तव, विभाति, शशांककांत,
तुमारेउपररहा, ढकदियाहै, सूर्यकी, किरणोंकाप्रतापजिसनें,
मुचैःस्थितं, स्थगित, भानु, करप्रतापम्,
मोतियोंके, समूहकी, रचनाकरकै, विशेषपणेवधगईहैशोभा,
मुक्ताफल, प्रकर, जाल, विवृद्धशोभं,
विक्षातकरताहुआ, तीनजगतका, परमेश्वरपणा, ३१,
प्रख्यापय, त्रिजगतः, परमेश्वरत्वं, ३१,
विकशित, सोना, नयाअथवानवंकमलैंकै, ढिगारकीक्रांति,
उन्निद्र, हेम, नवपंकज, पुंजकाति,
चारोंतरफउछलती, नखकेकिरणोंकी, प्रकाशपंक्तिमनोहर,
पर्युल्लसन्न, खमयूख, शिखाभिरामौ,
चरण, पांव, तुमारे, जहां, हेजिनइंद्र, धरेजातेहैं,
पादौ, पदानि, तव, यत्र, जिनेंद्र, धत्तः,
कमल, उहां देवता, समस्तपणे, रचनाकरतेहैं, ३२,
पद्मानिः, तत्र, विबुधाः, परि, कल्पयंति, ३२,

इसतरै, जैसैं, तेरी, अतिशयसंपदाहोतीहुई, हेजिनेंद्र,
इत्थं, यथा, तव, विभूतिरभू, जिनेंद्र,
श्रुतचारित्ररूपधर्मोपदेशकाजोविधान, जोतुमाराहैवेसानहींदूसरेदेवोंका,
धर्मोपदेशनविधौ, नतथापरस्य,
जैसीकांति, सूर्यकीहै, जादाकरकैहणाहैअंधेराजिसनें,
यादृक्प्रभा, दिनकृतः, प्रहतांधकारा,
तैसीकहांहै, ग्रह(तारा)गणकी, प्रकाशकरणेवालेहैंतोभी, ३३,
तादृक्कुतो, ग्रहगणस्य, विकाशिनोपि, ३३,
झरतेहुयेमदकरके, मैला, औरचंचल, गंडस्थलसें,
श्च्योतन्मदा, विल, विलोल, कपोलमूल,
मतवाला, फेरफिरतेहुये, भमरोंकैशब्दसें, जादावधगयाहैक्रोधजिसका,
मत्त, भ्रमद्, भ्रमरनाद, विवृद्धकोपम्,
अैसाएरापतजैसीक्रांतिवाला, इभ(हस्ती)उद्धत, अंकुससैंभीवसनहींसन्मुखआता,
अैरावताभ, मिभ, मुद्धत, मापतंतं,
देखकरकैडर, होताहै, नहीं, आपकेआश्रयरहे(भक्त)जीवोंकों, ३४,
दृष्ट्वाभयं भवति, नो भवदा, श्रितानाम्, ३४,
फाडडालाहस्तीकाकुंभस्थल, नीचेगिराउजलेखूनसेंलिपटेहुये,
भिन्नेभकुंभ, गलदुज्ज्वलशोणिताक्त,
मोतियोंका, समूहसें, शोभायमान, जमीनकाभाग,
मुक्ताफल, प्रकर, भूषित, भूमिभागः
बांधीहैफाल, पांवोंकीगति, हिरणोंकामालकभी, सिंह
बद्धक्रमः, क्रमगतं, हरिणाधिपोपि,
नहींदबासकताहै, चरणदोनोंअचल, अच्छीतरेआश्रयकियाजिसनैंतेरा, ३५,
नाक्रामति, क्रमयुगाचल, संश्रितंते, ३५,
प्रलयकालकीहवासेंउत्कट, अग्निकैजैसा,
कल्पांतकालपवनोद्धत, वन्हिकल्पं,
दावानलकी, सिलगीहुई, उजली, ऊंचीशिखाजिसकी,
दावानलं, ज्वलित, मुज्ज्वल, मुत्स्फुलिङ्गं,

तीनलोककोखाणैंकीइच्छावाला, सामनें, आकरपडता,
विश्वंजिघत्सुमिव, संमुख, मापतंतं,
आपकेनामकाकीर्त्तिरूपजल, शांतकरताहै, सबकों, ३६,
त्वन्नामकीर्तनजलं, शमयत्य, शेषम्, ३६,
लालआंखवाला, मदोन्मत्त, कोयलकेगलेजैसास्याह,
रक्तेक्षणं, समद, कोकिलकंठनीलं,
क्रोधकरकैउद्धत, सांप, उंचाकियाहैफणजिसनैं, सामनेंआताहुआ,
क्रोधोद्धतं, फणिन, मुत्फण, मापतंतं,
उल्लंघनकरताहैचरणदोनोंसैं, समस्तशंकारहित,
आक्रामतिक्रमयुगेन, निरस्तशंक,
तुमारेनामकी, नागदमनी, हृदयमें, जिसपुरुषके, ३७,
स्त्वन्नाम, नागदमनी, हृदि, यस्यपुंसः, ३७,
युद्धकरतेहुयेघोडेहस्तीगाजनेसें, डरावणेशब्दहोरहाहै,
वल्गत्तुरंगगजगर्जित, भीमनाद,
संग्राममेंसेन्या, बलवानभी, राजाओंकी,
माजौबलं, बलवतामपि, भूपतीनां,
उगतेहुयेसूर्यकी, किरणोंकी, पंक्तिसैंअपविद्ध(भेदनकियाहुवा),
उद्यद्दिवाकर, मयूख, शिखापविद्धम्,
तुमारीकीर्तनसेती, अंधेरेकीतरै, जल्दी, भेदनकोप्रासहोताहै[भागजातेहैं], ३८,
त्वत्कीर्तिना, त्तमइवा, शु, भिदामुपैति, ३८,
वरछीकेअग्रभागसेंभेदेहुये, हस्तिकेरुधिररूपपाणीकेपूरमें,
कुंताग्रभिन्न, गजशोणितवारिवाह,
जलदीसें, तिरणेकोंआतुर, ऐसासुभटडरावणे,
वेगवतार, तरणातुर, योधभीमे,
संग्राममैंजय, जीताहै, दुःखेंजीतीजै, शत्रुओंकावर्ग,
युद्धे जयं, विजित, दुर्जय, जेयपक्षा,
तुमारेचरणकमल, वनउसकेआश्रयसेंपाताहै, ३९,
स्त्वत्पादपंकज, वनाश्रयिणोलभंते, ३९,

समुद्रमें, क्षोभप्राप्तकियाहैडरावणे, मच्छोंकाचक्र,
अंभोनिधौ, क्षुभितभीषण, नक्रचक्र,
जलचरजीवविशेष, डरकरणेवाला, चडाभारीवडवानल(अग्नि)
पाठीनपीठ, भयदोल्वण, वाडवाग्नौ,
उछलतेतरंगोंकेशिखरपर, रहेहुये, जिहाज,
रंगत्तरंगशिखर, स्थित, यानपात्रा,
त्रासकों, छोडके, तुमारे, स्मरणसेती, जाताहैसमुद्रकेपार, ४०,
त्रासं, विहाय, भवतः, स्मरणा, द्व्रजंति, ४०,
उपजा, डरावणा, जलोदरकेवोझसें, टेढाभया,
उद्भूत, भीषण, जलोदरभार, भुग्नाः,
शोककरणेकीदशाकोंप्राप्तहुवा, छोडीहैजीणेकीआशा,
शोच्यांदशामुपगता, श्च्युतजीविताशाः,
तुमारेचरणकमलकीरजरूपअमृतसें, लपटा[खरडा]शरीरऐसा,
त्वत्पादपंकजरजोमृत, दिग्धदेहा,
मनुष्यहोताहै, कामदेवके, समानरूपवाला, ४१,
मर्त्याभवंति, मकरध्वज, तुल्यरूपा, ४१,
पांवोंसेंगलेतक, बडीसांकलसें, वींटाहुआअंग,
आपादकंठ, मुरुश्रृंखल, वेष्टितांगा,
मजबूतवडी, वेडीकीमहींनअणीसें, घसगईहैजांघजिसकी,
गाढंवृह, न्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः,
तुमारेनाममंत्रकूं, हमेस, मनुष्य, स्मरण[याद]करता,
स्वन्नाम, मंत्र, मनिशं, मनुजाः,स्मरंतः,
जल्दी, आपहीसें, विशेषपणेगयाहैबंधनकाडर, ऐसाहोताहै, ४२,
सद्यः स्वयं, विगतबंधभया, भवंति, ४२,
मदवालाहत्थी, सिंघ, दावानल[वनकीआग], अहि(सांप]
मत्तद्विपेंद्र, मृगराज, दवानला, हि,
युद्ध, दरियाव, जलोदर, कैदखाना, इनोंसेंउठाभय,
संग्राम, वारिधि, महोदर, बंधनो, त्थं,

उनोंका, जल्दी, नाश, पाताहै, डर, डरावणेवालानिश्चै
तस्या, शु, नाश, मुपयाति, भयं, भियेव,
जो, तुमारा, स्तवन, यह, बुद्धिवान, पढताहै, ४३,
य, स्तावकं, स्तव, मिमं, मतिधान, धीते, ४३,
स्तोत्ररूपमाला, तुमारी, हेजिनेंद्र, गुणोंकरकेगूंथीभई,
स्तोत्रस्रजं, तव, जिनेंद्र, गुणैर्निबद्धां,
भक्तीकरकेमैनें, मनोहर५२अक्षररूपरंगविरंगेपुष्पोंसें,
भक्त्यामया, रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां,
धारणकरेमनुष्य, जोइसलोकमें, गलेमेंप्रासहुईहमेस,
धत्तेजनो, यइह, कंठगतामजस्रं,
वहमानतुंगकों(उंचेमानकों), हमेसपाताहै, लक्ष्मीः, मोक्षकी, ४४,
तंमानतुंग, मवशासमुपैति, लक्ष्मीः, ४४, इति०,
अथकल्याणमंदिर,
कल्याणके, गृह, वडाउदार, पापकूं, भेदणेवाले,
कल्याण, मंदिर, मुदार, मवद्य, भेदि,
डरतेकूं, अभयदानदेनेवाले, निंदारहित, चरणकमल,
भीता, भयप्रद, मनिंदित, मंघ्रिपद्मं,
संसार, समुद्रमें, डूबतेहुये, समस्त, जीवोंकों,
संसार, सागर, निमज्ज, दशेष, जंतु,
जिहाजसमान, नमस्कारकरकै, जिनेश्वरका, १,
पोतायमान, मभिनम्य, जिनेश्वरस्य, १,
जिसकाआप, देवतोंकागुरुबृहस्पति, महिमासमुद्रका,
यस्यस्वयं, सुरगुरु, गरिमांबुराशेः,
स्तवनाकूं, अच्छीविस्तारबुद्धिवालाभी, नहींसमर्थ, करणेकूं,
स्तोत्रं, सुविस्तृतमति, र्नविभुर्विधातुं,
तीर्थंकेईश्वरका, कमठकेगर्व्वकूं, पूंछडियेतारेजैसैहरणेकों,
तीर्थेश्वरस्य, कमठस्मय, धूमकेतो.
उनोंका, में, यह, निश्चै, अच्छीस्तवना, करूंगा, २,
स्तस्या, ह, मेष, किल, संस्तवनं करिष्ये, २, युग्मम्,

सामान्यपणेसेंभी, तेरा, वर्णनकरणेकूं, अहवाल[स्वरूप],
सामान्यतोपि, तव, वर्णयितुं, स्वरूप,
मेरेजैसै, कैसें, हेस्वामी, होताहै, समर्थ,
मस्मादृशाः, कथं, मधीश, भवं, त्यधीशाः,
धीठ[वेसरम]भी, घूघूकाबालक, जोअथवा, दिनमेंअंधा,
धृष्टोपि, कौशिकशिशु, र्यदिवा दिवांधो,
रूपकों प्ररूप नकरसके, क्या, निश्चै, सूर्यका, ३,
रूपंप्ररूपयति, किं, किल, घर्मरश्मेः, ३,
मोहकेक्षयसेती, अनुभववालाभी, हेनाथ, मनुष्य,
मोहक्षया, दनुभवन्नपि, नाथ, मर्त्यो,
निश्चे, गुणोंकों, गिणणेकों, नहीं, तेरे, समर्थहोय,
नूनं, गुणान्, गणयितुं, न, तव, क्षमेत,
प्रलयकालका, वमनकियाहुआजल, प्रगटभीजिसमैसें
कल्पांत, वांतपयसः, प्रकटोपियस्मा,
मापहोसकेकिससें, समुद्रके, शंकाहै, रत्नोंका, ४,
न्मीयेतकेन, जलधे, र्ननु, रत्नराशिः, ४,
उद्यमवालासावधानहुआहूं, तेराहेनाथ, मूर्खअंतकरणवालाभी,
अभ्युद्यतोस्मि, तवनाथ, जडाशयोपि,
करणेकोंस्तवना, देदीप्यमान, असंक्षागुणोंकेआकर[खानका],
कर्त्तुं स्तवं, लस, दसंख्यगुणाकरस्य,
बालकभी, क्या, नहीं, अपणी, भुजा, दोनों, पसारकर,
बालोपि, किं, न, निज, बाहु, युगं, वितत्य,
विस्तार[चोडानलंबानकों], कहताहै, अपणीबुद्धिसें, दरियावका, ५,
विस्तीर्णतां, कथयति, स्वधियां, बुराशेः, ५,
जोयोगियोंसेंभी, नहींजाताहैकहा, गुणतेरे,हेईश्वर,
येयोगिनामपि, नयांति, गुणास्तवेश,
कहणेकोंकैसें, होय, उनोंकेविषै, मेरा, अवकाशः[शक्ति],
वक्तुंकथं, भवति, तेषु, ममा, वकाशः,

हुआ, वहनिश्चै, विगरविचारा, काम, जो,
जाता, तदेव, मसमीक्षित, कारिते; यं,
बोलताहै, अथवा, अपणीवाणीसें, शंकावचन, पंखीभी, ६,
जल्पंति, वा, निजगिरा, ननु, पक्षिणोपि, ६,
रहो, नहींचिंतनयोग्य, महिमा, हेजिन, अच्छीस्तवनातुमारी,
आस्ता, मचिंत्य, महिमा, जिन, संस्तवस्ते,
लेकिन्नामभीरक्षाकरताहैसंसारसें; आपका, तीनजगत्कों,
नामापिपाति, भवतो, भवतोजगंति,
तेज, धूपसें, हणीजगयेंजैसै, पंथीजन[रस्तागीर]कों, ग्रीष्मकालमें,
तीव्रा, तपो, पहत, पांथजना, न्निदाघे,
खुसकरताहै, पद्म, सरोवरका, ठंढेपाणीकी, अनिल[हवाभी,] ७,
प्रीणाति, पद्म, सरसः, सरिसो, निलोपि, ७,
हृदय[दिलमें]वर्त्ततेथके, तुमहेप्रभु, ढीलेहोजातेहैं,
हृद्वर्त्तिनि, त्वयिविभो, शिथिलीभवंति,
जीवोंकेक्षणमात्रमें, मजबूतभी, कर्मबंध,
जंतोक्षणेन, निवडा अपि, कर्मबंधाः,
तत्काल, सांप, मईबंधन, जैसैहैंमध्यभाग, छूटगिरतेहैं,
सद्यो, भुजंग,ममयाइव, मध्यभागः,
आणेसें, वनमें, मोर, चंदनके, ८,
मभ्यागते, वन, शिखंडिनि, चंदनस्य, ८,
छूटहीजाताहै, मनुष्य, जल्दी, हेजिनेंद्र,
मुच्यंतएव, मनुजाः, सहसा, जिनेंद्र,
डरावणे, उपद्रव, सइकडोंसैं, तुमकों, देखतेही,
रौद्रै, रुपद्रव, शतै, स्त्वयि, वीक्षितेपि,
गोकिरण, गोपृथ्वी, गोगउ, इनतीनोंकेस्वामी,देदीप्यमानतेजवालेकूं, देखणेसें,
गोस्वामिनि, स्फुरिततेजसि, दृष्टमात्रे,
चोरकीतरे, जल्दीतब, पशूछूटतेहैं, जादाकरकैभागतेहैं,तैसैंउपद्रवछूटजातेहैं, ९,
चोरैरिवाशु, पशवः, प्रपलायमानैः, ९,

तूं,तारणेवाला, हेजिन, कैसेंहै, भव्यजीव, वेभी,
त्वंतारको, जिन, कथं, भविनांत, एव,
तुमकोंवहते[ध्याते]हैं, हृदय[दिल]में, जोसंसारसेंपारउतरतेहुये,
त्वामुद्वहंति, हृदये, नयदुत्तरंतः,
जोअथवामसकचमडेकीतिरतीहै, जोजलमेंयहनिश्चै,
यद्वादृतिस्तरति, यज्जलमेषनून,
अंदरमेंप्रास, हवाका, वह, निश्चै, प्रभावहै, १०,
मंतर्गतस्य, मरुतः, स, किला, नुभावः, १०,
जिससें, रुद्रकूंआदिलेकरब्रह्माविष्णुभी, नासहोगयाप्रभावजिनोंका,
यस्मिन्, हरप्रभृतयोपि, हतप्रभावाः,
वहभी, तैनें, कामदेवकों, खपादिया, क्षणभरमें,
सोपि, त्वया, रतिपतिः, क्षपितः, क्षणेन,
वुझादिया, अग्नि, पाणीकरकैअवजिसनें,
विध्यापिता, हुतभुजः, पयसाथयेन,
पीयानहीं, क्या, उसकूंभी, दुःखसेधारणकरणेमेंआवैऐसेवडवानल[दरियावकीआगनें,]
पीतंन, किं, तदपि, दुर्द्धरवाडवेन, ११,
हेस्वामी, जादा, वडप्पणकूंभी, प्राप्त[अंगीकारकरेहुये,
स्वामि, न्नतुल्य, गरिमाणमपि, प्रपन्ना,
तुमकों, प्राणीगण, कैसें, वडाअचरजहै, सोहृदयमेंधारणकर,
स्त्वां, जंतवः, कथ, महो, हृदयेदधानाः,
भवसमुद्र, जल्दी, तिरतेहैं, जादाहलकापणेसें,
जन्मोदधिं, लघु, तरंत्य, तिलाघवेन,
विचारणेकीवातनहीं, वडोंका, जो, अथवा, प्रभावहै, १२,
चिंत्योनहंत, महतां, यदि, वा, प्रभावः १२,
क्रोधकूं तैनें, जव, हेप्रभु, पहलेही, दूरकिया,
क्रोधस्त्वया, यदि, विभो, प्रथमं, निरस्तो,
विध्वंसकिया, तव, अचरज, कैसें, निश्चै, कर्मरूपचोरोकूं,
ध्वस्ता, स्तदा, वत, कथं, किल, कर्मचौराः,

जलाताहै, इसलोकमें, जब, अथवा, शिशर ऋतुभी, लोकमें,
प्लोषत्य, मुत्र, यदि, वा, शिशिरापि, लोके,
हरेकाले,दरखतवाले, वनोकूं, नहीं, क्या, शीतकासमूह, १३,
नीलद्रुमाणि, विपिनानि, न, किं, हिमानी, १३,
तुमकोंयोगीलोक, हेजिन, हमेस, सिद्धस्वरूप,
त्वांयोगिनो, जिन, सदा, परमात्मरूप,
गवेषणकरतेहैं, हृदय, कमलके, कलीकेमध्यभागमें,
मन्वेषयंति, हृदयां, बुज, कोशदेशे,
पवित्र, मलरहित, कांतिवालेकी, जब, अथवा क्याओरभी,
पूतस्य, निर्मल, रुचे, यदि, वा, किमन्य,
कमलबीजकी, संभवे, पद, वितर्के, कर्णिकासें, १४,
दक्षस्य, संभवि, पदं, ननु, कर्णिकायाः, १४,
तुमारेध्यानसें, हेजिनेश्वर, आपके, भव्यप्राणी, क्षणमात्रसें,
ध्याना, ज्जिनेश, भवतो, भविनः, क्षणेन,
शरीरकोंत्यागके, सिद्धावस्थाकों, जातेहैं,
देहंविहाय, परमात्मदशां, व्रजंति,
तेजअग्निसें, पत्थर, भावकों, दूरकरके, लोकमें,
तीव्रानला, दुपल, भाव, मपास्य, लोके,
सोनेपणेंकों, थोडेसमयमेंही, भेलवालीधातूकीतरे, १५,
चामीकरत्व, मचिरादिव, धातुभेदाः, १५,
हृदयमें, हमेस, हेजिन, ज़िनोंके, विचारेजातेहोआप,
अंतः, सदैव, जिन, यस्य, विभाव्यसेत्वं,
भव्यजीवोंका, कैसें, वहभी, नाशकरतेहो, शरीरका,
भव्यैः, कथं, तदपि, नाशयसे, शरीरं,
येस्वरूप[स्वभावही]है, अर्थात्, मध्यस्थपुरुषोंका, निश्चै,
एतत्स्वरूप, मथ, मध्यविवर्त्तिनो, हि,
जोआपसकीलडाईकोंशमादेतेहैं, वडेप्रभाववालेपुरुष, १६,
यद्विग्रहंप्रशमयंति, महानुभावाः, १६,

आत्मा, पंडितलोकोनें, यह, तुमारेकूं, अभेद[एकता]बुद्धीसें,
आत्मा, मनीषिभि, रयं, त्वद, भेदबुद्ध्या,
ध्याणेसें, हेजिनेंद्र, होतेहैं, इसलोकमें, आपकेप्रभावसें,
ध्यातो, जिनेंद्र, भवती, ह, भवत्प्रभावः,
पाणीभी, अमृत, ऐसापीछेसेंविचारकरणेसें, मंत्रमणीसें,
पानीयम,प्यमृत, मित्यनुचिंत्यमानं,
क्या, नामकहतेअहोमित्रो, जहरकों, दूरनहींकरै,करैही, १७,
किं, नामनो, विषविकार, मपाकरोति, १७,
तुमकोंही, हेरहितअज्ञान, अन्यदर्शनीशैवादिकभी,
त्वामेव, वीततमसं, परिवादिनोपि,
निश्चैहेप्रभू, विष्णुब्रह्मामहेश्वरादिककी, बुद्धिकरकै, तुमकोंहीअंगीकारकरतेहैं,
नूनंविभो, हरिहरादि, धिया, प्रपन्नाः,
क्या, पीलियेका[पांडू]रोगी, हेईश्वर, श्वेतभीशंखकूं,
किं, काचकामलभि, रीश, सितोपिशंखो,
नहींग्रहणकरता[देखता]है, तरे२केरंगकेपरावर्त्तन[पलटे]सें, १८,
नोगृह्यते, विविधवर्णविपर्ययेण, १८,
धर्मोपदेशकी, वख्त, पासके(नजीकके)प्रभावसें,
धर्मोपदेश, समये, सविधानुभावा,
दूररहो, मनुष्यतो, होताहै, तेरे, वृक्षभीशोकरहित[अशोक]नामसैंप्रथमातिशय, १
दास्तां, जनो, भवति, ते, तरुरप्यशोकः,
उदयहोणेसें, दिनपती[सूर्य]के, वोपृथ्वीओरवृक्षभी,
अभ्युद्गते, दिनपतौ, समहीरुहोपि,
क्या अथवा जाग्रतअवस्थाकोंपातेहैं, नहींजीवलोक[मनुष्यहीइकेले], १९,
किं वा विवोधमुपयाति, नजीवलोकः, १९,
अचरजहै, हेप्रभु, कैसें, नीचेमुखजिसका, गुंड़ी[वींट],
चित्रं, विभो, कथं, मवाङ्मुख, वृंतमेव,
चारोंतरफ, गिरतेहैं, निरंतर[एकमेकमिले], देवताफूलोंकीवरसात,
विष्वक्, पतत्य, विरला, सुरपुष्पवृष्टिः,

तुमारे, सामनें, फूलोंकाअथवाअछेमनकेमनुष्योंका,जोहेमुनियोंकेईश्वर,
त्वद्, गोचरे, सुमनसां, यदिवामुनीश:,
जाताहै, निश्चै, नीचेही, वाह्यऔरअभ्यंतरबंधन[पाप],२०,सुरपुष्पवृष्टि२अतिशय
गच्छंति, नून, मधएवहि, बंधनानि, २०,
युक्तठिकाणेगहरी, हृदयरूप, समुद्रसें, उपजी[पैदाहुई],
स्थानेगंभीर, हृदयो, दधि, संभवाया:,
अमृतपणेकों, तेरी, वाणीका, कहतेहैं,
पीयूषतां, तव, गिर:, समुदीरयंति,
पीकरकै, जिसकारण, उत्कृष्ट हर्ष, संयोगकेभजनेवाले,
पीत्वा, यत:, परमसंमद, संगभाजो,
भव्य, पातेहैं, जल्दीही, अजरअमरताकों, २१, दिव्यध्वनी३अतिशय,
भव्या, व्रजंति, तरसा, प्यजरामरत्वं, २१,
हेस्वामी, जादाकरकै, नीचेझुकके, ऊंचेउछलते,
स्वामिन्, सुदूर, मवनम्य, समुत्पतंतो,
मानताहूं, कहतेहैं, पवित्र, देवतोंकेचमरोंकासमूह,
मन्ये, वदंति, शुचय:, सुरचामरौघा:,
जोइनप्रभूकों, नमस्कारकरताहै, मुनियोंमेंप्रधानपार्श्वनाथकों,
येस्मै, नतिंविदधते, मुनिपुंगवाय,
वहनिश्चैउच्चगतीकों, निश्चै, शुद्धभाववालेहोतेहैं, २२,।४ चमरातिशय,
तेनूनमूर्द्धगतय:, खलु, शुद्धभावा:, २२,
श्याम, गहरीवाणीवाला, उजले, सोनेरत्नमई,
श्यामं गंभीरगिर, मुज्वल, हेमरत्न,
सिंहासनपररहेहुये, इससमवसरणमें, भव्यरूपमोर, तुमकों,
सिंहासनस्थ, मिह, भव्यशिखंडिन, स्त्वां,
देखतेहैं, उत्सुकपणेकरकै, गर्जनाकरताउंचा,
आलोकयंति, रभसेन, नदंतमुच्चै,
मेरूपहाडके, शिखरपरकीतरेमोर, नयामेघ[वर्षातकूंदेखे,तेसें,२३।५सिंहासनातिशय
श्चामीकराद्रि, शिरसीव, नवांबुवाहम्, २३,

ऊंचाजाताहुआ, तेरी, श्याम, कांति, मंडलकरकै,
उद्गच्छता, तव, शिति, द्युति, मंडलेन,
छिपगई, पत्तोंकी, क्रांतिऐसा, अशोकवृक्षहोताभया,
लुप्त, च्छद, च्छवि, रशोकतरुर्बभूव,
सानिध्यसेंभी, जो, अथवा, तेरे, हेरागरहित,
सान्निध्यतोपि, यदि, वा, तव, वीतराग,
तोफेरवैराग्यताकोप्राप्तहोय, कोननहींसचेतनपुरुषनिश्चैहोय, २४।६ भामंडलातिशय
नीरागतांव्रजति, कोनसचेतनोपि, २४,
अहो२लोको, प्रमादकोंछोडके, भजोइसपार्श्वप्रभूकों,
भोभो, प्रमादमवधूय, भजध्वमेन,
आयकरकै, मोक्षनगरीजाते, प्रतिसार्थवाहकों,
मागत्य, निर्वृतिपुरे, प्रतिसार्थवाहं,
ऐसाकहताहै, हेदेव, जगत्तीनोंकों,
एतन्निवेदयति, देव, जगत्रयाय,
जाणताहूंकेनादकरताहुवाआकाशमेंफैलकरके, देवदुंदुभितुमारा, २५,
मन्येनदन्नभिनभः, सुरदुंदुभिस्ते, २५,
प्रकाशकरणेमें, आपका, तीनभुवनमेंहेनाथ,
उद्योतितेषु, भवता, भुवनेषुनाथ,
तारामंडलकरकैयुक्तचंद्रमानें, धारणकियाहैअधिकार,
तारान्वितोविधुरयं, विहताधिकारः,
मोतियोंकेगुच्छोंसें[समूहोसें]युक्त, उल्लसित तीनछत्रपरछत्रके,
मुक्ताकलापकलितो, च्छ्वसितातपत्र,
मिषकरकेस्यात्चंद्रनैंतीनधाराहैशरीर, निश्चैनजीकआयाहै, २६,
व्याजात्रिधाधृततनु, र्ध्रुवमभ्युपेतः, २६,
आपप्रभूनेंजादाकरकैभरदियाहै, जगत्तीनएकठाहोगया,
स्वेनप्रपूरित, जगत्रयपिंडितेन,
क्रांति, प्रताप, ओरयशकीतरेही, संचयकरकै,
कांति, प्रताप, यशसामिव, संचयेन,

रत्न, सोना, चांदीसें, प्रकर्षपणे रचाहुवा,
माणिक्य, हेम, रजत, प्रविनिर्मितेन,
अैसेतीनगढोंसे, हेभगवानचारोंतरफ, सोभतेहो, २७,
सालत्रयेण, भगवन्नभितो, विभासि, २७,
मनोहरमालायेंफूलोंकी, हेजिन, नमेहुये, देवेंद्रोंकी,
दिव्यस्रजो, जिन, नम, त्रिदशाधिपाना,
छोडके, रत्नोंसें रचितभी, मुगटोंकों,
मुत्सृज्य, रत्नरचितानपि, मौलिबंधान्,
चरणोंकाआसरालेतेहैं, तुमारे, जो, अथवा, दूसरीजगे,
पादौश्रयंति, भवतो, यदि, वा, परत्र,
तुमारासंगमहुयेवाद, पुष्प, पंडित, वादेवता, नहींरगतेहैंनिश्चै, २८,
त्वत्संगमे, सुमनसो, नरमंतएव, २८,
तुमहेस्वामी, भवसमुद्रसें, उलटेमुखवाला[विरक्त]हैजिनोकों,
त्वंनाथ, जन्मजलधे, विंपराङ्मुखोपि,
जोतारतेहो, प्राणियोंकों, अपणे, पिछाडी लगेकों,
यत्तारयस्य, सुमतो, निज, पृष्ठलग्नान्,
युक्तहैयेवातनिश्चै, पृथ्वीकीमट्टीसें, वनाघडाजोहै, संततुमाराहीवैसास्वभावहै,
युक्तंहि, पार्थिव, निपस्य, सतस्तवैव,
अचरजहेहेप्रभु, जोहोआप, कर्मविपाकसैंशून्य,औरघडातोकुंभारकेकर्मयुक्तहै, २९,
चित्रं विभो, यदसि, कर्मविपाकशून्यः, २९,
तीनलोककेईश्वरहो, हेजनपालक, तोभीदलद्रीहोतुम,वा,दीक्षावादअल्प[वालरहितहोहेजनप
विश्वेश्वरोपि, जनपालक, दुर्गतस्त्वं,
क्या, अथवा, जन्मरहितस्वभाव, निश्चैकर्मलेपरहित, तुमहेईश्वर
किं, वा, क्षरप्रकृति, रप्यलिपि, स्त्वमीश,
ज्ञानरहितकोभी, अच्छावोधकराणेका, हमेस, कैसैंभी, निश्चै,
अज्ञान, वत्य, पि, सदैव, कथंचि, देव,
ज्ञान, तुमारा, देदीप्यमानहै, तीनलोककों, प्रकाशकरणेकाहेतुरूप, ३०,
ज्ञानं, त्वयि, स्फुरति, विश्व, विकाशहेतुः, ३०,

अधिकबोझसेभरा, आकाशमें, धूलिरूपपाप, क्रोधसेती,
प्राग्भारसंभृत, नभांसि, रजांसि, रोषा,
उडाई, कमठनें, वोकमठमूर्ख, जो,
दुत्थापितानि, कमठेन, शठेन, यानि,
कांतिभी, उससें, तेरी, नहीं, हेस्वामी, हणेगई, हणीजगईआसाउसकी,
छायापि, तै, स्तव, न, नाथ, हता, हताशो,
भरगया, फेर, इसपापरजसें, वोही, उलटा, दुष्टआत्माकमठ, ३१,
ग्रस्त, स्त्व, मीभि, रयमेव, परं, दुरात्मा, ३१,
जोगाजता, बहोतजोरका, मेघकासमूह, बहोत, डरावणा,
यद्गर्ज्ज, दुर्जित, घनौघ, मदभ्र, भीमं,
गिरती, विजली, मूसलजैसाजाडा, डरावणी, धाराका,
भ्रश्य, त्तडि, न्मुसलमांसल, घोर, धारम्,
उसदैत्यनें, छोडा, अचवो, दुःखसेंतरणेमें,आवेऐसेपाणीकूं, धारण किया,
दैत्येन, मुक्त, मथ, दुस्तरवारि, दध्रे,
उससें, उसका, हेजिन, दुःखेतिरणेवालाभवजल, कृत्यहुआ, ३२,
तेनैव, तस्य, जिन, दुस्तरवारि, कृत्यम्, ३२,
लटकतेहैं, ऊपरकेवाल, विदरूपहै, शिकल, मनुष्योंकेमस्तकका,
ध्वस्तो, र्ध्वकेश, विकृता, कृति, मर्त्यमुंड,
लटकताझूंमका, धारणकियाहै, डरावणा, मुखसें, निकलतीअग्नि,
प्रालंब, भृद्, भयद, वक्र, विनिर्यदग्निः,
ऐसैदैत्योंकासमूहप्रतें, आपकेवास्ते, प्रेरणाकरी, जिसनें,
प्रेतव्रजःप्रति, भवंत, मपीरितो, यः,
वह, उसकेहीहूआ, भवोभवमें, भवरूपदुःखकाकारण, ३३,
सो, स्याभव, त्प्रतिभवं, भवदुःखहेतुः, ३३,
धन्यवहीहैं, हेतीनभुवनकेस्वामी, जो, त्रिकाल,
धन्यास्तएव, भुवनाधिप, ये, त्रिसंध्य-
आपकाआराधतेहैं, विधिसें, दूरकियाहै, दूसरेकामजिसनें,
माराधयंति, विधिव, द्विधुता, न्यकृत्याः,

भक्तिसेंउल्लशित, रूं, व्याप्त, शरीरभागजिनोंका,
भक्त्योल्लस, त्पुलक, पक्ष्मल, देहदेशाः
चरणदोनों, तेरे, हेप्रभू, पृथ्वीमें, भव्यजीव, ३४,
पादद्वयं, तव, विभो, भुवि, जन्मभाजः, ३४,
इस, पाररहित, भवजल, समुद्रमें, हेमुनियोंकेईश्वर,
अस्मि, न्नपार, भववारि, निधौ, मुनीश,
जाणताहूंनहींमेंनें, कानोसेंसुणा, तुमकोंकभी,
मन्ये, नमे, श्रवणगोचरतां, गतोसि,
सुणणेसें, फेर, तेरा, नामगोत्र, पवित्रमंत्रकरकै,
आकर्णिते, तु, तव; गोत्र, पवित्रमंत्रे,
क्या, अथवा, आपदारूप, सांपणी, वहनिकुंसप्राप्तहोय ३५
किं, वा, विप, द्विषधरी, सविधंसमेति, ३५,
जन्मांतरमेंभी, तेरेचरण, दोनों, नहीं, हेदेव,
जन्मांतरेपि, तवपाद, युगं, न, देव,
जाणताहूं, मेंनें, पूजा, कैसैहैंदोनोंचरणवांछितदानदेणेंमेंचतुर,
मन्ये, मया, महित, मीहितदानदक्षं,
तिसकारण, इसजन्ममें, हेमुनिपति, अनादरका,
तेनें, हजन्मनि, मुनीश, पराभवानां,
हुआ, स्थानक[घर],में, मथनहोगयाचित्तकाअभिप्राय, इसजन्ममें,
जातो, निकेतन,महं, मथिताशयानां, ३६,
निश्चै, नहीं, मोहअंधकारसें, ढके, नेत्रोंकरकै,
नूनं, न, मोहतिमिरा, वृत, लोचनेन,
पहले, हेप्रभू, एकवेरभी, देखेहुयेहो,
पूर्वं, विभो, सकृदपि, प्रविलोकितोसि,
मर्मस्थानकूं, भेदणेवाले, पीडादेतेहैं, निश्चै, मुझकों, अनर्थ[दुःख],
मर्मा, विधो, विधुरयंति, हि, मा, मनर्थाः
जादाकरकैउद्यत, कर्मसंतति, कीप्राप्ति, कैसैंयहहोती, आपकादर्शनहोजातातो,
प्रोद्य, त्प्रबंध, गतयः, कथ, मन्यथै, ते ३७,

अथवाआपकोंपहलेसुणाभी, पूजाभी, देखाभी,
आकर्णितोपि, महितोपि, निरीक्षितोपि,
निश्चै, नहींचित्तमें, मेनें, धारणकिया, भक्तिसें,
नूनं, नचेतसि मयाविधृतोसिभक्त्या
हुआहूं, उसकरकै, हेमनुष्योंकेबंधू, दुःखकापात्र,
जातोस्मि, तेन, जनबांधव, दुःखपात्रं,
जिसकारण, क्रिया, जादाफलदेणेवाली, नहीहोयभावशून्यतासें, ३८,
यस्मा, क्रियाः प्रतिफलंति, नभावशून्या, ३८,
तूंहेनाथ, दुःखीजनका, वत्सल, हेशरणागतप्रतिपाल,
त्वंनाथ, दुःखिजन, वत्सल, हेशरण्य,
दयाके, पुण्य[पवित्र]स्थानक, जितेंद्रियोंमें, श्रेष्ठ,
कारुण्य, पुण्यवसते, वशिनां, वरेण्य,?
भक्तिसेंनमनकियाहै, मेरेपर, हेमहेश्वर, दयाकरकै,
भक्त्यानते, मयि, महेश, दयांविधाय,
दुःखकेउत्पत्ति[अंकूरकों, खंडनकरने, जल्दीपणा, कर, ३९,
दुःखांकुरो, द्दलन, तत्परतां, विधेहि ३९,
संक्षारहित[अनंत], बलीके, शरणकाशरण, वोसरण,
निःसंख्य, सार, शरणंशरणं, शरण्य,
पायकरकै, नाशकरेहुये, वैरी, प्रसिद्ध, चरित्रआपका,
मासाद्य, सादित, रिपु, प्रथिता, वदातम्,
तुमारेचरणकमलका, भी, ध्यान, वांझडाहै,
त्वत्पादपंकज, मपि, प्रणिधान, वंध्यो,
मारणेयोगहुं, जो, हेतीनभुवनमेंपवित्र, हा,वडाखेदहै, मेंमारागया, रागद्वेषसें,
वध्योस्मि, चे भुवनपावन, हाहतोस्मि ४०,
हेदेवइंद्रोंसेंवांदणेयोग्य, जाणाहै, सर्व, वस्तुकासारआपनें,
देवेंद्रवंद्य, विदिता, खिल, वस्तुसार
हेसंसारसेंतारणेवालेप्रभू, हेत्रिभुवननाथ,
संसारतारकविभो भुवनाधिनाथ

रक्षाकरो, हेदेव करुणाकेद्रह, मुझेंपवित्रकरो,
त्रायस्व, देव, करुणाह्रद, मांपुनीहि,
सीदाताहुआ, आज, डरदेणेवाला, संकटसमुद्रसें, ४१,
सीदंत, मद्य, भयद, व्यसनांबुराशेः ४१,
जोहै, हेनाथ, आपकेचरण, कमलकी,
यद्यस्ति, नाथ भवदंघ्रि, सरोरुहाणां,
भक्तीका, फल, कुछभी, संतानपरंपरासें, संची[एकठीकरी]हुई,
भक्तेः फलं, किमपि, संतति, संचितायाः
वहमुझें, तुमाराएक, शरणकी, शरणवत्सलताहुओ,
तन्मे, त्वदेक, शरणस्य, शरण्यभूयाः,
हेस्वामी, आपही, तीनभुवनमें, इसलोकमें, दूसरेजन्ममेंभी, ४२,
स्वामी, त्वमेव, भुवने, त्र भवांतरेपि, ४२,
इसतरेसें, समाधीयुक्तबुद्धिहै, विधिपूर्वक, हेसामान्यकेवलियोंकेइंद्र,
इत्थं, समाहितधियो, विधिव, ज्जिनेंद्र
तेज[आकरा]उल्लासपाता, रोमांचरूप, कंचुकीयुक्तशरीरभागजिनोंका,
सांद्रोल्लस, त्पुलक, कंचुकितांगभागाः
तुमारीमूर्तिका, मलरहित, मुखकमलसें, वांधाहैध्यानजिनोंनें,
त्वद्बिंब, निर्मल, मुखांबुज, बद्धलक्षा,
जोसम्यक्स्तवना, तुमारीहेप्रभू, रचै, भव्यजीव, ४३,
येसंस्तवं, तवविभो, रचयंति, भव्याः, ४३,
मनुष्यकेनेत्ररूप, कमलकों, प्रकाशनेचंद्रजैसै, अत्यंतदेदीप्यमान, स्वर्गकीसंपदा,
जननयन, कुमुद, चंद्र प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो,
भोगके, वहगलगयाहै, कर्ममलकासंचयअैसा, थोडेकालमेंमोक्षकूं, अंगीका,
भुक्त्वा, तेविगलित, मलनिचया, अचिरान्मोक्षं, प्रपद्यं
रकरताहै, ४४, अैसासिद्धसेनकुमुदचंद्राचार्यनेंमहेश्वरकेलिंगमेंप्रच्छन्नअयवंती
ते, ४४, इतिकुमुदचंद्रकृतपार्श्वस्तवनं ॥
पार्श्वप्रभूकीस्तवनाकरअयवंतीमेंविक्रमादित्यनृपसमक्षलिंगस्वतःफटकेप्रगटकरी.

अथबृहच्छांति ॥

अहो२भव्यजीवो, सुणो, वचन, योज्ञअवसरके, सब, यह,
भोभोभव्याः, शृणुत, वचनं, प्रस्तुतं, सर्व, मेतत्,
जो, जात्रामें, तीनभुवनके, गुरु, वीतरागके, भक्तीकेभजनेवाले,
ये, यात्रायां, त्रिभुवन, गुरो, रर्हतां, भक्तिभाजः
उनोंकी, शांतिहुओ, आपलोकोंकै, अरिहंतादिककेप्रभावसें,
तेषां, शांतिर्भवतु, भवता, मर्हदादिप्रभावा-,
रोगरहितपणा, लक्ष्मी, धैर्य, बुद्धि, करणेवाली, लडाईके, नासकाकारण,
दारोग्य, श्री, धृति, मति, करी, क्लेश, विध्वंसहेतुः,
काव्य, अहो२, भव्यलोको, इस, निश्चै, भरतऐरवत,
१ गद्यं, भोभो, भव्यलोका, इह, हि, भरतै,रा
महाविदेहमें, पैदाहुये, सब, तीर्थंकरोंके, जन्म,
वत, विदेह, संभवानां, समस्त, तीर्थकृतां, ज
कीवख्त, आशन, कांपणेके, वाद, अवधीज्ञानसें, जाणकै,
न्म, न्यासन, प्रकंपा, नंतर, मवधिना, विज्ञाय,
सौधर्म्मपहलेदेवलोककास्वामी, सुघोषानाम, घंटा, हिलायांके, वाद,
सौधर्माधिपतिः, सुघोषा, घंटा, चालना, नंतरं,
समस्त, सुर, ओरअसुरोंकेइंद्रः, संग, आयकरकै, विनययुक्त,
सकल, सुरा, सुरेंद्रैः, सह, समागत्य, सविन
अरिहंतपूज्यकों, लेकरकै, जायकरकै, मेरूपहाडके,
य,मर्हद्भट्टारकं, गृहीत्वा, गत्वा, कनकाद्रिश्टृं
शिखरपर, किया, जन्मअभिषेक[स्नात्र], शांतिकाशब्दपुकारतेहैं,
गे, विहित, जन्माभिषेकः, शांतिमुद्घोषयति,
जैसें, तैसें,मैं, कियेमुजबकीनकल, अैसाकरकै, देवतोंका,
यथा, ततो,हं, कृतानुकार, मितिकृत्वा, महाज,
समूह, जिसमार्गगये, वहमार्गहै, अैसें, भव्यजीवोंके, संग, आय
नो, येनगतः, स,पंथाः, इति, भव्यजनैः, सह,समा,
करकें, स्नानकरणेकेपाटेपर; स्नानकराकर, शांतिशब्दउंचेस्वरसें,

गत्य, स्नात्रपीठे, स्नात्रंविधाय, शांतिमुद्‌घोष,

जाहिरकरताहूं, वहपूजा, यात्रा, स्नानादिक, महोत्सवके, वाद,

यामि, तत्पूजा, यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवा, नंतर,

ऐसैंकरकै, कानदेकरकै, सुणो, तेजोअग्निबीज,

मितिकृत्वा, कर्णंदत्वा, निशम्यतां, स्वाहा, ओं

पवित्रदिन, पवित्रमैं, खुसहुओ, खुसहुओ, ज्ञानऐश्वर्यवान,

पुण्याहं, पुण्याहं, प्रीयंतां, प्रीयंतां, भगवंतो,

अरिहंत, सबजाणणेवाले, सबदेखणेवाले, तीनलोककेस्वामी,

र्हंतः, सर्वज्ञा, सर्वदर्शिन, स्त्रिलोकनाथा,स्त्रि

तीनलोकसेंपूजित, तीनलोककेपूज्य, तीनलोककेईश्वर,

लोकमहिता, स्त्रिलोकपूज्या, स्त्रिलोकेश्वरा,

तीनलोकमेंउजालेकेकरणेवाले, गईउत्सर्प्पणीके२४तीर्थंकरोंकेनाम,

स्त्रिलोकोद्योतकराः, ओं श्री केवलज्ञानी १ निर्वाणी २ सागर ३ महायश ४ विमल ५ सर्वानुभूति ६ श्रीधर ७ दत्त ८ दामोदर ९ सुतेजा १० स्वामी ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति १४ अस्ताग १५ नमीश्वर १६ अनिल १७ यशोधर १८ कृतार्थ १९ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ संप्रति २४

यह गई चोवीसीके तीर्थंकर

एते अतीत चतुर्विंशति तीर्थंकराः

ओं ऋषभ १ अजित २ संभव ३ अभिनन्दन ४ सुमति ५ पद्मप्रभ ६ सुपार्श्व ७ चंद्रप्रभ ८ सुविधि ९ शीतल १० श्रेयांस ११ वासुपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धर्म १५ शांति १६ कुंथु १७ अर १८ मल्लि १९ मुनिसुव्रत २० नमि २१ नेमि २२ पार्श्व २३ वर्धमान २४

यह वर्त्तमान चोवीसीके तीर्थंकर

एते वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकराः

ओं श्रीपद्मनाभ १ सूरदेव २ सुपार्श्व ३ स्वयंप्रभ ४ सर्वानु-

भूति ५ देवश्रुत ६ उदय ७ पेढाल ८ पोट्टिल ९ शतकीर्ति १० सुव्रत ११ अमम १२ निष्कषाय १३ निष्पुलाक १४ निर्मम १५ चित्रगुप्ति १६ समाधि १७ संवर १८ यशोधर १९ विजय २० मल्लि २१ देव २२ अनंतवीर्य २३ भद्रंकर २४

यह, होणेवाले, तीर्थंकर, २४, जिन, शांतहुये, शांतिकेकरणे
एते, भावि, तीर्थंकराः, जिनाः, शांताः, शांतिकरा

वालेहुओ, साधूलोक, मुनियोंमेंप्रधान, वैरियोंके,
भवंतु, स्वाहा, ओं मुनयो, मुनिप्रवरा, रिपु,

विजयमें, दुकाल, कांतारअटवीमें, विकट, रस्तेमें, रक्षाकरो, तुमारी, हमेस
विजय, दुर्भिक्ष, कांतारेषु, दुर्ग, मार्गेषु, रक्षंतु, वो, नित्यं,

ॐश्रीनाभि १ जितशत्रु २ जितारि ३ संवर ४ मेघ ५ धर ६ प्रतिष्ट ७ महसेन ८ नरेश्वर सुग्रीव ९ दृढरथ १० विष्णु ११ वसुपुज्य १२ कृतवर्म १३ सिंहसेन १४ भानु १५ विश्वशेन १६ सूर १७ सुदर्शन १८ कुंभ १९ सुमित्र २० विजय २१ समुद्रविजय २२ अश्वशेन २३ सिद्धार्थ २४

यह, वर्तमान, २४ तीर्थंकरोंकेपिताकानाम,
एते, वर्तमान, चतुर्विंशति, जिनजनकाः,

ओंश्रीमरुदेवा १ विजया २ सेना ३ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५ सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७ लक्ष्मणा ८ रामा ९ नंदा १० विष्णु ११ जया १२ श्यामा १३ सुयशा १४ सुव्रता १५ अचिरा १६ श्री १७ देवी १८ प्रभावती १९ पद्मा २० वप्रा २१ शिवा २२ वामा २३ त्रिसला २४

यह, वर्त्तमान, २४, तीर्थंकरोंकेमाताकेनाम,
एते, वर्त्तमान, जिनजनन्यः,

ओंगोमुख १ महायक्ष २ त्रिमुख ३ यक्षनायक ४ तुंबरु ५ कुसुम ६ मातंग ७ विजय ८ अजित ९ ब्रह्मा १० यक्षराज ११ कुमार १२ षण्मुख १३ पाताल १४ किन्नर १५ गरुड

१६ गंधर्वे १७ यक्षराज १८ कुबेर १९ वरुण २० भृकुटि २१ गोमेध २२ पार्श्व २३ ब्रह्मशांति २४

यह, वर्त्तमान, तीर्थंकरोंके, २४, यक्षोंकेनाम,
एते, वर्त्तमान, जिनयक्षा,

ओं चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ कालीमहाकाली ४ श्यामा, ५ शांता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चंडा १२ विदिता १३ अंकुशा १४ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया १९ नरदत्ता २० गांधारी २१ अंबिका २२ पद्मावती २३ सिद्धायिका २४

यहवर्त्तमान २४ तीर्थंकरोंकीआज्ञाकारिणी२४देव्योंकेनाम
एतेवर्त्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्यः
ओंह्रीं श्रींधृति कीर्त्तिकांति बुद्धिलक्ष्मी मेधा विद्यासाधन
प्रवेशमें, रहणेमें, अच्छीतरेगृहणकरणेसेंनाम, जयवंतहोवह,
प्रवेश, निवशनेषु, सुगृहीतनामानो, जयंतिते,जि
जिनेन्द्र,
नेंद्राः,

ओं रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रश्रृंखला ३ वज्रांकुशा ४ चक्रे-श्वरी ५ पुरुषदत्ता ६ काली ७ महाकाली ८ गौरी ९ गांधारी १० सर्वास्त्र महाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६

यह, १६विद्यादेवी, रक्षाकरो, मेरी, हमेस,
१६एतेषोडशविद्यादेव्यो, रक्षंतु, मे, नित्यं,स्वाहा,
प्रणववीज, आचार्य, उपाध्याय, आदले, चारोंहीवर्णकों, श्रीशोभा,
ओं, आचार्यो, पाध्याय, प्रभृति, चातुर्वर्ण्यस्य, श्रीश्र,
साधुओंकेसंघकों, शांतिहो, तुष्टि, हो, पुष्टिहो,
मणसंघस्य, शांतिर्भवतु, ओंतुष्टि, र्भवतु, पुष्टिर्भ,
ग्रह, चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध, गुरु,
वंतु, ओंग्रहा, श्चंद्र, सूर्यां, गारक, बुध, बृहस्पति,

शुक्रशनैश्वरराहुकेतुसहित लोकपालसंयुक्त,
शुक्रशनैश्चरराहुकेतुसंहिताः सलोकपालाः
सोम, यम, वरुण, कुबेर, इंद्र, सूर्य, कार्त्तिक, गणे
सोम, यम, वरुण, कुबेर, वासवा, दित्य, स्कन्द, विना,
श, जो; फेर, ओरभी, गाम, सहरके, क्षेत्र, देवतादिक, जोहे,
यका, ये, चा, न्येपि, ग्राम, नगर, क्षेत्र, देवतादय, यस्ते,
सोसंव, खुसहुओ,२, अखूट, भंडार, कोठार, राजाका
सर्वे, प्रीयंतां,२, अक्षीण, कोश, कोष्ठागारा, नरपत,
फेर, हुओ, लडका, दोस्त, भाई, स्त्री,
य,श्च, भवंतुस्वाहा, ओंपुत्र, मित्र, भ्रातृ, कलत्र,सु
गोत्रिये,निजगोत्री, सगे, न्यातीवर्ग, युक्त, हमेस, फेर, ह
हृत्,स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः, नित्यं, चा, मो,
र्ष, प्रशन्नता, करणेवाले, हुओ, इस, फेर, पृथ्वीमंडलमें,
द, प्रमोद, कारिणो, भवंतु, अस्मिं, श्च, भूमंडले,
ठिकाणा, वसणेवालोंका, महाव्रतीसाधुसाध्वी, अनुव्रतीश्रावक, श्राविका,
आयतन, निवासिनां, साधुसाध्वी, श्रावक श्राविका,
ओंका, रोग, उपसर्ग, महारोग, दुःख, खोटेमनकेपरिणाम, मिटानेकूं
नां, रोगो, पसर्ग, व्याधि, दुःख, दौर्मनस्यो, पशमना,
शांतिहुओ, संतोष, पुष्टता, धनादिककीवढोती, मंग,
य, शांतिभवंतु, ओंतुष्टि, पुष्टि, ऋद्धिवृद्धि, मांग,
लीक, उत्सव, हुओ, हमेस, उत्पन्न, खोटे,
ल्यो, त्सवाः, भवंतु, सदा, प्रादुर्भूतानि, दुरितानि,
पाप, समनहुओ, वैरी, उलटे,मुखवाले, हुओ,
पापानि, शाम्यंतु, शत्रवः, पराङ्मुखा, भवंतु, स्वाहा,
लक्ष्मीशोभावंतशांतिनाथकूं, नमस्कारशांतिके,करणेवालोंकों ती,
श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने, त्रै,
नलोकके,पती इंद्रोंके, मुकुटसेंपूजितहैचरणजिनोंका, १, शां
लोक्ये, शामराधीश, मुकुटाभ्यर्च्चितां। घ्रिये, १, शा,

तिनाथ शांतिकेकरता, समवसरणलक्ष्मीयुक्त, शांतिदेओ, मुझेहेजगद्गुरुः,
न्तिः, शांतिकरः, श्रीमान्, शान्तिर्दिशतु, मेगुरुः,शां
शांतिनिश्चै, हमेशउनोंके, जिनोंकेशांतिप्रभूकीमूर्त्तिपूजाघरमेंहोय, मर्दन,
तिरेव, सदातेषां, येषांशांतिर्गृहे, २। २। ओंउन्मृ,
करडालाहैंकष्ट, दुष्टग्रहोंकीचाल, खोटेस्वप्ने, दुःखोंकेकारणकूंआदिले,
ष्टरिष्ट, दुष्ट,ग्रहगति, दुःस्वप्न; दुर्निमित्तादि,सं,
संपादन[पैदाकरीहेहितकीसंपदा, नामकालेणाभी, उत्कृष्टवर्त्तेहैंशांतिप्रभूका,
पादितहितसंपत्, नामग्रहणं, जयतिशांतेः, ३,
चारप्रकारकासंघ, नगरदेश, राजाअधिपती, राजाओंकेरहणेका
श्रीसंघ, पौरजनपद, राजाधिप, राजसन्निवेशा,
स्थान, कंपनी, नगरकेआगेवानोंका उंचेस्वरसें, उद्घोषणाशांति,
नाम्; गोष्टी, पुरमुख्यानां, व्याहरणै, र्व्याहरेच्छां,
कीकरे,४, श्रीसाधुजैनसंघकी, शांतिहोय, श्रीनगर,
तिम्,४, श्रीश्रमणसंघस्य, शांतिर्भवतु, श्रीपौ,
केलोकोंकीशांतिहोय, राजाओरदिवानादिकअधिपतियोंकीशांतिहोय,
रलोकस्यशांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानांशांतिर्भवतु,
राजाकेघरसुकामोंकीशांतिहोय, साझेदारव्यंापारियोंकीशांतिहोय,
श्रीराजसंनिवेशानांचशांतिर्भवतु, श्रीगोष्टिकानांशांतिर्भवतु
न्यायसभापंचनगरकेमुखियोंकीशांतिहो, ब्रह्मलोकोंकीशांतिहो,
गोष्टिपुरमुख्यानांशांतिर्भवतु, ब्रह्मलोकस्यशांतिर्भ०,
मंगलीकहो, श्रीपार्श्वनाथअच्छेदेवकोंधूपदीपादिकयह
ओंस्वा हा, ओंह्रींश्रींश्रीपार्श्वनाथायस्वाहाः, एषा,
शांति प्रतिष्टामें, यात्रा, स्नात्रादिककेअंतमें, शांतिकलश,
शांतिः, प्रतिष्टा, यात्रा, स्नात्रावसानेषु, शांतिकल,
कोंग्रहणकरके, केशरचंदन, कपूर, अगर, धूप, वासचूर्ण, कु
शंगृहीत्वा, कुंकुमचंदन, कर्पूरा, गरु, धूप, वास, कु,
शमांजलिसंयुक्त, स्नात्रचोकीपर, श्रीसंघसंयुक्त, पवित्र,
सुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे, श्रीसंघसमेतः, शुचिः,

पवित्र, शरीर, फूल, कपडा, चंदन, गहणोंसें, सोभायमान, चं
शुचिः, वपु, पुष्प वस्त्र, श्चंदना, भरणा, लंकृतः, चंद
दनका, तिलक, करकै, पुष्पोंकीमालागलेमेंकरकै, शांतिशब्द
न, तिलकं, विधाय, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमु
उंचेस्वरसेंपुकारके, शान्तिकापाणी, शिरपरदेणा, ऐसा
द्घोषयित्वा, शान्तिपानीयं, मस्तकेदातव्य, मिति
जिनराजकेअभिषेकमेंनाचेरत्नमोतीपुष्पवर्षाकरै, गावै, फेर,
नृत्यंतिनृत्यंमणिपुष्पवर्षंसृजंति, गायंति च, मं
मंगलगीतोंकों, स्तोत्रोंको, नामगोत्रोंकों, पढे, मंत्रोकों, कल्याण
गलानि, स्तोत्राणि, गोत्राणि पठंति, मंत्रान्, कल्या
केभजणेवालेनिश्चै, जिनराजकेअभिषेकमें, १, मेंतीर्थंकरकीमाता,
णभाजोहि, जिनाभिषेके, १, अर्हंतित्थयरमाया
शिवादेवी, तुमारेनगरकीवसणेवालीहूं, हमाराकल्याणहो,
शिवादेवी तुह्मनयरनिवासिनी, अह्मशिवं, तु
तुमाराकल्याणहो, अशुभउपशमहुआ, कल्याणहो, कल्याण
ह्मशिवं, असुहोवसमं, शिवंभवतुस्वाहा, १ शिव
हुओसर्वजगत्का, परायाहितकरणेसावधानहुओप्राणीगण,
मस्तुसर्वजगतः, परहितनिरताभवंतुभूतगणाः,
दोष, पाओ, नास, सबजगेसुखी, हुओ, लोकसब,
दोषाः, प्रयान्तु नाशं, सर्वत्रसुखी, भवतु, लोकाः, २,
उपसर्ग[कष्ट], क्षयहोजाताहै, कटतीहै, विघ्नकीवेल, मनहै
उपसर्गाः, क्षयंयान्ति, छिद्यंते, विघ्नवल्लयः, मनः
सोखुसवखतीकोप्राप्तहोताहै, पूजतेहुयेजिनेश्वरकों, ३, इसतरेवडी
प्रसन्नतामेति, पूज्यमानेजिनेश्वरे, ३ इतिबृहच्छा
शांतिसंपूर्ण, ॥
न्तिः समाप्ता, ॥

अथजिनपंजर॥अरिहंतकूंनमोमेंनमताहूं, सिद्धकूं
ओं ह्रीँश्रीँअर्हंअर्हद्भ्योनमोनमः, ओं ह्रीँश्रीँश्रीसिद्धे
नमोंमेंनमताहूं, आचार्यकूंनमोमेंनमताहूं
भ्योनमोनमः ओं ह्रीँश्रीँश्रीआचार्येभ्योनमोनमः, ओं ह्रीँ
उपाध्यायकोंनमोमेंनमताहूं,
श्रीँश्रीउपाध्यायेभ्योनमोनमः, ओं ह्रीँश्रीँश्री
गौतमस्वामीकूंआदिलेकरसबसाधूकोंनमोमेंनमताहूं, १, यह
गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्योनमोनमः १, एष
पांचपदोंकानमस्कार, सबपापोंकानाशकरणेवालाहै, मंगलीक, फेर,
पंचनमस्कारः सर्वपापक्षयंकरः मंगलानां, च,
सबोंका, पहला, होय, मंगल,२ स्वदेशमेंजयपर
सर्वेषां, प्रथमं, भवति मंगलं,२, ओं ह्रीँश्रीँजयवि
देशमेंविजयकारी, ऐसैपूजायोग्यउत्कृष्टआत्माकोंनमस्कार, कमलप्रभाचार्य
जये, अर्हंपरमात्मनेनमः, कमलप्रभसूरींद्रो, भा
कहताहैजिनपंजरकों३ एकाशनउपवासकरकै, तीनोंकाल, जो,
षतेजिनपंजरं,३, एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं, यः
पढे, यह, मनवंछितसब, फलोंकोंवहपावै, निश्चल
पठे, दिदं, मनोभिलषितंसर्वं, फलंसलभते, ध्रुवं,
जमीनपरसोवैशीलपालै, गुस्सा, लालचरहित, देवा
४, भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोध, लोभविवर्जितः, दे
धिदेवकेआगेपवित्रआत्मासें, छमहीनेसेंपावेफलनिश्चल,५, अर्हंत
वताग्रेपवित्रात्मा, षण्मासैर्लभतेध्रुवं,५, अर्हंतं
कोंस्थापनकरोशिरपर, सिद्धकोंनेत्रओरनिलाडपर, आचार्यकान
स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धंचक्षुर्ललाटके, आचार्यंश्रो
केवीचमें, उपाध्यायफेरनाकपर, साधुओंकासमूहमुख,
त्रयोर्मध्ये, उपाध्यायंतुघ्राणके,६ साधुवृन्दंमुख,
केआगे, मनकों, शुद्ध, करकै, फेर, दहिणासूर्यवायाचंद्रस्वरकोंरोकके,
स्याग्रे, मनः, शुद्धं, विधाय, च, सूर्यचंद्रनिरोधेन, सु

पंडितजनसबकामसिद्धकरणे,७, दक्षिणदिशामेंकामदेवकेवैरी, वांये
धीःसर्वार्थसिद्धये,७, दक्षिणेमदनद्वेषी वामपा
पसवाडेरहैजिनराज, अंगकेसांधोंमेंसर्वज्ञ, परमेष्टीनिरुपद्र
र्श्वेस्थितोजिनः, अंगसंधिषुसर्वज्ञः, परमेष्टीशि
वकरता,८, पूर्वमें, श्रीजिनरक्षाकरे, अग्निकोणमेंजितेंद्रिय
वंकरः,८, पूर्वाशां, श्रीजिनोरक्षे, दाग्नेयींविजितें
भगवान्, दक्षिणदिशामेंपरमब्रह्म, नैऋतकूणमेंतीनकालकोंजा
द्रियः, दक्षिणाशांपरंब्रह्म, नैर्ऋतिंचत्रिकालवि
णनेवाले९, पश्चिमदिशामेंजगत्केस्वामी, वायवकूणमेंपरमेश्वर,
त्,९, पश्चिमाशांजगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः,
उत्तरदिशामेंतीर्थंकरसव, ईशानकोणमेंफेरनिरंजन,१०, पाता
उत्तरांतीर्थकृत्सर्वा, मीशानींचनिरंजनः१० पाता
लमेंभगवान्अर्हंत, आकाशमेंपुरुपोत्तम, रोहिणीकोंआदि
लंभगवानर्हं, न्नाकाशंपुरुषोत्तमः, रोहिणीप्रमु
लेकर१६विद्यादेवियों, रक्षाकरोसवकुलकी,११, ऋषभ, मस्तककीर
खादेव्यो, रक्षंतुसकलं,कुलं११, ऋषभो, मस्तकं
क्षाकरो, अजितनाथनेत्रोंकीरक्षाकरो, संभवकानदोनोंकी,
रक्षे, दजितोपिविलोचने, संभवःकर्णयुगलं,
नाककी, फेर, अभिनंदन, होठ, श्रीसुमतीरक्षाकरो
नासिकां, चा, भिनंदनः,१२, ओष्ठौ, श्रीसुमतींरक्षे
दांतोंकोंपद्मप्रभप्रभू, जीभ, सुपार्श्वनाथदेवयह,
त्, दंतान्पद्मप्रभोविभुः, जिव्हां, सुपार्श्वदेवोयं,
तालूकीचंद्रप्रभ, प्रभू, गलेकी, श्रीसुविधिनाथरक्षाकरो
तालुचंद्र, प्रभोविभुः,१३, कंठं, श्रीसुविधीरक्षेत्,
हृदयकीअछेशीतलरक्षाकरो, श्रेयांशभुजादोनोंकी, वासु
हृदयंश्रीसुशीतलः, श्रेयांसोबाहुयुगलं, वासु
पूज्य, हाथदोनोंकी,१४, अंगुलियोंकीविमलरक्षाकरो, अनंत
पूज्य, करद्वयं, १४, अंगुलीर्विमलोरक्षे, दनंतोसौ

यहस्तनदोनोंकीभी, अच्छेधर्मनाथपेटओरहड्डीकी, शांतिनाभिमंड

स्तनावपि, सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभि

लकी,१५, कुंथुगुदाकीरक्षाकरो, अररूओरकम्म

मंडलं,१, श्रीकुंथुर्गुह्यकंरक्षे, दरोरोमकटीत

रकी, मल्लिउरूओरपीठकी, जांघकीफेरमुनिसुव्रत,१६

टं, मल्लिरुरूपृष्टिवंशं, जंघेचमुनिसुव्रतः,१६

पावोंकेअंगुलियोंकीनमिरक्षाकरो, नेमिचरणदोनोंकी, पार्श्व

पादांगुलीर्नमिरक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं, श्रीपा

नाथसबवदनकी, वर्द्धमानज्ञानानंदआत्माकी,१७ जमीन

र्श्वनाथःसर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकः १७, पृथिवी

पाणी, आग, हवा, आकाश, मयीसंसार, रक्षाकरोसव

जल, तेजस्क, वाय्वा, काश, मयंजगत्, रक्षेदशेष

पापोसें, वीतराग, निरंजन, १८, राजद्वारपर, श्मशान

पापेभ्यो, वीतरागो,निरंजनः,१८, राजद्वारे, स्मशा

में, अथवा, युद्धमें, वैरियोंकेसंकटमें, वाघ, चोर, आगसांपादिक, भू

ने, वा, संग्रामे, शत्रुसंकटे, व्याघ्र, चौराग्नि,सर्पादि, भू

तप्रेतभयकेआश्रितपुरुषकूं,१९, अकालमरणप्राप्तहोणेसें, दरिद्ररूप

तप्रेतभयाश्रिते,१९, अकालमरणेप्राप्ते, दारिद्र्या

आपदासेंआश्रितकों, विगरपुत्रके, महादोषमें, मूर्खपणेमें, रोगपीडित,

पत्समाश्रिते, अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे, रोगपीडि

में, २०, डाकण, शाकणके, ग्रसितमें, महाग्रह समूहकेपीडामें,

ते, २०, डाकिनी शाकिनी, ग्रस्ते, महाग्रह, गणार्दिते,

नदीकेउतरते, रस्तेकीविषमतामें, व्यसनरूपआपदामेंस्मरणकरो,२१, प्र,

नद्युत्तारे, ध्ववैषम्यै, व्यसनेचापदिस्मरेत्,२१, प्रा,

भातहीअच्छीतरेउठके, जोस्मरणकरे, जिनपंजरकों, उसकूं, कुछभी,

तरेवसमुत्थाय, यःस्मरे, जिनपंजरं, तस्य, किंचि,

डरनहीं, पावे, सुखसंपदाकों, २२, जिनपंजर,

द्भयंनास्ति, लभते, सुखसंपदं, २२, जिनपंजर,

नाम, यह, जो, स्मरणकरे, हमेंसनितप्रति, कमलकीप्रभाजैसीराज,
नाम्ने, दं, य, स्मरंत्य, नुवासरं, कमलप्रभराजें,
इंद्रता, लक्ष्मी, वह, पावे, मनुष्य, प्रभात, उठके, पढे,
द्र, श्रियं, स, लभते नरः, २३, प्रातः, समुत्थाय, प,
जोक्रियाकाजाणकार, जो, स्तोत्रयह, जिनपंजरनामका,
ठेत्,कृतज्ञो, यः, स्तोत्रमेत, ज्जिनपंजराख्यं, आ,
चाखे, वह, कमलप्रभा[नामकी, लक्ष्मीकों, मनवंछित,
सादये, त्सकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं, मनोवांछि,
पूरणकों, २४, श्रीरुद्रपल्लीनामका, प्रधानखरतरगच्छमें,
त,पूरणाय, २४, श्रीरुद्रपल्लीय, वरेण्यगच्छे,
देवप्रभनामकेआचार्य, पदकमलमेंहंसजेसें, वादीयोंकेइंद्रचूडामणि,
देवप्रभाचार्य, पदाब्जहंसः, वादींद्रचूडामणि,
यहजैनधर्ममें, जीओगुरु, श्रीकमलप्रभनामके,
रेषजैनो, जीयाद्गुरुः, श्रीकमलप्रभाख्यः
२५ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं सम्पूर्णं ॥

अथ ऋषिमण्डलस्तोत्र ॥

आदिअक्षर[अ], अंतअक्षर[ह], इनोंकोंजाणकर, अक्षर[निश्चल]व्यापकेजोरहा,
आद्यं, ताक्षर, संलक्ष, मक्षरव्याप्ययत्स्थितं,
आगकी, झालाकेसमान, अर्धचंद्राकार, विंदीऔररेफकीरेखाँकरकै, युक्त १,
अग्नि, ज्वालासमं, नाद, विंदुरेखा,समन्वितम् १,
आगकीझाला, समान, क्रांतिवाला, मनकेमलकों, जादाकरशुद्धकरता,
अग्निज्वाला, समा, क्रांतं, मनोमल, विशोधकं,
तेजवंत, हृदयकमलमें उसपदकोंनमताहूंवहनिर्मलहै, २, अर्हं,
देदीप्यमानं, हृत्पद्मे, तत्पदंनौमिनिर्मलं, २, अर्हं,
ऐसाअक्षरब्रह्मरूपका, वाचककहणेवालापरमेष्ठहै, सिद्धचक्रयंत्रका,
मित्यक्षरंब्रह्म, वाचकंपरमेष्ठिनः, सिद्धचक्र,
अच्छावहवीजहै, सबतरेसें, अंगीकारकर्त्ताहूं, ३, ओंतेजबीअर्हंत,
स्यसद्बीजं, सर्वतः, प्रणिदध्महे, ३, ओंनमोर्हद्भ्यईशे,

ईश्वरकों, तेजवीजसिद्धोंकोंवेर२नमस्कार, तेजबीजनमस्कारसबआचार्योंकों,
भ्य, **ओंसिद्धेभ्योनमोनमः, ओंनमःसर्वसूरिभ्यः**
उपाध्यायकूं, तेजबीजनमस्कार, ४, तेजबीजनमस्कार, सबसाधुओंकों,
उपाध्यायेभ्य, ओंनमः, ४, ओंनमः, सर्वसाधुभ्यः,
तेजबीजज्ञानकोंवेर२नमस्कार, तेजवीजनमस्कारतत्वकीनिजरवालेकों,
ओंज्ञानेभ्योनमोनमः, ओंनमस्तत्वदृष्टिभ्यः,
कर्मसंचयकोंखालीकरताकोंवेर२नम०, ५, कल्याणकेवास्तेफेरकल्याणहो, यहअर्ह
चारित्रेभ्योनमोनमः, ५, श्रेयसेस्तुश्रियेस्त्वेत, दर्हदा,
तादिपूर्वोक्तआठशुभ, ठिकाणेमेंआठअच्छीतरेस्थापितकियेहुये, न्यारे२ॐह्रींवी
द्यष्टकंशुभं, स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं, पृथग्बीजस,
जादिकोंसेंयुक्त, ६, आदिपदशिखाकीरक्षाकरो, दूसरापदरक्षाकरोफेरमस्तककी,
मन्वितं, ६, आद्यंपदंशिखांरक्षे, त्परंरक्षेतुमस्तकं,
तीसरापदरक्षाकरोनेत्रदोनों, चोथापदरक्षाकरोफेरनाककी,, ७, पांच,
तृतीयंरक्षेन्नेत्रेद्वे, तुर्यंरक्षेचनासिकां, ७, पं
मापदफेरमुखकीरक्षाकरो, छठापदरक्षाकरोगलेकी, नाभिकेअंदर,
चमंतुमुखंरक्षेत्, षष्ठंरक्षेचघंटिकां, नाभ्यंतं,
सातमापदरक्षाकरो, रक्षाकरोपावोंकाअंतआठमा, ८, पहलेप्रणवबीजओं, अंतस
सप्तमंरक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं, ८, पूर्वप्रणवतः शां
हित, संयुक्तरेफ, समुद्र, पांचोंकों, सात, आठ, दश, चार,अंकों,
तः, सरेफो, द्यब्धि, पंचषान्, सप्त, ष्ट, दश, तुर्यांका,
कूं, आश्रित, विंदी, स्वर, अलग, पूज्यनामकाअक्षर
न्, श्रितो, बिंदु, स्वरान्, पृथक्,९, पूज्यनामाक्षरा
आदिक, पांचों, ज्ञान, दर्शन चारित्रकों, नमस्कार, अंदर
आद्याः, पंचातो, ज्ञान, दर्शन, चारित्रेभ्यो, नमो, म
ह्रीं, संयुक्तअंतमें, [ह]अच्छीतरेसेंशोभित,१०,
ध्ये, ह्रीं, सांत, हसमलंकृतः,१० ओं, ह्रां, ह्रीं, ह्रूं,

हं,हें,हैं,हौं,हः, अ,सि,आ,उ,सा,ज्ञान,दर्शन,चारि

जंबुवृक्षकाधारणेवालाद्वीप, क्षार[लवण]समुद्रसें,

त्रेभ्यो,नमः, जंबुवृक्षधरोद्वीपः, क्षारोदधिसमा,

घेराहुआ, अर्हदादिकअष्टकसेंआठ, काष्टाधिष्टसैंशोभित,

वृतः, अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्टाधिष्टैरलंकृतः,

उसकेअंदरप्राप्तहुआमेरू, शिखरलाखोंसैंशोभायमान,

११तन्मध्यसंगतोमेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः,

उचेमेंऊंचे,तर२योगसेंतारे, ताराओंकेमंडलसें,मंडित, १२,

उच्चैरुच्चै,स्तरस्तार, स्तारामंडल,मंडितः, १२,

उसकेऊपर,सकारअंत, बीजअंदरइसकेसब प्राप्त नमन,

तस्योपरि,सकारान्तं, बीजंमध्यास्यसर्वगं, नमा,

करताहूंमूर्तिअर्हंतकी, निलाडमेंरहे,निरंजन, वहअक्ष,

मिबिंबमार्हत्यं, ललाटस्थंनिरंजनं, १३, अक्ष,

य,मलरहित,शांतिरूप, बहुतकरकेजडताकोंदूरकिया, निरेच्छा,निर,

यं,निर्मलं,शांतं, बहुलंजाड्यतोज्झितं, निरीहं,नि,

हंकारी, सारमेंसारअतिशयपणेद्रढ, १४, नहींउद्भट, शुभ,साफ,

रहंकारं, सारंसारतरंघनं, १४, अनुद्धतं, शुभंस्फी,

सतोगुणी, रजोगुणीकहा, तमोगुणीप्राचीनज्ञानवंत, तेजवंत,

तं,सात्विकं, राजसंमतं, तामसंचिरसंवुद्धं, तैजसं,

रातकेसमान, आकारवंत,फेर,आकाररहित,रसयुक्त,रहितरस,

शर्वरीसमं, १४, साकारं,च,निराकारं,सरसं,विरसं,

उत्कृष्ट, उत्कृष्टसेउत्कृष्टदूसरेसेंऊपर, परंपरासैंसर्वोपरि, एकअक्षरह्रीं,

परं, परापरपरातीतं, परंपरपरापरं, १६, एकवर्णं,

सिद्धदोअक्षरफेर, तीनअक्षरआचारी,चारउपाध्याय,पंचाक्षरसर्वसाधू, महाअक्षर(ओं)

द्विवर्णं,च, त्रिवर्णं,तुर्यवर्णकं, पंचवर्णं,महावर्णं,

वहदूसराओरसर्वोपरि, १७, संपूर्ण, कलंकरहित,तुष्ट, सवकामसेंरहित,

सपरंचपरापरं, १७, सकलं, निष्कलं,तुष्टं, निर्वृतंभ्रां,

भ्रांतिसेरहित, निरंजन, आकाररहित, लेपरहित, वीतगयाहैआश्रय,

तिवर्जितं, निरंजनं, निराकारं, निर्लेपं, वीतसंश्रयं,
१८, ऐश्वर्ययुक्तब्रह्मअच्छेज्ञानवंत, तत्ववेत्तासिद्धमहागुरु, ज्योतीस्व,
१८, ईश्वरंब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धंसिद्धंमतंगुरु, ज्योती,
रूप, बडादेव, लोकअलोकके प्रकाशक, १९, अर्हतना,
रूपं, महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं, १९, अर्हदा,
म,फेर,अक्षरअंतका[ह], वहरेफयुक्त,अनुस्वारशोभित, चोथास्वर[ई]
ख्य,स्तु,वर्णांतः, सरेफो,बिंदुमंडितः, तुर्यस्वरसमा,
करकेसंयुक्त, बहुतप्रकार[अर्धचंद्राकारयुक्त, ह्रींइसबीजमेंरहे,
युक्तो, बहुधानादमालितः, २०, अस्मिन्बीजेस्थिता,
सब, ऋषभादिक, जिनोत्तम, रंग, अपणेअपणेकरके, युक्त,
सर्वे, वृषभाद्या, जिनोत्तमाः, वर्णै, र्निजैर्निजैर्युक्ताः,
ध्यानकरणाउहांअच्छीतरेसेंप्राप्तहोकर, नादहैसोचंद्राकार,
ध्यातव्या, स्तत्रसंगताः, २१, नादश्चंद्रसमाकारो,बिं,
बिंदीहैसोनीलकेसमक्रांति, कलाहैसोसूर्यकेसमानअंतयुक्त, सोनेकीकां,
दुनीलसमप्रभः, कलारुणसमासांत, स्वर्णाभः,
तिसबचोतरफ, मस्तकपरसंलीनईकारहै, विशेषपणेनी,
सर्वतोमुखः, २२, शिरसंलीनईकारो, विनीलो,
लरंगसेंकहा, रंगकेअनुसारसंलीन, तीर्थंकरकेमंड,
वर्णतःस्मृतः, वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंड,
लकूंस्तवताहूं, २३, चंद्राप्रभुसुविधिनाथ, अर्धचंद्राकारस्थिति,
लंस्तुमः, २३, चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमा,
केआश्रित, बिंदीमेंअंदरप्राप्तहुयेनेमि, मुनिसुव्रतकेवलियोंमेप्रधान,
श्रितौ, बिंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौजिनसत्तमौ,
२४, पद्मप्रभऔरवासुपूज्य, कलापदमेंरहेहुये,
२४, पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ,
मस्तकपरजो,ई,उसमेंरहेसंलीन, पार्श्वमल्लिनाथजिनेश्वर, २५,
सिरिईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ, २५,
बाकीतीर्थंकर सब, ह,ओरर,केठिकाणेसमस्तपणेजुडेहुये,

शेषातीर्थकृतःसर्वे, हरस्थानेनियोजिताः,मा,

मायाबीजअक्षरमेंप्राप्त, चोवीसोंहीअर्हंत, २६, गयाहै,

याबीजाक्षरंप्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हताम्, २६, गत्त,

रागद्वेषमोह, सर्वपापसेंविशेषपणेरहित, हमेससर्व,

रागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः, सर्वदासर्व,

कालमें, वहहुओकेवलियोंमैंउत्तम, २७, देवऔरदेवतोंकाजो,

कालेषु, तेभवंतुजिनोत्तमाः, २७, देवदेवस्ययच्च,

चक्र, उसचक्रकी, जोकांति[तेजी] उसकरकेढकाहुआसबअंग,नहीं,

क्रं, तस्यचक्रस्य,याविभा, तयाच्छादितसर्वांङ्गं,मा,

मुझेंमारेगीफेरडाकनी, २८, देवओरदेवतोंकाचक्र०, नहींमुझेंमारे,

माहिनस्तुडाकनी, २८, देवदेवस्यय०, मामाहि,

नस्तुराकिनी, २९, देवदे०, मामाहिनस्तुलाकिनी, ३०, देवदे०, मामाहिनस्तुकाकिनी, ३१, देवदे०, मामा हिनस्तु शाकिनी, ३२, देवदे०, मामाहिनस्तुहाकिनी, ३३, देवदे०, मामाहिनस्तु याकिनी, ३४, देवदे०, मामाहि संतुपर्णगा, ३५, देवदे०, मामाहिनस्तु हस्तिनः, ३६, देवदे०, मामाहि संतुराक्षसा, ३७, देवदे०, मामाहि संतुवह्नयः, ३८, देवदे०, मामाहिसंतु सिंहका, ३९, देवदे०, मामाहिसंतु दुर्जनाः, ४०, देवदे०, मामाहिसंतुभूमिपाः, ४१,

श्रीगौतमगुरूकाजोभेषहै, उसकीजोपृथ्वीमेंऋद्धि[चमत्कार]है,

श्रीगोतमस्ययामुद्रा, तस्यायाभुविलब्धयः,ता,

उसकरकेप्रगटहुईजोजोति, मेंसबनिधानोंकाईश्वरहोगया, ४२, पाता,

भिरभ्युद्यतःज्योति, रर्हसर्वनिधीश्वरः, ४२, पाता,

लकेवसणेवालेदेव, देवसबजमीनपरवसणेवाले, स्वर्गकेवसणेवाले,

लवासिनोदेवा, देवाभूपीठवासिनः, स्ववासिनो,

भीजोदेवसब, सबरक्षाक्रोफेरमुझेंइसजगे, ४३, जोअवधिलब्धिधारी,

पियेदेवा, सर्वेरक्षंतुमामितः, ४३, येचधिलब्धयो

जोफेर,परमावधिलब्धिधारी, वहसर्वमुनीराजदेव, मुझें,

येतु,परमावधिलब्धयः, तेसर्वेमुनयोदेवाः, मांसं,

अच्छीतररेक्षाकरोहमेस, ४४, दुष्टमनुष्यभूतवेताल, पिशाच,
रक्षंतुसर्वदा, ४४, दुर्जनाभूतवेताला, पिशाचा,
मुगलतैसैं, वहसवशांतिपाओ, देवाधिदेवकेप्रभाव,
मुद्गलास्तथा, तेसर्वेप्युपशाम्यंतु, देवदेवप्रभाव,
सें, ४५, प्रणवमायाशोभाफेर,धैर्य,लक्ष्मी, गौरी,चंडिका,सरस्व,
तः, ४५, ओंह्रींश्रींश्च,धृतिर्लक्ष्मी, गौरी,चंडी,सरस्व,
१ सांप २ अंगार ३ राजा,
ती, जया,अंबा,विजया, नित्या, क्लिन्ना, अजिता,मदद्रवा,
ती, जयांबा,विजया, नित्या, क्लिन्ना, जिता,मदद्र,
४६, कामांगा, कामबाणा, फेर, सानंदा, आनंदमालिनी,
वा, ४६, कामांगा, कामबाणा, च, सानंदा, नंदमालिनी,
माया, मायाविनी,रौद्री, कला,काली, कलिप्रिया,
माया, मायाविनी,रौद्री, कला,काली, कलिप्रि,
४७, यह, सब,महादेवियों, है,जो,जगत्,तीनमें,
या, ४७, एता, सर्वा,महादेव्यो, वर्त्तंते,या,जगत्रये,
मुझें,सब, देओ, तेजी, यश, धीरज,बुद्धि, ४८, तेज,
मह्यंसर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं, कीर्त्तिं, धृतिं,मतिं, ४८, दि,
वंत, छिपाणेयोज्ञअच्छादुःखसेमिलनेवाला, श्रीऋषिमंडलनामकास्तोत्र,
व्यो, गोप्यःसुदुःप्राप्यः, श्रीऋषिमंडलस्तवः,भा,
कहातीर्थोंकेस्वामीनें, जगत्रक्षाकेवास्तेनिष्पाप, ४९, युद्धमें,
षितस्तीर्थनाथेन, जगत्राणकृतेनघः, ४९, रणे,
राजद्वारमेंअग्निमें, जलमेंदुष्टरस्तेमेंहाथीसिंहमें, मसाणोंमें,वन,
राजकुलेवह्नौ, जलेदुर्गेगजेहरौ, श्मशानेविपि,
डरावणेमें, स्मरणकरणेसेंरक्षाकरताहैमनुष्योंकी, ५०, राज्यभ्रष्टकूंनिजरा,
नेघोरे, स्मृतौरक्षतिमानवं, ५०, राज्यभ्रष्टानिजं,
ज्य, पदभ्रष्टकूंनिजपद, लक्ष्मीभ्रष्टकोंनिजलक्ष्मी,
राज्यं, पदभ्रष्टानिजंपदं, लक्ष्मीभ्रष्टानिजांलक्ष्मीं,
पाताहैइसमेंनहींसंकाहै, ५१, स्त्रीकाअर्थीपाताहैस्त्री,

प्राप्नुवंतिनसंशयः, ५१, भार्यार्थीलभतेभार्यां,
पुत्रकाअर्थीपाताहैपुत्र, धनकाअर्थीपाताहैधन, मनुष्यस्म,
पुत्रार्थीलभतेसुतं, वित्तार्थीलभतेवित्तं, नरःस्म,
रणमात्रसें, ५२, सोना,रूपा,कपडा,कांसेपर, लिखकर,
रणमात्रतः, ५२, स्वर्णे,रूप्ये,पटे,कांस्ये, लिखित्वा,
जोफेरपूजै, तिनोंकेआठमहासिद्धि, घरमेंरहै,
यस्तुपूजयेत्, तस्यैवाष्टमहासिद्धि, गृहेवसति,
हमेस, ५३, भोजपत्रपरलिखकरयह, गलेके, मस्तकके,
शाश्वती, ५३, भूर्जपत्रेलिखित्वेदं, गलके, मूर्ध्नि,
वा भुजाके, धारणकियाहुआहमेसतेजवंत, सवडरकानासकरणेवा,
वाभुजे, धारितंसर्वदादिव्यं, सर्वभीतिविनाश,
ला, ५४, भूतप्रेतग्रहयक्ष, पिशाच, मुगल, मलकरकै,
कं, ५४, भूतैःप्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचै, र्मुद्गलै, र्मलैः,
वायुपित्तकफकेउत्पातसें, छूटताहैनहींइहांसंका, ५५,
वातपित्तकफोद्रेकैः, मुच्यतेनात्रसंशयः, ५५,
पृथ्वीपातालस्वर्गतीनोंपीठके, विद्यमानजोशाश्वततीर्थंकर,
भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठ, वर्त्तिनःशाश्वताजिनाः,
उनोंकूं,स्तवनेसें,वांदनेसें,देखणेसें, जोफलवहफलसिद्धांतमें, ५६,
तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, यत्फलंतत्फलंश्रुतौ, ५६,
यहछिपानेयोग्यवडास्तोत्र, नहींदेणाजिसकिसीकों,
एतत्गोप्यंमहास्तोत्रं, नदेयंयस्यकस्यचित्,
मिथ्यात्ववासीकों देणेसें, वालहत्या पांव२में, ५७,
मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्यापदेपदे, ५७,
आयंबिलादिकतपकरकै, पूजकरके जिनराजकीश्रेणी,
आचाम्लादितपःकृत्वा, पूजयित्वाजिनावलीं,
आठ, हजारएक जाप, करणांवह सिद्धिकेवास्ते,
अष्टसाहस्त्रिकोजापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे,
५८, एकसोआठ,आगेप्रातसमय, जोपढेदिन२प्रति, उनोंकेनहीं,

५८, शतमष्टोत्तरंप्रातं, येंपठंतिदिनेदिने, तेषांनं,
होयव्याधिशरीरमें, आवेनहींफेरआपदा, ५९; आठमहीने,
व्याधयोदेहे, प्रभवंतिनचापदः, ५९, अष्टमासा,
कीअवधितक, प्रभातप्रभातफेरजोपढे, स्तोत्रयह,
वधिंयावत्, प्रातःप्रातस्तुयःपठेत्, स्तोत्रमेतन्,
वडातेजवंत, जिनराजकीमूर्त्तिवहदेखे, ६०, देखनेसेंसच,
महातेजो, जिनबिंबंसपश्यति, ६०, दृष्टेसत्या,
अर्हत्काबिंब, होय,सप्तमस्थानमें,निश्चल, पदकोंपावै, शुद्धआ,
र्हतेबिंबे, भवेत्सप्तमकेध्रुवं, पदंप्राप्नोति, शुद्धा,
त्मा, परमआनंदसेंहर्षित, ६१, तीनलोककावंदनीकहोयध्या,
त्मा, परमानंदनंदितः ६१, विश्ववंद्योभवेध्या,
णेवाला, मुक्तिपदकोंफेरभोगे, जायकरकेठिकाणेसर्वोपरि,
ता, कल्याणानिचसोश्नुते, गत्वास्थानंपरंसो,
वहभी, पीछाफेरनहींपलटे, ६२, यहस्तोत्र, वडास्तोत्र,
पि, भूयस्तुननिवर्त्तते, ६२, इदंस्तोत्रं, महास्तो,
स्तुतियोंमेंउत्तम उत्कृष्ट, पढणेसें, स्मरणकरणेसें, जापसें,
त्रं, स्तुतीनामुत्तमंपरं, पठना, त्स्मरणा, ज्जापात्,
पावेपद, उत्तम, ६३,
लभतेपद, मुत्तमं, ६३, इतिऋषिमंडलस्तोत्रं,

तीनजगत्केंगुरूकूं,
अथनवग्रहशांतिस्तोत्रं ॥ जगद्गुरुंनम,
नमस्कारकर, सुणकरसत्गुरूकाकहा, ग्रहोंकीशांतिकहूंगा,
स्कृत्य, श्रुत्वासद्गुरुभाषितम्, ग्रहशांतिंप्रव,
लोकोंकेसुखकेवास्ते, १, जिनेंद्रोंके, खेचर[ग्रह],
क्ष्यामि, लोकानांसुखहेतवे, १, जिनेंद्राः, खेचरा,
जाणना, पूजणा, विधिक्रमसें, पुष्प, चंदन,

ज्ञेयाः, पूजनीया, विधिक्रमात्, पुष्पै, विलेपनै,
धूपसें, मिठाइसें, प्रशन्नताकेवास्ते, २, पद्मप्रभूकासेवक, सूर्यहै,
धूपै, नैवेद्यै, स्तुष्टिहेतवे, २, पद्मप्रभस्य, मार्त्त,
चंद्रचंद्रप्रभूकासेवकहै, वासुपूज्यप्रभूकासेवकमंगलहै,
ड,श्चंद्रश्चंद्रप्रभस्यच, वासुपूज्योभूमिपुत्रो,
बुध, आठजिनेश्वरोंकासेवकहै, ३, विमल, अनंत, धर्म,अर,
बुधो, प्यष्टजिनेश्वराः, ३, विमला, नंत, धर्मारा,
शांति, कुंथु, नमि, तैसें, वर्द्धमान, जिनेंद्रोंके,
शांतिः, कुंथु, नमि, स्तथा, वर्द्धमानो, जिनेंद्राणां,
चरणकमलमें, बुधकोंस्थापना, ४, ऋषभ, अजित, सुपार्श्व,
पादपद्मे, बुधंन्यसेत्, ४, ऋषभा, जित, सुपा,
फेर, अभिनंदन, शीतल, सुमति, शंभव, नाथ,
र्श्वे, श्चाभिनंदन, शीतलौ, सुमति, शंभव, स्वा,
श्रेयांसका, फेर, बृहस्पतिसेवकहै, ४, सुविधनाथका, कहा,
मी, श्रेयांस, श्च, बृहस्पतिः, ४, सुविधेः, कथितः,
शुक्रसेवक, मुनिसुव्रतकासेवकशनिश्चरहै, नेमिनाथकासेवकहोताहै,
शुक्रः, सुव्रतस्यशनैश्चरः, नेमिनाथेभवे,
राहू, केतुश्रीमल्लिपार्श्वनाथकासेवकहै, ६, जन्मलग्न, फेर,
द्राहुः, केतुःश्रीमल्लिपार्श्वयोः, ६, जन्मलग्ने, च,
रासीपरफेर, पीडाकरेजबग्रह, तब, अच्छीतरेपूजना,
राशौच, पीडयंतियदाग्रहाः, तदा, संपूजयेद्धी,
बुद्धिमानोंनें, ग्रहोंसंयुक्तजिनराजोंकों, ७, पुष्पचंदनधूपादिक,
मान्, खेचरैःसहितान्जिनान्, ७, पुष्पगंधादि,
सें, फल, मिठाई, संयुक्त, जेसारंगवैसा, दानकरके,
भिर्धूपैः, फल, नैवद्य, संयुतैः, वर्णसदृश, दानैश्च,
वस्त्रोंकरके, नगदीदक्षणायुक्त, ८, सूर्य, चंद्र, मंगल,

वासोभिर्दक्षिणान्वितैः, ८, आदित्य, सोम, मंगल,
बुध, वृहस्पत, शुक्र, शनैश्वर, राहु, केतु, आदिक,य,
बुध, गुरु, शुक्राः, शनैश्चरो,राहुः, केतु, प्रमुखा,खे,
ह, जिनपतीके, सन्मुख, रहो, ९, जिनराजकानामक,
टा, जिनपति, पुरतो, वतिष्ठंतु, ९, जिननामकृतो,
रकेउच्चार, देशनक्षत्र, रंगसें, स्तवना,फेर,पूजनेसैं,भक्ती,
च्चारा, देशनक्षत्र, वर्णकैः, स्तुता,श्च,पूजिता,भ-
सें, ग्रह, होय, सुखवहणेवाले, १०, जिनेश्वरोंके, आगे,
क्त्या, ग्रहाः, संतु, सुखावहाः, १०, जिनाना, मग्रतः,
खडारहके, ग्रहोंके, सुखके, कारण, नमस्कार, सो,वख्त भक्ती,
स्थित्वा, ग्रहाणां, सुख, हेतवे, नमस्कार, शतं, भ,
सें, जपनाआठआगेमनुष्योंनें, ११, भद्रबाहुस्वामीकहतेहुयेयह,
क्त्या, जपेदष्टोत्तरंनरः, ११, भद्रबाहुरुवाचेदं,
पांचमें, श्रुतकेवली, विद्याप्रवाद, पूर्वसें, ग्रह,
पंचम, श्रुतकेवली, विद्याप्रवादतः, पूर्वाद्, ग्र,
शांतिकीविधि, कही, १२,
हशांतिविधि, मंतः, १२, इतिनवग्रहशांतिस्तोत्रं,

अथ दशपच्चक्खाण ॥

उग्गएसूरे, नमुक्कारसहियं, पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, वोसिरामि, १, आगार, २,

पोरसिं, मुंठसी, पच्चक्खामि, उग्गएसूरे, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अणत्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि, विगयंपच्चक्खामि०, आगार, ६, इसीतरे साढपोरसिंक पच्चखाणहोताहै, २,

सूरेउग्गए, पुरिमड्ढं, अवड्ढंवा, पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, मह०, सव्व०, विगइओ इत्यादि, आगार ७, ३,

पोरसिं, साढपोरसिंवा, पच्चक्खाइ, उग्गएसूरे, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, एकासणं, विआसणं, वा पच्चक्खाइ, दुविहं, तिविहं, पिआहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, मह०, सव्व०, देसावगासियं, इत्यादि, आगार ८, ४,

पोरसिं, साढपोरसिं, वापच्चक्खाइ, उग्गएसूरे चउविहंपिआहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, एकासणं, एकलठाणं, पच्चखाइ, दुविहं, तिविहं, चउविहंपिआहारं, अस०, खा०, सा०, अण्ण०, सह०, सागारि आगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, मह०, सव्व०, देसावगासियं०, आगार ७,

पोरसिं, साढपोरसिं, वा पच्चक्खाइ, उग्गएसूरे, चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, आयं बिलं पच्चक्खाइ, अण्ण०, सह०, लेवालेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उखित्तविवेगेणं, पारि०, मह०, सव्व०, एकासणं, पच्चक्खाइ, तिविहंपिआहारं, असणं, खाइमं,साइमं अण्ण०, सह०, सागा०, आउट्टणपसारेणं, गुरुअ०, पारिट्ठा०, मह०, सव्व०, वोसिरामि, आगार, ८ ।

पोरसिं, साढपोरसिंवा, पच्चक्खाइ, उग्गएसूरे, चउविहंपिआहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, निविगइयंपच्चक्खामि, अण्ण० सह०। लेवा०, गिंह०, उखि०, पडुच्चमखिएणं, पारि०, मह०, सव्व०, एकासणं, पच्चक्खाइ; तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, सागारि०, आउट्ट०,

गुरु०, पारि०, मह०, सव्व०, देसावगासियंभोगंपरिभोगंवा, पच्चक्खामि, अण्ण०, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरामि, इति नीवीपच्चक्खाण, आगार, ९,

सूरेउग्गए अब्भत्तठं पच्चक्खामि, चउव्विहंपिआहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरामि, इति चउव्विहार उपवासपच्चक्खाण, ९,

सूरेउग्गए, अब्भत्तठं, पच्चक्खामि, तिविहंपिआहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पाणहार पोरसिं, साढपोरसिं, पुरमड्ढं, अवड्ढंवा, पच्चक्खाइ, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसामोहेणं०, साहु०, सव्व०, वोसरामि, इतितिविहारउपवास पच्चक्खाण,

पोरसिं साढपोरसिं, पुरमड्ढं, अवड्ढंवा, पच्चक्खामि, उग्गएसूरे चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, पच्छ०, दिसा०, साहु०, सव्व०, एकासणं, एगठाणं, दत्तियं, पच्चक्खामि, तिविहं, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, सागा०, गुरु०, मह०, सव्व०, विगइयोपच्चखामि०, देसावगासियं इत्यादि, इतिदत्तिपच्चक्खाण, आगार ९,

दिवसचरिमं, पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्ण०, सह०, महत्त०, सव्व०, वोसिरइ, इतिरात्रिचोविहारपच्चक्खाण, ॥

दिवसचरिमं, पच्चक्खामि, दुविहंपि, आहारं, असणं, खाइमं, अण्ण०, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरामि, इतिरात्रिदुविहारपच्चक्खाण,

पाणहारदिवसचरिमं, पच्चक्खामि, अन्न०, सह०, मह०, सव्व, वोसिरामि, इतिपाणहार पच्चक्खाण, ॥

भवचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहंपि, चउविहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न०, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरइ, इति अंतसमय पच्चक्खाण, ॥

तेसें, गंठिसहि, मुट्ठिसहि, अंगुट्ठसहि, प्रमुख, अभिग्रह, पच्चक्खाणकेभी, यहचार आगार, अन्न० सह०, मह०, सव्व०, वोसिरइ,

पांचमाचोलपट्टागारेणं, साधूकेहोताहै, इतिअभिग्रहपच्चक्खाण,

साधुपच्चक्खाणकरे, तब देसावगासीनहींपच्चखे, ओरतिविहार, उपवासमें, आंबिलमें, नीवीमें, एकासणप्रमुखमें, पाणस्सका, छआगारपच्चक्खे, सोदिखातेहैं, पाणस्सलेवाडेणवा, अलेवाडेणवा, अछेणवा, बहुलेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा, वोसिरइ,

---

अथ आगारसंख्या।

दो, निश्चै, नावकारसीमें, आगार, छव, होतेहैं, पोरसीमें,
दो, चेव, नमोकारो, आगारा, छच, हुंति, पोरसि,
सात, पुरमार्द्धमें, एकासणेमें, आठ,
ए, सत्तेवय, पुरमड्डे, एगासणंमि, अट्ठेव, १,
सात, एकठाणेमें, आठ, आयंबिलमें,
सत्ते, गट्ठाणस्सउ, अट्ठेवय, आयंबिलंम्मि;
आगार, पांच, उपवासमें, छपाणाहारमें, दिवसचरमभ-
आगारा, पंचेव, अब्भत्तट्ठे, छपाणे, चरमचत्ता
वचरमचार, २, पांचचार, अभिग्रहमें, निवीमें, आठनव
रि, २, पंचचउरो, अभिग्गहे, निव्वीए, अट्ठन
आगार, अल्पावरणमें, पांच, होय, वाकी
वय, आगारा, अप्पावरणे, पंचउ, हवंति, से
कोंमें, च्यार, ४,
सेसु, चत्तारि, ४,

अथ सोगनदिलाणेका पच्चक्खाण।

धारणा प्रमाण, पच्चक्खाई अरिहंत सख्खियं, सिद्धसख्खियं, साहुसख्खियं, देवसख्खियं, अप्पसख्खियं, सह०, मह०, सव्व०, वोसिरामि,

---

अथ पच्चक्खाण पारण।

नवकारसी, पोरसी, प्रमुख, पच्चक्खाण, फासियं, पालियं, पूरियं, तीरियं कीट्टियं, आराहियं, जंचनआराहियं, तस्समिच्छामि दुक्कडं, इति,

---

अथ नवग्रहमंत्रेण जिनेंद्र पूजा।

पद्मप्रभुजिनेंद्रका, नामउच्चारणसें सूर्य, शांति
पद्मप्रभजिनेंद्रस्य, नामोच्चारेण भास्करः, शांतिं

तुष्टि, फेर, पुष्टि, फेर, रक्षा कर, २, कल्याणकों,
तुष्टिं, च, पुष्टिं, च, रक्षां, कुरु, २, श्रियम्, १, इतिसूर्य
चंद्राप्रभु, जिनइंद्रका, नामसें, तारागणाधिप [चंद्रमा],
पूजा, चन्द्रप्रभ, जिनेन्द्रस्य, नाम्ना, तारागणाधिप,
प्रशन्न हुओ, शांति, फेर, रक्षा, करो, २, जय, निश्चल;
प्रसन्नोभव, शांतिं, च, रक्षां, कुरु, जयं, ध्रुवम्, २,
हमेस, वासु, पूज्यका, नाम
इति श्रीचन्द्रपूजा, सर्वदा, वासु, पूज्यस्य, ना
सें, शांति, जय, कल्याण, रक्षा, करो, पृथ्वीपुत्र[मंगल] अ
म्ना, शांतिं, जय, श्रियं, रक्षां, कुरु, धरासूनो, अ
शुभभी, शुभहुओ, ३, विमल,
शुभोपि, शुभोभव, ३, इति भौमपूजा, विमला,
अनंत, धर्म, अर, शांति, कुंथु, नमि, तैसें, महावीर,
नंत, धर्मा, राः शांतिं, कुंथु, नमि, स्तथा, महावीर,
फेर, उनोंकेनामसें, शुभ, हुओ, हमेस, बुध,
श्च, तन्नाम्ना, शुभो, भूयाः, सदा, बुधः, ४, इति
ऋषभ, अजित, सुपार्श्व, फेर, अभि
श्रीबुधपूजा, ऋषभा, जित, सुपार्श्वा, श्चा, भि
नंदन, शीतल, सुमति, संभव, नाथ, श्रेयांस,
नंदन, शीतलौ, सुमतिः, संभवः, स्वामी, श्रेयांस,
फेर, जिनोत्तम, इन, तीर्थंकरोंके, नामसें, पूजनीक,
श्च, जिनोत्तमः ९, एतत्तीर्थंकृतां, नाम्ना, पूज्यो,
शुभ[गुरु], शुभ हुओ, शांति, तुष्टि, फेर, पुष्टि, फेर, करो, देव
शुभः, शुभोभव, शांतिं, तुष्टिं, च, पुष्टिं, च, कुरु, दे
तोंकासमूह पूजेभये, सुविधि
वगणार्चित, ६, इति श्रीगुरुपूजा, पुष्प
नाथ, जिनइंद्रका, नामसें, दैत्यगणसें पूजित, प्रशन्न
दंत, जिनेन्द्रस्य, नाम्ना, दैत्यगणार्चित, प्रस

हुओ, शांति, फेर, रक्षा, करो, २, कल्याणकों,
न्नोभव, शांतिं, च, रक्षा, कुरु कुरु, श्रियम्, ७,
श्रीमुनिसुव्रत जिनइंद्रका,
इति श्रीशुक्रपूजा, श्रीसुव्रतजिनेन्द्रस्य,
नामसे, सूर्यपुत्र[शनैश्वर], प्रशन्न हुओ, शांति, फेर,
नाम्ना, सूर्यांगसंभव, प्रसन्नोभव, शांतिं, च,
रक्षा करो, २, कल्याणकों, ८,
रक्षां कुरु कुरु, २, श्रियम्, ८, इति श्रीशनैश्च
श्रीनेमिनाथ तीर्थपतीका, नामसें,
रपूजा, श्रीनेमिनाथतीर्थेशस्य नामतः, सिं
राहु, प्रशन्न हुओ, शांति, फेर, रक्षाकरो,
हिकासुतः, प्रसन्नोभव, शांतिं, च, रक्षाकुरु,
करो, कल्याणको, ९, राहुके
कुरु, श्रियम्, ९, इति श्रीराहुपूजा, राहोः
सातमें राशीपर रहा, आकारसें, दश्यसंवर[धजा] श्रीमल्लि
सप्तमराशिस्था, कारेण, दश्यसंवरे, श्रीमल्लि
पार्श्वका नामसें, केतु, शांति, जयलक्ष्मीकों, १०,
पार्श्वयोर्नाम्ना, केतो, शांतिं, जयंश्रियम्, १०,
एसा कहकर, अपणे २ रंग,
इति श्रीकेतुपूजा, इतिभणित्वा, स्वस्व, वर्ण,
कुशुमांजलि, डालणी, जिन ग्रहकी पूजा करणी, उससें, स
कुसुमांजलि, क्षेपः, जिनग्रह पूजाकार्या, तेन स
व पीडाकी, शांति होय, अब, सबका, फेर,
र्वं पीडायाः, शांतिर्भवति, ॥ अथ, सर्वेषां, वा
ग्रहोंका, अेकदिन,फेर, पीडाकी, यहविधिहै, नवको
ग्रहाणा, मेकदा, पीडाया, मयंविधिः, नवको
ठे, लिखना, गोल, चोरस, ग्रह, उसजगेस्था
ष्टक, मालेख्यं, मंडलं, चतुरस्रकम्, ग्रहा, स्तत्रप्र

पनकरना, अवकहाजाताहै, क्रमकरके फेर, ११, वीचमें, निश्चे,सू
तिष्ठाप्या, वक्ष्यमाण, क्रमेणतु, ११, मध्ये, हि,भा,
र्य, स्थापनकरणा, पूर्व, दक्षणसें, चंद्रमा, दक्षणमें,
स्कर:,स्थाप्य:, पूर्वं, दक्षिणत:, शशी, दक्षिणस्यां,
मंगल, बुध, पूर्व,उत्तरमें, फेर, १२, उत्तरमें,
धरासूनु, बुध:, पूर्वो,त्तरेण, च, १२, उत्तरस्यां,
बृहस्पति, पूर्वदिशामें, शुक्र, पश्चिममें,
सुराचार्य:, पूर्वस्यां, भृगुनंदन:, पश्चिमायां,
शनैश्चरकों, स्थापना, राहुदक्षणपश्चिमकेवीचमैं, १३,
शनि:, स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे, १३,
पश्चिमउत्तरके,बीच, केतु, अैसैं, स्थापनकरना, क्रमसें, ग्रहो
पश्चिमोत्तरत:, केतु, रितिस्थाप्या:, क्रमाद्, ग्र
कूं, पट्टेपरवाथालीमें, अग्निकोणमें, ईशानकोणमें,फेर, हमेस,
हा:, पट्टेस्थाले,थ वा,ग्नेय्यां, ईशान्यां, तु, सदा,
बुधकों,
बुधै:, २ उँआदित्यसोममंगल, बुध गुरु शुक्रा:
शनैश्चरो राहु, केतुप्रमुखा: खेटा:, जिनपतिपु

अेसा पढकर, पांचरंगकी, कुशमांजली,
रतोवतिष्ठंतु, १५, इतिभणित्वा, पंचवर्ण, कुसुमां
डालना,फेर, जिनराजकीपूजाफेरकरणी, १६, इसतरेसेंजै
जलिक्षेप,श्च, जिनपूजाचकार्या, १६, एवंयथा
सैं,नामलेकियाअभिषेकसें, विलेपनसें, धूप, पूजनसें, फेर, फ
नामकृताभिषेकै, रालेपनै,धूपन, पूजनै, श्च, फ
लसें,फेर, नैवद्य, अच्छेजिनराजोंके, नामसें, ग्रहोंकेइंद्र, वरकेदे
लै, श्च, नैवेद्य, वरैर्जिनानां, नाम्ना, ग्रहेन्द्रा, वरदा
णेवालेहुओ, १७, श्वेतांवरसाधूकोंवस्त्रकाभोजनकादानदेणा, महोच्छव
भवंतु, १७, साधुभ्योदीयतेदानं, महोत्साहो

जिनमंदिरमेंकराणा, चतुर्विधसंगका, आदरसेंपूजनकर
जिनालये, चतुर्विधस्यसंघस्य, बहुमानेनपू
णा, १८,
जनम्, १८, इतिपूजाविधिः,
किस, अरिष्ट ग्रहमें, कोनसें जिनराजकी, किस, तरे, पूजा
कस्मिन्, रिष्ट ग्रहे, कस्य जिनस्य, कया, रीत्या, पूजा
करणी, वह, कहतेहैं, सूर्यकीपीडामें, लालपुष्पोंसें,
कार्यः, तदा, ख्याति, रविपीडायां, रक्तपुष्पैः,
श्रीपद्मप्रभकी पूजा करणी,
श्रीपद्मप्रभपूजाकार्या, ओंह्रीं नमोसिद्धाणं,
तिसका, आठऊपर सो, जाप करणा, चंद्रमाकीपीडामें,
तस्य, अष्टोत्तरशत, जपःकार्यः, चंद्रपीडायां,
चंदनमिलाकर, सेवतीपुष्पसें, श्रीचंद्राप्रभुकी, पूजाकरणी,
चंदन, सेवंतपुष्पैः, श्रीचंद्रप्रभ, पूजाकार्या,
तिसका, आठऊपर सो, जा
ॐह्रीं नमो आयरिआणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, ज
प करणा, मंगलकीपीडामें, केसरसें, फेर, लालपुष्पों
पःकार्यः, भौमपीडायां, कुंकुमेन च, रक्तपु
सें, श्रीवासुपूज्यस्वामीकी, पूजा करणी,
ष्पैः, श्रीवासुपूज्य, पूजाविधेया, ओंह्रीं नमो
तिसका, आठऊपर सो, जाप करणा, बुध
सिद्धाणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपःकार्यः, बुध
कीपीडामें, दूधसें, स्नान, मिठाइ, फलआदिसें, श्रीशांति
पीडायां दुग्ध, स्नान, नैवेद्य, फलादितः, श्रीशां
नाथकी, पूजा, करणी,
तिनाथ, पूजा, कर्त्तव्या, ओंह्रीं नमो आयरि
तिसका, आठऊपर सो, जाप, करणा, बृहस्प

याणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः, गुरु
तिकीपीडामें, दही, भोजन, जंबीरादिक, फलकरके फेर,
पीडायां, दधि, भोजन, जंबीरादि, फलेन, च,
चंदनादिक, विलेपनकरके, श्रीऋषभदेवजीकी पूजा,
चंदनादि, विलेपनेन, श्रीआदिनाथपूजा,
करणी, तिसका
करणीया, ओंह्रीं नमो आयरिआणं, तस्य,
आठऊपर सो, जाप, करणा, शुक्रकीपीडामें,
अष्टोत्तरशत, जपः, कर्त्तव्यः, शुक्रपीडायां, श्री
सपेतपुष्प, चंदनादिकरके, श्रीसुविधनाथकी, पूजाकर
श्वेतपुष्पै, श्चंदनादिना, श्रीसुविधिनाथ, पूजाका
णी, मंदिरमेंघीकादानजैनपंडितकोंचांदीकादान,
र्या, चैत्येघृतदानंकार्यं, ओंह्रीं नमोअरिहंता
तिनोंका आठऊपर सौ, जाप, करना, शनैश्चरकी
णं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः, शनैश्चर
पीडामें, नीलपुष्पसें, श्रीमुनिसुव्रतस्वामीकीपूजा क
पीडायां, नीलपुष्पैः, श्रीमुनिसुव्रतपूजा का
रणी, तेलसेंस्नान, ओर दान, करना,
र्या, तैलस्नान, दाने, कर्त्तव्ये, ओंह्रीं नमोलोए
तिनोंका, आठऊपर सौ, जाप, करणा,
सव्वसाहूणं, तस्य, अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः,
राहुकीपीडामें, नीलपुष्पोंसें, नेमिनाथजीकी पूजाक
राहुपीडायां, नीलपुष्पैः, श्रीनेमिनाथ पूजाकर
रणी, तिनोंका
णीया, ओंह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं, तस्य
आठऊपर सौ, जाप, करनां, केतुकीपीडामें, अनार
अष्टोत्तरशत, जपः, कार्यः, केतु पीडायां, दाडिमा

आदिकेपुष्पोंसें, श्रीपार्श्वनाथजीकीपूजाकरणी,

दिपुष्पैः, श्रीपार्श्वनाथपूजा, कार्या, ओंह्रींनमो लोएसव्वसाहूणं,

इसपदकाआठऊपरसौ, जापकरणा,

तस्यअष्टोत्तरशतं, जपःकार्यः, इतिनवग्रहपूजाविधिः,

सर्वग्रहोंकीपीडामें,

सर्वग्रहपीडायां श्रीसूर्य, सोमां, गार, बुध, बृहस्पति, शुक्र,

शनैश्चर, राहु, केतवः, सर्वेग्रहा, ममसानुग्रहाः, भवंतु, स्वाहा, ओंह्रीं

असिआउसायनमः स्वाहा, अस्यमं-

इसमंत्रका, आठऊपर, सौ, जाप, करना, उसकरके,नवग्र-

त्रस्य, अष्टोत्तर, शतं, जपः, कार्यः, तेन, नवग्रह,

होंकी, तकलीपकीशांतिहोय,

पीडोपशांतिः स्यात्, इतिनवग्रहपूजाप्रकारः,

अथ दूजचैत्यवंदन.

अभिनंदन अर जिनवरू, जनमदूजदिनलीधो, सुमतिजिनचवियावली, शीतलकारजसीधो, १ वासुपूज्यकेवल लह्यो, दूजदिवस सुखकार, इम अनंत चोवीसिये, अनंत कल्याणकसार २ दुविध ध्यान तज दो भजोए, धर्मशुक्ल उरधार, धर्मशीलपद कुशल निधि, प्रगटे गुण ऋद्धिसार, ३ इति दूज चैत्यवंदन, अथ पंचमीचैत्यवंदन, वीरजिनंद महिमा करै, सुदि पंचम केरी, ज्ञानआराहोइनदिने, लहो शिवपद सेरी, १ प्रथम ज्ञान पीछे क्रिया, ज्ञान विना पशु जान, देशे आराधक क्रिया, सर्वाराधक ज्ञान, २ ज्ञानतणी महिमा घणीए, भगवती अंग प्रमाण, व्रतविधि धारो गुरुथकी, ऋद्धि सार निर्व्वाण, ३ इति पंचमी चैत्यवंदन, अथ अष्टमीचैत्यवंदन, सुपाश शंभव अष्टमी, चविया सुखरासे, ऋषभ अजित सुमतिनमि, मुनि सुव्रत भासे, १ आठम दिन ये जनमिया, दीक्षा ऋषभजिनंद, अभिनंदन श्रीपार्श्वनमि, अक्षय गति सुखकंद, २ अष्टमि आराधो भविए, अष्टकर्म हुय नास, धर्मशील कुशलातमा, ऋद्धि सार पदवास, ३ इति अष्टमी चैत्यवंदन,

अथ इग्यारस चैत्यवंदन, तीन कल्याण मल्लीतणा, जन्म दीक्षावर ज्ञान, अरजिन पार्श्व जिनेश्वरू, संजम धार्योवान, १ ऋषभ अजित सुमतिनमि, पद्मप्रभु वलिपास, भवभय तोडी आपना, इग्यारस शिववास, २ कर्मभूमि दश क्षेत्रनाए, सार्ध शत कल्याण, इग्यारसव्रतविधि करै, ऋद्धिसार सुखथान, ३ इति इग्यारस चैत्यवंदन,

अथ रोहिणी चैत्यवंदन, रोहिणी तप आराधिये, वासुपूज्य जिनराज, वास चूर्ण चाढो प्रथम, अष्ट द्रव्य सुखसाज, १ त्रिहुंकाले पूजा करो, गुरुगमसें आराध, धूप दीप अंगीरचो, राखो चित्त समाधि २ अशोकतरु आरोपि येए, अशोकनी हुय वृद्धि, रोहिणी तपथी रोहणी, ऋद्धि सार सुखसिद्धि ३ इति रोहणी चैत्यवंदन,

---

अथ श्रीसीमंधर जिन चैत्यवंदन ॥

जय २ त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गतिगामी, जय २ करुणा संत वंधु, भविजन हितकामी, १ जय २ इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी, जय २ अतिशय नंतवंत, अंतर गतिजामी, २ पूर्व विदेह विराजताए, श्रीसीमंधर स्वामि, त्रिकरण शुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम, ३, इति,

---

अथ दूसरा.

वंदूं जिनवर विहरमान, सीमंधर स्वामी, केवल कमलाकांत दांत, करुणा रसधामी, १ कांचनगिरि समदेह, कांति वृषलांछन पाय, चौरासी लख पूर्व आय, सेवै सुरराय, २, पूर्वविदेह विराजताए, पुंडरीकनी भांण, प्रभु द्यो दरशन संपदा, कारण पद कल्याण, ३ इति स्तुति,

---

अथ शत्रुंजय चैत्यवंदन ॥

जय २ शत्रुंजय गिरी, अनंत सिद्धनो थांन, विद्याधर चक्री मुनि, नमिविनमी निर्वाण, १ पुंडरीक प्रद्युम्न संव, नवनारद सीधा, वालीरामादिक भरत, सिवसुख पद लीधा, २ सेलगपंथग पंडुपुत्र, पंचद्रविड नरराज, मुक्त अनंता विमल गिरि, ऋद्धिसार शिव पाज, ३ इति शत्रुंजय स्तुति.

अथ सामायकलेणेकी विधि ॥

पहली उंचे पट्टेपर, पुस्तक, या माला वगेरे की, थापना करणी, श्रावक, अथवा, श्रावकणी, मुखपत्ती, तथा आसण लेकर, शुद्धपवित्र वस्त्र पहरकर, जमीनकूं प्रमार्जकर, आसन सन्मुख विछाकर, वांये हाथमें, मुखपत्ति, मूंके सामनें रख, दहणा हाथ, थापनाचार्यजीके, सामने करके, ३ नवकार गिणे, पीछै खमासमण देके, इच्छाकारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक, मुंहपत्ति पडिलेहूं, इच्छं मुंहपत्तीका, २५ बोल २५ अंगकी कहकै, मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछे खमासण देके, इच्छाकारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक संदिस्साउं, इच्छं, फेर खमासण देके, इच्छा कारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक ठाउं,

इच्छं, असाकह, दोनों हाथ जोड, १, नवकार गुणके, इच्छाकारी, भगवन्, सामायक दंडक, उच्चरावोजी, ३ वेर करेमि भंते कहे, पीछै खमासमण देके, इरियावही कहके, १ लोगस्स, अथवा चार नवकारका, काउसग्ग करे, पारके, प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देके, इच्छाकारेण सं०, वेसणो संदिस्साउं, इच्छं, खमासमण देवे, इच्छाका०, वेसणोठाउं, इच्छं, खमासमण देवै, इच्छाका०, सज्झाय संदिस्साउं, खमासमण देके, इच्छाका०, सझाय करूं, इच्छं, ८ नवकार गिणना, दो घडी ४८ मिन्टतक धर्मध्यान करणा, ॥ इति सामायक लेणेकी विधि ॥

अथ सामायक पारणविधि प्रारंभ ॥

खमासमण देकर, इरियावही, ४ नवकारका, काउसग्ग, प्रगट लोगस्स कहकै, खमासमण देकर, इच्छाका०, भगवन्, सामायक पारणे, मुहपत्ती पडिलेहूं, फेर मुंहपत्ती पडिलेहके, खमासमण देकर, इच्छाका०, भगवन्, सामायक पारूं, यथाशक्ति, फेर खमासण देकर, इच्छाका० सामायक पारिओ, तहत्ति कहकै, दहणा हाथ, पूंजणींपर रखकै, अथवा, आसनपर रखकै, १ नवकार गिणकै, भयवंदसण्ण भद्दोकहे, पीछे दहणा हाथ, थापनाके, सामने करकै, १ नवकार गिणे, इसि सामायक पारण विधी, ॥

अथ देवसी प्रतिक्रमणविधि प्रारंभ ॥

पहली सामायक लेकर, पाणी पीया होय तो, मुंहपत्ती पडिलेहे, ओर आहार किया होय तो, २ वांदणा देवै, दूसरे वांदणेमें, आवसि आए, पाठ, नहीं कहै, पीछे यथा शक्ति पच्चक्खाण करे, खमासमण देकर, इच्छाका०, भगवन्, चैत्यवंदन करूं, जयतिहुअणक है, अथवा ५ गाथा पहलेकी, २ गाथा पीछेकी कहकै, जंकिंचिनामतित्थं, नमोत्थुणं, सव्वाइं ताइं वंदेतक कहके, खडा होकर, अरिहंत चेइयाणं, वंदणव०, एक नवकारका काउसग्गकर, पारके, नमोर्हत्सिद्धा कहके, थुईकी १ गाथा कहै, फेर लोगस्स कहे, सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं, वंदणव०, कहके, १ नवकारका काउसग्ग, पारके, थूईकी दुसरी गाथा कहे, पुक्खरवरदीवड्ढे कहे, सुअस्स भगवओ करेमि काउसग्गं, वंदणवत्ति०, एक नवकारका काउसग्ग करके, पारके, तीसरी गाथा थुईकी कहे, फेर सिद्धाणं बुद्धाणं, वेया वच्चगराणं,० करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ १ नवकारका काउसग्ग, पारके, नमोर्हत्सिद्धाकहके, चोथी गाथा थुईकी कहे, फेर बैठकै नमोत्थुणं कहे, सव्वाइं ताई वंदेतक, फेर खमासमण देके, आचार्यजीनें वंदन, खमासमण देके, उपाध्यायजीने वंदणा, फेर खमासमण देके, सर्व साधूजीने वंदना, खमासमण देके, वर्त्तमान

भट्टारकनें त्रिकाल २ वंदना, इच्छाकारेण संदि०, देवसि पडिक्कमण ठाउं, अेसा कह, दहणा हाथ, पूंजणी अथवा आसणपर धरके, इच्छं, सव्वस्सवि देवसिय, दुच्चिं तिय० कहे, खडा होकर करेमि भंते कहे, फेर इच्छामि ठामि काउसग्गं, जो मे देवसियो, तस्सुत्तरी कहके, आठ नवकारका काउसग्ग करै, पारकै, प्रगट लोगस्स कहणा, बैठके तीसरे, आवश्यककी मुंहपत्ती पडिलेहे, दो वांदणा देवे, फेर खडा होके, इच्छाकारेण संदिस्स०, देवसिअं आलोउं, इच्छं आलोएमि, जो मे देवसिओ, कहे, पीछे सात लाख वगेरे ३ पाठ कहणा, पीछे सव्वस्सवि कहके, दहणा गोडा ऊंचा करके, ३ नवकार ३ करेमि भंते कहके, वंदित्तू सूत्र कहे, पीछे, दो वांदणा देणा, पीछे आयरिय उवज्झाए, कहे, पीछे करमि भंते०, इच्छामि ठामि काउसग्गं, जो मे देवसिओ कहे, तस्स उत्तरी कहके, २ लोगस्सका, अथवा आठ नवकारका, काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके, सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं०, वंदणवत्ति आए०, कहके, १ लोगस्स, अथवा चार नवकारका, काउसग्ग करके, पुक्खर वरदी० कहे, सुयस्स भगवओ, करेमि०, वंदणव०, कहके, १ लोगस्स, अथवा चार नवकारका, काउसग्ग करे, सिद्धाणं बुद्धाणं०, कहके, सुयदेवयाए, करेमि काउसग्गं, अन्नत्थु कहके, एक नवकारका, काउसग्ग करकै, नमोर्हत् सिद्धा कहके, सुवर्णशालनी देयाद्, थुई कहे, पीछे खेत्र देवयाए, करेमि काउसग्गं, कहके १ नवकारका काउसग्ग करे, पीछे नमोर्हत्सिद्धा कहके, यस्यांक्षेत्रं समाश्रित्य०, थुईकी १ गाथा कहके, प्रगट १ नवकार कहके, छठे आवश्यककी मुंहपत्ती पडिलेहे, दो बांदणा देवे, पीछे, सामायक, चउवीसत्थो, वंदण, पडिक्कमणं, काउसग्ग, ओर पच्चक्खाण, ये कहणा, पीछे इच्छामो, अणुसट्ठिं कहके, नमोखमासमणाणं, नमोर्हत्सिद्धाचा०, कहके, पुरुषतो नमोस्तु वर्द्धमानायकी, स्तुति ३ गाथा कहै, ओर, स्त्री, संसारदावाकी ३ गाथा कहै, पीछै नमोत्थुणं, नमोर्हत्सिद्धातक कहके इग्यारे गाथासें, उपरांतका वडा स्तवन कहै पीछे ओंवरकणयकी १ गाथा कहै, पीछै आचार्यजीमिश्र, उपाध्यायजीमिश्र, सर्व्वसाधुजीनें त्रिकाल २ वंदणा, पीछे दहणा हाथ, पूंजणी, अथवा, आसनपर रखके, अढाइज्जेसु दोसु समुद्देसु. रयहरण गुछ, पडिग्गहधारा, अठार सहस्स सीलांगधारा, अक्खिया यार चरित्ता, तेसव्वे, सिरसा, मणसा, मत्थेण वन्दामि, कहे, पीछे देवसी पाय च्छित्तविसोधवा निमित्तं, करेमि काउसग्गं, अन्नत्थु०, चार लोगस्सकाकाउसग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कहै, पीछै क्षुद्रोपद्रव उड्डाहण निमित्तं करेमिकाउसग्गं; ४ लोगस्सकाकाउसग्ग करे, पीछे लोगस्स कहके, सिज्झायसंदिस्साउं, सज्झाय करूं, कहके, ३ नवकार गिणे, पीछे श्रीसेढीका चैत्यवंदन करै, नमोत्थुणं, नमोर्हत्सिद्धातक कहके, पार्श्वनाथ स्वामीका, छोटा स्तवन कहै, फेर थंभण यट्ठियपास सामिणो, २ गाथा कहके, श्रीस्थंभणा पार्श्वनाथस्वामी, आ-

राधनार्थं करेमिका उसग्गं, अन्नत्थ उ०, १६ नवकार, वा ४ लोगस्सका, काउसग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कहे, ८४ गच्छसिणगारहार, जंगम युगप्रधान, भट्टारक, दादा सद्गुरु श्रीजिनदत्तसूरिःजी, आराधनार्थं, करेमिकाउसग्गं, १६, अथवा, ४ नवकारकाकाउसग्ग करके, प्रगट लोगस्स कहे, ८४ गच्छसिणगारहार, जंगम युगप्रधान, भट्टारक दादा सद्गुरु श्रीजिन कुशल सूरिः जी, आराधनार्थं, करेमिकाउसग्गं, पूर्व रीतिसेंकाउसग्ग करे, लोगस्स कहे, फेर चउक्कसायका चैत्यवंदन करे, नमोत्थुणं, उवसग्गहरं पासं पूरातक कहै, जयवीराय कहै, पीछे छोटी शांति कहै खमासमणदेमुहपत्ती पडिलेहे इच्छाकारेण संदिस्सह, भगवन्, सामायक पारुं, यथाशक्ति, इच्छामि०, इच्छाकारेणसं०, सामायक पारिओ, तहत्ति कहके, दहणा हाथ, पूंजणी, आसनपर, रखके, १ नवकार गुणके, भयवं दसन्न भद्दो कहे, १ नवकार गिणके उठे, इति देवसी प्रतिक्रमण विधि,

---

अथ राइप्रतिक्रमण विधि ॥

पहले लिखी विधिसें, सामायक लेवे, पीछे जयमहायस०, कम्मभूमिका चैत्यवंदन, नमोत्थुणं, जयवीयराय, आभम खंडा तक कहे, पीछे खमासमण देकर, इच्छाकारेणसं०, कुसमिण दुसमिणराई पायच्छित्तविसो हणरथं, करेमिकाउसग्गं, ९ लोगस्स, १६ नवकारका, काउसग्ग कर, प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देकर, आचार्यजी मिश्र, खमासमण०, उपाध्यायजी मिश्र, खमासमण०, सर्व्व साधुजीनें वंदणा, खमासमण०, वर्त्तमान भट्टारककूं, त्रिकाल, २ वंदणा, सव्वस्सविराइय० कहे, इच्छाकारेण संदिसह, नहीं कहे, फेरनमोत्थुणं, सव्वाइंतांइवंदेतक कहके, खडा होके, करेमि भंते कहके, पीछे इच्छामि ठामि काउसग्गो, जोमेराइयो०, येपाठ पूरा कहके, तस्स उत्त०, अन्नत्थु०, ४ नवकार, वा, १ लोगस्सकाकाउसग्ग कर, प्रगट लोगस्स कहे, फेर सव्वलोए अरिहंतचे०, वंदणव०, अन्नत्थ०, चार नवकारका, काउसग्ग, फेर पुक्खरवरदीवड्ढे, कहे, ज्ञानाचार शुद्धिनिमित्तं, करेमि काउसग्गं, २ लोगस्स, वा ८ नवकारका काउसग्गकर, सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, पीछे तीसरे आवश्यककी, ऊकडू, बैठकै, मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछे २ वांदणा देवै, फेर राइयं आलोएमि, इच्छं आलोएमि, जोमेराइयो०, पूरा कहे, पीछे आजूणा चोपहुरा रात्रिमैं जिकेमें जीव विराध्या होय, सात लाख०, ३ पाठ कहे, पीछे सव्वस्सविराइय, दुच्चिंतिय, पाठ कहे, पीछे, दहणा गोडा, ऊंचा करके, भगवन्, सूत्रभणूं, तीन नवकार, ३ करेमिभंते, कहके, इच्छामिठामि पडिक्कमिउं, जोमेराइओ, कहे, पीछे वंदितु सूत्रकहे, २ वांदणा देकर, अब्भुट्ठिओमिका पाठ कहे, पीछे २ वांदणा देवै, पीछे आयरिय उवझाए कहे, पीछे करेमिभंते कहे, इच्छामि ठामि०, तस्सुत्तरी०, अन्नत्थ०, श्रीमहावीरस्वामी छमासी तप चिंतवणा निमित्तं,

करेमि काउसग्गं; अन्नत्थ०, छलोगस्स, वा २४ नवकारका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पीछे छठे आवश्यककी मुंहपत्ती पडिलेहे, २ वांदणा देकर, पीछे सकल तीर्थकों नमस्कार करे, सो लिखते हैं,

अच्छी भक्तिसें, देवलोकमें, सूर्य, चंद्रके, विमानमें, व्यंतरोंके,
सद्भक्त्या, देवलोके, रवि,शशि, भवने, व्यंतरा,
निकायमें, ताराओंके, भुवनमें, ग्रहोंकेसमूह, पट-
णां, निकाये, नक्षत्राणां, निवासे, ग्रहगण, पट,
लमें, नक्षत्रोंके, विमानोंमें, पातालमें, नागकुमारइंद्रोंकी, प्रगट,
ले, तारकाणां, विमाने, पाताले, पन्नगेंद्रे, स्फुटम,
मणियोंकी किरणोंसें, विध्वंसभयासघनअंधेरा, श्रीमान्तीर्थंकेकर.
णिकिरणे, ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकरा,
ताओंके, हमेस, में, उहांके, चैत्योकोंवांदताहूं, १, विजयार्द्ध,
णां, प्रतिदिवस, महं, तत्र, चैत्यानिवंदे, १, वैताढ्ये,
मेरूकेशिखर, रुचक, पहाडप्रधानपर, कुंडल, गजदंतोंपर,
मेरुश्रृंगे, रुचक, गिरिवरे, कुंडले, हस्तिदंते,
वक्खारेपर, शिखरनंदीश्वर, कनकपहाडपर, नैषध, नील,
वस्कारे, कूटनंदीश्वर, कनकगिरौ, नैषधे, नील,
वंत, पहाडपर, चित्र, विचित्र, यमक, पहाडप्रधानपर, चक्र,
वंते, शैले, चैत्रे, विचित्रे, यमक, गिरिवरे, चक्र,
वाल, हिमवंतपहाडपर, श्रीपहाडपर, विंध्याचलकेशिखर,
वाले, हिमाद्रौ, श्रीम० २, श्रीशैले, विंध्यश्रृंगे,
विमलाचलपहाडप्रधानपर, आबू, पावामें, समेतशिखर,
विमलगिरिवरे, ह्यर्बुदे, पावके वा, सम्मेते,
पर, तारंगेपर, कुलगिरि, शिखरपर, अष्टापद, स्वर्ण,
तारकेचा, कुलगिरि, शिखरे, ष्टापदे, स्व,
पहाडपर, सह्यपहाडपर, वैजयंत, विमल, पहाडप्रधान,
र्णशैले, सह्याद्रौ, वैजयंते, विमल, गिरिव,

पर, गुजरातमें, रोहणाचलपर्वतपर, आघाटमें, मेवाड,
रे, गुर्जरे, रोहणाद्रौ, श्रीम० ३, आघाटे, मेद,
में, पृथ्वीकेतटमुकटमें, चितोड, तीनकूटमें, ला,
पाटे, क्षितितटमुकुटे, चित्रकूटे, त्रिकूटे, ला,
ट, नाट, फेर, घाट, में, दरखतोंकेंसघनतटमें, हेमकूटपर, विराट,
टे, नाटे, च, घाटे, विटपि, घनतटे, हेमकूटे, वि,
[वराड], कर्णाटकके, हेमकूटपर, विकटतरकटमें, चक्र,
राटे, कर्णाटे, हेमकूटे, विकटतरकटे, चक्र,
कूटपरफेरभोटियादेशमें, श्रीमालनग्रमें, मालवेमें, अथवा,
कूटेचभोटे, श्रीम० ४, श्रीमाले, मालवे, वा,
मलयवारमें, निषधमें, मेखलामें, पिच्छलमें, फेर, नेपाल,
मलयिनि, निषधे, मेखले, पिच्छले, वा, नेपा,
देशमें, नाहलमें, फेर, कुवलय, तिलकमें, सिंहल[लंका]में, केरल,
लेनाहले, वा, कुवलय, तिलके, सिंहले, केरले,
फेर, डाहालमें, कोशल [अयोध्या]में, मारवाडमें, जंगल
वा, डाहाले, कोशलेचा विगलतसलिले, जंग
देसमें, ढमालमें, अंग, चंपाकादेशमें, बंगालेमें, कलिंगदेशमें,
लेचा, ढमाले, श्रीम० ५, अंगे, वंगे, कलिंगे, सु
गयावाचीनजापानतातारमें, प्रयागमें, तिलंगदेशमें, गौडदेशमें, चौडदेशमें,
गतजनपदे, सत्प्रयागे,तिलंगे, गौडे, चौडे, मु-
मुरंडमें, प्रधान, द्रविडमें, उडियादेशमें, फेर, पौंडमें, आर्द्रकदेसमें
रंडे, वरतर, द्रविडे, उद्रियाणे, च, पौंड्रे, आर्द्रे,
माद्रदेशमें, पुलिंद्रमें, द्रविड, कुवलयमें, कनोजमें,
माद्रे, पुलिंद्रे द्रविड, कुवलये, कान्यकुब्जे,
सोरठमें, चंद्रावती, चंद्रमुखीमें, हथनापुर,
सुराष्ट्रे, श्रीम० ६, चंद्रायां, चंद्रमुख्यां, गजपुर,
मथुरा, पत्तनमें, फेर, उज्जेनमें, कोशांबीमें, कौशलामें
मथुरा, पत्तने, चो, जयिन्यां, कौशांब्यां, कौशाला

कनकपुर प्रधानमें, देवगिरीमें, फेर, काशीमें, रासक
यां, कनकपुरवरे, देवगिर्यां, च, काश्यां, रास-
में, राजगृहीमें, दशपुरनगरमें, भद्दिलपुरीमें, तामलिप्तीमें
ध्ये, राजगेहे, दशपुरनगरे, भद्दिले, ताम्रलि
स्वर्गमें, मृत्युलोकमें, पातालमें, पहाडके शिखर,
प्त्यां, श्रीम०७, स्वर्गे मर्त्ये, तरिक्षे, गिरिशिखर
हृद्रमें, स्वर्णदीके पाणीके तीर, पहाडकेअग्र, नागलोकमें, दरि-
हृदे, स्वर्णदी नीर तीरे, शैलाग्रे, नागलोके, जल
यावकेतट, दरख्तोंके, निकुंजमें, ग्राममें, अटवीमें, वनमें,
निधिपुलिने, भूरुहाणां, निकुंजे, ग्रामे, रण्ये, घने,
फेर, थलमें, जलमें, विषम, गढके अंदर, त्रिकाल.
वा, स्थल, जल, विषमे, दुर्गमध्ये, त्रिसंध्यं, श्रीम०,
श्रीमान्मेरूपर, कुलगिरीपर, रुचकपहाडप्रधानपर, शाल्मली
८ श्रीमन्मेरौ, कुलाद्रौ, रुचकनगवरे, शाल्म
और, जंबूवृक्षपर, फेर, उज्जयनीमें, चैत्यनंदमें, रतिकर, रुचक,
लौ, जंबुवृक्षे, चौ, ज्जन्ये, चैत्यनंदे, रतिकर, रुचके
कौंडल, मानुषोत्तरपर, इक्षुकार, जिनपहाडपर, दधि
कौंडले, मानुषांगे, इक्षुकारे, जिनाद्रौ, दधि
मुखपहाडपर, व्यंतरोंमें स्वर्गलोकमें, जोतिषीतारालोकमें, होय,
मुखचगिरौ, व्यंतरेस्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके, भवंति,
तीनभुवनके, गोलमें, जो, चैत्यालय, इसतरेश्री
त्रिभुवन वलये, यानि, चैत्यालयानि, ९, इत्थंश्री
जैन, मंदिरोंका, स्तवन, हमेस, जो पढे, प्रवीणपुरुष,
जैन, चैत्य, स्तवन, मनुदिनं, ये पठंति, प्रवीणाः
विशेषपणेउदयकल्याणहेतु, पापोंकों हरणकर्त्ता, भक्तिकापात्र,
प्रोद्यत्कल्याणहेतुं, कलिमलहरणं, भक्तिभाज,
तीनोंकाल, तिनोंकेशोभाकारीतीर्थयात्राकाफल, ओपमारहितसर्वो
स्त्रिसंध्यं, तेषां श्रीतीर्थयात्राफल, मतुलमलं

परिहोय, मनुष्योंकूं, कामोंकी सिद्धि, ऊंचे, विशेपहर्षि
जायते, मानवानां, कार्याणांसिद्धि, रुच्चैः प्रमुदि
तमनसें, चित्तकोंआनंदकारक
तमनसां, चित्तमानंदकारी, १०, इति चैत्यवंदनं

पीछे नमो खमासम णाणं, नमोर्हत्सिद्धा कहके, परसमय तिमर तरणिकी २ गाथा कहे, श्रीसंसार दावाकी २ गाथा कहे, पीछे नमोत्थुणं, सव्वाइंताइंवंदेतक कहके, सव्वलोए, अरिहंतचेइयाणं०, वंदणव०, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्गकर, नमोर्हत्सिद्धा कहके, थुईकी, १ गाथा पहली कहे, पीछे लोगस्स कहे, सव्वलोए अरि०, वंदणव०, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्ग, पीछे थुईकी गाथा दूसरी कहे, पीछे पुक्खरवरदी०, सुयस्स भगवओक०, वंदणव०, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्ग करके, तीजी गाथा थुईकी कहे, पीछे सिद्धाणं बुद्धाणं० कहके, वेयावच्चगराणं, अन्नत्थ०, १ नवकारका काउसग्गकर, चोथी गाथा थुईकी कहे, नीचे बैठके, नमोत्थुणं सव्वाइंतां इंवंदेतक कहे, पीछे, तीन खमासमण देके, आचार्य, उपाध्याय, सर्व्वसाधू वांदे, कोई अढाइज्जेसु, दीवसमुद्देसुभी कहते हैं, अैसीभी संप्रदाय है, इतनी विधि कियां पीछे, थिरता होय तो खमासमण देकर, इच्छाका०, चैत्यवंदन करूं, सीमंधर स्वामीका चैत्यवंदन, नमोत्थुणं, नमोर्हत्सिद्धा० तक कहके, सीमंधरजीका, स्तवन कहे, थुई कहे महीमंडणं० १ गाथा, इसीतरे दक्षणमें मुखकरके, सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन, स्तवन कहे, पीछे थुई कहे, सो थुई लिखते हैं, सेत्रुंजगिरि नमिये ऋषभ देव पुंडरीक, सुभतपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक, शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्यवंदनीक, करिये जिन आगल टालीवचन अलीक, १, पीछे आगे मुजब सामायक पारे, इति राई प्रतिक्रमणविधि, ॥

अथ पख्खी प्रतिक्रमणविधि लिख्यते, ॥

तहां पहले वंदित्तू सूत्रतक, देवसी पडिक्कमके, खमासमण देकर, देवसी आलोइयं पडिक्कंता, इच्छाका०, पक्खिय मुहपत्ती, पडिलेहूं, पडिलेहे, दो वांदणादेवे, पखोवइक्कंतो पखियंवइक्कमं, इत्यादिपाठकहे, पीछे, पुण्यवंतो, छींकजयणाकरजो, खासेसो, विवरे शुद्धखासजो, मांडलमांहे सावधान सावचेतरहीजो, देवसीके ठिकाणे, पक्खीभणजो, तहत्ति कहके, खडाहोके, इच्छाका०, संबुद्धाखामणेणं, अब्भुट्ठिओमि, अब्भितर, पक्खियं खामेउं, इच्छं खामेमि पक्खियं, पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हंराईणं, जंकिंचिअप्पत्तियं०, तस्समिच्छामि दुक्कडंतक, पूरापाठकहे, इच्छाकारेण०, पक्खियं आलोएमि, जोमे-

पक्खियो, अइयारोकओ०, इय पूरापाठकहै, पीछे नाणंमि दंसणम्मिय, वडाअतीचारकहे, उसमें पक्खीदिवसमांहे, जो कोई अतीचार लागोहोय, तस्समि०, ऐसाकहे, पीछेसब्व-स्सवि पक्खिय, इच्छाकारेणसंदिस्सहकहे, तस्समिच्छामिनहींकहे, पीछेचउत्थेणपडिक्कमह, बांदणादेवे, इच्छाकारे०, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, पत्तेयं खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर, पक्खियं खामेउं, इच्छंखामेमिपक्खियं, पन्नरसण्हंदिवसाणं, यहपूराकहे, फेर सबोंसें खमावै, पीछे २ बांदणादेवे, पीछे देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, पक्खियं पडिक्क-मामि ३ नवकार ३ करेमिभंते, इच्छामिठामिकाउसग्गं, जोमेपक्खियो, अइयारोकओ, काइयोवाइयो, पूराकहके, साधूतो पक्खीसूत्रकहे, श्रावककहेसूत्रभणूं ३ नवकार गु-णके, तीनकरेमिभं० दोय वेर वंदित्तूसूत्रकहे, दूसरेकायोसग्गकरके सुणे, पीछे ३ नवकार ३ करेमिभंते कहकेदूसरीवेर वंदित्तुसूत्रकहे, पडिक्कमेदेसियं सव्वंकेठिकाणे, पडिक्कमेपक्खि-यंसव्वंकहे, फेर खमासमणदेकर, इच्छाका०, मूलगुण, उत्तरगुण, अतीचार, विशुद्धिनि-मित्तं, करेमिकाउसग्गं, करेमिभंते, इच्छामिठामिकाउसग्गो, जोमे पक्खियो, पूराकहे, तस्सुत्तरी, अन्नत्थ०, १२ लोगस्स, अथवा ४८ नवकारका काउसग्ग १ नवकार जादा-गिणे, लोगस्स प्रगटकहे, २ बांदणादेवे, इच्छाकारेण०, समाप्ति खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भितर, पक्खियंखामेउं, इच्छं०, पन्नरसण्हंदिवसाणं, इत्यादिपूराकहे, पीछे इच्छाका०, पक्खीसमाप्त खामणाखामूं, खमासमणदेकर, ३ नवकारगिणके, पक्खीसमाप्त खामणा-खामूं, इसतरे ४ वखत करे, नित्थारगपारगाहोह, इच्छामो अणुसट्ठिं, पुन्यवंतो, पक्खीके लेखे १ उपवास, २ आंबिल, ३ निवी, ४ एकासणे, अथवा २ हजार सिज्झायकर, १ उप-वासकी, पैठपूरणा, पक्खीकीजगे देवसीकहणा, उपवासकियाहोय तो, पयट्ठिअंकहे, नहीं कराहोयसो, तहत्तिकहे, इहांसेंआगे, वंदित्तुवाद, बांदणादेणा, सोसबविधि, देवसी मुजबकरे, आगे श्रुतदेवताकीस्तुतिसुवर्णशालिनीदे० कहे, फेरखेत्र० वादभवनदेवयाएकरेमिकाउ०, १ नवकारका काउसग्गकर, भुवणदेवताकीस्तुतिकहे, चतुर्वर्णायसंघाय, देवीभवनवासिनी, निहत्यदुरितान्येषा, करोतुसुखमक्षतम् १ असाकहे, बडेस्तवनकीजगे, अजियशंताकहै, छोटे स्तवनकीजगे, उवसग्गहरंकहै, छोटीशांतिकीजगे, बडीशांतिकहे, चोपहरीदिनका-पोसेवाला, पोसापारकेपीछेशांतिसुणे, रातपोसेवाला पोसारहतेसुणे, इतिपक्खीप्रतिक्रमण,॥

अथ चोमासी प्रतिक्रमणविधि ॥

विधितोसब पक्खी मुजब, इतना जादाहै, १२ लोगस्सके, काउसग्गकीजगे, २० लो-गस्सकाकाउसग्ग, पक्खीकी जगे, चोमासीका नांमलेणा, तपकेठिकाणे, २ उपवास, ४ आंबिल, ६ निवी, ८ एकासणा, ४ हजारसिज्झाय, इसमुजबकहणा, इतिचोमासीप्र-तिक्रमणविधि, ॥

अथ संवत्सरी प्रतिक्रमणविधि ॥

वाकीसबविधितो पक्खीमुजब, १२ लोगस्सके काउसग्गकीजगे, ४० लोगस्स, अथवा १६० नवकारकाकाउसग्गकरे, तपकीजगे, संवत्सरीके लेखे ३ उपवास, ६ आंबिल, ९ निवी, १२ एकासणा, ६ हजारसिज्झायकर, ३ उपवासकीपैठपूरणा, पक्खीकी जगे, आगारोंमें, संवत्सरीका नांमलेणा, इतिसंवत्सरी प्रतिक्रमणविधि, ॥

अथ सीमंधरस्वामीका स्तवन ॥

पूर्वविदेह पुखलावती, जयोजगपतीरे, श्रीसीमंधरस्वाम, प्रहसमनितनमूंरे, १ जगत्रयभावप्रकाशता, भविप्रतिवोधतारे, उपगारीअरिहंत, २ प्र०, धननयरी धनतेनरा, धनतेधरारे, जिहांविचरेजिनराज, प्र० ३, धन्यदिवस धनतेघडी, देखसूंआंखडीरे, भक्तिवत्सल भगवंत, प्र० ४, महरनिजरअवधारजो, पतितउद्धारजोरे, जिनहर्षघणेससनेह, प्र० ५, इतिपदं, ॥

अथ सिद्धाचलस्तवन ॥

भावधर धन्यदिनआजसफलोगिण्यो, आजमेंसजनआनंदपायो, हर्षधरनिजरभरविमलगिरिनिरखकर, रजतमणिकनकमोतियनवधायो, भा० १, पग२उमंगधर पंथनितपूछतां, धन्यदोयचरणजिहांचलतआयो, आजधनदीहजागीसुकृतकीदशा, आजधनदीहमेंसुजसगायो, भा० २, दूरदुरगतिटरी, जात्रविधिसेंकरी, पुन्यभंडारपोतेभरायो, वदतजिनराजमनरंग सुरगिरि शिखर, ऋषभजिनचंद्रसुरतरुकहायो, भा० ३, इतिपदं, ॥

अथ देवसीपडिक्कमणेमेंकहणेका बडास्तवन लिख्यते,

भविका श्रीजिनविंवजुहारो, आतमपरमआधारो रे, भवि०, श्रीजिन०, जिनप्रतिमा जिनसरखीजाणो, नकरोसंकाकाई, आगमवाणीनेंअनुसारे, राखोप्रीतसवाईरे, भ० १, जेजिनविंवस्वरूपनजाणे, तेकहियेकिमजाणे, भूलातेहअज्ञानेभरिया, नहींतिहांतत्वपिछाणेरे, भ० २, अंवड श्रावक श्रेणिकराजा, रावणप्रमुखअनेक, विविधपरे जिनभक्तिकरंतापाम्यां धर्मविवेकरे, भ० ३, जिनप्रतिमाबहुभक्तेजोतां, होयनिश्चेउपगार, परमारथगुण, प्रगटेपूरण, जोजोआर्द्रकुमाररे, भ० श्री० ४, जिनप्रतिमाआकारेजलचर, छैबहुजलधिमझार, तेदेखीवहुलामच्छादिक, पांमेंविरतिप्रकाररे, भ० श्री० ५, पंचमअंगेजिनप्रतिमानो, प्रगटपणेअधिकार, सूरियाभसूरेजिनपूज्या, रायपसेणीमझाररे, भ० श्री० ६, दशमेंअंगे अहिंसादाखी, जिनपूजाजिनराज, एहवाआगमअरथमरोडी, करियेकेमअकाजरे, भ० श्री० ७, समकितधारीसतियद्रोपदी, जिनपूज्यामनरंगे, जोजोएहनोअर्थविचारी, छठेज्ञाताअंगेरे,

भ० श्री० ८, विजयसुरेजिमजिनवरपूजा, कीधीचितथिरराखी, द्रव्यभावविहुंभेदेकीनी, जीवाभिगमछेसाखीरे, भ० श्री० ९, इत्यादिकवहुआगमसाखे, कोइसंकामतकरजो, जिन-प्रतिमादेखीनितनवलो, प्रेमघणोचितधरजो रे, भ० श्री० १०, चिंतामणिप्रभुपासपसाये, सरधाहोयजोसवाई, श्रीजिनलाभसुगुरुउपदेशे, श्रीजिनचंद्रसवाईरे, भ० श्री० ११, इतिपदं, ॥

अथ पडिक्कमणेमेंकहणेकाछोटापार्श्वप्रभूका स्तवन ॥

तूंमेरेमनमें प्रभु तूंमेरेदिलमें, ध्यांनधरूंपल२में, पाशजिनेसरअंतरजामी, सेवाकरूंछिन २में, तूं० १, काहूकोमनतरुणीसेंराच्यो, काहूकोचितधनमें, मेरोमन प्रभु तुमहीसेंराच्यो, क्यूंचात्रकचितघनमें, तूं० २, योगीश्वरतेरीगतजाणे, अलखनिरंजनछिनमें, कनककीरतसुखसायरतुमही, साहिवतीनभुवनमें, तूं० ३, इतिपदं, ॥

श्रीसिद्धचक्राय नमः । अथ सप्तस्मरणानि ॥

श्रीअजितप्रभूजीतेहैंसर्वडर, शांतिप्रभूफेरजादाकरकेशांतस-
अजियंजियसव्वभयं, संतिंचपसंतसव्वग

र्वगयेहैंपाप, जगत्केगुरु शांतिगुणकेकरणेवाले, दोनों जिनवरोंकों,
यपावं, जयगुरुसंतिगुणकरे, दोविजिणवरे,

प्रणामकरूं, १, गाथाछंद, दूरगयाहै बुरेपरिणाम,
पणिवयामि, १, गाहा, ववगयमंगुलभावे,

वेदोंनों विस्तार तपसें मलरहित स्वभाववालेहैं, ओपमारहितवडाहै
तेहिं विउलतवनिम्मलसहावे, निरुवममह

प्रभावजिनोंका, स्तवनाकरूंगा, अच्छीतरेदेखनेवाले, विद्यमानपदार्थोंकूं, २,
प्पभावे, थोसामि, सुदिठ्ठ, सब्भावे, २, गाहा,

सर्वदुःखप्रशांतकर्त्ता, सर्वपापप्रशांतकर्त्ता,
सव्वदुक्खपसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं,

हमेसअजितशांतिदोनोंप्रभू, नमस्कार अजित शांतिप्रभूकों,
सया अजियसंतिणं, नमोअजियसंतिणं,

३ श्लोक छंद, अजितजिनसुखोंकोंप्रवर्त्तावणेवाले, तुमारापु-
३ सिलोगो, अजियजिणसुहपवत्तणं, तवपु-

रुषोत्तम, नामकीकीर्त्ती है, तैसें, धीरज, और मतीकेप्रवर्त्तक,
रिसुत्तम, नामकित्तणं, तहय, धिइ, मइप्पवत्तणं,
तुमारा, केवलियोंमेंउत्तम, शांतिपणेकीकीर्त्ती है ४, मागधिकाछंद,
तवय, जिणुत्तम, संतिकित्तणं, ४, मागहिया,
२५तरेकीक्रियाओंकेकरणेसेंसंचेहुये, कर्मोंकाक्लेश, उससेंमोक्षकरणेवाले,
किरियाविहिसंचिय, कम्मकिलेस, विमुक्खयरं,
अजितजिन, भरेहुये, फेर, गुणोंसें, महामुनियोंकों, सिद्धिगतीकेदेणेवाले
अजियं, निचियं, च, गुणेहि, महामुणि, सिद्धिगयं,
अजितप्रभूऔरशांति, महामुनियोंकेभी, शांतिकेकरणेवाले,
अजियस्सयसंति, महामुणिणोविय, संतियरं,
हमेस, मेरेकों, मोक्षके कारणभूत, फेर, वंदनकरणेवालेकों, ५,
सययं, मम, निव्वुइकारणयं, च, नमंसणयं, ५, आ
आलिंगनछंद, हेपुरुषो, जो, दुःखकामिटाणा, जोतुममांग-
लिंगणयं, पुरिसा,जइ,दुक्खवारणं, जइविम-
तेहो, सुखकाकारणतोतुम, अजित, शांतिका, ओर, भावकरकै,
ग्गह, सुक्खकारणं, अजियं, संतिं, च, भावओ
अभयकेकरणेवालेका, शरणअंगीकारकरो, ६, मागधिकाछंद, अर-
अभयकरे, सरणंपवज्जह, ६, मागहिया, अर-
ति, रतिरूप, अंधेरेसें, रहित, दूरहुआहै, जरामरणजिनोंसें,
इ, रइ, तिमर, विरहिय, मुवरइ, जरमरणं,
देवता, दानव, गरुड, भुजंगपती(नागेंद्र], पांवउनदोनोंकेनमनकराहै,
सुर, असुर, गरुल, भुयगवइ, पयओपणवइयं,
ऐसेअजितजिनकोंमेंभी,जो अच्छान्यायरूपनयोंमेंनिपुण, अभयदान
अजियमहमविय, सुनयनयनिऊण, मभयक
करणेवाले, शरणागतरक्षक, पृथ्वीकेऔरस्वर्गमेंपेदाहुयोंसेंपूजित, हमे-
रं, सरणमुवसरिय, भुविदिविज्जमहियं, सय,
स, मैंभीनमनकरूं, ७, संगतछंद, वहफेरकेवलियोंमेंउत्तमउत्तमइच्छा
य, मुवणमे, ७, संगययं, तंचजिणुत्तम मुत्तमनि

रहित, सत्वधारी, शरलपणा, नरमाईपणा, क्षमा, निर्लोभता, समाधीके,
त्तम, सत्तधरं, अज्जव, मद्दव, खंति, विमुत्ति, समाहि,
निधान, शांतिकर्त्ताकों, नमनकरूं, इंद्रीदमणेमेंउत्तम, तीर्थंकेकरणेवाले,
निहिं, संतियरं, पणमामि, दमुत्तम, तित्थयरं,
वहशांतिमुनिः, मुझें, शांति, समाधि, प्रधान, देओ, ८,
संतिमुणी, मम, संति, समाहि, वरं, दिसओ, ८,
सोपानछंद, सावत्थीनग्रीमेंपहलेराजापणे, फेर, प्रधान, हस्तीके, मस्तककीतरे,
सोवाणयं, सावत्थिपुव्वपत्थिवं, च, वर, हत्थि, मत्थयं,
तारीफलायक, विस्तारवाला, संस्थान[शरीर], मजबूतकपाटकीतरेछाती, मद,
पसत्थि, वित्थिण, संथियं, थिर, सिरत्थवत्थं, मय,
झरता, लीलाकरताहुआ, अच्छेगंधहस्तीकीतरे, चलनेकीचालहैजिनोंकी,
गल, लीलायमाण, वरगंधहत्थि, पत्थाणुपत्थियं,
स्तवनाकरणेलायक, हाथीकीसूंडकीतरेभुजा, तपाये, सोनेकीतरे, मनोहर, नहीं
संथवारिहं, हत्थिहत्थबाहु, धंत, कणग, रुयग, नि
कहांसेंभीखंडित, शरीर, प्रधान, लक्षणोंसें, रचाभया, शीतल,
रुवहय, पिंजरं, पवर, लक्खणो, वचिय, सोम,
मनोहररूप, कानोंकोंसुखकारी, मनकोंरुचणेवाला, उत्कृष्ट, रमणीक,
चारुरूवं, सुइसुह, मणाभिराम, परम, रमणिज्ज,
अच्छा, देवदुंदुभीका, शब्द[अवाज]सैंभी,मीठीअधिक,सुखकारीवाणीजिनोंकी,
वर, देवदुंदुहि, निनाय, महुरय, सुहगिरं, ९
वेष्टकछंद, अजितप्रभू, जीताहैवैरियोंकागण, जीताहैसवडर, भवसमूह
वेढो, अजियं, जियारिगणं, जियसव्वभयं, भवो
केवैरी, नमनकरताहूं, मेंपांवउनदोनोंका, पापोकों, प्रशमाओमेरे,
हरिउं, पणमामि, अहंपयओ, पावं, पसमेउमे,
हेभगवान्, १०, रासालुब्धकछंद, कुरुजनपददेशमें, हस्तना
भयवं, १०, रासालुद्धओ, कुरुजणवय, हत्थि
पुरके, नरेश्वर[राजा]पहलीहोके, तिसकेवाद, बडेचक्रवर्त्तिपणेकेभोग
णाउर, नरीसरोपढमं, तओ, महाचक्कवट्टिभो

भोगते, वडेप्रभावकारीपणेसें, जोवहत्तर, नग्र, प्रधान, हजार,
ए, महप्पभावओ, जोवावत्तरि, पुर, वर, सहस्स,
प्रधाननगर, निर्गम, देशोंके, पती[मालक], ३२ राजा, प्रधान,
वरणगर, निगम, जणवय, वई, बत्तीसाराय, वर,
हजारों पीछै, चलतेहैं रस्तेमें, चवदे, प्रधान, रत्न, नव,
सहस्साणु, जायमग्गे, चउदस, वर, रयण, नव,
महानिधान, ३२ऋतुपद३२जनपदकल्याणका६४हजार, प्रधान, जोवनवती,
महानिहि, चउसट्ठिसहस्स, पवर, जुवईण,
सुंदरियोंकेपती, चौरासी, घोडे, हस्ती, रथ, सोहजार[लाख,]के, स्वा-
सुंदरवई, चुलसी, हय, गय, रह, सय सहस्स, सा
मी, छयानवे, गामोंकी, कोटीकेमालक, होतेहुये, जो, भरतक्षे-
मी, छन्नवइ, गाम, कोडिसामी, आसी, जो, भार
त्रके६खंडमें, भगवान्, ११, वेष्टकछंद, शांतिप्रभूकोंस्तवताहूं, वहजिनशां-
हम्मि, भयवं, ११, वेढो, संतिंथुणामि, जिणंसंति
तिकरो, मेरे, १२, रासानिंदितछंद, इक्ष्वाकुवंशी, विदेहदेशके, न-
विहेउ, मे, १२, रासानिंदियं, इक्खाग, विदेह, न
रेश्वर, मनुष्योंमेंवृषभ, मुनियोंमेंवृषभसमान, नयेशरद्ऋतूकेचंद्र,
रीसर, नरवसभा, मुणिवसभा, नवसारयससि,
समानसंपूर्णसुखजिनोंका, अंधेरारहित, निर्मल, हेअजितउत्तम
सकलाणण, विगयतमा, विहुयरया, अजिउत्तम,
तेजगुणकरके, हेमहामुनि, हेअप्रमाणवलवंत, हेविस्तारकुलवंत
तेअगुणेहि, महामुणि, अमियबला, विउलकुला,
नमस्कारकरताहूंतुमकों, भवभयकेचूरणेवाले, हेजगत्शरण, मुझकों,
पणमामित्ते, भवभयचूरण, जगसरणा, मम,
तुमारासरणहै, १३, चित्रलेखाछंद, देवता, ओर दानवेंद्र, चंद्रमा, सूर्यसें, वंदि
सरणं, १३, चित्तलेहा, देव, दाणविंद, चंद, सूर, वं
त, हर्षित, प्रीतिमंत, वडे, उत्कृष्ट, मनोहररूप, तपायेहुयेरूपेकेपाटेजैसै,
द, हट्ठ, तुट्ठ, जिट्ठ, परम, लट्ठरूव, धंतरुप्पपट्ट,

सुपेद शुद्ध, चिकणे, स्वेत, दांतोंकीपंक्ति, हेशांति, शक्ति, कीर्त्ति,
सेय, शुद्ध, निद्ध, धवल, दंतिपंति, संति, सत्ति, कित्ति,
मुक्ति, युक्ति, गुप्तिहै, प्रधानजिनोंके, देदीप्यतेज, वंदनायोग्यनाम, सर्व,
मुत्ति, जुत्ति, गुत्ति, पयर, दित्ततेय, वंदधेय, सव्व
लोक, भावितात्मा, प्रभावनाकरणेयोग्य, प्रशादकरोमुझें, समाधि, १४
लोय, भावियप्पभावणेय, पइसमे, समाहिं, १४,
नाराचछंद, विगतमलचंद्रकी, कलासेंभीजादे, शीतल, रहि,
नारायओ, विमलससि, कलाइरेय, सोमं, वि
तअंधकार, सूर्यकी, किरणोंसेंभीजादे,तेज, देवतोंकेपतियोंके, गणसेंभीजादा,
तिमिर, सूर, कराइरेय, तेयं, तियसवइ, गणाइरेय,
रूप, पहाडोंमें, प्रधान, मेरूसेंभीजादे, मजबूतबल, १५,
रूवं, धरणिधर, पवरा, यरेय, सारं, १५,
कुसुमलताछंद, सत्वसें, सदा, अजितकों,
कुसुमलया, सत्तेय, सया, अजियं,
शरीरकेवलमेंहमेसअजितकों, तपऔरसंजममें अजितकों,
सारीरेयबलेअजियं, तवसंजमे अजियं,
इसतरेंस्तवताहूंजिनराजअजितकों, १६, भुजंगपरिंगितछंद,
एसथुणामिजिणमजियं, १६, भुयंगपरिरंगियं,
सौम्यगुणकरकै, पातानहींउनोंकों, नयासरदऋतूकाचंद्र, तेजगुण
सोमगुणेहिं, पावइनतं, नवसरयससी, तेजगुणे
करकैपातानहींउनोंकों, नयासरदऋतूकासूर्यभी, रूपगुणकों, पातानहीं
हिंपावइनतं, नवसरयरवी, रूपगुणेहिं पावइ
देवतोंकागणपती,[इंद्रभी], स्थिरतागुणकों, पातानहीं पहा
नतं, तियसगणवई सारगुणेहिं, पावइनतं धर
डोंकापती,[मेरू], खिज्जितछंद, १७, तीर्थप्रधानप्रवर्त्तक
णीधरवई, खिज्जययं, १७, तित्थवरपवत्तयं,
अंधेरेरूपरजसेंरहित, धीरपुरुषोंनेस्तवनापूजाकरी, गिरगयापाप
तमरयरहियं, धीरजणथुयच्चियं, चुयकलि
मैलजिनोंसे, शांतिसुखकेप्रवर्त्ताणेवाले, तीनकरणसेंदोनोंपदका, शां
कलुसं, संतिसुहपवत्तयं, तिगरणपयओ, संति

तिप्रभुकामें, वडेमुनिका, सरण, अंगीकारकरताहूं, ललितछंद, १८,
महं, महामुणिं, सरण, मुवणमे, ललिययं, १८,
विनयसें, नमेहुये, मस्तकपर, रचित, अंजलि, ऋषियोंके,
विणओ, णय, सिरि, रइ, अंजलि, रिसिगण,
समूहनेंस्तवनकरा, अचलपणे, इंद्र, धनपती, चक्रवर्त्ति,
संथुयं, थिमियं, विवुहाहिव, धणवइ, नरवई,
स्तवना, वडीपुष्पादिकसेंपूजा, वहोतप्रकार, विशेषपणेउदयहु
थुय, महिअचियं, वहुसो, अइरुग्गय
आ,शरदऋतूकासूर्य, अच्छीअधिक सत्यप्रभा, तपस्यासें,
सरयदिवायर, समहियसप्पभं, तवसा,
आकाशमें, विचरणेवाले, अच्छीतरेखुसहोवामोहीजतेहुये, चारण
गयणं गण, वियरण, समुहिय, चारणवंदि
मुनियोंनें,वंदनाकरीशिरसें, किसलयमालाछंद, १९, असुर और गरु
यं, सिरसा, किसलयमाला, १९, असुर गरु
डोंसेसमस्तपणेवंदीजते, किन्नरऔरनागकुमारोंसेंनमनकरेहुये,
लपरिवंदियं, किन्नरोरगनमंसियं,
देवतोंकीकोटीसईकडोंसेस्तवीजतेहुये, साधुब्राह्मनोंकेसंघसेंसमस्तपणेवंदित
देवकोडिसयसंथुयं, समणसंघपरिवंदियं,
२०, सुमुखछंद, भयरहित, पापरहित, मलरहित, रोगरहित,
२०, समुहं, अभयं, अणहं, अरयं, अरुयं,
अजितकर्मोंसे, ऐसेअजितप्रभू, दोनोपांवनमनकरूं, विद्युत्विलसित
अजियं, अजियं, पयउपणमामि, विज्जुविल
छंद, २१, आयेनजराणे प्रधान विमान, तेजवंत, सोना,
सियं, २१, आगया वर विमाण, दिव्व, कणग,
रथ, घोडे, प्यादे, सइकडोंसें, सोरमचगया, भ्रमयुक्त,
रह, तुरय, पहकर, सएहिं, हुलियं, ससंभमो,
आणेसें, क्षोभायमान, मनोहर, हिलते कुंडल, अंगद,
यरण, खुभिय, ललिय, चलकुंडलं, गय,

मुकटसें, शोभायमान, मस्तककीमाला, वेष्टकछंद, २२, जोदेवतोंका
तिरीड, सोहंत, मउलिमाला, वेढो, २२, जंसुरसं
संघ, संयुक्तअसुरसंघ, वयरविरोधरहित, भक्ति अछीसेंयुक्त,
घा, सासुरसंघा, वेरविउत्ता, भत्तिसुजुत्ता,
आदरसें, सोभायमान, जल्दी, एकजगेमिले, अच्छीतरे, अचर
आयर, भूसिय, संभव, पिंडिय, सुट्ठुसु, विम्हि
जवंत, सबअनीकोंकेबलकासमूह, उत्तमसोना, रत्नोंसें, जादारूप
य, सव्व वलौघा, उत्तमकंचण, रयण, परू
वंत, देदीप्यमान गहणोंसें, तेजवंतअंगजिनोंका, शरीरसेंअ
विय, भासुर भूसण, भासुरियंगा, गायस
च्छीतरेसेंनमेहुये, भक्तिकेवससेंआये, अंजलियोंकरकेप्रेषित, मस्त
मोणय, भत्तिवसागय, पंजलिपेसिय, सीस
कसेंकियाहैप्रनाम, २३, रत्नमाला,छंद, वंदनकरकै, स्तवनाकर
पणामा, २३, रयणमाला, बंदिऊण, थोऊण
केदोनोंजिनकूं, तीनगुण, ज्ञान१दर्शन२चारित्र३हीफेरप्रदक्षणाकरकै,
तोजिणं, तिगुणमेवय पुणो पया हिणं,
विशेषपणेनमस्कारकरतेहुयेजिनोंकोंसुरासुर, हर्षितहोकर, अपने
पणमिऊणय जिणं सुरा, २, पमुइयास भव
भवनमेंवहगये, २४, क्षेत्रछंद, उनमहामुनियोंकों, मैंभीहाथजो
णाइ,तोगया, २४, खित्तयं, तंमहामुणि महंपि
डवंदनकर्त्ताहूं, राग, द्वेष, डर, मोहकरके,रहित, देवता, दान
पंजलि, राग, दोस, भय, मोह, वज्जियं, देव, दा
व, राजाओंसेंवंदनीक, शांतिपणाउत्तमहैजिनोंका, वडाहैतपजिनोंका, २५,
णव, नरिंदवंदियं, संतिमुत्तम, महातवनमे, २५,
क्षेत्रछंद, आकाशके अंदर, विचरणेवालियां, मनोहर
खित्तयं, अंबर अंतर, वियारणियाहिं, ललिय,
हंसणीकीतरे, गमनकरणेवालियां, पुष्ट कमरकरके,
हंसबहु, गामणि याहिं, पीणसोणित्थण,

आवाशकेनिधानवालिया, समस्तकमलपत्रजैसै, आंखोंवालियां,
सालणियाहिं, सकलकमलदल, लोयणिआहिं,
२६, दीपकछंद, पुष्ट, अंतररहित, स्तनोंकेबोझसें, विशेषपणेझु
२६, दीवयं, पीण, निरंतर, थणभर, विणमियगा
कगयागात्रलतावालियां, मणिओरसोनेकी, ढीली, लटकतीकणदोरेसें,
यलयाहिं, मणिकंचन, पसिढल, मेहल,
शोभित, कम्मरवालियां, प्रधान, खिण२शब्दकेनेउर, सहिततिलक,
सोहिय, सोणितडाहिं, वर, खिंखणिनेउर, सतिलय
कडेबाजूबंध, शोभायमानगहणेवालियां, आनंदकारीचतुर, मनहरणेवालियां,
वलय, विभूसणयाहिं, रइकरचउर, मणोहर,
सुंदरीयांदेखणेयोग्य, २७, चित्रक्षरछंद, ऐसीदेवसुंदरियोंसें,
सुंदरदंसणियाहिं, २७, चित्तक्खरा, देवसुंदरीहिं,
पांवहै वंदनाकरके, वंदितजिनोंके, तुमाराअच्छापराक्रमकाचरण,
पायवंदियाहिं, वंदिया, जस्सतेसुविक्कमाकमा,
अपणे निलाडकरकै, मंडण[अलंकार]कैप्रकारकरकै,
अप्पणो निलाडएहिं, मंडणोडणप्पगारएहिं,
किस२प्रकारकरकै, नीचेकैअंगसैं३लय, पावोंकेतलेसें, नमने
केहिं केहिवी, अवंगतिलय, पत्तलेहिं, नामए
करके, घूघरोंसें, अच्छीसंगतगतासें, भक्तीकरकेस्थापनकिया,
हिं, चिल्लएहिं, संगयंगयाहिं, भत्तिसन्निविठ्ठ,
वंदनाकोंप्राप्तहोकरकै, हुओतुझेवंदना, वेर २, नाराचछंद,
वंदणागयाहिं, हुंतुतेवंदिया, पुणो २, नारायओ,
२८, वहमें, जिनचंद्र, अजितकों, जितमोहकों, झटकाहै
२८, तमहं, जिणचंदं, अजियं, जियमोहं, धुअस
सवक्लेशकों, दोनोंपांव, विशेषपणेनमनकरूं, निंदकछंद, २९,
व्वकिलेसं, पयओ, पणमामि, निंदिययं, २९,
स्तवना वंदित, ऋषिगण, ओर देवगणसें, वहदोनों,
थुअवंदिअस्स, रिसिगण, देवगणेहिं, तो,

देवतोंकीवहुओंसें, दोनोंकेपांवनमनकिये, जिनोंकीजगतमेंउत्त
देववहूहिं, पयओपणमियस्सा, जस्सजगुत्तम
मआज्ञा, भक्तीकेवससेंआयकर,एकठीमिलीऐसी,
सासणिअस्सा, भत्तिवसागयपिंडियआहिं,
देवअपछर, वह, देवस्त्रियोंकैवहुलतासें, सुरप्रधानोंकीखुसव
देववरच्छर, सा, वहुयाहिं, सुरवररइगुणपिंडि
ख्तीकागुणएकठाभया, ३०, भाश्वरछंद, वंसरीकाशब्द, वीणाकेतालकामेल,
य आहिं, ३०, भासुरयं, वंससद्द, तंतितालमेलए,
त्रिपुष्कर[मृदंग]का, मनोहरशब्द, मिलाकरकिया, कानमेंमानयुक्त,
तिउक्खरा, भिरामसद्द, मीसएकए, सुयसमाणणेय,
शुद्ध, खड्ज, गीत, पांवोंमेंजालघंट[घूघरोंसे], घेरदार
सुद्ध, सज्ज, गीय, पायजालघंटियाहिं, वलय
कणदोलेका, समूह, नेऊरके, मनोहरशब्द, मिलाकरकिया,
मेहला, कलाव, नेउरा, भिरामसद्द, मीसएकए,
देवसंवंधीनाटकसैं, हावभाव, विभ्रम, प्रकारकरकै, नाचक
देवनट्टियाहिं, हावभाव, विब्भम, प्पगारएहिं, नच्चि
र कै, अंगकोघुमाकरकै, वंदनाकरती, उनोंकूंतुमारेअछेपराक्र
ऊण, अंगहारएहिं, वंदियाय, जस्सतेसुविक्कमा
मरूपचरण, तिसकरकै, तीनलोकके, सर्वसत्वोंकों, शांतिकारक, उपशांतसर्व,
कमा, तयं, तिलोय, सव्वसत्त, संतिकारयं, पसंतसव्व
पाप, दोष, मेरे, निश्चै, नमस्कारकर्त्ताहूं, शांतिउत्तमजिनकों, ३१,
पाव, दोस, मे, सहिं, नमामि, संतिमुत्तमंजिणं, ३१,
नाराचछंद, छत्र, चमर, पताका, स्थंभ, जवसेंमंडित,
नारायओ, छत्त, चामर, पडाग, जूय, जवमंडिया,
धजाप्रधान, मगरमच्छ, घोडा, श्रीवत्सादिक, अच्छेलक्षण, द्वीप,
झयवर, मगर, तुरग, सिरिवच्छ, सुलंछणा, दीव,
समुद्र, मकानवामेरू, दिग्गजसें शोभित, स्वस्तिक,
समुद्द, मंदिर, दिसागयसोहिया, सत्थिह,

बैल, सिंह, श्रीवत्सादिक, सुलक्षणहैजिनोंकै, ३२, ललितछंद,
वसह, सीह, सिरिवच्छ, सुलंछणा, ३२, ललिययं,
स्वभावसें मनोहर, समभावकीहैप्रतिष्ठा, नहींहैदोषकीदुष्टता, गुणोंमें
सहावलट्ठा, समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा, गुणेहिं
वडे, कृपाकरणेमेंश्रेष्ठता, तपस्यामेंहैपुष्टता, लक्ष्मीऐश्वर्यादिकइष्टहै,
जिट्ठा, पसायसिट्ठा, तवेणपुट्ठा, सिरिहिंइट्ठा,
ऋषियोंसें, घेरेहुये, ३३, वाणवासितछंद, तेरेतपकरकैझडकाये,
रिसिहिं, जुट्ठा, ३३, वाणवासिया, तेत्तवेणधुय,
सर्वपापोंकों, सर्वलोकोंकेहितकामूल प्राप्तकराणेवाले, स्तवना,
सव्वपावया, सव्वलोगहियमूलपावया, संथुया,
अजित शांतिकेप्राप्तकराणेवाले, होमुझें शिवसुखके देणेवाले, ३४,
अजियसंतिपावया, हुंतुमेसिवसुहाणदायया, ३४,
अपरंतिकाछंद, इसतरे तपबल विस्तारवंत, स्तवनाकरीमैंनें,
अपरंतिका, एवंतववलविउलं, थुयंमए,
अजितशांति, जिनकेजोडेकों, दूरगयाहै, कर्मरजमलकों, गती,
अजयसंति, जिनजुयलं, ववगय, कम्मरयमलं, गइ,
प्राप्तहुये, साश्वत, निर्मलकूं, गाथाछंद, ३५, उनकोंवहोतगुणका,
गयं, सासयं, विमलं, गाहा, ३५, तंबहुगुण,
प्रशाद, मोक्षकासुख, उत्कृष्टसें, रहितविषाद, नाशकरो
प्पसायं, मुक्खसुहेण, परमेण, अविसायं, नासेउ
मेराविषाद, करो, सुणनेवाली परषदापर, प्रशाद, ३६,
मेविसायं, कुणउय, परिसाविय, प्पसायं, ३६,
गाथा, उनोंकोंमुझें इनोंकों समृद्धि, पाओनंदिषेण समस्तपणे समृद्धि
गाहा, तंमोएओयनंदि, पावेउनंदिसेणमभिनं
श्रेणिकपुत्रनंदिषेण, पर्षदाकोंभी सुखसमृद्धि, मुझकों, देओ,
दिं, परिसावियसुहनंदिं, ममय, दिसउ,
संजमकीसमृद्धि, ३७, गाथा, पख्खीमें, चौमासीमें,
संजमेनंदिं, ३७, गाहा, पक्खिय, चाउम्मासे,

संवत्सरीमें रात्रीमें, दिवसमें, सुणना, सवोंनें, उपसर्गका,
संवच्छर,राइएय, दियएय, सोयव्वो, सव्वेहिं, उवसग्ग,
दूरकरणेवालायहइसकों, ३८, जोपढे, जोसुणे,
निवारणो एसो, ३८, जोपढइ, जोनिसुणइ,
दोनोंकाल[वख्त], अजित, शांति, स्तवन, नहींहोय, उसके,
उभओकालंपि, अजिय, संति, थुयं, नहुहुंति, तस्स,
रोग, पहलेकेउत्पन्नभी, नाशहोजावै, ३९,
रोगा, पुव्वुप्पन्नावि, नासंति, ३९, इति श्रीअजितशांतिस्तवनं
उल्लसायमान, पांवोंके, नखमैंसें, निकलीजो, क्रांतिकादंड, उसमिषसें प्राणी,
उल्लासि, कम, नक्ख, निग्गय, पहादंड, च्छलेणं, गिणं,
वंदनकरणेवालेकों,दिखाणेकीतरे, प्रकट, निर्वाण, मार्गकी
वंदारूण दिसंत इव्व, पयडं, निव्वाण, मग्गा
श्रेणी, कुंदपुष्प, ओरचंद्रकीतरेउजली, दांतोंकीक्रांतिकेमिससें, निकलेज्ञान,
वलिं, कुदिं, दुज्जल, दंतकंतिमिसओ, नीहंतनाणं,
केअंकूर, कैसेंहैंदोनोंभी, दुसरेओर, सोलम, जिनकों, स्तवूंगा,
कुरु, केरेदोवि, दुविज्ज, सोलस, जिणे, थोसामि,
क्षेम[मुक्ति]केकरणेवाले, १, श्वयंभूरमण[अंतकेसमुद्रके], पाणीकोंजोमा
खेमंकरे, १, चरमजलहि, नीरं जोमिणु
पेचाहताअंजलियोंसें, क्षयसमयकीहवाकों, जोउसकेसंगचलेचाहता
ज्जंजलीहिं, खयसमयसमीरं, जोजिणज्जाग
चालसें, समस्त आकाशके लंबानकों, लंघचाहताहैजोपांवोंसें, अजित,
ईए, सयलनहयलंवा, लंघएजोपएहिं, अजिय,
अथवा, शांतिको, वह, समर्थहोय, स्तवनाकरणे, २, तोभीनिश्चै,
महव, संतिं, सो, समत्थो, थुणेउं, २, तहविहु,
बहुमानउल्लसित, भक्तीकेसमूहसें, गुणोंकालेशमात्रकीर्त्ति,
वहुमाणुंल्लासि, भत्तिब्भरेण, गुणकणमिवकित्ती,
इच्छापूरणेचिंतामणीरत्नकीतरेहै, सरा, अथवा, अचिंत्यओरअनं
हामचिंतामणिव्व, अल, महव, अचिंत्ताणं

त सामर्थ्य संप्रभूदोनोंकी, फलेगा, जल्दीसब, वंछित,
तसामत्थ ओसिं, फलइ, लहुसव्वं, वंछियं,
निश्चयकरकेमेरे, ३, समस्त, जगत्कोंहितकारी, नाममात्रकर,
निच्छियंमे, ३, सयल, जयहियाणं, नाममित्तेण,
ध्यांनसें, दूरकरडालतेहैं, जल्दीदुष्ट, अनर्थ, दुर्घटपणेकाथाट,
झाणं, विहडइ, लहुदुट्ठा, णट्ठ, दोघट्टथट्टं,
नमेजो देव, उनोंकेमुगटसें, घसीजते, चरण कमल, हमेस,
नमिरसुर, किरीट्ट, घिट्ठ, पायारविंदे, सयय,
अजितशांति, उनदोनोंजिनकोंवंदनकर्त्ताहूं, ४, फैलतीहैप्रधान
मजियसंती, तेजिणंदेभिवंदे, ४, पसरइवर
कीर्त्ति, वढतीहै शरीरकीतेजी, भोगे, पृथ्वीपर मित्रता,
कित्ती, वड्ढएदेहदित्ती, विलसइ, भुविमित्ती,
होवै अच्छीचालचलण, देदीप्यमानहोयउत्कृष्टसंतोस, होयसंसारका,
जायएसुप्पवित्ती, फुरइपरमतित्ती, होयसंसार,
कटणा, जिनेश्वरकेदोनोंपांवोंकीभक्ती, हृदेमेंविचारणेसेंसक्तीहोय, ५,
छित्ती, जिणजुयपयभत्ती, हीयचिंतोरसत्ती, ५,
मनोहरहैपांवोंकाप्रचार, वहोत, देवसंबंधीअंगोंकाघूमाणा, प्रगटस
ललियपयपयारं, भूरि, दिव्वंगहारं, फुडघणर
घनरसभाव, ऊमदाशृंगारसारभूत, अनमिष[देवतों]कीरमणियां,
सभावो, दारसिंगारसारं, अणमिसरमणिज्ज
प्रभूदर्शनमुस्कलसेंपाया,ऐसेंडरी, इसतरेनमस्कारकरतीअमंदपणेकरती
दंसणच्छेयभीया, इवपणमनमंदाकासिन
हुईनाटकउपहार, ६, हेभव्यजीवोस्तवनाकरोअजितशांतिकी, उनोंनेंकिया
होवहारं, ६, थुणहअजियसंती, तेकयासेस
सर्वोंकीशांति, सोनेकेरजजैसीपीली, विराजमानजाणोमूर्त्तिउनोंकी, उत्सा
संती, कणयरयपिसंगा, छज्जएजाणमुत्ती, सर
हकरकैआलिंगन, सरूकियानिर्वाणलक्ष्मीका, सघनस्तन, चंदनकेशर
भसपरिरंभा, रंभनिव्वाणलच्छी, घणथण, घुस

सें अंकित, कादेसें, पीलामानूंकरणेकीतरे, ७, वहुतविधनयोंकाभंगजाल,
णिंकु, पंक, पिंगीकयव्व, ७, बहुविहनयभंगं,
वस्तुनित्य, औरअनित्य, सद, असत्, अनिर्वचनीय, वचनीय,एक,
वत्थुनिच्चं, अनिच्चं, सद, सद, णभिलप्पा, लप्पमेगं,
ओरअनेक, ऐसेखोटेनयोंसेंविरुद्ध, अच्छाप्रसिद्ध, और, जिनोंका,
अणेगं, इयकुनयविरुद्धं, सुप्पसिद्धं, च, जेसिं,
वचन अवद्य[पापरहित]निर्जराकाहेतु, उनदोनोंजिनकास्मरणकर्त्ताहूंमें, ८,
वयण मवय निज्जं, तेजिणेसंभरामि, ८,
फैलताहै तीनलोकमें, उहांतक, मोहकाअंधेरा, फिरतेहैंजगमें,
पसरइतियलोए, ताव, मोहंधयारं, भमइजय
संज्ञाहीन उहांतक मिथ्यात्वसेंछिपेहुये, उदयमानप्रगटफलंत अनंत
मसन्नं तावमिच्छित्तछन्नं, फुरइफुडफलंताणंत
ज्ञानकेकिरणोकापूर, प्रगटअजितशांतिके ध्यानरूपसूर्यनहींजहांतक, ९,
नाणंसुपूरो, पयडमजियसंतीझाणसूरोनजाव, ९,
शत्रु हस्ती सिंह तृष्णा अग्नि चौरवैरी रोग
अरि करि हरि तण्हं ण्हंवु चोरारि वाही
युद्ध, राजाकाकोपवाडुकाल, मरी, डरावणेदुष्टउपसर्ग, नासहोय,
समर, डमर, मारी, रुद्दखुद्दोवसग्ग, पलय,
अजितशांतिकी, कीर्त्तनासें, जल्दी, जावै, करडावहोत,
मजियसंती, कित्तणे, झत्ति, जंती, निवडतर,
अंधेरेकासमूह, भास्कर[सूर्य]काटणेवालेकीतरे, १०, एकठेहुयेपापरूप काष्ट
तमोहा, भक्खरालुंखियव्व, १०, निचियदुरियदा
जिसकों दीस ध्यानरूपअग्निकी झाल प्राप्तकीतरेही गोरवर्ण
रू दित्तझाणग्गि जाला परिगय मिवगोरं
विचारणेकों ध्यानरूप सोनेके घसणेसेंजेसीरेखा उसकांतीकी
चिंतियंजाणरूवं कणय नियसरेहा कंतिचो
मानूंचोरीकरली फिरती ओर स्थिर जो लक्ष्मी अत्यंतपणे थांभ कररख
रंकरिज्जा चरथिरमिहलच्छि गाढसंथं भिय

एकीतरे ११, अटवीमें निवर्त्तित[रस्ताभूलेकों], राजासेंत्रासितकों
व्व ११, **अडविनिवडियाणं, पत्थवुत्तासिआणं**
दरियावकेलहरोसेंजिहाजफूटेकों, कैदमेंरहेकों, जलतीहु
जलहिलहिरहीरं ताणगुत्तिट्ठियाणं जलिय
ईअग्निकीझालसें आलिंगतकों तुमाराध्यान करदेतेहैंजल
जलणजाला लिंगियाणंच झाणं जणयइल
दीशांति शांतिनाथ अजितनाथका १२, सिंहहस्तीइनोसेंव्याप्त
हुसंतिं संतिनाहा जियाणं १२, हरिकरिपरि
युक्त, पके, प्यादोंसें, प्रतिपूर्ण, ऐसासमस्तभरतपृथ्वीकाराजछोडके
क्खिन्नं, पक्क, पायक्क, पुन्नं, सयलपुहविरज्जंछड्डि,
केसाकराज्य, आज्ञामाननेवाला, तृणकीतरे, प्रतिलग्न[समस्तपणेलगेजो
उ, आणसज्जं तणमिव, पडिलग्गंजेजिणामुत्ति
जिनमुक्तिमार्गकों, चारित्रअंगीकारकिया, हुओवेदोनोंमेरेपरप्रशन्न, १३,
मग्गं, चरणमणुपवन्ना, हुंतुतेमेपसन्ना, १३,
पूनमकेचांदजैसैमुखवाली, खुलेनेत्रकमलकेओपमावाली, स्तनोंके
छणससिवयणाहिं, फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणभ
भारसेंनमीहुई, मुट्ठीमेंग्रहणकरणेयोग्यपेटवाली, मनोहरभुजारूपल
रनिमरीहं, मुट्ठिगिझोदरीहिं, ललियभुयल
तावाली, पुष्टकम्मरकेस्थलवाली, ऐसीसइकडोंदेवतोंकीस्त्रियोंसें,
याहिं, पीणसोणित्थलीहिं, सयसुररमणीहिं
वांदीजतेहुयेजिनोंकेचरण, १४, अर्श[मस्सा], किटिभ, कोढ,
वंदियाजेसिपाया, १४, अरिस, किडिभ, कुड्ड,
गंठिया, वागांठे, कास, अतीसार, क्षय, ज्वर, व्रण, जिनावरोंकाविष,
गंठि, कासा, इसार, खय, जर, वण, लूआ,
श्वास, शोष, पेटकेरोग, नखोंमें, मूंमें, दांतोंमें, आंखमें, कूखमें,
सास, सोसो, दराणि, नह, मुह, दसण, च्छी, कुच्छि,
कानआदिरोग, वडेजिनवरदोनोंकेचरणोंका, सुप्रशाद, हरणकरो, १५,
कन्नाइरोगे, महजिणजुयपाया, सुप्पसाया, हरंतु, १५,

इत्यादि, भारी, दुःखितत्राससें, पक्खीमें, चोमासीमें,
इइ, गुरु, दुहितासे, पक्खिए, चाउमासे,
जिनवरकाजोडास्तवनकरणेसैं, अथवा संवत्सरीमें, पवित्र, पढो, सुणो,
जिणवरदुगथुत्तं, वच्छरेवा, पवित्तं, पढह, सुणह,
स्वाध्यायकरो, इसकोंध्याओचित्तमें, करो, जाणो, विघ्न,
सज्झा, एहझाएहचित्ते, कुणह, मुणह, विग्घं,
जिसकरकै, नाशकरोजल्दी, १६, इयविजयाराणीजितशत्रुराजा
जेण, घाएहसिग्घं, १६, इइविजयाजियसत्तु
केपुत्र, श्री, अजितनाथजिनेश्वर, तैसें, अचिराराणी विश्वसे
पुत्त, सिरि, अजियजिनेसर, तह, अइरा, विससे
नराजाकेपुत्र, पांचमेंचक्रवर्त्तिईश्वर, तीर्थंकर, सोलमें, शांतिनाथ,
णतणय, पंचमचक्कीसर, तित्थंकर, सोलसम, संति,
जिनमुझेंवल्लभ, अथवाश्रीजिनवल्लभसूरिः स्तवताहै, करोमंगलमेराहरो, पाप
जिणवल्लह, संतह, कुरुमंगलममहरउ दुरिय
समस्तनिश्चै, स्तवनाकरतेकूं, १७,
मखिलंपि, थुणंतह, १७, इतिद्वितीयस्मरणं ॥
नमस्कारकरकै, नमे, देवतोंकासमूह, मुगटोंकेमणियोंकेकिरणसें, रंगे
नमिऊण, पणय, सुरगण, चूडामणिकिरण, रंजि
हुये, मुनिःयोंके, चरणोंकाजुगल[जोडा], बडेडर, विशेषपणेनास करणे,
यं मुणिणो, चलणजुयलं, महाभय, पणासणं,
अच्छीस्तवनाकहताहूं, १, सडगयेहाथपांव, नख, मुख, दूरगई
संथवं, वुच्छं, १, सडियकरचरण, नह, मुह, निव्वु
बैठगईनासिका, विदरंगहुईलावण्यता, कोढवडेरोगरूपअग्निकी, झा
ड्डनासा, विवन्नलावन्ना, कुट्ठमहारोगानल, फु
लासें, समस्तपणेजलगयासवअंग, २, वहतुमारेचरणोंकीआराधना, रूप,
लिंगनिदड्डसव्वंगा, २, तेतुहचलणाराहण, सलिलं,
जलकीअंजलीउससें, वढाजोउमंग, वनकीदावानलसेजला, पहाडकेवृ
जलसिय, वड्डिउच्छाहा, वणदवदड्ढा, गिरिपा

क्षकीतरे, पायाफेरलक्ष्मीकों, ३, खोटीहवासें, उछलता, जलनिधि,
यवत्थ, पत्तापुणोलच्छि, ३, दुव्वाय, खुभिय, जल,
समुद्र, ऊपराऊपरीकल्लोलोंका, डरावणाशब्द, संभ्रातिडरसेंढीला
निहि, उब्भडकल्लोल, भीसणारावे, संभंतभयवि
गिरगयाअंग, नइयेलोकोनेंछोडाचलाणेकाव्यापार, ४, फटगईजिहाज
संठुल, निज्जामयमुक्कवावारे, ४, अविदलियजा
ऐसेपुरुष, क्षणभरमेंपातेहैं, वंछितकिनारोंकों, पार्श्वजिनराज
णवुत्ता, खणेणपावंति, इच्छियंकूलं, पासजिण
केचरणोंकाजोडा, नित्यअर्चेपूजै, जो, नमें, मनुष्य, ५, करडी
चलणजुअलं, निच्चंचिय, जे, नमंति, नरा, ५, खर
हवासेंसिलगीहुईवनदावानल, झालोंकीश्रेणी, मिलीभईसमस्त,
पवणुद्धयवणदव, जालावलि, मिलियसयल,
वृक्षोंकीसघनताकूं, जलाते भोलीमृगवधू [हिरणी], डरावणाशब्दकरती,
दुमगहणे, डज्झंतमुद्धमयवहू, भीसणरव,
डरावणेवनमें, ६, जगगुरूके, चरणदोनों, बुझादिया,
भीसणंमिवणे, ६; जगगुरुणो, कमजुयलं, निव्वाविय,
समस्ततीनभुवनकों खाणेवाली, जोस्मरणकरे, मनुष्य
सयलतिहुयणाभोयं, जेसंभरंति, मणुया,
नहींकरे, ज्वलन [अग्नि], डरउनोंकों, ७, विलसताहुआफण
नकुणइ, जलणो, भयंतेसिं ७, विलसंतभोग
डरावणा, देदीप्यमानलाल, नेत्र, तर२करतीदोजिह्वा,
भीसण, फुरियारुण, नयन, तरलजीहालं,
वडासांप, नयेमेघकीघटाजेसा, शस्त्रजेसाघातक, भयानकआकार, ८,
उग्गभुयंगं, नवजलय, सत्थहं, भीसणायारं, ८,
मानताहै, कीडे, जैसा, दूरसमस्तपणेहोय, विषम, जहर
मन्नंति, कीड, सरिसं, दूरपरिच्छूढ, विसम, वि
कावेग, तुमारा, नामकाअक्षर, प्रगटसिद्ध, मंत्र, भारी, मनु
सवेगा, तुह, नामक्खर, फुडसिद्ध, मंत, गुरुया, न

प्यलोकमें, ९, जंगलमें, भील, चोर, पुलिंद[मैणा], सार्दूल,
रालोए, ९, अडवीसु, भिल्ल, तक्कर, पुलिंद, सद्दूल,
सिंहोकाशब्द, डरावणेमें, डरसें, कांपता, कायर, लूंटते
सद्द, भीमासु, भय, विहुर, वुन्नकायर, उल्लूरिय
रस्तागीरके, सथवारेमें, १०, नहींछिपाया, विभवसार[धनमाल],
पहिय, सत्थासु १०, अविलुत्त, विहवसारा,
तुमाराहेनाथ, प्रणामसेंवहचोर, छोडदियाव्यापार, दूरगयेविघ्नजल्दी
तुहनाह, पणाम, मुत्तवावारा ववगयविग्घासिग्घं
पायेहितकारी, वंछितठिकाणेकूं, ११, जलती, अग्निजैसै
पत्ताहिय, इच्छियंठाणं, ११, पज्जलिया, नल
नेत्रजिसके, दूरतकफाडाहैमूंजिसनें, वडीकाया, नखवज्र
नयणं, दूरवियारियमुहं, महाकायं, नहकु
जैसैंसें, घातकिया, फाडाहै, हस्तीका, कुंभस्थल, खाणेकों, १२,
लिस, घाय, वियलिय, गयंद, कुंभत्थला, भोयं, १२,
जादाकरकेप्रनमेंहुयेप्रमयुक्तराजा, नख, मणि, माणक,
पणयससंभवपत्थिव, नह, मणि, माणिक्क,
प्रतिम, प्रतिविंवके, तुमारे वचन, शस्त्रोंकेधारणेवाले, सिंह
पडिय, पडिमस्स, तुह, वयण, पहरणधरा, सीहं
कोपेहुयेकोंभी, नहींगिणताहै, १३, चंद्रजैसाश्वेत, दंतमूसलजिसके,
कुद्धंपि, नगिणंति, १३, ससिधवल, दंतमुसलं,
लंबीसूंडउठाकै, वधायाहैउमंगजिसनें, कावरेहै, नेत्र, दोनों,
दीहकरुल्लाल, वड्डिउच्छाहं, महुपिंग, नयण, जुयलं,
पाणीसेभरी, नयेमेघकीघटाकेआकारवाला, १४, डरावणावडा,
ससिलिल, नवजलहरायारं, १४, भीमंमहा,
हस्ती, वहोतनजीकआयाभी, वहनहींगिणतेहैं, जोतुमारेचर
गयंदं, अच्चासन्नंपि, तेनविगिणंति, जेतुम्मच
णदोनों, मुनिःपतिरूपऊंचाई परजोचढाहै, १५, युद्धमें,
लणजुयलं, मुणिवइतुंगसमुल्लीणा, १५, समरंम्मि,

तीक्ष्ण, तलवारके, चोट, विशेषपणेवांधाहैउद्धुतचंध, जिसनें,
तिक्ख, खग्गा; भिघाय, पवद्धउद्धुयकबंधे,
वरछीयोंकेजखमसें, कटे, हस्तियोंकेवचे, छोडाहैसिसकारा, जादा
कुंतविणि, भिन्न, करिकलह, मुक्कसिक्कार, पउ
जिसनें, १६, जीताहै, अहंकारवाले, वैरी, राजा, राजाओंके,
रम्मि, १६, निज्जिय; दप्पुद्धर, रिउ, नरिंद, निवहा,
सुभट, यश, उज्वल, पातेहैं, हेपापोंकेशमाणेवाले, पार्श्वजिन,
भडा, जसं, धवलं, पावंति, पावपसमण, पासजिण,
तुमारेप्रभावसें, १७, रोग, पाणी, अग्नि, सांप,
तुहप्पभावेण, १७, रोग, जल, जलण; विसहर,
चोर, वैरी, सिंह, हस्ती, संग्रामादिडरोंकों, पार्श्वजिनकेनामकी
चोरा, रि, मयंद, गय, रणभयाइं, पासजिणनाम
अच्छीकीर्त्तनाकरणेसें, विशेषपणेंशमनहोतेहैंसव, १८, इसतेरमहाभयहर,
संकित्तणेण, पसमंतिसव्वाइं, १८, एवंमहाभयहरं,
पार्श्वजिनेंद्रका, अच्छास्तवन, उदार, भव्यजनोंकूंआनं
पासजिणंदस्स, संथव, मुयारं, भवियजणानं
दकर्त्ता, कल्याण, परंपरासें, निधानरूप, राजकाडर, यक्ष,
दयरं, कल्लाण, परंपर, निहाणं, रायभय, जक्ख,
राक्षस, खोटेस्वप्न, दुष्टस्वप्न, ग्रहोंकीपीडामें,
रक्खस्स, कुसमिण, दुस्सऊण, रिक्खपीडासु,
संध्यासुवेसांझदोनोंमें रस्तेमें, कष्टआनेसें, तैसैंरातमें, २०,
संझासुदोसु, पंथे, उवसग्गे, तहयरयणीसु, २०,
जोपढे, जोसमस्तपणेसुणे, रक्षाकरणेवाला, मानतुंगका,
जोपढइ, जोयनिसुणइ, ताणंकयणोय, मानतुंगस्स
हेपार्श्वपापोंकोंप्रशमावो, हेसमस्ततीनभुवनसेंपूजेभयेचरणोवाले.
पासोपावंपसमेओ, सयलभुवणच्चियचलणो,
२१ इतितृतीयंस्मरणंसमाप्तं
वहजयवंतहो, जयवंत, तीर्थ, जोइहां, तीर्थकेमालकवीरप्र

तंजयओ, जयइ, तित्थं, जमित्थ, तित्थाहिवेणवी
भूतें, अच्छाप्रवर्त्तीया, भव्यसत्वोंके, संतान[परंपरा]तकसुखपै
रेण, सम्मंपवत्तियं भव्वसत्त, संताणसुहजणयं
दाकर्त्ता, १, नासकियासमस्त, क्लेश, समस्तपणेहणदियेखोटेपरिणा
१, नासियसयल, किलेसा, निहयकुलेसापस
म, तारीफलायकशुभलेश्या, श्रीवर्द्धमानतीर्थकों, मंगलदेओ,
त्थसुहलेसा, सिरिवद्धमाणतित्थस्स, मंगलंदिं
वह, अरिहंत, २, समस्तजलायाकर्म्मबीज, दूसरी, परमेष्ठी
तु, ते अरिहा, २, निदड्ढकम्मबीया, बीया, परमेट्ठि
गुणकीसमृद्धि, सिद्धादेवीत्रिजगत्प्रसिद्ध, नासकरो,
गुणसमिद्धा, सिद्धातिजयपसिद्धा, हणंतु, दु
दोषोंकों, तीर्थका, ३, आचारकों, आचरते, पांचप्रकारकों,
त्थाणि, तित्थस्स,३, आयार, मायरंता, पंचपयारं,
हमेसप्रकाशकरते, आचार्यमहाराजका, तैसैंतीर्थका, समस्तहणोकु
सयापयासंता, आयरिया, तहत्तित्थं, निहयकु
तीर्थकों, प्रकाशकर्त्तोंकों, ४, सम्यक्श्रुतके, वचाणेवाले, उपाध्यायका,
तित्थं, पयासंतु, ४, सम्मसुय, वायगा, वायगाय,
स्यादवादके, वचाणेवालेवाचकका, प्रवचनके, निंदक, निंदाकरणेवाले,
सियवाय, वायगावाए, पवयण, पडणीय, कये
दूरकरो, सर्व, संघका, ५, मुक्तिसाधनेकों, उद्यमवंत,
वणंतु सव्वस्स, संघस्स, ५, निव्वाणसाहणु, ज्जय,
साधुओंके, पैदाकिया, सर्व, साहाय, तीर्थकेप्रभावक,
साहूणं, जणिय, सव्व, साहज्जा, तित्थप्पभावगा,
वह, हुओ, परमेष्ठी, यत्नकर्त्ता, ६, जिनोंकेपिछाडी,
ते, हवंतु, परमेट्ठिणो, जइणो, ६, जेणाणुगयं,
ज्ञान, मुक्तिकाफल, और, चारित्रभी, होय, तीर्थसंबंधीजो
नाणं, निव्वाणफलं, च, चरणमवि, हवइ, तित्थस्सदं

दर्शन, उसका, अमंगलदूरकरो, सिद्धिकरो, ७, छद्मस्थ, जो,
सणं, तं, मंगुलमवणेउ, सिद्धियरं, ७, नित्थम्मो
श्रुतधर्म्म, समस्त, भव्यशरीरी, वर्गकूं, किया, सुख, गुणों
सुयधम्मो, सम्मग्ग, भव्वंगि, वग्ग, कय, सम्मो, गुण
मैंअच्छीतरेरहे, संघकों, मंगल, सुख, इहां, देओ, ८,
सुट्ठियस्स, संघस्स, मंगलं, सम्म, मिह, दिसओ, ८,
रमणीकचारित्रधर्म्म अच्छीतरेपायेभव्यजीव, ओरमुक्तिसुख,
रम्मोचरित्तधम्मो, संपावियभव्वसत्त, सिवसम्मो,
समस्त, क्लेसकाहरणा, हुओ, हमेस, सकल, संघका, ९,
नीसेस, किलेसहरो, हवउ, सया सयल, संघस्स, ९,
गुणोंकेसमूहसेंभारी, ऐसेगुरुओंके, शिवसुखकीबुद्धिवाले, करो
गुणगणगुरुणो, गुरुणो, सिवसुहमइणो, कुणंतु,
तीर्थका, श्रीवर्धमान, प्रभु, प्रकटकियेका, कुशल,
तित्थस्स, सिरिवद्धमाण, पहु, पयडिअस्स, कुसलं,
समस्तका, १०, जीताहैप्रतिपक्षियोंकों यक्ष, गोमुख,
समग्गस्स, १०, जियपडिवक्खा, जक्खा, गोमुह,
मातंग, गज मुख, प्रमुख, श्रीब्रह्मशांति, संयुक्त,
मायंग, गय मुह, पमुक्खा, सिरिबंभसंति, सहिया,
करो, नयकी, रक्षा, मुक्ति, देओ, ११, अंबा, नासकरा, उपसर्ग,
कय, नय. रिक्खा, सिवं, दिंतु, ११, अंबा, पडिहय, डिंबा,
सिद्धिदाता, सिद्धाइका; प्रवचनकूं, चक्रेश्वरी, वैरोट्या,
सिद्धा, सिद्धाइया, पवयणस्स, चक्केसरि, वइरुट्टा,
शांतिदेवता, देओ, सुक्खोंकों, १२, शोले, विद्या,
संतिसुरा, दिसउ, सुक्खाणि १२, सोलस, विज्जा,
देवियां, देओ, संघकों, मंगल, विस्तारवाला, अच्छुप्ता,
देवीओ, दिंतु, संघस्स, मंगलं, विउलं, अच्छुत्ता
देवी,सहित, विख्यात, श्रुतदेवताके, संग, १३,
सहियाओ, विस्सुय, सुयदेवयाइ, समं, १३,

जिनशासनकी, कर, रक्षा, जक्ष, चौवीस, शासन,
जिणसासण, कय, रक्खा, जक्खा, चउवीस, सासण,
देवताभी, शुभभावहोकर, संताप, तीर्थका, हमेस,
सुरावि, सुहभावा, संतावं, तित्थस्स, सया,
प्रनाशकरो, १४, जिनप्रवचनमें, समस्तपणेरक्त, विसेपरंहित,
पणासंतु, १४, जिणपवयणंमि, निरया, विरया,
कुपंथसें, सर्वथा, येसर्व, टहलवंदगीकीकरणेवालियां, जोतीर्थकी,
कुपहाउ, सव्वहा, सव्वे, वेयावच्चकराविय, तित्थस्स,
हुओ, शांतिकरणेवाली, १५, जिनसिद्धांत, सिद्ध, अच्छारस्ता,
हवंतु, संतिकरा, १५, जिणसमय, सिद्ध, सुमग्ग,
कीयाहै, भव्यजीवोंके, पैदा, साहाय, गायाहैचैन,
विहिय, भव्वाण, जणिय, साहिज्जो, गीयरई,
गायाहैजस, सपरिवारकों, सुखदेओ, १६, घरकी, गोत्रकी,
गीयजसो, सपरिवारो, सुहंदिसओ, १६, गिह गुत्त
क्षेत्रकी, जलकी, थलकी, बनकी, पहाडोंकी, वसणेवाली, देव,
खित्त, जल, थल, वण, पव्वय, वास, देव
और, देवियां जिन, आज्ञामें, रहेहुयोंका, दुःख सर्व्व, समस्त,
देवी, ओ, जिण, सासण, ठियाणं, दुहाणि, सव्वाणि,
नाशकरो, १७, दश, दिग्पाल, संयुक्त, क्षेत्रपाल, न
निहणंतु, १७, दस, दिसिवाला, स, खित्तवालया, न
वोंग्रह, संयुक्तनक्षत्रोंके, जोगणियां, राहू, ग्रह, काल,
वग्गहा, सनक्खत्ता, जोइणि, राहू, ग्गह, काल,
फास, कुलक, अर्धपहरके, १८, साथकालके, कंटकके,
पास, कुलि, अद्धपहरेहिं, १८, सहकाल, कंटएहिं,
संयुक्तविष्टि, वत्स, कालवख्त, येसब, सवजगे
सविठ्ठि, वत्थेहिं, कालवेलाहिं, सव्वे, सव्वत्थ
सुखकों, देओ, सर्व्व, संघकों, १९, भवनपती,
सुहं, दिसंतु, सव्वस्स, संघस्स, १९, भवणवइ,

वाणव्यंतर, ज्योतषी, वैमानिकादिक, जोदेव,
वाणविंतर, जोइस, वेमाणियाय, जेदेवा, ध
धरणेंद्र, शक्रेंद्र, संयुक्त, खंडनकरो. पापोंकों, तीर्थका,
रणिंद, सक्क, सहिया, दलंतु, दुरियाइं, तित्थस्स,
२०, चक्र, जिनोंका, जाज्वल्यामान, चलताहै, आगे, जादाकरनाश
२०, चक्कं, जस्स, जलंतं, गच्छइ, पुरओ, पणासि
किया, अंधेरेकासमूह, वहतीर्थके, भगवानकूं, नमोऽस्तुवर्द्धमानप्रभूकों,
य, तमोहं, तंतित्थस्स, भगवओ, नमोऽत्थुवद्धमाणस्स,
२१, वह, जयवंतहो, जिनवीर, जिनोंकाअभीभी, सासन,
२१, सो, जयउ, जिणोवीरो, जस्सज्जवि, सासणं,
जगत्में, जयवंतहै, मुक्तिपंथ, साधनेकों, कुपंथ, नासकरणेकों,
जए, जयइ, सिद्धिपह, साहणं, कुपह, नासणं,
सर्व्वडर, मथनेकों, २२, श्री, ऋषभ, सेन, प्रमुख, हणा,
सव्वभय, महणं, २२, सिरि, उसभसेण, पमुहा, हय,
भय, निबंध, देओ, तिर्थकों, सर्व्व, जिनवरोंके,
भय, निवहा, दिसंतु, तित्थस्स, सव्व, जिणाणं,
गणधारी, १४५२, पापरहित, वंछित, सर्व, २३, श्रीवर्द्धमानस्वामी,
गणहारिणो, पाहं वंच्छियं, सव्वं, २३, सिरिवद्धमाण,
तीर्थकेमालकनें, तीर्थ, सुपुर्दकिया, जिनोंकों, अच्छा,
तित्थाहिवेण, तित्थं, समप्पियं, जस्स, सम्मं,
सुधर्मास्वामी, देओ, सुख, समस्त, संघकों, २४,
सुहम्मसामी, दिसउ, सुहं, सयल, संघस्स, २४,
प्रकृती[स्वभाव]के, भद्रकजो, कल्याण, देओ, सकल, संघकों,
पयइय, भद्दियाजे, भद्दाणि, दिसंतु, सयल, संघस्स,
ओर, देवताभी, निश्चै, अच्छीतरे, तीर्थकर, गणधरोंका, कथन,
इयर, सुरावि, हु, सम्मं, जिण, गणहर, कहिय,
करणेवालोंकों, २५, इसकों, जोपढै, तीनोंकाल, दुःसाध्यकाम उसके,
कारिस्स, २५, इय, जोपढइ, तिसंझं, दुस्सझं, तस्स,

नहींकुछभी, जगत्में, जिनेश्वरकी[वा जिनदत्तकी]दी, आज्ञामेंरहा,
नत्थिकिंपि, जए, जिणदत्ताणाइष्ठिओ, सु
अच्छीसिद्धकामनावाला, सुखीहोय, २६,
निठ्ठियठ्ठो, सुहीहोइ, २६, इतिचतुर्थस्मरणं ॥
मदरहित, गुणसमूहरूपरत्नोंकेसागर, आदरसंयुक्त,
मयरहियं, गुणगणरयणसायरं, सायरं,
प्रणामकरकै, सुगुरु, जिनपारतंत्रकों, समुद्रकीतरे, स्तव
पणमिऊणं, सुगुरु, जिणपारतंतं, उयहिव्व, थु
ताहूं, उनोंकोंनिश्चै, १, समस्तपणेमथडालामोहजोद्धारकों, समस्तहण
णामि, तंचेव, १, निम्महियमोहजोहा, निहयवि
दिया, विरोध, विशेषपणेनासकियासंदेह, नमेहुयेशरीरधारियोंकेवर्गकूंदिया,
रोहा, पणठ्ठसंदेहा, पणयंगिवग्गदाविय,
सुखकानिधान, अच्छेगुणोंकाघर, २, पायाअच्छेजतीपणेकीशोभा,
सुहसंदोहा, सुगुणगेहा, २, पत्तसुजइत्तसोहा,
समर्थ, परतीर्थकूं, पैदाकिया, संक्षोभ, तोडदिया, लोभ,
समत्थ, परतित्थ, जणिय, संखोहा, पडिभग्ग, लोह,
जोद्धारोंकों, दिखाया, अच्छावडेअर्थका, शास्त्रसमूह, ३, समस्तपणेहरडाला,
जोहा, दंसिय, सुमहत्थ, सत्थोहा, ३, परिहरिय,
शास्त्रबाधा, हणदियादुःखकादाघ, मुक्तिरूपअंबवृक्षकीसाखा,
सत्थवाहा, हयदुहदाहा, सिवंबतरुसाहा,
अच्छापायासुखकालाभ, क्षीरोदधिसमुद्रकीतरे, अगाध, ४,
संपावियसुहलाहा, खीरोदहिणिव्व, अग्गहा, ४,
अच्छेगुणीजनोंनें, करीहै, पूजा, जल्दी, रहितपाप, ग्रहण
सुगुणजण, जनिय, पुज्जा, सज्जो, निरवज्ज, गहि
करीहै, दीक्षा, शिवसुख, साधनकरणेतइयारभये, भवरूपपहाडकों,
य, पव्वज्जा, सिवसुह, साहणसज्जा, भवगुरुगिर,
चूर्णकरणेवज्रजैसै, ५, आर्य, सुधर्म्मास्वामीप्रमुख, गुणोंकेसमूहके
चूरणेवज्जा, ५, अज्ज, सुहम्मपमुहा, गुणगणनि

वहणेवाले, सुरेंद्रोंनेंकियावडीपूजा, उनोंका, तीनोंकालमें, नाम, नाम
वहा, सुरिंदविहियमहा, ताण, तिसंझं, नामं, ना,
क्या, नहींनासकरे, जीवोंकेपापोंका, ६, अंगीकारकिया, जिनदेवकों,
मं, नपणासइ, जियाणं, ६, पडिवज्जिय, जिणदेवो,
देवाचार्य; दुःखसेंअंतवालेभवोंकेहर्त्ता, श्रीनेमिचंद्रसूरिः,
देवायरिओ, दुरंतभवहारी, सिरिनेमचंदसूरी,
उद्योतन, सूरिः, अच्छेगुरु, ७, श्रीवर्द्धमानसूरिः
उज्जोयणसूरिणो, सुगुरु, ७, सिरिवद्धमाणसूरी,
प्रकटकियाहै, सूरिमंत्रका, माहात्म, समस्तपणेह,
पयडीकय, सूरिमंत, माहप्पो, पडिहय,
णदियाकपायकापसार, शरदऋतुकेचंद्रजैसै, सुखपैदाकरणेवाले, ८,
कसायपसरो, सरयससंकुव्व, सुहजणओ, ८,
सुखशीलिये, जोचोर, उनोंकोंपकडणेवाले, विशेपचलेहुओंकों, निश्चलकर्त्ता
सुहसील, चोर, चप्परण, पचलो, निचलो जिण
जिनमतमें, युगप्रधानोंके, सिद्धांतके, जाननेवाले, नमनक-
मयंम्मि, जुगपवर, सुद्धसिद्धंत, जाणओ, पण
राहै, अच्छेगुणीजनजिनोंकों, ९, सन्मुख, दुर्लभ, पृथ्वीवल्लभ[राजा]के,
य, सुगुणजणो, ९, पुरओ, दुल्लह, महिवल्लहस्स;
अणहिल, पाटणमें, प्रगट, कहा[निरुत्तरकिया]विचारकै,
अणहिल्ल, वाडए, पयडं, मुक्काबियारिऊणं,
सिंहकीतरे, द्रव्यलिंगीगजोंकों, चैत्यवासएकजगेरहणानिषेधा, १०, दशमेंआ-
सीहेणिव, दव्वलिंगिगया, १०, दसमच्छे
श्चर्यरूप, रात्रीमें, चमकतेहुयेफैलेहुये, मनोमतीआचार्यमई, अंधकारकों,
रय, निसि, विप्फुरंत, सच्छंदसूरिमय, तिमिरं,
नये सूर्यकीतरे, सूरिः[आचार्य]जिनेश्वरनें, हणामथनकिया, दोषोंसें,
सूरेणव, सूरिजिणेसरेण, हयमहिय, दोसेण,
११, अच्छीकवितापणेसेंपाई, कीर्त्ति, प्रगटकरीतीनोंगुप्ती, विशेषशां
११, सुकइत्तपत्त, कित्ती, पयडियगुत्ती, पसंत

तिसुभमुर्ति, विशेषकरनासकरा, परवादियोंकातेज, ऐसेजिनचंद्रसूरिः,
सुहमुत्ती, पहय, पर वायदित्ती, जिणचंद,
जतीश्वरमंत्रीजिनोंके, १२, प्रगटकियानवअंगसूत्रका अर्थ, रत्नोंकेभंडार,
जईसरोमंती, १२, पयडियनवंगसुतत्थ, रयणकोसो,
विशेषनाशकराउत्कृष्टद्वेषकों, भवोंसेंडरे, ऐसेभविकजनोंकेमनकों,
पणासियपओसो, भवभीय, भवियजणमण,
कियाहैसंतोष, विशेषपणेगयादोषजिनोंसें, १३, युगप्रधानकालिकसूरिः
कयसंतोसो, विगयदोसो, १३, जुगपवरागम
केआगमकेतत्वकीप्ररूपणा, करणेमेंवद्धकच्छ[कटिवद्ध], श्रीअभयदेव
सारपरूवणा, करणवंधुरोधणियं, सिरिअभय
सूरिः, मुनियोंमेंप्रधान, उत्कृष्टसमताकेधरणेवाले, १४, कियाहै
देवसूरी, मुणिपवरो, परमपसमधरो, १४, कय
श्वापदोंकोंसंत्रास, सिंहकीतरेहिरणोंका, तोडा, संदेह, गत
सावइसंतासो, हरिव्वसारंग, भग्ग, संदेहो, गय
सिद्धांत[मिथ्यात्वि]योंका, अहंकारदलकै, चाखाहै, प्रवानकाव्योंकारस,
समय, दप्पदलणो, आसाइय, पवरकव्वरसो,
१५, डरावणाभवरूपगहनवनमें, दिखाया, गुरुवचनरूपरत्नोंका,
१५, भीमभवकाणणंमिय, दंसिय, गुरुवयणरयण,
निधान, समस्त, जीवोंके, गुरु, सूरिःजिनवल्लभजय
संदोहो, नीसेस, सत्त, गुरुओ, सूरीजिणवल्लहो
वंतहै, १६, सर्वोपरिरहाहै, सच्चरणपांववाचारित्र, चारअनुयोगोंसेंयुगप्र
जयइ, १६, उवरिठ्ठिय, सच्चरणो, चउरणओगप्प
धान, इसीसेंसच्चरण[चारित्र], असमतारूपरागकोंमथनकर, उंचेमुख,
हाण, सच्चरणो, असममयरायमहणो, उड्ढमुहो,
दिखातेहुये, जिनोंकेहाथ, १७, दिखलायारहितमलनिश्चल, इंद्रियों
सहइ, जस्सकरो, १७, दंसियनिम्मलनिच्चल, दंत
कासमूह, नहींगिणाप्रतिपक्षी८४श्वापदोंकाडर, भारीहैवा
गणो, गणियसावओत्थभओ, गुरुगिरिगुरुओ

णीवडेपहाडजैसीउंची, सूरिःश्रीजिनवल्लभहोतेभये, १८, युगप्रधानआ
सरहुव्व, सूरीजिणवल्लहोहुत्था, १८, जुगपवराग
गमअमृतहैहाथमें, संतोपितमनकियाहैभव्योंका, जिसकरकै
मपीयूसपाण, पीणियमणाकयाभव्वा, जेणजि
जिनवल्लभ, गुणोंसेंभारीउनोंकोंसवतरेवंदनकर्त्ताहूं, १९, देदीप्यमान
णवल्लहेणं गुरुणातंसव्वहावंदे, १९, विप्फुरिय,
प्रधान, प्रवचन, शिरमेंमणिजैसे, वडी, दुर्धरक्षमाजिनोंकी, जोवाकी
पवर, पवयण, सिरोमणी वुड्ढ, दुव्वहखमोय, जोसे
केसूरिःयोंमेंसेषकीतरे, सोभतेहैं, जीवोंकेरक्षाकरता, २०, सत्चारित्र
साणंसेसुव्व, सहइ, सत्ताणताणकरो, २०, सचरिया
करकेपूर्ण, सद्गुरु, पारपायाहैतंत्रोंके, वहणेवाले, जयवंतरहोश्री
णमहीणं, सुगुरूणं, पारतंत, मुव्वहइ, जयउजिन
जिनदत्तसूरिः श्रीनिधान, विशेषपणेनमताहै, मुनिःतिलक, २१,
दत्तसूरि, सिरिनिलओ, पणय, मुणितिलओ, २१,
इतिगुरुपारतंत्र्यपंचमस्मरणं, ॥
जल्दीहरोविघ्नोंकों, जिनेश्वरवीरकीआज्ञाके अनुसारचल
सिग्घमवहरउविग्घं, जिणवीराणाणुगामिसं
णेवालेसंघका, श्रीपार्श्वजिन, थंभन, पुरमेंरहे, वंछित
घस्स, सिरिपासजिणो, थंभण, पुरट्ठिओ, निट्ठि
देणेवाले, १, गौतम, सुधर्म्मा, प्रमुख, गणपति,
ग्यानिट्ठो, १, गोयम, सुहम्म, पमुहा, गणवइणो,
रचाहै, भव्यजीवोंकेसुख, श्रीवर्द्धमान, जिनकेतीर्थमें,
विहिय, भव्वसत्तसुहा, सिरिवद्धमाण, जिणतित्थ,
स्वस्ति[कल्याण]वहकरोनिरंतर, २, सक्रेंद्रादिक देवताजो, जिनेश्वरके
सुत्थयंतेकुणंतुसया, २, सक्काइणोसुराजे, जिणवेया
टहलवंदगीकरणेवालेहैं, दूरकर, विघ्नोंकोंशीघ्र, हुओ
वच्चकारिणोसंति, अवहरिय, विग्घसिग्घा, हवंतु
वहसंघकोंशांतिकर्त्ता, ३, श्रीथंभणपुरमेंरहे, पार्श्वनाथस्वामीके,

तेसंघसंतिकरा, ३, सिरिथंभणयट्ठिय, पाससामी,
पदकमलमेंविशेषपणेनमेंप्राणियोंका, समस्ततोडडाला, पापोंकावृंद,
पयपउमपणयपाणीणं, निद्दलिय, दुरियविंदो,
धरणेंद्रहरो, पापोंकों, ४, गोमुखप्रमुख, यक्ष,
धरणिंदो, हरउदुरियाइं, ४, गोमुहपमुह जक्खा,
समस्तपणेहनदियाप्रतिपक्ष, पक्षीयोंकालक्षउनोंनें, कियाअच्छेगुण
पडिहयपडिवक्ख, पक्खलक्खाते, कयसुगुण,
वंतसंघकीरक्षा, हुओअच्छीतरेप्रासमोक्षसुख, ५, अप्रतिचक्रा,
संघरक्खा, हवंतुसंपत्तसिवसुक्खा, ५, अप्पडि
देवीप्रमुख, जिनशासनके, देवतादिक, जिनकोंनमेंपुरुषोंका,
चक्का,पमुहा, जिणसासण, देवयाइ, जिणपणया,
सिद्धायिकादेवीसंयुक्त, हुओ, संघकी, विघ्नोंकेहरणेवाली, ६,
सिद्धाइयासमेया, हवंतु, संघस्स, विग्घहरा, ६, स
शक्रकेआदेशमेंसाचोरपुरमेंरहा, वर्द्धमान, जिनराजकाभक्त,
क्काएससासच्चउरपुरट्ठिओ, वद्धमाण, जिणभत्तो,
श्रीब्रह्मशांति, यक्ष, रक्षाकरो, संघकीविशेपयत्नसें, ७,
सिरिबंभसंति, जक्खो, रक्खउ, संघंपयत्तेणं, ७,
क्षेत्रके, घरके, गोत्रके, शंतानके, देशके, देवताभी, देवियां,
खित्त, गिह, गुत्त, संताण, देस, देवावि, देवया,
उनोंका, निर्वाणपुरके, पंथीजन, भव्योंके, करो, सुक्खोंकों,
ताओ, निव्वुइपुर,पहियाणं, भद्दाण, कुणंतु, सुक्खाणि,
८, चक्रेश्वरीचक्रधारिणी, विधि, पक्षके, वैरियोंका, छेदडाला
८, चक्केसरिचक्कधरा, विहि, पह, रिओ, च्छिन्नकं
गरदन, धणियाणी, मुक्तिकेसरणमेंलगे, संघका, सर्वथाप्रकारे
धरा, धणियं, सिवसरणलग्ग, संघस्स, सव्वहा,
हरो, विघ्न, ९, तीर्थपति, वर्द्धमान, जिनेश्वरके,
हरउ, विग्घाणि, ९, तित्थवइ, वद्धमाणो, जिणेसरो,
संग, अच्छेसंघकरकै, जिनचंद्र, अभयदेव, रक्षाकरो, जिन

संगउ, सुसंघेण, जिणचंदो, भयदेवो, रक्खउ, जिण,
वल्लभप्रभु, मुझें, १०, वहजयवंतहो, वर्द्धमान, जिनेश्वर,
वल्लहोपहुमं, १०, सोजयउ, वद्धमाणो, जिणेसरो,
दिनेश्वरकीतरे, हणदियाअंधेरा, जिनचंद्र, अभयदेव, प्रभुतायुक्त,
णेसरुव्व, हयतिमिरो, जिणचंदा, भयदेवा, पहुणो,
जिनवल्लभ, जयवंतहो, ११, गुरुजिनवल्लभकेचरण,
जिणवल्लहो, जयइ, ११, गुरुजिणवल्लहपाए,
अभयदेव, प्रभुताके, देणेवालेकोंवादताहूं, जिनचंद्रयतियोंकेईश्वर,
भयदेव, पहुत्त, दायगेवंदे, जिणचंदजईसर,
वर्द्धमान, तीर्थकीवृद्धिकरणेकूं, १२, जिनदत्तआज्ञाकूंअच्छीतरे
वद्धमाण, तित्थस्सवुद्धिकए, १२, जिणदत्ताणंसम्मं,
मांने, करे, जो, करावै, मनसें, वचनसें, का
मन्नंति, कुणंति, जेय, कारंति, मणसा, वयसा, व
यासें, जयवंतहो, साधर्म्मी, वहभी, १३, जिनदत्तगुण,
उसा, जयंतु, साहम्मिया, तेवि, १३, जिणदत्तगुणे,
ज्ञानादिक, निरंतर, जो, धरे, धरावै, दिखाया स्याद्वा
नाणाइणो, सया, जे, धरंति, धारंति, दंसिय, सिय
दपद, नमताहूं, सौधर्मेंद्रादिसाधर्मि, वहभी, १४,
वायपए, नमामि, साहम्मिया, तेवि, १४, इतिषष्ठं
स्मरणं ॥

उवसग्गहरंपासं इत्यादि सप्तमस्मरणं ॥

अठपहरीपोसहविधि ।

प्रथम जमीन प्रमार्जकर एक खमासमण देकर इरियावही पडिक्कमै ४ नवकारका काउसग्गकर प्रगट लोगस्सकहै फेर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिस्सह पोसह मुहपत्ती पडिलेहूं, पडिलेहे इच्छाका० संदि० पोसह संदिस्साउं पीछे इच्छं कहके खमास० इच्छाका० सं० पोसहठाऊं खमास० झुकता हुआ खडा रहकै, मुखपर मुहपत्ती देकर ३ नवकारगिणे, इच्छकार भगवन पसाउकर पोसह दंडक उच्चरावोजी, करेमिभंते पोसहं ये पाठ ३ वेर उच्चरे पीछे खमासमण देकर इच्छाका० सामायक मुंहपत्ती पडिलेहूं दूसरी खमासमण देकर मुहपत्ती पडिलेहे फेरखमासमणदेके सामायक संदिस्साउं, फेर खमासमण देकर, खडा होकर, ३ नवकार, ३ करेमिभंते उच्चरे, खमासमण देकर वैसणो संदिस्साउं फेर खमासमण देकर वैसणोठाउं, फेर दोय खमासमण देकर, सिझाय संदिस्साउं, सिझाय करूं, खडा होकर आठ नवकारका सिझाय करै, फेर दोय खमासमणसैं पांगरणोसंदिस्साउं, पांगरणो पडिग्गहूं, इत्यादिसामायककी विधिकरै, लेकिन् करेमिभंते उच्चरे वाद, इरियावही नहीं पडिक्कमैं, क्योंकी पहली पडिक्कमली इसवास्ते, पीछै चैत्यवंदन जयवीयरायतक करकै कुसुमण दुस्समिणका काउसग्गकर फेरराई पडिक्कमणाकरै, लेकिन् इतना विशेष है ४ थुईसैं देव वांदे पीछै, खमासमण देकर इच्छाका० सं० बहुवेलं संदिस्साउं फेर खमास० इच्छाका० बहुवेलं करूं, तीन खमास० आचार्यजीमिश्र, १ उपाध्यायजी मिश्र २ सर्व्व साधूजीनैं त्रिकालवं० फेर कम्मभूमि २ यह चैत्यवंदन करकै सिझाय करै फेर पडिलेहण करै दोय खमासमणसैं इच्छाका० सं० पडिलेहण करूं, पीछै मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछे दोय खमासमणसैं, अंग पडिलेहण संदिस्साउं, अंग पडिलेहण करूं, इच्छं कहकै धोती कणदोरा पडिलेहके वस्त्र पहनैं खमासमण देकर इच्छकार भगवन् पसाउकरी पडिलेहण करावोजी, पीछै थापनाचार्यकी पडिलेहण करै पीछै खमासमण देकर इच्छाका० सं० उपधिमुंहपत्ती पडिलेहूं इच्छं कहकै मुंहपत्ती पडिलेहे, दोय खमासमणसैं इच्छाका० सं० ओही पडिलेहण संदिस्साउं, ओहि पडिलहेण करूं पीछे २४ थंडिलां इसतरे करै, आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे १ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे २ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ३ ये शय्याके दहणेतरफ करै, आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे १ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे २ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ३ ये ३ शय्याके वांयेंतरफ करै, आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे १ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे २ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ३, ये ३ दरबज्जेके भीतर दहिणेतरफ पडिलेहे, आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे १ आगाढे मझे पासवणे

अहियासे २ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ३, ये तीन दरवजेके भीतर वांयेंतरफ पडिलेहे, अणागाढे उच्चारे पासवणे अणहियासे १ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे २ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ३ ये ३ दरवजेके बाहिर दहणे तरफ पडिलेहे, अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे १ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे २ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ३ ये ३ दरवजेके बाहिर वांयेंतरफ पडिलेहे, अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे १ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे २ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ३ ये ३ दस्त पेसावकी जगे दहणे तरफ पडिलेहे, अनागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे १ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे २ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ३ इसतरे २४ थंडिला पडिलेहे पीछे इच्छं कहके कंवल कपडे आदिक पडिलेहके पोसहसाला प्रमार्जके काजा विधिसैं परिठावै, खमासमण देकर इरियावही पडिक्कमे १ लोगस्सका काउसग्गकर प्रगट लोगस्सकहै पीछे खमासमण देकर इच्छाका० सं० सिझाय संदिस्साउं सिझाय करूं पीछे १ नवकार कहकै उपदेशमाला सिझाय जो पहले लिखा है सो पढे पीछे १ नवकार कह धर्म्म ध्यान करै, पूणपहर दिन चढेवाद उग्घाडा पोरिसी अथवा वहुपडिपुन्ना पोरिसी कहकै खमासमण देकर इरिया वही पडिक्कमकै १ लोगस्सका काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहकै इच्छामि खमासम० इच्छका० सं० पडिलेहण करूं मुहपत्ती पडिलेहके पाणी पात्रादिक पडिलेहके रक्खे, फेर सिझाय ध्यान करै,

॥ अथ देववंदनविधि ॥

॥ कालवेला. देहरे आवस्सही कहकै जाकर ५ शक्रस्तवसैं देववांदेसो लिखते हैं. तीन प्रदिक्षिणा देकर ३ वेर नमस्कार जमीनप्रमार्जकै पुरुष प्रभूकै दहणे तरफ स्त्री होय तो वांयें तरफ वैठै इच्छाका० सं० भगवन् चैत्य वंदन करूं चैत्य वंदन कहै फेरनमोत्थुणं सव्वेत्तिविहेण वंदामितक कहके फेर खडा होकर इरिया वही पडिक्कमैं १ लोगस्सकाका उसग्ग प्रगट लोगस्स प्रमार्जकर वैठे, ३।४।५ आदि चैत्यवंदन कहकै जंकिंचिनामतित्थं नमोत्थुणं खडा होकर अरिहंतचेइयाणं करे मिका० वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग करकै नमोर्हत्सिद्धाचा० कहकै थुईकी १ गाथा कहै, सो लिखते हैं, चउवीसै जिनवर प्रणमूं हूं नितमेव, आठमदिन करिये चंद्राप्रभुनी सेव, मूरति मनमो है जाणै पूनमचंद, दीठां दुख जावै पावै परमानंद १, पीछै लोगस्स कहे, सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू० १ नवकारका काउसग्ग फेर थुईकी दूसरी गाथा कहै, मिल चउसठ इंद्र पूजै प्रभुजीना पाय, इंद्राणी अपछर करजोडी गुणगाय, नंदीश्वरद्वीपेमिल सुरवरनी कोड, अठाई महोच्छव करता होडाहोड २, फेर पुख्खरवरदी० कहै सुयस्स भगवओ करेमि काउसग्गं वंदणव० अन्नत्थू० १ नवकारका का-

उसग्ग पारकै, नमोर्हं० कहके, सेत्रुंजा शिखरे जांणी लाभ अपार, चो मासे रहिया गणधर मुनिपरिवार, भवियणनैंतारै देई धर्म उपदेश, दूधसाकरथी पिणवांणी अधिक-विसेस, ३ पीछै सिद्धाणं बुद्धाणं कहकै वेयावच्चगराणं० अन्नत्थु० १ नवकारका का-उसग्ग पारकै, पोसो पडिक्कमणो करिये व्रत पच्चखाण, आठमतपकरतां आठकरमनीहाण, आठमंगलथायै दिन२कोडि कल्याण, जिनसुखसूरिकहैइम शासनसूरिसुहझाण ४, पीछै नीचै वैठकै नमोत्थुणं० फेर अरिहंतचेइयाणंक० वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका का-उसग्ग थुईकी गाथा लोगस्स दूजी १ थुईकी गाथा, इसी तरे पुख्खरवर० तीसरी गाथा सिद्धाणं बुद्धाणं० चोथी गाथा कहकै नीचै वैठ नमोत्थुणं कहै नमोर्हत् सिद्धा० कहकै वडा स्तवन कहै पीछै जयवीयराय कहै फेर नमोत्थुणं सव्वेतिविहेण वंदामि तक कहै, इति पांचेशक्रस्तवे देववंदनविधि ॥

[पीछै निस्सही कहकै पोसह सालामैं आकर, इरिया वही पडिक्कमकै १ लो-गस्सका काउसग्गकर प्रगट लोगस्स कहकै धर्म्म ध्यान करै, तिविहार उपवास क्रिया हो तो पच्चख्खाणका वख्त पूरा हुये वाद जल पीणेकूं पच्चख्खाणपारे, खमासमण देकर इरिया वही पडिक्कमै फेर खमासमण देकर इच्छाका० सं० भगवान् पच्चख्खाण पारवा मुंहपत्ती पडिलेहूं इच्छं कहकै खमासमण० मुंहपत्ती पडिलेहै फेर खमास० इच्छाका० सं० पाणहार असुक पच्चख्खाणपारूं गुरु कहे पुणोत्तिकायव्वो फेर यथाशक्ति कहकै, खमासमण०, इच्छाका० सं०, पाणहारपारूं, गुरु कहै, आयारो नमोत्तव्वो, पीछे तहत्ति कहके, पारणेका पच्चख्खाण पहली लिखा है सो ३ वेर पढके नवकार गिणके, चैत्य-वंदन करै, क्षणमात्र सिझायकर यथाशंभव अतिथि संविभागकर, जलवावरै, उपधान-वांही पच्चख्खाण पोरसी प्रमुखपार आहार करै आसण बैठा ही दिवस चरम पच्चख्खे पीछै इरिया वही पडिक्कमकै चैत्यवंदन करै ये चैत्यवंदन आहार संवरणवास्ते है इतना विधान उपधानवाहीका है,

फेर बहिर्भूमी जाणा होय तो वस्त्रवदलकर आवस्सही कहके उपयोगीपणे निर्जीव जमीनपर मलमूत्रपरठणेकै वख्त अणुजाणह जस्सुग्गहोकहकै पूर्व उत्तर सूर्य गामआदिक कूं पीठ नहीं दैता मलमूत्र परिठवै, शुद्धहोकर वोसिरामि ३वेर कहै, पोसही शालामैं निस्सही कहकै प्रवेशकर इरियावही पडिक्कमै खमासण देकर इच्छाका० सं० गमणाग-मण आलोयहं इच्छं कहके गमणागमण आलोवै आवंति, जंतेहिं, जंखंडियं, जंविराहियं, तस्समिच्छामिदुक्कडं, सांझकी पडिलेहणकी वख्त इरियावही पडिक्कमैं, फेरखमासमण०, इच्छाका० सं०, पडिलेहणकरूं फेर खमास० इच्छाका० सं० पोसहसाला प्रमार्जूं, इच्छं कहकै मुंहपत्ती पडिलेहे, दोयखमासमणसैं अंगपडिलेहणसंदिस्साउं, अंगपडिलेहण करूं, दंडासणा, पूंजणी, प्रमुखप्रमार्जकै, पोसहशालाप्रमार्जै, फेरकाजेकों देखै, वाद

एकांतमें, काजा, विखरता परठै, इरियावही पडिक्कमें, खमास० इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावोजी, पीछे स्थापनाचार्य पडिलेहके थापे खमास० इच्छाका० सं० मुंहपत्ती पडिलेहूं, इच्छंकहके, खमास० मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछे दोय-खमासमणसैं इच्छाका० सं० सिझायसंदिस्साउं, सिझायकरूं, क्षणमात्र सिझायकर, तिविहार उपवास किया होय तो, गुरुमुख पाणिहारका पच्चख्खाण करै, उपधानवाही भोजनकरा होयतो दोवांदणा देकर चोविहार या पाणिहारपच्चख्खे, पीछे खमासमण० इ-च्छाका० सं० उपधि थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं खमासमण० इच्छाका० सं० उप-धिथंडिलापडिलेहं इच्छं कहके दोयखमासमणसैं इच्छाका० सं० वैसणोसंदिस्साउं वैसणो ठाउं कहके वैठै वस्त्रकंवलादिकपडिलेहे पूंजणीकूं मुंहपत्तीसैं पडिलेहै धोती कणदोराप-डिलेहे उपधानवाही भोजनकराहोय वह पहले धोती कणदोरा पडिलेहेवाद वस्त्रकंबल-पडिलेहै पीछें आगे मुजव २४ थंडिला पडिलेहै पीछै पक्षी चोमासी संवच्छरी अथवा-देवसी पडिक्कमण करे देव सियंआलोएमि पाठकहे पीछै ठाणेक्कमणे चंक्कमणे ये पाठ कहै इच्छाका० सं० सिझायसंदिस्साउं सिझाय करूं ३ नवकारगुणे, प्रतिक्रमण कियेवाद सिझायकरै पीछे पूणपहर रातगये वहुपडिपुन्नापोरसीकहकै खमासम० इरियावही पडिक्कमै, [अव रात्रीसंथाराविधि लिखते हैं,]

॥ खमासमण० इच्छाका० सं० राईसंथारा मुंहपत्ती पडिलेहूं इच्छं कहके खमासमण० मुंहपत्ती पडिलेहे खमासमण० इच्छाका० सं० राइसंथारासंदिस्साउं, खमासमण० इच्छा-का० सं० राइसंथाराठाउं, इच्छं कहके चउक्कसायका चैत्यवंदनकरै जयवीरायतक पीछै जमीनप्रमार्जकै संथारा उत्तरपट्टा पाथरे फेर शरीरप्रमार्जके निस्सही ३ कहके संथारेपरवैठे तीननवकार तीनकरेमिभंते कहकै णमोंखमासमणाणं इत्यादि राईसंथारा पूरापढै, वायां हाथ मस्तकनीचैदेकर सोवै निद्रा नहीं आवे जहांतक मुनियोंके गुणविचारे, शरीरपूंजके पसवाडाफेरे देहशंकावास्ते उठे तो आसजशब्द कहता देहशंका दूरकर पीछा आकर इरियावही पडिक्कमें जघन्यसेजघन्य ३ गाथाकी सिझायकरकै सोवे रातके पिछलेपहर ऊठके नवकारगुण इरियावही पडिक्कमे खमासमण देकर कुसुमिण दुस्सुमिणका १६ न-वकारका काउसग्गकरै फेर पूर्वोक्तविधिसैं सामायक लेवै लेकिन् इरियावही नहीं पडि-क्कमे, दोयखमासमणसैं सिझायसंदिस्साउं सिझायकरूं ८ नवकारकी सिझायकरे फेरराई पडिक्कमणकरे राइयं आलोएमि कहेवाद, संथारा उवट्टणकी, आउट्टणकी, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी सव्वस्सविराइय दुच्चिंतिय दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय इच्छंतस्समिच्छामिदु-क्कडं, पडिलेहणकीवख्त पूर्वोक्तमुजव पडिलेहणकरे काजानिकाल इरियावही पडिक्कमै दोय-खमासमणसैं सिझायसंदिस्साउं सिझायकरूं उपदेशमाला पढे,

॥ अथ पोसहपारणविधि लिख्यते ॥

[खमासमणदेयर, मुंहपत्ती पडिलेहे, खमासमण देकर, इच्छाका०, सं०, पोसह-पारूं, गुरु कहे पुणोत्तिकायव्वो, यथाशक्ति कहके खमास० इच्छाका० सं० पोसहपार्युं, गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो, तहत्तिकहके, खमासमण० झुकताहुवा खडाहोकर ३ नव-कार गुणके, खमासम० मुंहपत्ती पडिलेहे फेर खमासमण० इच्छाका० सं० सामायक पारूं, गुरु कहे पुणोत्तिका० यथाशक्तिकहकै खमास० इच्छाका० सं० सामायकपार्युं गुरुकहे आयारो नमोत्तव्वो, तहत्तिकहके खमासमण देकर झुकता खडारहकर हाथजोड मुंहपत्ती मुखदेकर ३ नवकार गिणे संडासाप्रमार्जे गोडालिये वैठ मस्तकनमाय भयवं-दसणभद्दो, इत्यादि कहे, देहरे जाकर देवजुहारे साधूकूं पडिलाभ अतिथिसंविभागकर शेषवचे आहारसैं आप आहार करै, इति अठपहरी पोसहविधिः ॥

॥ अब दिनकों चौपहरी पोसहविधि ॥

॥ पहिले उपगरण पडिलेहके काजानिकाल इरियावही पडिक्कमे खमासमणदे इच्छाका० सं० पोसहमुंहपत्ती पडिलेहे और विधि पहले लिखे मुजव लेकिन् पोसहदंडक उच्चरते जावदिवसं पज्जुवासामी कहे फेर सामायककी विधि सब करै चैत्यवंदन कुसुमिण दुस्स-मिणका काउसग्ग करके पडिक्कमणा राईकरे दोयखमासमणसैं वहुवेलं संदिस्साउं, वहुवेलं करूं, अगर पहले गुरुसंग प्रतिक्रमण करा होय तो, पडिक्कमणकेवाद, जो कप-डादिक पडिलेहके रख्खाहोय तो पोसह सामायक विधी करै, दोय खमासमणसैं बहुवे-लसं० बहुवेलकरूं, तथा जो गुरुसैं अलग, प्रतिक्रमणकरा होय तो, गुरुपास आयके, पोसहसामायककी सब विधि करै, आलोयणखामणादिकके वास्ते मुंहपत्ती पडिलेहके २ वांदणां देवै इच्छाका० सं० राइयं आलोउं फेर खमास० देके इच्छाका० सं० अ-ब्भूट्ठिओमि अ० सब पाठ कहै, पहले नवकारसीवगेरे पच्चख्खाण किया होय तो उपवा-सकाकरे दोयखमासमणसैं वहुवेलसं० वहुवेल करूं० इसतरे ३ प्रकारहै, पडिलेहणपहले-करीहै, तोभी खमासम० इच्छाका० सं० भ० पडिलेहण, संदिस्साउं, पडिलेहणकरूं, मुंहपत्ती पडिलेहे, पीछेदोखमास० अंगपडिलेहण संदिस्सा करकै मुंहपत्ती पडिलेहे, फेर खमास० इच्छा कार भगवन् पसाउकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी, खमासमण० इच्छा-का० सं० उपधिमुंहपत्ती पडिलेहं कहके कोईभी वस्त्रविगर पडिलेहे रहा होय तो पडि-लेहे नहीं तो आसणपडिलेहे, दोयखमा० सिज्झायसंदिस्साउं सिज्झायकरूं उपदेशमाला-सुणे, वाकीविधि अठपहरी पोसहमैं लिखेमुजव, लेकिन् अठपहरीपोसहवाला पिछलीरातकों सामायकनहीं लेवै, चोपहरीपोसहवाला, पिछलेपहर, पच्चख्खाणकियेवाद, दोयखमास-मणदेकर, ओहिपडिलेहणसंदिस्साउं, ओहिपडिलेहणकरूं, लेकिन् थंडिलानहींकरै ये-दिनसंबंधीपोसहमैं विशेषविधिहैसोलिखीहै इति ॥

॥ अथरातके चोपहरी पोसहकी विधि ॥

किसीनैं दिनका चोपहरी पोसहकियाहै, और सांझकूं पडिलेहणकीवख्त, रातके पोसहकरणेका फेर भावहुआ, तब पच्चख्खाणकियेपीछै, दोयखमासमणसैं, पोसहमुंहपत्तीपडिलेहके ३ नवकार गिणके, पोसहदंडक ३ वेरउच्चरता, जावरत्तिं पज्जुवासामि, असा-पाठकहे, पीछेसामायकआगेसुजबलेवै,दोयखमासमणसैं सिझाय संदिस्साकर ८ नवकारगिणे, वेसणासंदिस्सावे, पांगरणासंदिस्सावे, पीछे दोयखमासमणसैं इच्छाका० सं० ओहीथंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं, ओहीथंडिलां पडिलेहणकरूं, इच्छंकहके, उपधिपडिलेहे, आगेलिखाउसमुजब, तेसैं, जो दिनकों पोसह नहीं किया, ओर उपवासकियाहुआ है, उसका रातके पोसहचोपहरीकाभाव हुआ, तब पिछले पहोर उपाश्रय आयकै प्रमार्जना करै, काजा परठके उपगरण पडिलेहके इरियावही पडिक्कमे पीछै चोविहारका पच्चख्खाणकर, दोयखमासमणसैं मुंहपत्तीपडिलेहके दोयखमासमणसैं, पोसहसंदिस्सावे, फेरखमासणदेकर ३ नवकार गुणके, पोसहदंडकमैं उच्चरते रत्तिं पज्जुवासामि पाठकहे अगर कुछदिनबाकीरहते पच्चख्खेतोदिवससेसंरात्तिं पज्जुवासामिकहे फेरदोखमासमणसैं सामायक मुंहपत्ती पडिलेहे, सामायकलेवे, दोयखमासमणसैं, सिझायसंदिस्सावे, आठनवकार गिणे, फेरदोयखमासमणसैं वैसणोसंदिस्सावे, फेरदोयखमासमणसैं, पांगरणोसंदिस्सावे, फेरदोयखामासमणसैं, पडिलेहणसंदिस्साकर, मुंहपत्ती पडिलेहे, फेरदोयखमासमणसैं, ओही थंडिला पडिलेहण संदिस्साकर, जोविगरपडिलेहा उपगरण होय सो पडिलेहे अगर नहीं होय तो आसणपडिलेहे, इरियावहीपडिक्कमे २४ थंडिलां पडिलेहे, फेर प्रतिक्रमण करै, पिछलीरातकों फेर सामायक नहीं लेवे, इति रात्री ४ पहरी पोसहकी विशेपविधिः ।

॥ अथ दशमीस्तुति ॥

॥ अश्वसेननरेश्वर वामादेवीनंद, नवकरतनु निरुपम नीलवरण सुखकंद, अहिलंछन सेवितपउमावइधरणिंद, प्रह ऊठी प्रणमूंनित प्रतिपासजिनंद, १ कुलगिरिवैघट्ठे कणयाचल अभिराम, मानुषोत्तरनंदी रुचक कुंडल सुखठाम, भुवनेसरव्यंतर जो इस वैमानियनाम, वरतेजे जिनवर पूरो मुझमनकाम, २ जिहां अंगइग्यारे बारे उपांगछछेद, दशपयन्नादाख्या मूलसूत्रचिहुंभेद, जिनआगमषट्द्रव्य सप्तपदारथजुत्त, सांभलसरदहतां तूटे करम तुरत्त, ३ पउमावंई देवी पार्श्वयक्षप्रत्यक्ष, सहुसंघना संकटदूरकरेवादक्ष, तेसमरोजिनभक्ति सूरिकहे इकचित्त, सुखसुजससमापै पुत्रकलत्रबहुवित्त ४, इति

॥ अथ अमावसस्तुति ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैना पादा युष्मान्पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद् भूत्यै ३ सिद्धादेवी दद्यात्सौख्यं ४ इति वीरजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ निरुपसुखदायक जगनायक लायक शिवगतिगामीजी, करुणासागर निजगुणआगर शुद्धसमतारस धामीजी, श्री सिद्धचक्रशिरोमणि जिनवर ध्यावेजे मनरंगेजी, तेमानव श्रीपालतणीपर पामे सुखसुरसंगेजी १ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु महागुणवंताजी, दरशण ज्ञानचरण तप उत्तम नवपदजगजयवंताजी, एहनो ध्यांनधरंतालहिये अविचलपद अविनासीजी, तेसगलाजिननायक नमिये जिनये नीति प्रकाशीजी, २ आसू मासमनोहर तिमवलि चैत्रकमास जगीसेजी, उजवाली सातमथी करिये नवआंबिलनवदिवसेजी, तेरेसहस्रवलिगुणनो गुणिये नवपद केरोसारोजी, इणपर निरमल तप आदरिये आगमसाख उदारोजी, ३ विमलकमलदल लोयण सुंदर श्रीचक्केसरिदेवीजी, नवपदसेवक भविजनकेरा विघनहरो सुरसेवीजी, श्रीखरतरगछनायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति मुणिंदाजी, तासुपसायै इणपर पभणै श्रीजिनलाभ सुरिंदाजी, ४ इति नवपदस्तुति ॥

॥ अथ पर्यूषणस्तुति ॥

॥ वलि २ हूंध्याउं गाऊं जिनवरवीर, जिनपर्वपयूषण दाख्या धरमनी सीर, आषाढ चौमासाहूंती दिन पचास, पडिक्कमणोसंवच्छरी करिये त्रिण उपवास, १ चोवीसे जिनवरपूजा सतर प्रकार, करिये भलभावे भरिये पुण्यभंडार, वलिचैत्यप्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व्वपजूषणसहुमैं महिमावंत, २ पुस्तकपूजावीनववाचनाय वचाय, श्री कल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय, प्रतिदिनपर भावन धूप अगर उखेव इम भविंयणप्रांणी पर्व्वपजूषणसेव, ३ वलिसाहमीवच्छल करिये वारंवार, केइभावनाभावे केई तपसीशीलधार, अडदीहपजूसण इम सेवित आनंद, सुयदेवी सानिध कहे जिनलाभ सुरिंद, ४ इति ॥

॥ अथ वृहदतीचारलिख्यते ॥

॥ नाणंम्मि दंसणम्मिय, चरणंम्मितवेयतहयविरियम्मि,आयरणं आयारो, इयएसो पंचहाभणिओ १ अर्थ, ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्याचार५, इस पांच विधि आचारमैं जो कोई भी अतीचार पक्षीके दिनोंमैं सूक्ष्म बादरजाणमैं अजाणमैं हुआ होय वह सब मन वचन कायासैं कर मिच्छामिदुक्कडं,

॥ ज्ञानाचारके ८ अतीचार ॥

कालेविणए बहुमाणे, उवहाणेतहय निन्हवणे, वंजण अत्थतदुभए, अट्ठविहोनाणमायारो १, ज्ञान कालवेलामैं पढा गुणा नहीं, अकालमैं पढा, विनयहीन, बहुमानहीन, उपधानहीन, श्री उपाध्यायजी पास नहीं पढा, वा दुसरेपास पढा, दुसरेकों गुरु कहा, व्यंजन, अर्थ, वा तदुभय अशुद्ध पढा, देववंदन, प्रतिक्रमण, सिझाय करते,

अशुद्ध अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ, जादा, या कम, आगे, या पीछे पढा, सूत्रअर्थ अशुद्ध पढा, पढके भूल गया, तपोधनके धर्ममें, काजा नहीं निकाला, दंडी नहीं पडिलेही, वसती नहीं शुद्ध करी, असिझाय, अनाध्याय, अकालवख्त, दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढा गुणा योगवहेविगर पढा, ज्ञानका उपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा, सांपडी, वही दस्तरी, ओलिया, कागदकूं, आशातना हुई, पांवलगा, थूकलगा, शिराणेरख्खा, पास रहते भोजन या फरागत जाणाकिया, ज्ञान द्रव्य खाया, या संभाल नहीं करी, बुद्धिके अपराधसैं नाश किया, विनाश होते संभाल नहीं करी, शक्ती होते भी सार संभाल नहीं करी, ज्ञानवंतसैं अहंकार किया, और अवज्ञा आशातनाकरी, किसीको पढते गुणते देख द्वेष अहंकार अपघात अंतराय करा, मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानोंकी असर्द्दहनाकरी कोईतोता अटकते बोलतेंको हसा नकल करी, आपणे जाणकारीपणेका गरूर किया आठ तरेके ज्ञानाचारमैं जो अतीचारमैं पक्षीके दिनोंमैं सूक्ष्म बादर जाण० अजाण० वह सबका त्रिविधिसैं मिच्छामि० २

॥ दर्शनाचारके आठ अतीचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीअ, उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ १ देव, गुरु, धर्ममें, निशंकपणा नहीं करा, तैसैं एकांत निश्चय धरा नहीं, सवी मत अच्छे हैं, ऐसी श्रद्धा करी, धर्मसंबंधि ये फलमैं, निसंदेहबुद्धि रख्खी नहीं, चारित्रवंत, साधु, साधवीयोंके, मैले कुचीले वस्त्र, गात्रदेख, दुगंछाकरी, मिथ्यात्वीकी पूजा प्रभावना देख मूर्ख दृष्टिपणा किया, संघमैं गुणवंतकी अनुपवृंहणा, अथिरताकरणी, अवात्सल्यता, अप्रीति, अभक्ति विचारी, संघमैं थिरकरण, वात्सल्यता, शक्तिरहते प्रभावना नहीं करी, देवद्रव्यका नास किया, विनासकरतेकों नही रोका, समर्थवंत होकै सार संभाल नहीं करी, साधर्मीसैं लडाई करी, जिनमंदिरकी ८४ आशातना करी, गुरूकी तेतीस आशातना करी, विगर धोये वस्त्रसैं देवपूजा करी, तीन ठिकाणेविगर देवपूजा करी, वासकूंपा कलशका ठबका लगा, मूंकी वाफ लगी, स्थापनाचार्य हाथसैं गिराया, पडिलेहण करणा भूल गया, नवकरवालीकूं पांव लगा, दर्शनाचारमैं जो अतीचार पक्षदि० मिच्छा०

॥ चारित्राचारके आठ अतीचार ॥

॥ पणिहाणयोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिंतिहिंगुत्तीहिं, एसचरित्तायारो; अट्ठविहोहोइनायव्वो १ इर्यासमिती १ भाषासमिति २ एषणासमिति ३ आयाणभंडमत्त निक्षेपनासमिति ४ उच्चार प्रस्रवण खेल जल्ल संघाण परिष्ठापनिकासमिति ५; मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति, २,

कायगुप्ति, ३ पांचसमिती, तीनगुप्ति, अच्छीतरेपाली नहीं, साधूके, हमेस, अष्ट प्रकारके चारित्राचारमैं, जो अतीचार पक्षी० मिच्छामि० ८

॥ श्रीसम्यक्तके ५ अतीचार ॥

॥ विशेषकरकै श्रावकके धर्ममैं, श्रीसम्यक्तमूल १२ व्रत उससम्यक्तके ५ अतीचार संकाकंखविगंछा पसंसतहसंथवोकुलिंगीसु सम्मत्तस्सअइयारे संकाश्री अरिहंतोका वल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिक, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियोंका चारित्र, जिनवचनकी शंकाकरी, आकांक्षा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगा, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुवंत, इनोंकों आदिलेकर, ग्राम गोत्र देश नगरके जुदे २ देवदेहरोंका प्रभावदेखके रोगआतंक, इसलोकार्थ, परलोकार्थ, माना, पूजा, बौद्धसांख्यादिकके संन्यासी, भरडे, भक्तलिंगिये, योगी, दरवेस, और किसीभी दर्शनीका, कष्ट, मंत्रचमत्कार, देखके, परमार्थ जांणे विगर, भूला, प्रशंसा करी, कुशास्त्रसीखा, सुणा, सराध, संवत्सरी, होली बलेव, माहीपूनिम, अजापडिवा, प्रेतबीज, गौरतीज, विनायकचौथ, नागपांचम, झूलणाछट्ट, शीलशातम, द्रो आठम, नवलीनवम, अहवदशम, व्रतइग्यारस, वच्छवारस, धन्नतेरस, अनंतचउदस, डाभीअमावस, आदित्यवार, उत्तरायण, नवोदक, जाग, भोग, उतारा करा, पीपलमैं पाणी डाला, डलाया, घरवाहिर कूआ, तलाव, नदी, समुद्र, कुंड, पुन्य हेतुस्नान करा, दान दिया, ग्रहण, शनिश्चर, माघ महिना कार्तिकस्नान करा, अजाणका स्थापन करा, ओर कोईभी व्रत व्रतोला किया कराया, विचिकिच्छा, धर्मसंबंधी फलमैं संदेह करा, जिन अरिहंत धर्मके आगर, त्रिश्वोपगारसागर, मोक्षमार्गदातार, देवाधिदेवबुद्धिसैं शुद्धभावसैं न पूजा न माना महातमोंके भातपाणीकी दुगंछा करी कुचारित्रियोंकों देख चारित्रियोंपर अभाव हुआ मिथ्यात्वीकी प्रभावना देख प्रशंसा करी दाक्षिणतासैं उसका धर्म माना श्रीसमकितमैं दुसरा कोई जो अतीचार पक्ष० सूक्ष्म वादर जाणतेअजाणते० मिच्छामि०

॥ प्राणातिपातविरमणव्रतके ५ अतीचार ॥

॥ वहवंधच्छविच्छेए, अईभारे भत्तपाणवुच्छेए, द्विपद चउपदकों गुस्सेसैं जवर जखम प्रहार मारा सख्तवंधनसैं वांधा वहोत भारसैं पीडा दी निर्लछन कर्मकरा, चारापाणीकी वख्त सारसंभाल नहीं करी, लेणे देणेमें किसीकों लंघन कराया, वह भूखा और आप जीमा, विगरछाणापाणीवरता, अच्छीतरे छाणानहीं, छणायानहीं, विगर छाणे पाणीसैं न्हाया कपडाधोया इंधण विगरशुद्धकियेजलाया, सांप, कानखजूरा, सुलहली, खटमंल, जूं, गोगीडे, साहते मरे, दुखदिया, अच्छेठिकाणे नहींधरा, चिमटी, मकोडे, दिमक, घीवेल, कातरे, चूडेल, पतंगिये, मींडक, अलसिये, इली, कूति, डांस, मच्छर, भगतरा, मख्खी,

प्रमुख, हरकोई जीव विनष्ट किया, चांपा, दुखदिया, माला हिलाते, पंखी, कउआ, चिडियोंके इंडे फूटे, ओर कोईभी, एकेंद्रियादिक जीव, विनासा, चांपा, दुखदिया, हलते चलते ओर कोईभी कामकाज करते विद्धंसपणा किया, जीवदया अच्छीतरे नहीं करी, खंखारा सूकाया, सुला अनाज धूपमैं दिया, दलाया, भरडाया, खाट, पिलंग, धूपमैं झडाकाया, धरा, धराया, जीवाकुल जमीन, नींपी, निपाई, वासी गार रख्खी, रखाई, दलते, कूटते, नींपते, अच्छी जयणा नहीं करी, अष्टमी, चौदसका नियम तोडा, धूणी कराई, पहिला प्राणातिपात व्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष० १

॥ थूल मृषावाद विरमणके ५ अतीचार ॥

सहस्सा रहस्सदारे, मोसवएसे अकूडलेहेय, सहसात्कार किसीकों अयुक्त एव छीपालगाया, किसीकों एकांत बात करते देख, तुम्हतो राजाके विरुद्धवात विचारते हो, इत्यादिक कहा, अपणी स्त्रीकी गुप्तवात कही, किसीकी गुप्तसला या मर्मकूं प्रकाशन करा, किसीकों झूठी बुद्धि दी, झूठा खतलिखा, झूठी गवाभरी, धरवट दाबी, कन्या, जानवर, गऊ, जमीनसंबंधी, लेणैदेणै, व्यवसाय, वादविवाद, वचन कलह करते, वडा झूठ बोला, हाथ पांवोंकी गाली दी; करडके मोडे, अधर्म बचन बोला दूसरे थूल मृषावाद व्रतमैं जों कोई भी अतीचार पक्ष० २

॥ अदत्तादानविरमणव्रतके ५ अतीचार ॥

तें नाहडप्प ओगे, घरके वाहिर क्षेत खले पराई वस्तु विगर मंगाई, ली, दी, वापरी, चोरीकी वस्तु मोलली चोर डकेतकों संबल दिया शंकेत कहा विरुद्ध राज्यातिक्रमकिया, नये, पुराणे; सरस, निरस, सजीव, निर्जीव, वस्तूका भेल संभेलकरा खोटेतोल मान मापसैं विवहार किया, महसूलकी चोरीकरी, बदलाबदली करी, मा, बाप, बेटा, स्त्री, परिवारके विचमैं ठगाईसैं जुदी गांठकरी, किसीकों हिसाब किताबमैं, धोखादिया, गिरीवस्तुकों छिपायली, तीसरे अदत्तादान व्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष० ३

॥ स्वदारासंतोष मैथुनव्रतके ५ अतीचार ॥

अप्परिग्गहिया इत्तर, अणंगविवाहतिव्व अणुरागे० अपरिगृहीतागमन, इत्वर परिगृहीतागमन, विधवा वैश्यास्त्री कुलस्त्री, अपणी विवाहिता दो स्त्रियोंके चाहणेमैं, तफावत रख्खा, सराग वचन बोला, आठम, चउदस, ओर किसी भी पर्व्व तिथीका, नियम तोडा, पुनर्विवाह किया, कराया, अनुमोदना करी, खोटे संकल्प विकल्प किये, कामक्रीडा करी, पराये विवाह जोडे, कामभोगमैं, तीव्र अभिलाषाकरी, खोटे स्वप्ने देखे, नट विट

पुरुषसैं हस्सीकरी, चौथे मैथुन व्रतमैंजो कोई भी अतीचार पक्ष० वंह सव म० व० का०

॥ परिग्रह प्रमाणव्रतके ५ अतीचार ॥

धण धन्न खित्त वत्थु, धन, धान्य, क्षेत्र, वस्तु, रूपा, सोना, कुप्पद, द्विपद, चोपद, नव प्रकारके परिग्रहका नियम ऊपर, वढोतरी देख, मूर्च्छासैं, संक्षेप नहीं किया, माता पिता पुत्र कलत्रादिकके लेखे किया, परिग्रहप्रमाण लेकर याद नहीं किया, याद करकै भूलगया, नियम भूलगया, पांचमैं परिग्रहप्रमाण व्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष० सूक्ष्म वा० जांणते अजा० ५

॥ दिग्विरमण व्रतके ५ अतीचार ॥

गमण स्सय परिमाणे० उर्द्धदिशि अधोदिशि तिरछीदिशि, जाणे आणेका नियम, जो कोईभी, अजांणपणे तूटा, एकतरफ घटाकर, दुसरे तरफ वधाई, भूल करकै जादा जमीन गया, प्रस्थाना दूर भिजवाया, छट्ठे दिग् व्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष० ६

॥ भोगोपभोगविरमण व्रतके भोजन आश्री ५ कर्मसेती १५ एवं २० अतीचार ॥

सचित्ते पडिबद्धे० सचित्तका नियम लेकर, जादा सचित्त लिया, तैसें सचित्त मिली वस्तु, विगरपका आहार, दुपक आहार, तुच्छ दवाओंका भक्षण किया, होला, ऊंवी, पहूंक, ककडी, भडथाकरा, सुलानाज प्रमुख भक्षण करा, सचित्त दव्वविगई, वाहण तंवोलवत्थकुसुमेसु, पाहण सयण विलेवण, बंभदिसिन्हाणभत्तेसु १ ये चवदै नियम दिनप्रते, संभारे, संक्षेपे नहीं, लेकर नियम तोडा, २२ अभक्ष, ३२ अनंतकाय मैं, अद्रक, मूला, गाजर, सूरण, सेलरा, कच्ची अमली, गोल्हफल खाया, चौमासे प्रमुखमैं, वासी मिस्सा [कठोल]की रोटी खाई, तीन दिनका दही खाया, सहत, महुआ, मख्खण, मट्टी, वैंगण, पीलू, पीचु, पपोटा, पीपी, जहर, वरफ, गडे, [ओले] घोलवडा, अजाणेफल, ठीवरू, आचार, आमण, बोर, कच्चानिमक, तिल, खसखस, कच्चेकाचर खाये, रात्रि भोजन करा, लगवगती वख्त व्यालूकरा दिन ऊगे विगरजीमा, तैसें पनरे-कर्मादान, अंगारकर्म्मै, वनकर्म्मै, साडीकर्म, भाडीकर्म, फोडीकर्म, दांतका व्यापार, लाखका व्यापार, रसका व्यापार, केशका व्यापार, विष [जहर]का व्यापार, जंत्र पीलनकर्म, निर्लांछनकर्म, दावाग्निदेणा, सरद्रहतलाव सूकाणा, इनोंमैं ५ कर्म, ५ वाणिज्य, ५ सामान्य, महाआरंभ, लीहालेकराये, ईंटपजावा, कुंभारकी निवाही पकाई, धाणी, चिणा, पकवान करके वेचा, वासी मक्खणतपाया,

अंगीठी करी, करायी, तिलादिकका संचय किया, फ़ागण महीने उपरांत रख्खा, मुरगा, तोता, बुलबुल वगेरे पाला, ओर भी जो कोई वहोत सावद्य करडा कर्म्मादिक समाचरा, सातमैं भोगोपभोग व्रतमैं जो कोई भी अतीचार पक्ष० ७

॥ अनर्थ दंड विरमण व्रतके ५ अतीचार ॥

कंदप्पे कुकुइए० कामदेवके वस विटकीतरे, हसी, कौतूहल, मुखादिअंगकुचेष्टाकरी, मूर्खपणेसैं, किसीकों, नहीं कहणे योग वात कही, खांडा, कटारी, कसी, कुंहाडी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदिक तइयार करकै रक्खा, मांगणेसैं दिया, कणक वस्तु ढोर लिराया, ओर भी किसीतरेका पापका उपदेश दिया, स्नान दांतण, पगधोणे पाणी, तेल जादा मंगाया, नदी प्रमुखमैं तिरा, राजकथा, देशकथा, भोजनकथा, स्त्रीकथा, पराई वातकरी, आर्त्त, रौद्र ध्यांन ध्याया, कठोर वचन बोला, करडका मोडा, जिनावर लडाया, भैसा, सांड, मुरगा, मींढा, कुत्ता वगेरेकों, जुटते, लडतेकों, देखा, होड [सरत] लगाकर, दुसरे जिनावरपर, द्वेष भाव किया, मट्टी, निमक, कण, कपासिये, विगरकाम दबाया, उसपर वैठा, हरी वनस्पती खूंदी, छाछ, जल, घी, रस, तेल, गुड, आम्लवेतस, गंधेविरोजादिकका वरतन उघाडा रक्खा, उसमैं, चिमटी, कुंथु अे, मक्खी, चूआ, गिलेरी वगेरे जीवमरे, तोता वगेरे जीव, क्रीडावास्ते वांध रक्खा, वहोत नींदली, रागद्वेपसैं एककूं ऋद्धिपरिवारकी चाहना करी, एककूं मरणा, नुकसान विचारा, आठमैं अनर्थदंडव्रतमैं जो कोईभी अतीचार पक्ष०

॥ सामायकव्रतके ५ अतीचार ॥

तिविहे दुप्पणिहाणे, सामायक लेकर मनमैं आर्त्त, रौद्रकूं विचारा, वचन पापकारी बोला, शरीर विगर पडिलेहे हि लाया, वख्त रहते भी सामायक नहीं लिया सामायक लेकर ऊघाडे मूंसे बोला, नींदली, विजली दियेकी उद्योती लगी, कण कपासिये मट्टी लूंण नीलण फूलण सब्जी वनस्पतीका संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचका संघट्ट हुआ, मुहपत्ती संघट्टी सामायक विगर पूरी पारी, पारणा भूलगया, नवमैं सामायकव्रतमैं जो कोई अतीचार पक्ष०

॥ देशावकासिक व्रतका अतीचार ॥

आणवणेपेसवणे० आणवणप्रयोग, पेसवणप्रयोग, सब्दानुपात, रूपानुपात, वहिःपुद्गलक्षेप, प्रमाणमुजवनियम किये जमीनमैं, वाहिरक्षेत्रसैं कुछमंगाया, आपके पासमैं वाहिरक्षेत्रमें भेजा, पुकारके, रूपदिखाकर, कंकर फैंककै, अपणापणा जणाया, दशमैं देशावकासिकव्रतमैं जो कोईभी अतीचारपक्ष०

॥ पोषधनुपवासव्रतके ५ अतीचार ॥

संथारुच्चारविहिं० पोसहलेकर संथारेकी जमीन बाहिरका थडिला दिनकों सोधना पडिलेहणा नकरी, मात्रा विगर पडिलेहे किया, विगरपूंजी जमीनमें परठा, परठेतेविचारणा नहीं करा, अणुजाणह जस्सुग्गहो नहींकहा, परठेवाद तीनवेर वोसरामि नहीं कहा, पोसहसालमैं पैसते निकलते, निस्सही, आवस्सही, कहणा भूलगया, पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतीकाय, त्रसकायका संघट्ट परिताप उपद्रवहुआ, संथारा पोरसीकीविधि परठणाभूलगया, प्रथम पोरसीमें नींदली विधिविगर संथारा विछाया, कालवेलाप्रतिक्रमण नहीं करा, पारणेका फिकरकरा, कालवेलामैं देव वांदना भूलगया, पोसहदेरसैंलिया, फजरमेंही पारलिया, पर्व्वतिथी आणेसैं पोसहलिया नहीं इग्यारमैं पोषधोपवासव्रतमैं जो कोईभी अतीचारपक्ष० ॥

॥ अतिथिसंविभागव्रतके ५ अतीचार ॥

सचित्तेनिक्खवणे०, सचित्तवस्तु, नीचै, ऊपर रहते, साधूकूं, असूझता दान दिया, नहीं देणेकी बुद्धिसैं, सूझता पलटा कर, असूझता करा, अपणा पलटा कर पराया करा, विहरणका वख्त टले वाद, देरी करकै, साधूकूं बुलाया, अहंकारके वस दान दिया, गुणवंत आणेसैं भक्ती नहीं करी, शक्तिरहतेभी साधर्मी वात्सल्यता नहीं करी, ओर भी धर्म्मक्षेत्र कोई भी कष्ट पाते कूं, शक्ति रहते भी उद्धार नहीं करा, वारमैं अतिथिसंविभाग व्रतमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० १२

॥ संलेषणाका ५ अतीचार ॥

इह लोए पर लोए० इह लोकासंसप्प ओगे, पर लोगा संसप्प ओगे, जीविआ संसप्प ओगे, मरणासंसप्प ओगे, काम भोगा संसप्प ओगे, इह लोक मनुष्य भव, मान, वडाई, लोकोंकी सेवा, ठकुराई, वलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्तिपदकी चाहना करी, पर लोकमैं इंद्र, अहमिंद्रादिक पदवी चाही, सुख आणेसैं जीणेकी चाहना करी, दुःख आणेसैं मरणे की चाहना करी, कामभोगकी इच्छा करी, संलेषणाव्रतमैं जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

॥ तपाचार १२ भेद बाह्यतपके ६ भेद, ॥

अण सण मुणोयरिया, वित्ती संखेवणं रसच्चाओ, काय किलेसो संलीनयाय, वज्झोयतवोहोई १, अण सण कहिये उपवास वह पर्व्वतिथिमैं शक्ति रहते किया नहीं, ऊनोदरी, ५।७ग्रास कमखाया नहीं, द्रव्यसंक्षेप, विगयप्रमुखका परिमाण किया नहीं, आसनादिक कायक्लेश नहीं करा, संलीनता, अंग उपांग समटके रक्खा नहीं, नवकारसी,

पोरसी, गंठसी, मुंठसी, साढ पोरसी, पुरमड्ड, एकासणा, बैयासणा, निवी, आंबिल; प्रमुख पच्चक्खाण पारणा भूल गया, बैठते नवकार गुणा नहीं, ऊठते दिवसचरम नहीं करा, नी वी, आंबिल उपवासादिक तप करके कच्चा पाणी पीया, वमन हुआ, वाह्यतपमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

॥ ६ अभ्यंतर तप ॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेवसज्झाओ, झाणं उस्सग्गोविय, अब्भितरेओं तवोहोई१, गुरूके पास मन शुद्धसैं आलोयण लिया नहीं, गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप लेखे शुद्ध पहुंचाया नहीं, देव, गुरु, संघ, साधर्मीका, विनय नहीं किया, वांचना, पूछणा, पीछेका उथलना. अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, ये पांच भेद लक्षणका स्वाध्याय किया नहीं, धर्म्मध्यांन, शुक्लध्यांन, ध्याया नहीं, कर्मक्षयके वास्ते १०।२० लोगस्सका काउंसग्ग नहीं करा, अभ्यंतर तपमें जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

॥ वीर्याचारके ३ अतीचार ॥

अणगूहिय बलविरिओ, परक्कमइ जोजहुत्तठाणेसु, जंजइ अजहाथामं, नायव्वोवीरियायारो १ पढणो, गुणणे, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायक, दान, शील, तप, भावना, प्रमुख धर्म्मकृत्यमैं, मन, वचन, कायाका, विद्यमान बलवीर्यकूं छिपाया, अच्छीतरे पंचांग खमासमण नहीं दिया, बैठै पडिक्कमणाकरा वीर्याचारमैं जो कोई भी अतीचार पक्ष० ॥

नाणाइ अट्ठ पइवय, समसंलेहणपनर कम्मेसु, बारस तव विरियतिगं, चऊवी संसय अइयारा, १ ज्ञान, दर्शन, चारित्रके, आठ २, एकेक व्रत, एवं १२ व्रतोंके तथा सम्यक्तके, तेसैं संलेपणाके, पांच २, कर्मादानके १५, तपके १२, वीर्यके ३, असैं एक सो २४ अतीचार, पडिसिद्धाणं करणे० जिनेश्वरके मना किये २२ अभक्ष, ३२ अनंतकाय, बहुबीज भक्षण, महाआरंभ, महापरिग्रहादिक, करा, नित्यकृत्य देवपूजा, सामायकादिक, तथा तीर्थयात्रादिक नहीं करा, जीवाजीवादिक विचार मैं श्रद्धा नहीं करी, अपणी कुमतिसैं, उत्सूत्ररूपणाकरी, प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ परपरिवाद १४ पैशुन्य १५ अरतिरति १६ मायामृषावाद १७ मिथ्यात्व शल्य १८ इसतरे अठारे पापस्थानकमैं, जो कुछ किया, कराया, अनुमोदा; इसतरे श्रावकधर्म सम्यक्तमूल १२ व्रत अेकसो २४ अतीचारमैं जो अतीचार पं० जाण० अजाणते वह सब मन वचनकायाकर मिच्छामि० ॥

---

१ चोमासीमैं चोमासी दिवसमैं, संवत्सरीमैं संवत्सरीका नांम लेणा,

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

आज्ञुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय सात लाख पृथिवीकाय सात लाख अप्पकाय सात लाख तेउ काय सात लाख वाउकाय दशलाख प्रत्येक वनस्पतिकाय चउदे लाख साधारण वनस्पति काय दोय लाख बेइंद्रिय दोय लाख तेंद्रिय दोय लाख चौरिंद्रिय चार लाख देवता चार लाख नारकी चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय चउदे लाख मनुष्य एवं चार गति चौराशी लाख जीवा योनिमें, माहारे जीवें जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सव्वे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥११॥ कलह ॥१२॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ १५ ॥ अरति परपरीवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवता प्रत्यें भला जाण्या होय, ते सव्वे हुं, मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ [इति] ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली देव, गुरु, धर्मकी आशातना करी होय पन्नरे कर्मा दानोंकी आसेवना करी होय राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, ओर जो कोई पापपर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करता अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करके, दिवस अतिचार आलोयण करके पडि क्कमणामें आलोउं तस्स मिछामि दुक्कडं इति आलोयणं ॥

॥ अथ साधुप्रतिक्रमणसूत्र ॥

चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलि पन्नत्तो धम्मोमंगलं १, चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो २ चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ३

चाहताहूं पापसैंअलगहोणे दिनकासोणा, रातकूंविगरस्वाध्यायसोणाऐसीसज्या,
इच्छामि पडिक्कमिउं पगाम सिज्जाए
अत्यंतनींदकीसज्यासैं पसवाडाफेरतेसंथारेमेंअजयणासैं दूसरापसवाडाफिराते
निगामसिज्जाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए
अजयणासैं, शरीरवेप्रमार्जेसंकोचणेसैं, पसारणेसैं, जूं, मांकड, आदिककीसंघट्टणासैं,
आउ ट्टणाए, पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए
खासीकरतेअजयणासैं, करडीशय्यासैं, छींकसैं, वगासीखाणेसैं, पासकीजमीफर
कुइए कुक्कराइए छीए जंभाइए आमोसे
सणेसैं, धूडवालीजमीनफरसणेसैं, आकुलव्याकुलपणेसैं, स्वप्नेमैमैथुनविचारसैं,
ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए
स्त्रीकीवांछाकरणेसैंजोपापलगाहो, आंखोंकेविपर्याससैंजोदोषलगाहो,
इत्थीविप्परियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए,
मनकेविपर्याससैंजोदोपलगाहोय पीणेकाभोजनका विपर्याससैंजोदोषल
मणविप्परियासिआए पाणभोयण विप्परियासिआ
गाहो, जोमैंनेंदिनसंबंधी, अतिचारकियाहोय, उसकामिथ्याहुओमेरा
ए जोमेदेवसिओ, अइयारोकओ तस्समिच्छामिदु
पाप, विचारकरताहूं, गऊकीतरेफिरणेचरणेसैं, भिक्षाकेवास्तेजोदोपलगाहो,
क्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिक्खायरिआए
उघाडेकिमाडोंकेउघाडणेसैं, ओढालेहुयेकों, विलाईभोगलसैंबंधद्वारके, खोल
उग्घाडकवाड उग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्ट
णेसैं, ढकणेपरनिकालाहुआभोजनसैं, देवपूजावास्तेरखेअन्नसैं, भिक्षारियों
णाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ठवणापा

वास्तेरखाअन्नसें, आधाकर्मीशंकासें, एकदम, विगरविचारेंअन्नसें, जीवजंतुकाविग
हुडिआए, संकिएसहस्सागारे आणेसणाए पाणेस
रदेखाहुआपाणीसें, अन्नकेभोजनसें, पाणीकेभोजनसें वीजकेभोजनसेंदोषलगाहो
णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए
हरीवनस्पतीकेभोजनसें, आहारदियेवादकच्चेजलसेंहाथधोणेसें, देणेंकेपहलेकच्चेजलसें
हरियभोयणाए पच्छाकम्मियाए पुराकम्मिआए
हाथधोणेसें नजरसेंविनादेखेलेणेसें, कच्चेजलसेंसपर्शितआहारलेणेसें, सचित्तमट्टीफरसते
अदिट्ठहडाए दगसंसिट्ठहडाए रयसंसट्ठ
आहारलेणेसें, आहारदेतेनीचेगिरणेसें, आहारपरठणेसेंदोषलगाहो, उत्तमवस्तुमांगके
डाए पारिसाडनिआए पारिट्ठावणिआए ओहासण
लेणेकीभिक्षासें, जोउद्गमदोषकरके, कहकरआहारकराणेसें, समस्तपणेअशुद्धआहारपाणी
भिक्खाए, जंउग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं प
ग्रहणकरनेसें अथवाखायाहो, जोपरठणेयोग्यनहींपरठणेसें, उसकामिथ्याहुओमेरापाप,
डिग्गहियं परिभुत्तंवा जंनपरिट्ठवणिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं
प्रतिक्रमता[विचारता]हूं चारसमयकालकों, सूत्रअर्थरूपपढणागुणनानहींकरणेसें, दोनों
पडिक्कमामिचाउक्कालं, सिज्झायस्सअकरणयाए, उभओ
काल पात्रादिकउपगरणके नहींपडिलेहणाकरणेसें दुष्टपडिलेहणसें नहींप्रमार्जणेसें,
कालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्पमज्जणाए
दुष्टमनविगरप्रमार्जणेसें, नहींकरणेयोग्यसें, विधिउलंघणेसें, अतीचार,
दुप्पमज्जणाए, अइक्कमे, वइक्कमे, अइयारे,
अनाचार, जोमेंनेंदिनसंबंधी, अतीचारकियाहोय, उसकामिथ्याहु
अणायारे जोमेदेवसिओ, अइयारोकओ तस्समिच्छा
ओमेरापाप, विचारताहूं, एकप्रकारका, असंजमसें प्रतिक्रमताहूं
मिदुक्कडं, पडिक्कमामि, एगविहे, असंजमे पडिक्कमामि
दो, बंधनोंसें, रागस्नेहकेबंधनकरके, द्वेषकेबंधनकरके, प्रतिक्र
दोहिं, बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं पडि
माताहूं, तीन, दंडोंसें, मनदंडकरके, वचनदंडकरके, कायाकेदंडसें,
क्कमामि, तिहिं, दंडेहिं, मणदंडेणं, वयदंडेणं, कायदंडेणं

प्रतिक्रमताहुं, तीनों, गुप्तियोंसैं, मनगुप्तिसैं, वचनगुप्तिसैं, कायाकी
पडिक्कमामि तिहिं, गुत्तिहिं मणगुत्तिए वयगुत्तिए कायगु
गुप्तीसैं, पीछाहटताहूं, तीनसल्योंसैं, कपटाईसल्यसैं, तपकानियाणा
त्तिए पडिक्कमामि तिहिंसल्लेहिं, मायासल्लेणं, नीयाणास
सल्यसैं, मिथ्यात्वदर्शनशल्यसैंदोपलगाहो, पीछाहटताहूं, तीनगरूरीकरणेसैं
ल्लेणं, मिच्छादंसणसल्लेणं, पडिक्कमामि तिहिंगारवेहिं,
ऋद्धि[मेंसिद्धपूजनीक]हूं, मुझेंरसमिलताहै, मेरीकायानिरोगहैऐसे३गरूरसैं,
इड्ढीगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेणं
पीछाहटताहूं तीनविराधनासैं, ज्ञानविराधनासैं दर्शन[सम्यक्त]विराधनासैं,
पडिक्कमामि तिहिंविराहणाहिं नाणविराहणाए दंसणविराहणाए
चारित्रविराधनासैं, पीछाहटताहूं चारकपायोंसैंहुयेदोषोंसैं, क्रो
चारित्तविराहणाए, पडिक्कमामि चउहिंकसाएहिं, को
धकपायसैं, अहंकारकषायसैं, कपटाईकपायसैं, लोभकषाय
हकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसा
सैं, पीछाहटताहूं, चारोंही, संज्ञासैं, आहारसंज्ञासैं
एणं, पडिक्कमामि, चउहिं, सण्णाहिं आहारसण्णाए
डरकीसंज्ञासैं, मैथुनसंज्ञासैं, परिग्रहकीसंज्ञासैं, पीछा
भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए पडि
हटताहूं, चारों विकथाओसैं, स्त्रियोंकीकथासैं, भोजनकीकथासैं
क्कमामि, चउहिं, विगहाहिं, इत्थिकहाए, भत्तकहाए,
देसोंकीकथासैं, राजाओंकीकथासैं, पीछाहटताहूं, चारों ध्यानोंसैं
देसकहाए, रायकहाए, पडिक्कमामि, चउहिं, झाणेहिं,
आर्त्तघरसंबंधीध्यानसैं परकूंठगणामारणाध्यांनसैं, धर्मवस्तुकेध्यानसैं, शुक्ल
अट्टेणंझाणेणं रुद्देणंझाणेणं, धम्मेणंझाणेणं सुक्के
ध्यांनमैंजोदोषलगाहो, पीछाहटताहूं, पांचक्रियाओंसैं, कायकीसैं
णंझाणेणं पडिक्कमापि पंचहिंकिरियाहिं काइयाए
उत्सूत्रप्ररूपणाकरणेसैं, जादाद्वेपकरणेसैं, आत्मघातकरणेकीक्रियासैं, प्राणी
अहिगरणियाए पाउसिआए पारतावणिआए पाणा

जीवोंकीमारणेकीक्रियासैं, पीछाहटताहूं पांचकामगुणोंसेंहुयेदोषोंसैं, शब्दसैं,
यवायकिरिआए पडिक्कमामि पंचहिंकामगुणेहिं सद्देणं
रूपसैं छरससैं गंधसैं स्पर्शसैं पीछाहटताहूं पांचमहाव्रत
रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिंम
केहुयेदोषोंसैं, प्राणीजीवोंकेमारणेसैंअलगहोणा, झूठबोलणेसैंअलगहोणा
हव्वएहिं पाणाइवायाओवेरमणं मुसावायाओवेरमणं
विनादातारकेदियेलेणेसैंअलगहोणा, मैथुनसैंअलगहोणा परिग्रहप्रकारसैं
अदिन्नादाणाओवेरमणं मेहुणाओवेरमणं परिग्गहाओ
अलगहोणा, पीछाहटताहूं पांच समितिसैं रस्तेकीसमितिसैं बोल
वेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरियासमिईए भा
णेकीसमितिसैं, आहारलेणेकीसमितिसैं, लेतेपात्रप्रमुख रखते[धरते]
सासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्त निक्खेवणा
समितिसैं, लघुनीति,वडनीति;थूक,खंखार,मैल,नाककामैल, गेरणेकीवख्त
समिईए, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाण पारिट्ठावणि
समितिसैं, पीछाहटताहूं, छव जीवनिकायासैं पृथ्वीकायासैं
यासमईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं
अप्पकायासैं तेज[अग्नि]कायासैं, वायूकायासैं, वनस्पतिकायासैं
आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं
त्रसकायासैंदोषलगाहो, पीछाहटताहूं, छव लेस्यासैं, कृष्णमनपरि
तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिंलेसाहिं किन्हलेसा
णामसैं, नीलपरिणामसैं, कापोतपरिणामसैं, तेजपरिणामसैं, पद्मपरिणामसैं,
ए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए
शुक्लपरिणामसैं, पीछाहटताहूं, सात भयकेठिकाणेसैं, आठमदके
सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयट्ठाणेहिं अट्ठहिं
ठिकाणेसैं नवब्रह्मचर्यकीगुप्तिसैं दशप्रकारकेसाधूधर्मसैं,
मयट्ठाणेहिं नवहिंबंभचेरगुत्तीहिं दसविहेसमणधम्मे
इग्यारे श्रावकोंकीप्रतिमामैं दोषलगाहोय वारेसाधुओंकी प्रतिमासैं
एगार सहिंउवासगपडिमाहिं वारसहिंभिक्खु पडिमाहिं

तेरेक्रियाकेस्थानोंसें चवदेजीवोंकेसमूहोंसें, पनरे
तेरसहिंकिरियाठाणेहिं चउद्दसहिंभूयगामेहिं पण्णरसएहिं
परमाधार्म्मिकदेवोंसें, सोलेसुयगडांगसूत्रप्रथम१६गाथासें, सतरेप्र
परमाहम्मिएहिं सोलसएहिंगाहाहिं सतरसविहे
कारअसंजमसें, अठारेप्रकारकेअब्रह्मचर्यसें उगणीसज्ञातासूत्रकेअध्ययनोंसें
असंजमे अट्ठारसविहेअबंभे इगुणवीसाएनायज्झयणेहिं
वीसअसमाधिस्थानकोंसें इकवीससबलचारित्रकेदोषोंसें
वीसाएअसमाहिठाणेहिं, इकवीसाएसबलेहिं,
बाईसपरीषहोंसेंदोषलगाहो, तेवीससुयगडांगकेअध्ययनोंसें चउवीस
बावीसाएपरीसहेहिं, तेवीसाएसुयगडज्झयणेहिं, चउवी,
अरिहंतोसें पचवीसपंचमहाव्रतोंकीभावनासें, छाईसदशाश्रुत
साएअरिहंतेहिं पचवीसाएभावणाहिं छव्वीसाएदसा
स्कंध,कल्पव्यवहारसें, उद्देसणकालसेंदोष सत्ताईसअणगारकेगुणोंमेंदो
कप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्तावीसाएअणगा
षलगाहोय, अठाईसआचारप्रकल्पमेंदोषलगाहो गुणतीसपापश्रुत
रगुणेहिं अट्ठावीसाएआयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए
शास्त्रकेप्रसंगसेंदोषलगाहो, तीसमोहनीकेस्थानमेंदोषलगाहोय, इकतीससिद्धोंके
पावसुअप्पसंगेहिं तीसाएमोहणीअट्ठाणेहिं इगतीसाए
गुणोंमेंदोषलगाहोय, ३२ योगसंग्रहमेंदोषलगाहोय ३३ गुरूकीआशात
सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाएजोगसंगहेहिं तित्तीसाएआ
नामेंदोषलगाहोय, अरिहंतोंकीआशातनासें, सिद्धोंकीआशातनासेंदोष
सायणाए अरिहंताणंआसायणाए सिद्धाणंआसाय
लगाहो, आचार्योंकीआशातनासेंदोषलगाहोय, उपाध्यायोंकीआशातनासें
णाए आयरिआणंआसायणाए उवज्झायाणंआसाय
दोषलगा, साधुओंकीआशातनासें साधवियोंकीआसातनासेंदोषलगाहोय
णाए साहूणंआसायणाए साहुणीणंआसायणाए
श्रावकोंकीआशातनासें श्रावकणियोंकीआशातनासें देवतोंकी
सावयाणंआसायणाए सावियाणंआसायणाए देवाणं

आशातनासैं, देवियोंकीआशातनासैंदोष, इसलोककीआशातनासैं
आसायणाए देवीणंआसायणाए इहलोगस्सआसा
दोषलगा, परलोककीआशातनासैंदोषलगा, केवलीप्ररूपितधर्मकी
यणाए परलोगस्सआसायणाए केवलिपन्नत्तस्स
आशातनासैंदोषलगाहोय देवलोक मनुष्यलोक असुरलोककीआशा
धम्मस्सआसायणाए सदेवमणुआसुरस्सलोगस्स
तनासैंजोदोषलगाहोय, सर्व्वप्राणभूत जीव सत्वोंकीआशातनासैंदोष
आसायणाए सव्वपाणभूअ जीव सत्ताणंआसायणा
लगा, कालकी आशातनासैंदोषलगा श्रुतजिनोक्तकी आशातनासैं, श्रुत
ए, कालस्स आसायणाए सुअस्स आसायणाए सु
देवताकी आशातनासैंजोदोषलगा, वाचनाचार्यकी आशातनासैंजोदोषल
यदेवयाए आसायणाए वायणारिअस्स आसाय
गा, सूत्रकूंआगापीछा, दोतीनवख्तसूत्रकूंबोलाहो, कमअक्षरबोलाहो,
णाए जंवाइद्धं वच्चामेलिअंहीनक्खरिअं अच्च
जादाअक्षरबोलाहो, पदकमबोलाहो, विनयहीनपढाहो, योगतपविगर, उदात्त
क्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोस
स्वरहीण, अच्छीतरेदियापाठ, दुष्टपणेअंगीकारकियाहो, अकालमैंकिया
हीणं सुट्ठुदिन्नं दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकओ
पढनागुणना, कालमैंनहींकियापढणागुणना, असझाईकीवख्त पढना
सज्झाओ कालेनकओसज्झाओ असज्झाइए स
कराहो, स्वाध्यायकी वख्तनहींस्वाध्यायकरा, उसकामिथ्याहुओमेरापाप
ज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइयं तस्समिच्छामिदुक्कडं
नमस्कारहोचउवीस तीर्थंकरोंकों ऋषभादिक महावीर
णमोचउवीसाए तित्थयराणं उसभाई महावीरप
स्वामीपर्यंतोकूं निग्रंथकाद्वादशांग सत्य इसकेजैसानहींदुसरा,
ज्जवसाणाणं इणमेवनिग्गंथंपावयणं सच्चं अनुत्तरं
केवलीकथितप्रतिपूर्ण, न्याययुक्त शुद्ध सल्यकाटणे
केवलियंपडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्त

वाला सिद्धिकामार्ग मुक्तिकामार्ग सुखअनंतकामार्ग मोक्षका
णं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाण
मार्ग नहींअसत्यविच्छेदरहित, सर्व्वदुःक्खोंकेनासकरणेकामार्ग
मग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं
इसमैंरहेजीव, सिद्धहोतेहैं, बुद्धहोतेहैं, छूटतेहैं, समस्तपणेपीछे
इत्तट्ठियाजीवा, सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वा
जन्मनहींलेते, सर्व्वदुःक्खोंकाअंतकरतेहैं, उसधर्म्मकोंसर्द्दहताहूं प्रतीति
यंति, सव्वदुक्खाणमंतंकरंति तंधम्मंसद्दहामि पत्ति
कर्त्ताहूं, रुचिसैंधारताहूं, फरसताहूं, पालताहूं, पूर्वपुरुषोंकेतरेपालताहूं उस
यामि, रोएमि, फासेमि पालेमि, अणुपालेमि, तं
धर्मकों, सर्द्दहता, प्रतीतिकरता, रूचताहुआ, फरसता पालता पूर्वपु
धम्मं, सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालंतो अ
रुषोंकेतरेपालता, उसधर्मकों केवलीप्ररूपितधर्मकों उठाहूंसम
णुपालंतो तस्सधम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठि
स्तपणे आराधनाकेवास्ते दूरहोताहूं विराधनाकरकै असंज
ओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असं
मकूंसमस्तपणेजाणताहूं, संजमकूंअंगीकारकर्त्ताहूं अब्रह्मचर्य
जमंपरिआणामि, संजमंउवसंपज्जामि अबंभंप
कूंसमस्तपणेजाणताहूं, ब्रह्मचर्यकूंअंगीकारकर्त्ताहूं, नहींकरणेयोग्यकृत्य
रिआणामि बंभंउवसंपज्जामि, अकप्पंपरिआणा
जाणताहूं, करणेयोग्यकृत्यअंगीकारकर्त्ताहूं अज्ञानकूंसमस्तपणेजाणताहूं
मि कप्पंउवसंपज्जामि अन्नाणंपरिआणामि
ज्ञानकूंअंगीकारकर्त्ताहूं अक्रियाकोंसमस्तपणेजांणताहूं क्रियाकों
नाणंउवसंपज्जामि अकिरियंपरिआणामि किरियं
अंगीकारकर्त्ताहूं मिथ्यात्वकोंसमस्तपणेजाणताहूं सम्यक्तकोंअंगी
उवसंपज्जामि मिच्छत्तंपरिआणामि सम्मत्तंउवसं

कारकर्त्ताहूं अबोधकूंसमस्तपणेजाणताहूं बोधकोंअंगीकारकर्त्ता
पज्जामि, अबोहिंपरिआणामि बोहिंउवसंपज्जा
हूं अमार्गकोंसमस्तपणेजाणताहूं मार्गकूंअंगीकारकर्त्ताहूं जो
मि अमग्गंपरिआणामि मग्गंउवसंपज्जामि जं
यादकरलिया औरजोनहींयादआया, जिसकोंविचारसेंनिवर्त्तताहूं, ओरजो
संभरामि जंचनसंभरामि जंपडिक्कमामि जंचन
नहीनिवर्त्ता[हटा] उनसबोंका दिनसंबंधीपक्षीचोमासी संवत्सरीअतीचारोंकों
पडिक्कमामि तस्ससव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स
प्रतिक्रमताहूं, साधूहूंमैं संजती, विरक्त समस्तहणा
पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय
त्यागकिया पापकर्म्म, नियाणारहित तत्वरूपनजरयुक्तहूं
पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो
कपट झूठ विवर्जित हूं

मायामोसविवज्जिओ अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु जावंतिकेविसाहू रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारसहस्स सीलांगधारा अक्खआयारचरित्ता तेसव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि, खामेमिसव्वजीवे सव्वेजी वा खमंतुमे मित्तिमेसव्वभूएसु वेरंमज्झनकेणई १ एवमहं आलोइय निंदियगरहिय दुगंच्छियं सम्मं, तिविहेणपडिक्कंतो वंदामिजिणेचउव्वीसं २ इति साधु प्रतिक्रमणसूत्रं ॥

अथ दादागुरुदेव स्तवन तथा सवइया ॥

श्रीसदगुरुजीसें वीनती रे, आयोशरणतिहारी, दादासाहिबजीसूं वीनती रे, अरजसुणो गुरुम्हांरी, [यह आंकणी], दीनदयाल विरुदसुण आयो, तनमन शुधकर ध्यांनलगायो महिरनिजर अवकीजियेजी, चरणकमल वलिहारी, [श्री० दा०], आधि व्याधि संकट दुखमेटो, सोमवार पूनम दिनभेटो, अनधनलक्ष्मी, चोगुणी रे, वधतीसंपदसारी, [श्री० दा० २], नरनारी अपछरमिलआवै, अत्तरगुलावकेवडोलावैः, पूजेमृगमद पुष्पसेरें, खुलरही केसरक्यारी, श्री० दा०], कलयुगमें परचातूंपूरै, चिंता दोषी दुश्मनचूरै, धन२सद्गुरु जगजयो रे, सहसकिरणअवतारी, [श्री० दा० ४], उगणीसे अठावनवरसे कातीपूनम-दिनभलभरसे, गछपति कीर्त्तिसूरीश्वरूरे, वंदेवारहजारी, [श्री० ५ दा०], अरसपरसदर-शनअवदीजे, अपणोदाससुझें समझीजे, जगमें सुरतरुसारखो रे, कीरतछारहीथांरी [श्री०६ दा०] प्रगटपणेवरदातादेख्यो, आजसफलदिनमेंकरलेख्यो, श्रीजिनकुशलसूरिंदधणीरे, कहेरामऋद्धिसारी, [श्री० ७ दा०], इतिपदं ॥

मिश्रीघृतखीररलायमिलायप्रभातसमेंगटके २, सुखरासनिवाससुधारनकों मनमेस मिले मटके २, भलीऋद्धिवडीदिलरंजनकों सवआयमिलेसटके २, रुवपत्तकहत्त जुगत्तमिल्यां गुरदेवनमुंलटके लटके, १,

अथ ग्रंथसंग्रहकृत्प्रशस्ति ॥

श्रीमत्खरतर गणवरे सुखकरे वीकादिनेरेपुरे, श्रीजिनकीर्तिसुसूरिपट्टमुकुटे चारित्र-सूरीश्वरे,, गंगासिंहनरेश्वरोसुविजयते गणिधर्मशीलो सदा, जयतु कुशलनिधानसंघसुखदः श्रीसद्गुरुनित्यशः, १, छंद, संवतउगणीशत अडसठकावर्षशुभ चेत्रवदिचोथदिन ग्रंथ-योसवायोहै, स्तवुकार्थभाषामें लिख्योहे विचारसार अर्थाभिलाषीका भावमें वधायोहै, वालूचर नग्रके उदयचंदअमरचंद वोथराधनेशनें आग्रहदरसायोहै, पाठक ऋद्धिसारगणि-संग्रहयहकीनग्रंथ वाचकजीवणप्रेम अमरगुणगायोहे, २
